मौलाइल गाछक फूल

उपन्यास

जगदीश प्रसाद मण्डल

मौलाइल गाछक फूल

१

दू साल रौदीक उपरान्तक अखाढ़। गरमीसँ जेहने दिन ओहने राति। भरि-भरि राति बीअनि हौंकि-हौंकि लोक सभ बितबैत। सुतली रातिमे उठि-उठि पानि पीबए पड़ैत। भोर होइते घाम अपन उग्र रुप पकड़ि लैत। जहिना कियो ककरो मारैले लग पहुँचि जाइत, तहिना सुरुजो लग आबि गेलाह। रस्ता-पेराक माटि सिमेंट जेकाँ सक्कत भऽ गेल अछि। चलबा काल पएर पिछड़ैत अछि। इनार-पोखरिक पानि अपन अस्मिता बचबैक लेल पातालक रस्ता पकड़ि लेलक अछि। दू सालसँ एक्को बुन्न पानि धरतीपर नहि पड़ने धरतीक सुन्दरता धीरे-धीरे नष्ट हुअए लगल अछि । पियाससँ दूबि सभ पाण्डुरोगी जेकाँ पीअर भऽ-भऽ परान तियागि रहल अछि। गाछ-पात बेदरंग भऽ गेल अछि। लताम, दारिम, नारिकेल इत्यादि अनेको तरहक फलक गाछ सूखि गेल। आम, जामुन, गमहाइर, शीशोक गाछक निच्चा पातक पथार लगि गेल अछि। दसे बजेसँ बाधमे लू चलए लगैत अछि। नम्हर-नम्हर दरारि फाटि धरतीक रुपे बिगाड़ि देने अछि। की खाएब? कोना जीब? अपनामे सभ एक-दोसरासँ बतिआइत अछि। घास-पानिक दुआरे मालो-जाल सूखि कऽ संठी जेकाँ भऽ गेल अछि। अनधुन मरबो कएल। अनुकूल समए पाबि रोगो-बियाधि बुतगर भऽ गेल। माल-जालसँ लऽ कऽ लोको सबहक जान अबग्रहमे पड़ि गेल अछि। खेती-बाड़ी चौपट्ट होइत देखि थारी-लोटा बन्हकी लगा-लगा लोक मोरंग, दिनाजपुर, ढाका भागए लगल। जैह दशा किसानक, ओएह दशा बोनिहारोक। कहिया इन्द्र भगवानक दया हेतनि, एहि आशामे अनधुन कबुला-पाती लोक करए लगल।

तीनि दिनसँ अनुपक घरमे चुल्हि नहि पजड़ल। नल-दमयन्ती जेकाँ दुनू परानी अनुप दुखक पहाड़क तरमे पड़ल-पड़ल एक-दोसराक मूह देखैत। ककरो किछु बजैक साहस नहि होइत। बारह बरखक बेटा बौएलाल बोरापर पड़ल माएकेँ कहलक- ''माए, भूखे परान निकलल जाइए। पेटमे बगहा लगैए। आब नइ जीबौ!''

बौएलालक बात सुनि दुनू परानी अनुपक आँखिमे नोर आबि गेलै। मूहक बोल बुताए लगलैक। लगमे बैसल रधिया उठि कऽ डोल-लोटा लऽ इनार दिशि बिदा भेलि। इनारोक पानि निच्चा ससरि गेलैक अछि, जहिसँ डोलक उगहनियो छोट भऽ गेल। कतबो निहुड़ि-निहुड़ि रधिया पानि पाबए चाहैत, तैयो डोल पानिसँ उपरे रहैत। रधियाक मनमे एलै, जखन अधला होइबला होइ छै, तहन एहिना

कुसंयोग होइ छैक। बौएलाल नइ बँचत। एक तँ पाँचटा संतानमे एकटा पिहुआ बँचल, सेहो आइ जाइए। हे भगवान, कोन जनमक पापक बदला लइ छह। इनारसँ डोल निकालि लहरेपर डोल-लोटा छोड़ि रधिया उगहनि जोड़ैले डोरी आनए आंगन आइलि। रधियाक निराश मन देखि अनुप पुछलक- "की भेल?"

टूटल मने रधिया उत्तर देलक- "की हएत, जखन दैवेक डाँग लागल अछि, तखन की हएत। उगहनि छोट भऽ गेल तँ जोड़ैबला डोरी लैले एलौं।"

रधियाक बात सुनि अनुप घरेक ओसारेक बनहन खोलि देलक। खड़ौआ जौर लऽ रधिया इनारपर जा उगहनि जोड़लक। उगहनि जोड़ि पानि भरलक। पाइन भरि लोटामे लऽ रधिया आंगन आबि बौएलालकेँ पीबैले कहलक। पड़ल बौएलालकेँ उठिये ने होए। ओसारपर लोटा रखि रधिया बौएलालक बाँहि पकड़ि उठा कऽ बैसौलक। अपने हाथे रधिया लोटासँ चुरुकमे पानि लऽ बौएलालक आँखि-मुँह पोछलक। बौएलालक देह थर-थर कपैत। थरथरी देखि रधियोकेँ थरथरी पैसि गेलनि। लोटा उठा रधिया बौएलालक मूहमे लगबए लागलि आकि थरथराइत हाथसँ लोटा छुटि गेलनि, जहिसँ पानि बोरापर पसरि गेल। दुनू हाथे छाती पीटैत रधिया जोरसँ चिचिआए लागलि- "आब बौएलाल नै जीत, जे घड़ी जे पहर अछि।"

रधियाक बोल सुनि अनुप जोरसँ कनै लगल। अनुपक कानब सुनि टोलक धियो-पूतो आ जनिजातियो एक्के-दुइये आबए लगल। सबहक मूह सुखाइले। के ककरा बोल-भरोस देत। सबहक एक्के गति। अनुपक कानब सुनि रुपनी अंगनेसँ कनैत दौगल। रुपनी अनुपक ममिओत बहिन। अनुपक आङन आबि रुपनी बौएलालकेँ देखि बाजलि- "भैया, बौआक परान छेबे करह। अखन मुइलहेँ नहि। किअए अनेरे दुनू परानी कनै छह। जाबे शरीरमे साँस रहतै, ताबे जीबैक आशा। चुप हुअ।" कहि रुपनी बौएलालकेँ समेटि कोरामे बैसौलक। तरहत्थीसँ चाइन रगड़ै लागलि। बौएलाल आँखि खोलि बाजल- "दीदी, भूखसँ पेटमे बगहा लगैए।"

बौएलालक बात सुनि रुपनी बाजलि- "रोटी खेमे।"

"हँ।"

बौएलालक बात सुनि रधिया घरमे धएल फुलक लोटा, जे रधियाकेँ दुरागमनमे बाप देने रहनि, निकालि अनुपकेँ देलक। लोटा नेने अनुप दोकान दिश दौगल। लोटा बेचि गहूम किनने आएल। अंगना अबिते रधिया हबड़-हबड़ कऽ चुल्हि पजारि गहूम उलौलक। दुनू परानी रधिया जाँतमे गहूम पीसऽ लगल। एक रोटीक चिक्कस होइतहि रधिया समेटि कऽ रोटी पकबए आबि गेलीह। अनुप गहूम पीसऽ लगल। रोटी पका रधिया बौएलाल लग लऽ गेल। अपनेसँ रोटी तोड़ि खेबाक साहस बौएलालकेँ नहि होइत। छाती दाबि-दाबि रधिया बौएलालकेँ रोटी खुआबए लगली। सैँसे रोटी बौएलाल खा लेलक। रोटी खाइत-खाइत बौएलालोकेँ हूबा एलैक। अपने हाथे लोटा उठा पानि पीलक। पानि पीबितहि हाफी होअए लगलैक। भुइँयेमे ओँघरा गेल। जाँत लगक चिक्कस समेटि रधिया

चुल्हि लग आनि सूपमे सानै लगलीह। जांघपर पड़ल चिक्कस अनुप तौनीसँ झाड़ि, लोटा-डोल लेने इनार दिशि बढ़ल। हाथ-पएर धोय, लोटामे पानि लऽ आंगन आबि खाइले बैसल। छिपलीमे रोटी आ नोन-मेरचाइ नेने रधिया अनुपक आगूमे देलक। भुखे अनुपकेँ होए जे सौँसे रोटी मोड़ि-सोड़ि कऽ एक्के बेरि मूहमे लऽ ली, मुदा से नहि कऽ तोड़ि-तोड़ि खाए लगल। छिपलीक रोटी सठितहि अनुप रधिया दिशि देखए लगल, मुदा तीनिये टा रोटी पका रधिया चिक्कसक पथिया कोठीपर रखि देने। रधियाकेँ देखि अनुप चुपचाप दू लोटा पानि पीबि उठि गेल।

दिन अछैते नथुआ दौड़ल आबि, हँसैत अनुपकेँ कहलक- "गिरहत कक्का बड़की पोखरि उड़ाहथिन। काल्हिसँ हाथ लगतै। तोहूँ दुनू गोरे काज करए चलिहह।"

नथुआक बात सुनितहि रधियाकेँ, जेना अशर्फी भेटि गेल होइ, तहिना भेलै। अनुपोक मूहसँ हँसी निकलल। अनुपक खुशी देखि नथुआ बाजल- "अपने मुसना कक्का मेटगिरी करत। ओएह जन सबहक हाजरी बनौत।"

नथुआ, अनुप आ रधियाक बीच गप-सप होइतहि छल आकि मुसनो धड़फड़ाइल आएल। मुसना दिशि देखि नथुआ बाजल- "मुसनो कक्का तँ आबिये गेला। आब सभ गप फरिछाकेँ बुझबहक।"

मेटगिरी भेटलासँ मुसनाक मन तरे-तर गदगद होइत। ओना कहियो मुसना मेटगिरी केने नहि, मुदा गामक बान्ह-सड़कमे मेट सबहक आमदनी आ रोब देखने, तँ खुशी। मने-मन सोचैत जे जकरा मन हैत तकरा जनमे राखब आ जकरा मन नहि हैत तकरा नै राखब। ई तँ हमरे जुइतिक काज रहत की ने। जकरा मन हैत ओकरा बेसियो कऽ हाजिरी बना देबैक। पावर तँ पावर होइत अछि। जँ पावर भेटै आ ओकर उपयोग फाजिल कऽ कँ नहि करी तँ ओहन पावरे लऽ कऽ की हेतै? जँ से नहि करब तँ मुसना आ मेटमे अनतरे की हैत। लोक की बुझत। मुस्की दैत मुसना अनुपकेँ कहलक- "भैया, काल्हिसँ बड़की पोखरिमे काज चलतै, तोहू चलिहह। दू सेर धान आ एक सेर मडुआ, भरि दिनक बोइन हेतह। तत्तेटा पोखरि अछि जे कहुना-कहुना रौदी खेपिये जेबह। सुनै छी जे आनो गामक जन सभ अबैले अछि, मुदा ओकरा सभकेँ माटि नहि काटै देबै।"

मुसनाक बात सुनि बौएलाल फुड़फुड़ा कऽ उठि बाजल- "कक्का हमरो गिनती कऽ लिहऽ। हमहूँ माटि काटए जेबह।"

-"बेस बौआ, तीनू गोरे चलिहह। हमरे हाथक काज रहत। दुपहरमे भानस करैले भौजीकेँ पहिने छुट्टी दऽ देबइ।"

कहि मुसनो आ नथुओ चलि गेल।

दोसर दिन भोरे, पोखरिमे हाथ लगैसँ पहिनहि चौगामाक जन सभ क्यो कोदारि-टाला तँ क्यो पथिया-कोदारि लऽ पोखरिक मोहारपर पहुँचि थहाथहि करै लगल। मेला जेकाँ लोकक करमान लागि गेल। जते गामक जन तहिसँ कैक गुना बेसी आन गामक। जनक भीड़ देखि मुसनाक मनमे अहलदिल्ली पैसि गेलै।

तामसो आ डरोसँ देह थर-थर कापए लगलैक। मुसनाक मनमे एलै, हमर बात के सुनत? माथपर दुनू हाथ लऽ बैसि गेल। किछु फुरबे ने करैत। ठकमूरी लगि गेलैक। सौँसे पोखरि, गौआँसँ अनगौँआ धरि, जगह छेकि-छेकि कोदारि लगा टल्ला ठाढ़ केने। सोचैत-सोचैत मुसनाक मनमे एलै जे गिरहत कक्का रमाकान्त-बाबूकेँ जा कऽ सभ बात कहिअनि। सैह केलक। उठि कऽ रमाकान्त ऐठाम बिदा भेल।

तहि बीच गौआँ-अनगौआँ जनमे रक्का-टोकी शुरु भेल। अनगौआँ सभ जोर-जोरसँ बजैत जे कोनो भीख मंगैले एलहुँ। सुपत काज करब आ सुपत बोइन लेब। गौआँ जन सभ कहै जे हमरा गामक काज छी तँ हम सभ अपने करब। सुखेतक भुटकुमरा आ गामक सिंहेसरा एक्के ठाम पोखरिक माटि दफानने। दुनूक बीच गारि-गरौबलि हुअए लगलै। सभ हल्ला करैत तँ ककरो बात कियो सुनबे नहि करैत। सभ अपने बजैमे बेहाल। गारि-गरौबलि करिते-करिते भुटकुमरो सिंहेसर दिशि बढ़ल आ सिंहेसरो भुटकुमरा दिशि। दुनूक बीच गारियो-गरौबलि होइत आ पकड़ो-पकड़ी भऽ गेल। एक-दोसरकेँ पटकि छातीपर बैइसए चाहैत। दुनू बुतगर। पहिने तँ भुटकुमरे सिंहेसराकेँ पटकलक किएक तँ सिंहेसराक पएर घुच्चीमे पड़ि गेलै, जहिसँ ओ धड़फड़ा कऽ खसि पड़ल। मुदा सिंहेसरो हारि नहि मानलक। हिम्मत कऽ कँ उठि भुटकुमरो कऽ छिड़की लगा खसौलक।

दरबज्जापर बैसि रमाकान्त बाबू बखारीक धान, मड़ूआक हिसाब मिलबैत। हलचलाइत मुसनाकेँ देखि रमाकान्त पुछलखिन। मुसनाक बोली साफ-साफ निकलबे नहि करैत। मुदा तैयो मुसना कहै लगलनि- ‘‘काका, तत्ते अनगौआँ जन सब आबि गेल अछि जे गौआँकेँ जगहे ने हैत। कतबो मनाही केलियै कोइ मानैले तैयारे ने भेल। कनी अपनेसँ चलि कऽ देखियौ।’’

कागज-कलम घरमे रखि रमाकान्त बिदा भेलाह। आगू-आगू रमाकान्त आ पाछू-पाछू मुसना। पोखरिसँ फड़िक्के रमाकान्त रहथि आकि पोखरिमे हल्ला होइत सुनलखिन। मन चौंकि गेलनि। मनमे हुअए लगलनि जे अनगौआँ सभ बात मानत की नहि! अगर काज बन्न कऽ देब तँ गौँओ कामइ हैत। जँ काज बन्न नहि करब तँ अनगौँओ मानबे नहि करत। विचित्र स्थितिमे रमाकान्त। निअरलाहा सभ गड़बड़ भऽ जाएत। पोखरिक महारपर रमाकान्तकेँ अबितहि चारु भरसँ जन सभ घेरि लेलकनि। सभ हल्ला करैत जे जँ काज चलत तँ हमहूँ सभ खटब। ततमतमे पड़ि रमाकान्त अनगौआँ सभकेँ कहलखिन- ‘‘देखू रौदियाह समए अछि। सभ गाममे काजो अछि आ करौनिहारो छथि। चलै चलू, अहाँ सबहक संगे हमहूँ चलै छी आ हुनको सभकेँ कहबनि जे अपना-अपना गामक बोनिहारकेँ अपना-अपना गाममे काज दियौ।’’

आन सभ गामक लोक कोदारि, छिट्टा, टल्ला नेने बिदा भेल। रमाकान्तो संगे बिदा भेलाह। किछु दूर गेलापर रमाकान्त मुसनाकेँ इशारामे कहि देलखिन जे जखन आन गामक लोक निकलि जाएत तखन गौआँ जनकेँ काजमे लगा दिहक। तहि बीच क्यो जा कऽ सिंहेसरा घरवालीकेँ कहि देलक जे पोखरिमे

तोरा घरबलाकेँ ओंघरा-ओंघरा मारलकौ। घरबलाक मारिक नाम सुनितहि सिंहेसराक घरोवाली आ धियो-पूतो गामे परसँ गरिअबैत पोखरि लग आबि गेल। मुदा तइसँ पहिने अनगौआँ सभ चलि गेल छल।

पोखरिक काज शुरु भेल। तीनू गोटे अनुप एक्के ठाम खताक चेन्ह देलक। कोदारिसँ माटि काटि-काटि अनुप पथिया भरैत, रधिया आ बौएलाल माथपर लऽ लऽ महारपर फेकए लगल। बारहक अमल भऽ गेल। रमाकान्त घुरिकेँ आबि पोखरिक पछबरिया महारपर ठाढ़ भऽ देखए लगलथि। मुसनाक नजरि पड़ितहि दौड़ि कऽ रमाकान्त लग पहुँचल। मुसनाकेँ पहुँचतहि रमाकान्त आंगुरक इशारासँ बौएलालकेँ देखबैत पुछलखिन- "ओ के छी। ओकरा साँझमे कहिहक भेटि करै लेल।" कहि रमाकान्त घर दिसक रस्ता पकड़लनि। बारह बर्खक बौएलालक माटि उघब देखि सभकेँ छगुन्ता लगैत। जाबे दोसर कियो एक बेरि माटि फेकैत ताबे बौएलाल तीनि बेरि फेकि दैत। बौएलालक काज देखि अनुप मने-मन सोचए लगल जे बोनिआतीसँ नीक ठिक्का होइत। मुदा हमरे सोचलासँ की हेतैक। ताबे मुसनो रमाकान्तकेँ अरिआति घुरि कऽ अनुप लग आबि कहलक- "भैया, मालिक दुनू बापुतकेँ साँझमे भेंट करैले कहलखुनहेँ।"

मालिकक भेंट करैक सुनि अनुपक हृदयमे खुशीक हिलकोर उठए लगल। मुदा अपना कऽ सम्हारि अनुप मुसनाकेँ कहलक- "जखन मालिक भेंट करैले कहलनि तँ जरुर जाएब।"

सुरुज पछिम दिस एकोशिया भऽ गेलाह। घुमैत-फिरैत मुसना अनुप लग आबि रधियाकेँ कहलक- "भौजी, अहाँ जाउ। भरि दिनक हाजरी बना देने छी। भानसोक बेर उनहि जाएत।"

रधिया आंगन बिदा भेलि। अनुप आ बौएलाल काज करिते रहल। चारि बजे सभ गोटे काज छोड़ि देलक। गामपर आबि अनुप दुनू बापुत नहा कऽ खेलक। कौल्हुके गहूमक चिक्कसक रोटी आ अरिकंचन पातक पतौरा बना पकौने छलि, ओकर चटनी बनौने छलि। खा कऽ तीनू गोटे अनुप, बौएलाल आ रधिया ओसारपर बैसि गप-सप करए लगल। अनुप रधियाकेँ कहलक- "भगवान बड़ी गो छथिन। सभपर हुनकर नजरि रहै छनि। देखियौ एहेन कहात समएमे कोन चक्कर लगा देलखिन।"

गप-सप करितहि गोसाइ डूबि गेल। झलफल होइतहि अनुप दुनू बापुत रमाकान्त ऐठाम बिदा भेल। रस्तामे दुनू बापुतकेँ ढेरो तरहक विचार मनमे उठैत आ समाप्त होइत। ओना दुनू बापुतक मन गदगद।

दरबज्जापर बैसि रमाकान्त मुसनासँ जनक हिसाब करैत रहथि। मुसना जनक गिनतियो केने आ नामो लिखने। मुदा अपन नाम छुटल तँ हिसाव मिलबे नहि करैत। अही घो-घाँमे दुनू गोटे। तहि बीच दुनू बापुत अनुप पहुँचल। फरिक्केसँ अनुप दुनू हाथ जोड़ि रमाकान्तकेँ गोर लागि बिछानपर बैसल। बौएलालो गोर लगलकनि। बौएलालकेँ देखि रमाकान्त बिहुँसैत अनुपकेँ कहलखिन- "अनुप, तोँ अपन ई बेटा हमरा दऽ दाए।"

मने-मन अनुप सोचए लगल जे ई की कहलनि? कने काल गुम्म भऽ अनुप उत्तर देलकनि- "मालिक, बौएलाल की हमरेटा बेटा छी, समाजक छिऐ। जखन अपनेकेँ जरुरत हैत तखन लऽ लेब।"

अनुपक उत्तर सुनि सभ छगुन्तामेँ पड़ि गेलाह। मास्टर साहेब अनुपकेँ निङहारि-निङहारि देखए लगलथि। एकटा युवक, जे दू दिन पहिने भाग्यक मारल आएल छल, ओहो आशा-निराशामे डूबल। ओहि युवककेँ तीन बर्ख कृषि विज्ञानक पढ़ाइ पूरा भेल छलैक, खाली एक बर्ख बाकी छलैक। अपन सभ खेत बेचि पिताक बीमारीक इलाज करौलक, मुदा ओ ठीक नहि भऽ मरि गेलखिन। कर्जा लऽ पिताक श्राद्ध-कर्म केलकनि। खरचा दुआरे पढ़ाइयो छुटि गेलैक आ जीबैक कोनो उपायो ने रहलनि। जिनगीक कठिन मोड़पर आबि युवक निराश भऽ गेल छलाह। साल भरि पहिने बिआहो भऽ गेल छलनि। एक दिस बूढ़ि माए आ स्त्रीक भार दोसर दिस जीबैक कोनो रस्ता नहि। सोगसँ माइयोक देह दिने-दिन निच्चे मुँहे हहड़ल जाइत। उदार विचार सुनि ओ युवक आएल छल।

सभ दिन रमाकान्त चारि बजे पिसुआ भांग पीबैत छथि। दोसरि-तेसरि साँझ होइत-होइत रमाकान्तकेँ भांगक नशाँ चढ़ि जाइत छन्हि। भांगक आदति रमाकान्तकेँ पितासँ लागल छलनि। रमाकान्तक पिता न्याय शास्त्रक विद्वान्। ओना गाममे कम्मे-काल रहैत छलाह, बेसी काल बाहरे-बाहर। हुनके प्रभाव रमाकान्तक ऊपर। तेँ रमाकान्त जेहने इमानदार तेहने उदार विचारक सेहो।

पोखरिक चर्चा करैत रमाकान्त मुसनाकेँ कहलखिन- "काल्हिसँ बौएलालकेँ दोबर बोइन दिहक।"

दोबर बोइन सुनि, कने काल गुम्म भऽ मुसना कहलकनि- "मालिक, एक गोरेकेँ बोइन बढ़ेबै ते दोसरो-तेसरो जन मांगत। एहिसँ झंझट शुरु भऽ जाएत। झंझट भेने काजो बन्न भऽ जाएत।"

काज बन्न होइक सुनि रमाकान्त उत्तेजित भऽ कहलकखिन- "काज किऐक बन्न हैत। जे जतेक काज करत ओकरा ओते बोइन देबैक।"

रमाकान्तक विचारकेँ सभ मूड़ी डोला समर्थन कऽ देलकनि। समर्थन देखि गदगद होइत रमाकान्त कहए लगलखिन- "अखन बौएलालकेँ बोइन बढ़ेलहुँ, बादमे दू बीघा खेतो देबैक। मास्टर सहाएब, अहाँ रातिकेँ बौएलालकेँ पढ़ा दियौ। सिलेट-किताबक खरच हम देबै।"

खेतक चर्चा सुनि मुसना रमाकान्तकेँ कहलकनि- "विपन्न तँ बौएलालेटा नहि, गाममे बहुतो अछि।"

मुसनाक प्रश्न सुनि रमाकान्तक हृदयमे सतयुगक हरिश्चन्द्र पैसि गेलनि। उदार विचार, इमानमे गंभीरता, मनुक्खक प्रति सिनेह हुनक विवेककेँ घेरि लेलकनि। अखन धरि ने सुदिखोर महाजनक चालि आ ने धन जमा करैबला जेकाँ अमानवीय व्यवहार प्रवेश केने छलनि। नीक समाजमे जहिना धनकेँ जिनगी नहि बुझि, जिनगीक साधन बुझि उपयोग होइछ, तहिना रमाकान्तोक परिवारमे रहलनि। जखन रमाकान्तक पिता गाममे रहैत छलथिन आ कियो किछु मंगै

अबैत तँ खाली हाथ घुरए नहि दैत छलथिन। जे रमाकान्तो देखथिन। सदिखन पिता कहथिन जे जँ किनको ऐठाम पाहुन-परक आबनि आ ओ किछु मांगै आबथि तँ हुनका जरुर देबनि। किएक तँ ओ गामक प्रतिष्ठा बचाएब होएत। गामक प्रतिष्ठा व्यक्तिगत नहि सामूहिक होइछ। तहिठाम जँ क्यो सोचैत जे गाम सबहक छिऐक, हमरा ओहिसँ कोन मतलब? गलती हेतैक। गाममे अधिकतर लोक गरीब आ मुर्ख अछि, ओ एहि प्रतिष्ठाकेँ नहि बुझैत अछि। तँ जे बुझनिहार छथि हुनकर ई खास दायित्व बनि जाइत छनि। एहि धरतीपर जतेक जीव-जन्तुसँ लऽ कऽ मनुख धरि अछि, सभकेँ जीबैक अधिकार छैक। तँ जे मनुख ककरो हक छिनै चाहै छैक ओ एहि भूमिपर सभसँ पैघ पापी छी। जनकक राज मिथिला थिकैक तँ मिथिलावासीकेँ जनकक कएल रस्ताकेँ पकड़ि कऽ चलक चाही। जहिसँ ओ प्रतिष्ठा सबदिन बरकरार रहतैक।

२

सुखी-सम्पन्न रमाकान्त जेहने उदार तेहने इमानदार, एहि लेल समाजमे बुझल जाइत छथि। मरौसी जमीन तँ बेशी नहि मुदा पिताक अमलदारीमे जत्था बहुत भेलन्हि। पितो किनने तँ नहिये रहथिन्ह मुदा पुरस्कार स्वरुप पैघ-पैघ दरबार सभसँ भेटल छलनि। रमाकान्तक पिता मधुकान्त अध्यात्म, वैयाकरण आ न्यायशास्त्रक विद्वान छलथि। बच्चेसँ मधुकान्तक झुकाव अध्ययन दिशि देखि पिता बनारस पढ़ैले पठौलखिन। बनारसमे अध्ययन कऽ मधुकान्त तीन बर्ख काशीक एकटा न्यायशस्त्रक पंडित एहिठाम अध्ययन केने रहथि। अध्ययनक उपरान्त मधुकान्त पूर्ण रुपेण बदलि गेल रहथि। अध्ययन-अध्यापनक असुविधा दुआरे गाममे मोन नहि लगनि। ने अपन मनोनुकूल लोक भेटनि आ ने क्रिया-कलापमे सामंजस्य होइन। तँ जिनगीक अधिक समए अनतै बितबैत रहथि। जेहने प्रतिष्ठा मधुकान्तकेँ अपना राजमे, तेहने आनो-आनो राजमे रहनि। भारतीय चिन्तनक बुनियादी ढंगसँ व्याख्या करब मधुकान्तक खास विशेषता रहनि। सामाजिक व्यवस्थाक गुण-अवगुनक चर्च अनेको लेखमे लिखने रहथि, जे असुविधाक चलैत अप्रकाशिते रहलनि। तगमा, प्रशस्ति पत्र टांगि दरबज्जाक शोभा बढ़ौने छलाह। जखन गाममे रहैत छलाह, तखन सबहक एहिठाम जा-जा सामाजिक व्यवस्थाक कुरीति बुझबथिन। खास कऽ कर्मकाण्डक। तँ समाजमे सभ चाहनि। अपनो जिनगीक बात दोसरकेँ कहथिन आ दोसरोक जिनगीक अध्ययन करैत रहैत छलाह। छल-प्रपंचक मिसिओ भरि गंध जिनगीकेँ नहि छुलकनि। समाजमे मनुक्ख कोना मनुक्खक बाधा बनि ठाढ़ अछि आ ओहिसँ कोना छुटकारा भेटतै, नीक-नहाँति मधुकान्त बुझथिन। सत्तरि जाड़ एहि धरतीपर कटलनि।

सभ दिन चारि बजे रमाकान्त भांग पीबि, पान खा टहलैले निकलि दोसर साँझ धरि घुरि कऽ घरपर अबैत छलाह। घरपर अबिते हाथ-पएर धोय दरबज्जापर बैसि दुनियादारीक गप-सप करैत छलाह। टोल-पड़ोसक लोक एका-एकी आबि-आबि बैसए। रंग-बिरंगक गप-सपक संग चाहो-पान आ हँसिओ-मजाक चलैत रहैत छलैक। मास्टर सहाएब हीरानन्द आ युवक शशिशेखर सेहो टहलि-बूलि कऽ अएलाह। चाह पीबि रमाकान्त शशिशेखरकेँ पुछलखिन- ''बौआ, अहाँ की चाहै छी?''

मजबूरीक स्वरमे शशिशेखर कहए लगलनि- ''एहन दल-दलमे हम फँसि गेल छी जे एकटा पएर निकालै छी तँ दोसर धँसि जाइत अछि। एहिसँ कोना निकलब?''

कृषि कओलेजमे प्रवेशक प्रतियोगितामे सफल होइतहि शशिशेखरकेँ सुखद भविष्यक ज्योति भेटलन्हि। बेटाक सफलता सुनि पिताक उत्साह हजार गुना बढ़ि गेलनि, जते जिनगीमे कहिओ नहि भेल छलनि। जहिना काँटक गाछमे अमरफल

(बेल) फड़ैत, काँटक गाछमे गुलाबक फूल फुलाइत अछि, तहिना पछुआइल परिवारमे शशिशेखर भेलाह। शशिशेखरक पिता मनमे अरोपि लेलनि जे बीत-बीत कऽ खेत किऐक ने बीकि जाए मुदा बेटाकेँ कृषि वैज्ञानिक बना कऽ छोड़ब। शशिशेखरोक मनमे पैघ-पैघ अरमान आबए लगलनि। कृषि वैज्ञानिक होएब, नीक नोकरी भेटत, माए-बापक सेहन्ता कमा कऽ पूरा करब। सिर्फ परिवारेक नहि, जहाँ धरि समाजोक भऽ सकत सेवा करब। मुदा बिचहिमे समए एहन मोड़पर आनि देलकनि जे सभ अरमान हवामे उड़ि गेलनि। जहिना बीच धारमे नाओ चलौनिहारक हाथसँ करुआरि छुटि गेलापर नाओमे यात्रा केनिहार आ चलौनिहारकेँ होइत, तहिना शशिशखरोकेँ भेलनि। चारि सालक कोर्समे तीन साल पुरलाक बाद पिता दुखित पड़लखिन। चारिम सालक पढ़ाइ छोड़ि शशिशेखर पिताक सेवामे जुटि गेलाह। एक दिशि पिताक इलाज तँ दोसर दिशि परिवारक बोझ पड़ि गेलनि। आमदनीक कोनो स्रोत नहि, मात्र खेतेटा। खेतो बहुत अधिक नहि। तहूमे अदहासँ बेसी बिकिये गेल छलनि। शशिक बचपनाक बुद्धि। जिनगी आ दुनियाँसँ भेट नहि। छोट बुद्धिसँ पैघ समस्याक समाधाने नहि होइत छलनि। अंतमे निराश भऽ खेत बेचि-बेचि परिवारो आ पितोक इलाज करबै लगलाह। बीति-बीति खेत बिक गेलनि। जहन कि दुनू समस्या (परिवार आ इलाज) बरकरारे रहलनि। बेबश भेल छलाह शशि। पितो मरि गेलखिन। कर्ज कऽ कए पिताक श्राद्ध-कर्म केलनि। दुनियाँमे कतौ इजोत देखबे नहि करथि। सौँसे दुनिया अन्हारे-अन्हार लगए लगलनि।

बेबस भेल शशि मने-मन सोचए लगलाह जे जँ हम ट्यूशनो पढ़ा कऽ अपनो पढ़व तहन परिवारक की दशा होएत! ओतेक तँ ट्यूशनोसँ नहि कमा सकैत छी, जहिसँ अपनो काज चलाएब आ परिवारो चला लेब। अधिक कमाइक लेल अधिक समयो लगबए पड़त। जे संभव नहि अछि। अगर जँ सभ समए ट्यूशनेमे लगा देब तँ अपने कखन पढ़ब आ क्लास कोना करब। जहियासँ पिता मुइलाह तहियासँ माइयोक देह सोगसँ हहड़ले जा रहल छनि। एक तँ बूढ़ि छथि दोसर सोगसँ सोगाइल। मनुक्खमे जन्म लेलापर क्यो माए-बापक सेवा नहि करै तँ ओ मनुक्खे की? मनुक्खक मात्र नकल छी। हम से नहि करब। चाहे दुनियाक लोक नीक कहै वा अधला, तेकर हमरा गम नहि अछि। डिग्री लऽ कऽ हम नीक नोकरी करब। नीक दरमाहा भेटत। जहिसँ खाइ-पीबै, ओढ़ै-पहिरै आ रहैक सुविधा भेटत, मुदा जिनगी तँ ओतबेटा नहि अछि। जिनगीक लेल ज्ञान, कर्म आ व्यवहारक जरुरत सेहो होइत अछि। जिनगी पाबि जँ मनुक्ख प्रतिष्ठित नहि बनि सकल तँ ओ जिनगिये की? आइ जँ हम माएकेँ छोड़ि दिअनि आ हुनका कष्ट होइन, ओहि कष्टक भागी के बनत? दिन-राति हुनका सेवाक जरुरत छनि, उठौनाइ-बैसोनाइसँ लऽ कऽ खुऔनाइ-पिऔनाइ धरि। हम सभ ओहि धरतीक सन्तान छी जहि ठाम श्रवणकुमार सन बेटा जन्म लऽ चुकल छथि। यैह विचार शशिशेखरक पढ़ाइ छोड़ौलकनि। दुनियामे कोनो सहारा नहि देखि शशि रमाकान्त ऐठाम ऐलाह। अपन जीवनक सभ बात शशि हीरानन्दकेँ कहलखिन।

शशिक बातसँ हीरानन्दक हृदय पघलि गेल छलनि। हीरानन्द मने-मन सोचैत रहथि जे, जे नवयुवक देश सेवामे एकटा खूँटाक काज करत ओ अपनहि नष्ट भऽ रहल अछि, तेँ ओहन युवककेँ सोंगर लगा ठाढ़ करैक जरुरति अछि।

सोझमतिया रमाकान्त दोहरबैत शशिकेँ पुछलखिन- ''नीक जेकाँ अहाँक बात हम नहि बुझि सकलौं?''

बिचहिमे मास्टर साहेब रमाकान्तकेँ बुझबैत कहलखिन- ''शशि महा संकटमे फँसि गेल छथि। हुनका अहींक मदतिक जरुरत छनि। तखने ओ उठि कऽ ठाढ़ हेताह।''

मास्टर साहेबक बात सुनि धाँइ दऽ रमाकान्त कहलखिन- ''अगर हमर मदतिसँ शशिकेँ कल्याण हेतनि तँ जरुर करबनि।''

रमाकान्तक आश्वासनसँ शशिक हृदयमे भोरक सूर्य देखि दिनक आशा जगलनि। शशिक मूहसँ हँसी निकललनि। जिनगीक अमावश्या पूर्णिमामे बदलए लगलनि। गंभीर भऽ हीरानन्द शशिकेँ कहए लगलखिन- "चिन्ता छोड़ू। नव जिनगीक दिश डेग उठाउ। ई कर्मभूमि थिकैक। एहिठाम कर्मनिष्टे लोक मनुष्यक जिनगी पाबि सकैत अछि।''

हीरानन्दक विचार सुनि शशि उठि कऽ ठाढ़ भऽ हुनक हाथ पकड़ि जिनगी भरिक मित्रताक व्रत लैत कहलखिन- ''जहिना कोनो रोगाइल गाछकेँ माली तामि-कोड़ि, पानि दऽ पुनः नव जिनगी दैत अछि तहिना अहाँ दुनू गोटे हमरा देलहुँ। तहि लेल हम ऋणी छी। जहाँ धरि भऽ सकत सेवा करैत रहब।''

शशिक विचार सुनितहि रमाकान्तक हृदयमे कर्णक रुप सन्निहा गेलनि। खुशीसँ गद्-गद् होइत कहलखिन- ''बौआ, हम तँ पढ़ल-लिखल नहि छी। पिताजी गाममे नहि रहैत छलाह तँ परिवार सम्हारै पड़ैत छल। ओना कोनो वस्तुक अभाव जिनगीमे ने पहिने भेल आ ने अखन अछि। जहिया पिताजी गाम अबैत छलाह तहिया बुझा-बुझा कऽ कहैत छलाह। अखनो मनमे ओएह विचार अछि।''

रमाकान्तकेँ दू गोट बेटा। दुनू डॉक्टरी पढ़ि मद्रासमे नोकरी करैत छन्हि। कहियो काल दू-एक दिनक लेल गाम अबैत छन्हि। दुनू भाँइ मद्रासेमे बिआहो कऽ नेने छथि। दुनू कनिओ डॉक्टरे छथिन। एक परिवारमे चारि डॉक्टर, तेँ आमदनियो नीक छनि। दस बर्खक नोकरीमे कमा कऽ ढेर लगा लेने छथि। अपन तीन मंजिला मकान मद्रासेमे बनौने छथि। चारिटा गाड़ी सेहो रखने छथि। अपन क्लीनिक सेहो बनौने छथि। बेटा लग जेबाक विचार रमाकान्त बहुत दिनसँ करैत छथि मुदा दुरस्तक दुआरे नियारियेकेँ रहि जाइ छथि।

पुनः रमाकान्त बजलाह- ''पोखरियोक काज सूढ़िआइये गेल अछि, ओकरा सम्पन्न कऽ कए मद्रास जाएब। मद्राससँ अएलाक बाद अहाँक सभ जोगार कऽ देब। ताधरि अहाँ पत्नियो आ माइयोकेँ एहिठाम लऽ अबिअनु। एतै रहू।''

बेरु पहर हीरानन्द आ शशिशेखर टहलैले निकललाह। दरबज्जाक सोझे पोखरिक महारक निच्चामे, उत्तर पूब कोनमे एकटा भरिगर सरही आमक गाछ।

दुनू गोटे ओहि गाछक निच्चा दुभिपर बैसि गप-सप करए लगलाह। हीरानन्द अपन खेरहा कहए लगलखिन। मैट्रिक पास केलाक उपरान्त मास्टरीक लेल इन्टरभ्यू देइले गेलौं। जखन ओहि ठाम गेलौं आ देखलिऐक तँ बुझि पड़ल जे इन्टरभ्यू मात्र दिखावा अछि। मोल-जोल तेजीसँ चलैत छल। मुदा सोझे घुमिओ जाएब उचित नहि बुझि रुकि गेलौं। मनमे आएल जे मोल-जोलक विरोध करी। संगी भजिअबए लगलौं। मुदा मोल-जोलक पाछू सभ लागल। एकोटा संग देमएबला नहि देखि मनकेँ असथिर केलौं। फेर भेल जे विरोध कऽ हंगामा ठाढ़ कए दियैक। मुदा दुनू पक्ष एक दिशाहे, सिर्फ हमहींटा कातमे। तामसे देह थर-थर कपैत छल। लाभ-हानिक हिसाब जोड़ी तँ हानिये बेसी बुझि पड़ैत छल। मुदा मन तैयो मानै लेल तैयार नहि हुअए। हुअए जे, जे बहालीक उपरका सीढ़ीपर अछि ओकरा चारि धौल लगा दिऐ। दस दिन जहलेमे रहब। फेर हुअए जे जखन डिग्री आ योग्यता अछि, तखन एहेन-एहेन नोकरी कतेको औत आ जाएत। फेर हुअए जे हजारो नवयुवक देशक आजादीक लेल खून बहौलक। हमरा बुते एतबो ने हैत। समुद्रक लहरि जेकाँ मनमे संकल्प-विकल्प उठैत आ शान्त होइत रहल। सभ केयो चलि गेल। हम असकरे रहि गेलौं। अचता-पचताकेँ बिदा भेलौं। डेगे ने उठैत छल मुदा तैयो घरपर एलौं। घरपर अबितहि पत्नी बुझि गेली। मुदा आशा जगबैइ दुआरे लोटामे पानि नेने आगू आबि कहलनि- "थाकि गेल होएब। हाथ-पएर धोय लिअ, थाकनि कमि जाएत। जलखै नेने अबै छी।" जाबे हम पएर-हाथ धोलहुँ ताबे थारी नेने ऐलीह। पहिनहि जलखैएक ओरियान कऽ कए रखने रहथि। जलखै खा, दरबज्जेक चौकीपर कुरता खोलि कऽ रखि देलिऐ आ बाँहिक सिरमा बना पड़ि रहलौं। मुदा मनमे ढेरो रंगक विचार सभ उठए लगल। मुदा दू तरहक विचार सोझमे आबि गेल। पहिल विचार जे शिक्षकेक बहाली टामे घुसखोरी छैक आकि सभ विभागमे छैक? आँखि उठा-उठा सभ दिशि देखए लगलौं तँ बुझि पड़ल जे अहूसँ बेसी आन-आनमे अछि। जखन सभ विभागमे घुसखोरी अछि, तखन देश आगू मुँहे कोना ससरत? निच्चासँ ऊपर धरि एक्के रोग सगतरि पकड़ने अछि। मन औना गेल। मन औनाइते छल आकि दोसर विचार मनमे उपकल। मनकेँ असथिर कऽ सोचए लगलहुँ। अनायास मनमे आएल जे जहिना पुरबा-पछबा हवा धरतीसँ अकास धरि बहैत अछि, तहिना ई व्यवस्थाक हवा छिऐक। तँ एकरा बदलैक एक्केटा रस्ता अछि व्यवस्था बदलब। मुदा व्यवस्था बदलब छौड़ा-छौड़ीक खेल नहि छी। कठिन काज छी। व्यवस्था सिर्फ लोकक चालिये-ढालि धरि सीमित नहि अछि। ओ अछि मनुक्खक चालि-ढालिसँ लऽ कऽ ओकर बुद्धि-विचार विवेक धरि। मनुष्यकेँ जेहेन बुद्धि रहै छै, ओहने विचार मनमे अबै छै। जेहेन विचार मनमे अबैत छैक, तेहने ओ काज करैत अछि। तँ जाधरि मनुक्खक बुद्धि नहि बदलत ताधरि ओकर क्रिया-कलाप नहि बदलि सकैत अछि। जाधरि-क्रिया-कलाप नहि बदलत, ताधरि व्यवस्था बदलब मात्र बौद्धिक व्यायाम हैत। तँ जरुरत अछि मनुक्खमे नव बुद्धिक सृजन कऽ नव क्रिया-कलाप पैदा करब। नब क्रिया-कलाप

अएलापर नव रस्ता बनत। नब रस्ता बनलापर कियो नव स्थानपर पहुँचत। नव जगह पहुँचलापर मनुक्ख मनुक्खक बराबरीमे आओत। आ छोट-पैघ, धनीक-गरीब, ऊँच-नीचक खाधि समतल हएत। तखन भक्क खुजल। भक्क खुजितहि हाइ स्कूलक शिक्षक देवेन्द्र बाबू मन पड़लनि। देवेन्द्र बाबू, सदिखन छात्र सभकेँ कहथिन- ''मनुखकेँ कखनो निराश नहि हेबाक चाहिऐक। जखने मनुक्खमे निराशा अबैत छैक, तखने मृत्यु लग चलि अबै छैक। तेँ सदिखन आशावान भऽ जिनगी बितेबाक चाहिऐक। कठिनसँ कठिन समए किएक ने आबए मुदा विवेकक सहारा लए आगू डेग उठेबाक चाहिऐक।'' देवेन्द्र बाबूक विचार मन पड़ितहि ओ संकल्प लेलनि, जहन शिक्षक बनैक लेल डेग उठेलौं तँ शिक्षक बनि कऽ रहब। चाहे जत्ते विघ्न-बाधा आगूमे उपस्थिति होअए।''

जखन देवेन्द्र बाबू कओलेजमे पढ़ैत रहथि तखन आजादीक आन्दोलन देशमे उग्र रुप धेने छल। देवेन्द्रबाबू पाँच-सात संगीक संग पोस्ट ऑफिसमे आगि लगा देलखिन। पोस्ट-ऑफिस जरि गेलै। तीन दिनक बाद हुनका पुलिस पकड़ि लेलकनि। मारबो केलकनि आ जहलो लऽ गेलनि। जहल जाइसँ पहिने कने डरो होइत छलनि। लोकक मुहे सुनने रहथिन जे जहलमे खाइले नहि दैत छैक। ऊपरसँ साँझ-भिनसर दुनू साँझ मारबो करै छै। मुदा जहलक भीतर गेलापर देखलखिन जे हजारो देशप्रेमी क्रान्तिकारी जहलमे छथि। हुनका सबहक लेल जेहने घर तेहने जहल। एक बर्ख ओहो जहलमे रहलाह। ओहि बर्ख दिनमे ओ बहुत सिखलनि। जिनगीये बदलि गेलनि। आब देबेन्द्र बाबू सिर्फ अपने आ अपना परिवारेटा लेल नहि सोचथि। बल्कि ओ बुझि गेलखिन जे देशक अंग समाज आ समाजक अंग व्यक्ति वा परिवार होइत अछि। तँ, सभकेँ अपनासँ लऽ कऽ देश धरिक सेवा करैक चाहिऐक। जहलसँ निकलि बी.ए.क फार्म भरलनि। बी.ए. पास केलापर हाइ स्कूलक शिक्षक बनलाह।

हाइ स्कूलमे बहूतो शिक्षक छलथि मुदा हुनकर जिनगी भिन्न छलनि। ट्यूशन माने खानगी पढ़ौनीकेँ पाप बुझि क्लासमे तेना पढ़बैत छलाह जे विद्यार्थीकेँ टयूशन पढ़ैक जरुरते ने रहैत छलैक। स्कूलक पजरेमे टटघर बना असकरे रहैत छलाह। महिनामे एक दिन गाम जा बालो-बच्चाकेँ देखथिन आ दरमहो परिवारमे दऽ अबथिन।

चौकीपर हीरानन्द पड़ले रहथि आकि एकटा अनठीया आदमी पहुँचलनि। ओ नहि चिन्हलखिन। मुदा दरबज्जाक लाज रखैक लेल आंगनसँ एक लोटा पानि आनि पएर धोय बैसैले कहलखिन। पुनः आंगन जा पत्नीकेँ कहलखिन- ''एकटा अतिथि ऐला हेन, तँ झब दे चाह बनाउ।'' कहि दरबज्जापर आबि ओहि आदमीक नाम-गाम पूछै लगलखिन। नाम गाम पूछि काजक गप उठबितहि रहथि आकि आंगनसँ पत्नी हाथक इशारासँ चाह लए जाइले कहलखिन। इशारा देखिते गप्पकेँ विराम दैत आंगन चाह अनैले गेलाह। आंगन जा दुनू हाथमे दुनू चाहक गिलास लऽ दरबज्जापर आबि दहिना हाथक गिलास अतिथिकेँ देलखिन आ बामा हाथक गिलास दहिना हाथमे लऽ अपने पीबै लगलाह। गप्पो चलैत आ चाहो

पीबैत रहथि तँ पीबैमे देरी लगलनि। चाह सठलो नहि छलनि आकि आंगनसँ पत्नी जलखइक इशारा देलखिन। पत्नीक इशारा देखि हाथेक इशारासँ थोड़े काल बिलमि जाइले कहलखिन। चाह पीबि लगले जलखै करब नीक नहि होइत अछि। हँ, चाह पीबैसँ पहिने जलखै नीक होइत छैक। चाह पीबि पान खा दुनू गोटे गप-सप करए लगलाह। अतिथिकेँ पुछलखिन- "किमहर-किमहर अहाँ एलहुँ?"

अतिथि- "एकटा बूढ़ि हमरा गाममे छथि। सामाजिक संबंधमे दादी हेतीह। बिधवा छथि। बेटो नहि छनि। हुनका विचार भेलनि जे बच्चा सभकेँ पढ़ैले एकटा इस्कूल बनाबी। चारि बीघा खेत छनि। समाजोक सभ आग्रह केलकनि जे सम्पति तँ राइ-छित्ती भइये जाएत, तहिसँ नीक जे इस्कूल बना दियौक। अखन ओ दू बीघा खेत इस्कूलमे देथिन आ दू बीघा अपना लेल रखतीह। जखन दादी मरि जेतीह तखन चारू बीघा इस्कूलेक हेतै।"

ध्यानसँ अतिथिक बात सुनि मुस्कुराइत हीरानन्द कहलखिन- "बडड् नीक विचार छनि।"

"ओहि इस्कूलकेँ चलबैले अहाँसँ कहै अएलहुँ।"

"जरुर जाएब। राति एतै बीता लिअ। भोरे चलब।'

"कोसे भरि अछि, दोसर साँझ धरि पहुँच जाएब।"

'एते अगुताइ किएक छी ? हमहूँ थाकल छी। भोरे चाह पीबि दुनू गोटे चलब।"

हीरानन्दक आग्रह अतिथि मानि गेलाह। अंगनाक टाट लगसँ पत्नी दुनू गोटेक सभ बात सुनैत रहथिन। दुनू गोटे तमाकू खा लोटा लऽ मैदान दिस बिदा भेलाह। घुमैत-फिरैत दुनू गोटे तेसरि साँझमे घरपर एलाह। घरपर आबि दुनू गोटे, दरबज्जापर बैसि, गप-सप करए लगलाह। भानस भेल, दुनू गोटे खा कऽ सुति रहलाह।

चारि बजितहि दुनू गोटेक निन्न टूटि गेलनि। जाबे दुनू गोटे पैखानासँ आबि दतमनि केलनि ताबे पत्नी-आरती चाह बनौलनि। चाह पीबितहि रहथि आकि सूर्यक उदय भेल।

आजुक सुरुजमे एक विशेष रंगक आकर्षण बुझि पड़ैत छलनि। सूर्यक रोशनीमे विशेष आकर्षण छल आकि सबहक हृदयमे छलनि? आरतीक मनमे होइत छलनि जे पति नोकरी करए जा रहल छथि तैं, विशेष आकर्षण। हीरानन्दक हृदयमे जिनगीक एक सीढ़ी बढ़ैक आकर्षण रहनि आ अतिथि मटकनक हृदयमे अपन बेटाक पढ़ैक आकर्षण छलनि।

चाह पीबि हीरानन्द झोरामे धोती-तौनी लऽ, दुनू गोटे गप-सप करैत बिदा भेलाह। गप-सपक क्रममे बुझि पड़लनि जे स्कूल बनबैमे रमाकान्तक विशेष हाथ छन्हि। तैं गाम पहुँचतहि मटकनकेँ कहलखिन- "पहिने रमाकान्तसँ भेट कऽ लेबनि तखन दादी ऐठाम जाएब।"

दुनू गोटे रमाकान्त ऐठाम पहुँचलाह। साठि वर्षीय रमाकान्त गाएक नादिमे कुट्टी-सानी लगबैत रहथि। दलानपर दुनू गोटेकेँ देखि रमाकान्त हाँइ-हाँइ हाथ धोय, लग आबि बैसैले कहलखिन। हीरानन्द चौकीपर बैसलाह मुदा मटकन ठाढ़े रहल। मटकनकेँ रमाकान्त कहलखिन- "तूँ आगू बढ़ि जाह। हम दुनू गोटे पाछूसँ अबैत छी। जहन मास्टर सहाएब दुआरपर ऐला तँ बिना जलखइ करौने कोना जाए देबनि।"

मटकन आगू बढ़ि दादीकेँ सभ समाचार सुना देलकनि। समाचार सुनि दादीक मन खुशीसँ नाचि उठलनि। दादीक मनमे हुअए लगलनि जे आब गामक बच्चा अन्हारसँ इजोत मुहे बढ़त।

जलखै कऽ चाह पीबि दुनू गोटे दादी ऐठाम चललथि। दादीक घर थोड़बे हटल। रस्तामे रमाकान्तक मनमे अबै लगलनि जे स्कूल तँ व्यक्तिगत संस्था नहि छी। सामाजिक छी। सामाजिक संस्थामे सबहक सहयोग हेबाक चाहिऐक। धन्यवाद भौजीकेँ दैत छिअनि जे अपन सभ सम्पति समाजकेँ दऽ रहल छथि। मुदा हमरो सबहक तँ किछु दायित्व होइत अछि। तँ एहि लेल किछु करब जिम्मा भऽ जाइत अछि। मास्टर साहेबक भोजन आ रहैक जोगार हम कऽ देबनि। दरमाहा रुपमे खेतक उपजा हेतनि आ समाजक सभ मिलि कऽ जँ स्कूलक घर बना दै तँ सर्वोत्तम होएत। एते बात मनमे नचितहि छलनि आकि दादी ऐठाम पहुँचि गेलाह। दादीकेँ रमाकान्त भौजी कहथिन। किएक तँ समाजिक संबंधमे दादीक पतिसँ भैयारी रहनि। दादीयो मास्टर सहेबक रस्ता देखैत छलीह। भौजी ऐठाम पहुँचतहि रमाकान्त मटकनकेँ कहलखिन- "मटकन, स्कूल गामक एकटा पैघ संस्था छी। तँ समाजो लोककेँ खबरि दहुन आ सभ मिलिकेँ बिचारि आगूक डेग उठाएब। ओना भौजीक तियागक प्रशंसा जते कएल जाए कम हएत। जहि सम्पतिक लेल लोक नीचसँ नीच काज करैले उतरि जाइत अछि, ओहि सम्पतिक तियाग भौजी कऽ रहल छथि। जखन मास्टर साहेब आबिये गेल छथि तखन हड़बड़ करैक जरुरति नहि। अखन सौंसे गाममे सभकेँ कहि दहुन आ बेरमे सभ एकठाम बैसि विचारि लेब।"

बेर टगि गेल। समाजक सभ एका-एकी अबए लगलाह। सभक मनमे जिज्ञासा रहनि। तँ सभ विशेष उत्सुक रहथि। सबहक बीचमे रमाकान्त कहलखिन- "समाजक सभ जनिते छी जे भौजी अपन सभ सम्पति बच्चा सबहक लेल दए रहल छथि। जाहिसँ हमरे अहाँक कल्याण होएत। मुदा हमरो अहाँक दायित्व होइत अछि जे हमहूँ सभ किछु भागीदार बनी। जाधरि हम जीबैत रहब ताधरि शिक्षकक रहैक आ भोजनक प्रबंध करैत रहबनि। अहाँ सभ स्कूलक घर बना दियौक।"

रमाकान्तक विचारक सभ थोपड़ी बजा समर्थन कऽ देलकनि। मुस्कुराइत हीरानन्द कहलखिन- "घर बनैमे किछु समए लगत, तहि बीच अहाँ सभ अपन-अपन बच्चाकेँ पठाउ। हम पढ़ाइ शुरु कऽ देब।"

मास्टरो साहेबक विचारकेँ सभ थोपड़ी बजा समर्थन कऽ देलकनि। थोपड़ी बन्न होइतहि दुखिया ठाढ़ भऽ अपन विचार रखैत बजए लगल- ''खेती करैले कत्तऽ सँ हर-जन अनताह। जते बोनिहार छी सभ मिलि कऽ खेती कऽ देबनि। किएक तँ जहिना मास्टर साहेब हमरा सबहक सेवा करताह तहिना तँ हमहूँ सभ मिलिकेँ हुनकर सेवा करबनि।''

३

छह माससँ सोनेलालक स्त्री सुगिया अस्सक छथि। परोपट्टाक डॉक्टर, वैद्य, हकीम ओझा-गुनी थाकि गेल मुदा सुगियाक रोग एक्कैसे होइत गेलै, जे उन्नैस नहि भेलैक। फेदरति-फेदरतिमे सोनेलाल पड़ल। दिन-राति एक्को क्षण मन चैन नहि। कखनो डॉक्टर एहिठाम जाइत, तँ कखनो दवाइ आनए बजार जाइत छलाह। कखनो बच्चाले दूध आनए जाइत, तँ कखनो माल-जालकेँ खाइ-पीबैले दैत छलाह। अपना खाइयो-पीबैक सुधि नहि रहैत छलनि। कखनो मनतरियाकेँ बजा अनैत, तँ कखनो साँढ़-पाराकेँ रोमएले खेत जाइत छलाह। स्त्री मरैक ओते चिन्ता नहि जते तीन बेटीपर सँ भेल चारिम बेटाक। कोरैले बेटा जनमै काल सुगियाकेँ दुख पकड़ि लेलकनि। बच्चा जनमै काल तेहेन समए भऽ गेल छलैक जे सोनेलाल डॉक्टर एहिठाम नहि जा सकलाह। एक तँ जाड़क मास, दोसर अनहरिया राति। कनिये-कनिये पछबा सिहकी दैत आ बरखा बुन्न जेकाँ टप-टप गाछ सभपर सँ पालाक बुन्न खसैत छलैक। समए देखि सोनेलाल बेवस भऽ गेलाह। पलहनिक घर लगमे रहितहुँ बजबए गेल नहि भेलनि। डरो होइन जे हम ओमहर जाएब आ एम्हर हिनका किछु भऽ जाइन। गुप-गुप अन्हार। हाथ-हाथ नहि सुझैत छलैक। विचित्र संकटमे सोनेलाल पड़ि गेलाह।

जहियासँ बच्चाक जन्म भेलै आ स्त्री बीमार पड़लनि, तहियासँ सोनेलालक कोनो दशा बाकी नहि रहलनि। मुदा सोनेलालो हिम्मत नहि हारलनि। जे क्यो जे दवाइ वा प्रतिकारक कोनो वस्तुक नाम कहनि ओ आनि सोनेलाल स्त्रीकेँ देथिन। अंतमे पाँच कट्ठा खेत पाँच हजारमे भरना लगा सोनेलाल लहेरियासराय जाइक विचार कऽ लेलक। बच्चो सभ छोट-छोट, तँ घरो आ बाहरो सम्हारैक लेल आदमीक जरुरत भेलनि। घर सम्हारैले सारि आ लहेरियासराय जाइक लेल बहीनकेँ बजौलनि। स्त्रीक दूध सुखि गेलनि। तँ बच्चाकेँ बकरीक दूध उठौना केने रहथि। बहीनोक छोटका बच्चा नमहर भऽ गेल छलैक। तँ ओकरो दूध सुखि गेल छलैक। मुदा बच्चाक दशा देखि बहीन मसुरी दालिक झोरो खाए लगली आ बच्चोकेँ छाती चटबै लगलीह, जहिसँ कनी-कनी दूध पोनगए लगलनि।

लहेरियासराय जाइक तैयारीमे सोनेलाल लगि गेल। मालक घरमे टांगल खाटकेँ उतारि झोल-झार झाड़ै लगला। खाटक झोलो साफ केलक आ कतौ-कतौ जे जौर टूटल रहै, ओकरो जोड़ि-जोड़ि बन्हलक। बहीनकेँ सोनेलाल कहलक- ‘‘दाइ, नुआ बिस्तर आइये खीचि लाए, भोरके गाड़ी पकड़ि कऽ चलैक छह। दस दिन जोकर चाउरो-दालि लइये लेब। चाउर तँ कोठियेमे छह, दालि दड़रै पड़तह। सब ओरियान आइये कऽ के राखि लाए।’’

बहीन- ‘‘भैया, तोहर कोन-कोन कपड़ा साफ कए देबह ?’’

"दाइ, एक जोड़ धोती, अंगा आ चद्दरि हम्मर आ तूँ अपनो कपड़ा खीचि लीहह। अखन तँ एकटा धोती पहिरनहि छी। अलगन्नीपर धोती छह, ओकरा अखने खीचि दहक जहिसँ नहाइ बेर तकमे सुखि जाएत। नहा कऽ ओकरा पहीर लेब आ पहिरलाहा धोतीकेँ खीचि लेब।"

सोनेलालक सारि सेहो लगेमे ठाढ़। सारिकेँ कहलखिन- "अहाँ दुआर-दरबज्जासँ कतौ बाहर नै जाएब। अंगने-दुआरमे बच्चो सभकेँ राखब आ मालो-जालकेँ खाइ-पीबैले देबइ। समए साल खराप अछि, तोहूमे अइ गाममे देखते छिऐ जे नव कबरिया छौँड़ा सभ भांग-गाँजा पीबि लेत आ अनेरो लोककेँ गरिअबैत रहत। जँ कियो उकट्ठे कऽ दिअए।"

बहीन कोठीसँ मसुरी आ चाउर निकालि, अंगनेमे बिछानपर सुखैले देलक। नवकुट्टिये चाउर, तँ सुरा-फड़ा नहिये लागल छलैक। बहीन कपड़ा खिचए गेलि आ सारि मसुरी दड़रए लगली। सोनेलाल खाट ठीक कऽ दूटा बरहा दुनू भागक पाइसमे बन्हलनि। कपड़ा खीचि बहिन सोनेलालकेँ पुछलक- "भैया, कत्ते चाउर-दालि लऽ जेबहक?"

सोनेलाल- "दाइ, दुइये गोरे खेनिहार रहब ने, तै हिसाबसँ चाउरो आ दालियो लऽ लेब। तीमन-तरकारी ओतै कीनब।"

बहीन- "भैया, नून तँ ओतौ कीनि लेब मुदा मिरचाइ, हरदि आ कड़ू तेल एतै-गामेसँ नेने जाएब। एकटा थारी, एकटा लोटा आ दुनू छोटकी डेकची सेहो लइये लेब। डेकचियेमे सभ समान लऽ लेब, किएक तँ फुट-फुट कऽ लेलासँ अनेरे नमहर मोटरी भऽ जाएत। खाइयोक चीज-बौस रहत आ लत्तो-कपड़ा रहत, मुदा तैयो मोटरी नम्हरे भऽ जाएत।"

सोनेलाल बाजल - "मोटरी नम्हरे हैत तँ की करबै। जखैन गारामे ढोल पड़ल अछि तखन की करबै।"

लहेरियासराय जाइक बहीन तैयारियो करै आ मने-मन सोचबो करै जे भगवान भारी बिपतिमे भैयाकेँ फँसा देलखिन। जँ कहीं भौजी मरि जेतै तँ भैया फटो-फन्नमे पड़ि जाएत। असकरे की करत? बच्चो सभ लेधुरिये छै। कना खेती सम्हारत, धिया-पूताकेँ देखत आ माल-जालकेँ देखत। हे भगवान एहेन बिपति सात घर मुद्दइयो रहै ओकरो नइ दिहक। हमहीं की करबै? हमहूँ तँ असकरुए छी। हमरो चारिटा धिया-पूता, माल-जाल अछि। छी अइठीन आ मन टांगल अछि गामपर। मुदा एहेन बेरमे जँ भैयोकेँ नै देखबै तँ लोक की कहत। लोके की कहत? अपने मनमे केहेन लागत?

साँझ परितहि सोनेलाल टीशन जाइले दूटा जन ताकैले गेल। ओना तँ अपनो दियाद-बाद अछि मुदा बेरपर ककर के होइ छै। अचताइत-पचताइत सोनेलाल फुदिया ऐठाम पहुँचल। फुदियाक जेहने नाम तेहने काज। सोनेलालकेँ देखितहि फुदिया पुछलक- "किमहर-किमहर ऐलह, भाय?"

"तोरेसँ काज अछि।"

"की ?"

"काल्हि, भोरका गाड़ी पकड़ब। रेखिया माएकेँ लहेरियासराय लऽ जेबै। अपनेसँ तँ चलै-फिरै वाली नइ अछि। खाटपर लऽ जाए पड़त। तँ दू गोटेक काज अछि।"

"तोरा जँ हमर खूनक काज हेतह, हम सेहो देबह। तोहर उपकार हम जिनगी भरि नइ बिसरब। हमरा ओहिना मन अछि जे बेटी बिदागरी करैले तीन दिनसँ जमाए बैसल रहथि आ कपड़ा दुआरे बिदागरी नइ करियैक। मगर जहिना आबि कऽ तोरा कहलियह तहिना तोहूँ रुपैआ निकालि कऽ देने रहह। एहेन उपकार हम बिसरि जाएब।"

"समाजमे एहिना सबहक काज सभकेँ होइ छै आ होइत रहतै। जँ ई तोरापर भरोस छल तँ ने एलौं। भोरेमे गाड़ी छै। तँ गाड़ी अबैसँ एक घंटा पहिने घरपर सँ बिदा हैब।"

"बड़-बढ़िया! चारिये बजेमे हमरा सभ दिन निन्न टुटि जाइए। हम दुनू भाँइ चलि अएबह। तोहूँ अपन तैयारीमे रहिहऽ। भऽ सकैए जे कहीं निन्न नहि टूटए तँ एक लपकन चलि अबिहह।"

फुद्दी एहिठामसँ आबि सोनेलाल बहीनकेँ पुछलक- "दाइ, सभ चीज एक ठीन सरिया कऽ रखि लाए, नै तँ जाइ काल हरबड़मे छुटि जेतह।"

सोनेलालक बात सुनि बहिन मने-मन सोचै लगल जे कोनो चीज छुटि तँ ने गेल। बहीन भाइकेँ पुछलक- "भैया, एक बेर फेरसँ सभ चीजक नाम कहि दाए। अखने मिला कऽ सरिया लेब।"

दुनू भाए-बहीन एक-एक कऽ कऽ सभ वस्तुक नाम लेलक। सभ वस्तु देखि सोनेलाल बहीनकेँ कहलक- "दाइ, चारि बजे उठैक अछि, जँ भानस भऽ गेलह तँ अखने खाइ लेल दऽ दाए।"

हाथ-पएर धोए सोनेलाल खाइले बैसल। चिन्तित मन, तँ खाएले ने होए, मुदा तैयो जी जाँति कऽ कहुना-कहुना चारि कौर खेलक। खा कऽ मालऽ घर गेल। माल-जालकेँ खाइले दऽ, आबि कऽ सुति रहल। बहीन खा कऽ बच्चाकेँ छाती लगा सुति रहल। सुतले-सुतल बहीन भौजाइकेँ पुछलक- "भौजी, मन नीक अछि की ने?"

"हँ ऽऽ।"

ओछाइनपर पड़ल सोनेलालकेँ निने ने होए। बिचित्र द्वन्द्वमे पड़ल रहए। एक दिशि भोरे उठै दुआरे सुतै चाहैत, तँ दोसर दिस पत्नीक चिन्ता नीन आबै ने दैत। कछ-मछ करैत। कनिये कालक उपरान्त हाँफी भेलनि। निन एलनि। निन्न अबितहि चहा कऽ उठि बहीनकेँ पुछलखिन- "दाइ, भोर भऽ गेलै?"

बहीनो जगले छलि, बाजलि- "भैया, अखने तँ खा कऽ कर देलहुँहेँ। लगले भोर कना भऽ जएतैक।"

फेर दुनू गोटे सुति रहल। तीनि बजे दुनू भाँइ फुदिया आबि डेढ़िया परसँ सोर पाड़लक- "सोनेलाल भाय, हौ सोनेलाल भाय, अखैन तक सुतले छह। उठह-उठह, भुरुकुवा उगि गेलै।"

फुदियाक आवाज सुनि दुनू भाए-बहीन धड़फड़ा कऽ उठल। आँखि मिरितहि सोनेलाल बाहर निकलि फुद्दीकेँ कहलक- "की कहिह, बड़ी रातिमे नीन भेल। भने तू आबि कऽ जगा देलह। हम चीज-बौस निकालै छी आ तू खाटकेँ सुढ़िआबह।"

अन्हारक दुआरे बहीन दूटा डिबिया नेसलक। एकटा डिबिया ओसारक खुटा लग रखलक आ एकटा घरमे। खाट निकालि फुद्दी पाइसमे बान्हल बरहाकेँ अजमा कऽ देखलक जे सक्कत अछि आकि नहि। दुनू कात पाइसमे बान्हल बरहाकेँ देखि फुद्दी सोनेलालकेँ कहलक- "भाय, बरहा तँ ठीक अछि। बाँसक टोन कहाँ छह?"

बाँसक टोन घरक पँजरेमे राखल। टोनकेँ ओंगरीसँ देखबैत सोनेलाल कहलक- "होइबएह छह।"

टोन आनि फुद्दी डिबियाक इजोतमे देखै लगल जे गिरह सब छीलल छै आकि नहि। छीलल छलै। खाटपर बिछबैले सोनेलाल एक पाँज पुआर आनि फुद्दीकेँ कहलक- "तोरा अटिअबैक लूरि छह, कनी पुआर सरिया कऽ चौरस कऽ कऽ बिछा दहक।"

पुआरकेँ सरिया फुद्दी कहलक- "भाइ, अइपर बिछेबहक की?"

सोनेलाल घरसँ शतरंजी आ सिरमा आनि फुद्दीकेँ देलक। बिछान सरिया फुद्दी बाजल- "भाय, रस्तामे कान्ह बदलै काल, कहीं भौजी गिरि-तिरि नहि पड़थि। तँ पँजरोमे दुनू भागसँ डोरी बान्हि देबइऽ ?"

फुद्दीक विचार सोनेलालकेँ जँचल। कने गुम्म भऽ बाजल- "की कहिह फुद्दी, दुख पड़लापर मनो बौआ जाइ छै। तोहूँ की अनारी छह जे नइ बुझबहक। जे नीक बुझि पड़ह, से करह।"

खाटपर रोगीकेँ चढ़ा, दुनू भाँइ फुद्दी कान्हपर उठौलक। कान्हपर उठबितहि सोनेलालकेँ मन पड़ल, कहलक- "फुद्दी, घरमे तँ धिये-पुते रहत, कियो चेतन नहिये अछि। साइरियो आइलि अछि, ओहो अनठिये अछि। तँ, तूँ रातिकेँ एतै खैइहह आ सुतिहह।"

'बड़-बढ़िया' कहि फुद्दी आगू बढ़ल। चाउर-दालि आ बरतन-बासनक मोटरी माथपर लऽ सोनेलाल निकलल। बच्चाकेँ छाती लगौने बहीनो निकललीह। डेढ़ियापर अबितहि सुगिया खाटेपर सँ बाजलि- "कनी अँटकि जाउ।"

फुद्दी ठाढ़ भऽ पुछलक- "किअए रोकलहुँ?"

खाटे परसँ सुगिया बजलीह- "हे सौध-गुरु, अगर निकेना घुरिकेँ आएब तँ पचास मुरतेक भनडारा करब।"

फुद्दी खाट उठा बिदा भेल। रस्तामे केयो किछु नहि बजैत रहथि। मने-मन सभ सब रंगक बात सोचैत रहथि। फुद्दी सोचैत जे भगवानो केहेन बेइमान अछि जे सोनेलाल भाय सन सुधा आदमीकेँ एहेन बिपति देलखिन। सोनालाल सोचैत जे तीन बेटीपर बेटा भेल, जँ घरवाली मरि जाएत तँ बेटो मरि जाएत। चुमौन

करब तहिसँ बेटाक कोन गारंटी हएत। जँ कहीं बेटिये भेल तँ खानदानोक अंत होएत आ जिनगी भरि अपनो विआहे दानक बनर-फाँसमे पड़ल रहब।

बहीन सोचैत जे जँ कहीं भौजी मरि जेतीह तँ जिनगी भरि भैयाकेँ दुखे-दुख होइत रहतै।

स्टेशन पहुँचि सोनेलाल मोटरी रखि गाड़ीक भाँज लगबै गेल। टिकट कटैत देखि बुझलक जे गाड़ी अबैमे लगिचा गेल अछि। हमहूँ टिकट कटाइये लइ छी। टिकट कटौलक। कनिये कालक बाद गाड़ी आएल। दु गोटे फुद्दी आ सोनेलाल-तीनू गोटे सुगियाकेँ गाड़ीमे चढ़ौलनि। सोनेलाल गाड़ीमे उपरेमे रहलाह। मोटरी उठा कऽ फुद्दी देलकनि। मोटरी रखि सोनेलाल बहीनक कोरासँ बच्चाकेँ लेलनि। बहिनो चढ़लीह। गाड़ी खुजितहि दुनू गोटे फुद्दी खाट उठा घर दिशि बिदा भेल।

गाड़ी दरभंगा पहुँचल। छोटी लाइन दरभंगे तक चलैत। तँ गाड़ी दू घंटा उपरान्त फेर घुरि कऽ निरमलिये जाएत। गाड़ीसँ यात्री सभ उतरए लगलाह। मगर सोनेलाल सबतुर बैसले रहलथि। मनमे कोनो हड़बड़ी नहिये रहनि, जखन सभ उतरि गेलाह तखन सोनेलाल सीट परसँ उठि बहीनकेँ कहलनि- "दाइ, तू एतै रहह, हम कोनो सबारी भजिऔने अबै छी।"

कहि सोनेलाल गाड़ीसँ उतरि, प्लेटफार्मसँ निकलि बाहर एकटा टेम्पू लग पहुँचलाह। ड्राइवर निच्चामे ठाढ़ भऽ पसिन्जर सभकेँ देखैत छल। सिरसिराइत सोनेलाल ड्राइवरकेँ कहलखिन- "भाय, हमरा डाकडर ऐठाम जेबाक अछि, चलबह?"

सोनेलालक बोलीसँ ड्राइवर बुझि गेल जे देहाती आदमी छी, तँ एना बजैत अछि। मुदा सोनेलालक प्रति ड्राइवरक आकर्षण बढ़ि गेलनि असथिरसँ ड्राइवर पुछलखिन- "रोगी कहाँ छथि।"

"गाड़ियेमे।"

"बजौने अबिअनु।"

"अपने पाएरे अबैवाली नइ छथि। पकड़िकेँ आनै पड़त।"

गाड़ीकेँ सोझ कऽ ड्राइवर सोनेलालक संग प्लेटफार्मपर आएल। गाड़ी लग पहुँचि ड्राइवर रोगी आ समान देखि मने-मन विचारलनि जे एक आदमीक काज आरो पड़त। प्लेटफार्म दिशि नजरि उठा कऽ हियाबै लगल। गाड़ी साफ करै लेल दू गोटेकेँ अबैत देखि जोरसँ ड्राइवर बाजल- "भैया"।

भैया सुनि झाड़ूबला आँखि उठौलक तँ ड्राइवरकेँ देखलक। ड्राइवरकेँ देखितहि लफड़ि कऽ ड्राइवर लग आएल। ड्राइवर कहलकै- "भाय, एकटा दुखित महिला अइ कोठलीमे छथि, हुनका उतारि कऽ टेम्पूमे बैसाए दिअनु।"

झाड़ू राखि दुनू झाड़ूओबला आ ड्राइवरो सुगियाकेँ उतारि टेम्पू दिशि बढ़लाह। सोनेलाल मोटरी लेलनि। आ बहीन बच्चाकेँ कन्हा लगा चललीह। सुगियाकेँ चढ़ा कऽ झाड़ूबला गाड़ी साफ करैले घुरै लगल। दुनू झाड़ूबलाकेँ रोकि सोनेलाल दसटा रुपैआ निकालि दिअए लगलखिन। रुपैआ देखि, अधबएसू

झाड़ूबला बाजल- "भाय हमहूँ रेलवेमे सरकारी नोकरी करै छी। दरमाहा पबै छी। अहाँक मदति केलहुँ। अखन जइ मुसीबतमे अहाँ छी, ओहिमे हमरा देहो आ रुपैयोसँ मदति करक चाही। मुदा गरीब छी, कहुना-कहुना कमा कऽ गुजर कए लैत छी। किएक तँ अहूँ बुझिते हेबै जे सभ दुख गरीबेकेँ होइ छै। धनीक लोक सोनाक मंदिर-मुरुतकेँ खोआ-मलाइ चढ़ा धरम करैत अछि। हमर भगवान यैह मरल-टूटल लोक छथि। हम सेवा केलहुँ। भगवान करथि जे हँसी-खुशीसँ अहाँ घर जाइ।"

झाड़ूबलाक बात सुनि सोनेलाल अचंभित भऽ गेलाह जे जकरासँ लोक छुति मानैत अछि, ओकर आत्मा कतेक पवित्र छै।

टेम्पू आगू बढ़ल। थोड़े दूर गेलापर सोनेलाल ड्राइवरकेँ कहलखिन- "डरेबर सहाएब, हम अनभुआर छी। कहियो ऐठाम नइ आएल छी। अहाँ अइठीन रहै छी। सबटा बुझल-गमल अछि। तेहेन डाकडर लग चलू जे हमरा रोगीकेँ छुटि जाए।"

"बड़-बढ़िया।"- ड्राइवर बाजल।

मने-मन ड्राइवर सोचए लगल जे अस्पतालमे भरती करौनाइ नीक नहि हेतनि। एक तँ अस्पतालमे बेवस्थो बढ़िया नहि छैक, दोसर जेकरे लागि-भागि छै तेकरे सभकेँ सभ सुविधो भेटैत छैक। तँ सभसँ बढ़िया डॉक्टर बनर्जी लग लऽ चलिअनि। डॉक्टर बनर्जी रिटायर भऽ अपन घरो आ क्लीनिको बनौने।

बारह बजि गेल। डॉ. बनर्जीक पहिल पाली आठ बजे भिनसरसँ बारह बजे होइत आ दोसर पाली चारि बजेसँ सात बजे साँझ धरि होइत छलनि। सभ रोगीकेँ देखि डॉ. बनर्जी डेरा जेबाक तैयारी करिते रहथि, टेम्पूकेँ ड्राइवर सोझे फाटकसँ भीतर ओसार लग लऽ गेल। टेम्पू देखि डॉ. बनर्जी फेर बैसि रहलाह। टेम्पू रोकि ड्राइवर उतरि कऽ सोझे डॉ. बनर्जी लग जा कहलकनि- "डॉक्टर साहेब, रोगी अपनेसँ चलै-फिरैवाली नइ छथि, तँ पहिने एकटा डेरा दिअनु।"

आँखिक इशारासँ डॉ. बनर्जी कम्पाउण्डरकेँ कहलखिन। बगलेमे अपन डेरा रहनि। कम्पाउण्डर जा कऽ एकटा कोठरी खोलि कुँन्जी सोनेलालकेँ दऽ देलकनि। कम्पाउण्डर घुरि कऽ आबि, नोकरकेँ संग कऽ स्ट्रेचरपर सुगियाकेँ लऽ जा दुजनियाँ चौकीपर सुता देलकनि। स्ट्रेचर राखि कम्पाउण्डर डॉ. बनर्जीकेँ कहलकनि- "सब व्यवस्था कए देलिअनि।"

डॉ. बनर्जी आगू-आगू आ कम्पाउण्डर, ड्राइवर आ सोनेलाल पाछू-पाछू। सुगियाकेँ देखितहि डॉक्टरकेँ रोग चिन्हा गेलनि। मुदा आरो मजबूतीक लेल सुगियाकेँ पूछए लगलखिन। हताश मन सोनेलालक। मूह सुखाएल। आँखि नोराएल। बहीनक आँखिसँ नोरक ठोप खसैत। डॉ. बनर्जी कम्पाउण्डरकेँ सूइ लगबैले कहलखिन। कम्पाउण्डर सूइ आनए गेल। सोनेलाल डॉ. बनर्जीकेँ पुछलखिन- "डागडर सहाएब, रोगीक दुख छुटतै की नै?"

सोनेलालक प्रश्न सुनि डॉ. बनर्जीक हृदय पघलि गेलनि। उत्साह दैत सोनेलालकैँ कहलखिन- "चौबीस घंटाक भीतर रोगी टहलए-बुलए लगतीह। अखन एकटा सुइया दैत छियनि। पाँच बजे तक सुतल रहती। उठेबनि नहि। अपने निन्न टुटतनि। निन्न टुटलापर कुड़रा-आचमन करा चाह बिस्कुट देबनि।"

ताबे कम्पाउण्डर आबि सुगियाकेँ सूइ लगौलक। सूइ पड़ितहि सुगियाकेँ निन्न आबि गेलनि। डॉ. बनर्जी सोनेलालकेँ कहलखिन- "आब अहाँ सब खाउ-पीबू गऽ।"

डॉक्टर चलि गेलाह। ड्राइवर सोनेलालकेँ किछु-किछु बुझबैत कहलखिन- "पानिक कल बगलेमे अछि। भानस करैले चुल्हियो अछिये। अपने भानस करब। बाहर चलू, दोकान देखा दै छी। अइसँ बाहर नइ जाएब। लुच्चा लम्पट बेसी अछि। जेबीसँ पाइ निकालि लेत। तँ जतबे काज हुअए ततबे पाइ मुट्ठीमे नेने जाएब आ सामान कीनि लेब। आब हम जाइ छी। ऐठाम कोनो चीजक डर नइ करब। सभ भार डॉक्टर साहेबकेँ छनि।"

पाँच बजितहि सुगिया आँखि खोललक। सुगियाक लगेमे सोनेलालो आ बच्चोकेँ कोरामे नेने बहीनो बैसल। आँखि खोलितहि सुगिया सुतले सुतल बाजलि- "किछु खाइक मन होइए।"

सुगियाक बात सुनितहि सोनेलालकेँ मन पड़ल जे डॉक्टरो सहाएब कहने रहथि। उठि कऽ चाह-बिस्कुट आनि सुगिया लग रखलक। कलपर सँ लोटामे पानि आनि कऽ कुड़रा करैले देलखिन। बैसले-बैसल सुगिया कुड़रा कए चाहेमे डुबा-डुबा बिस्कुट खेलनि। चाह-बिस्कुट खा सुगिया मूह पोछलक। सुगियाक मूह पोछितहि सोनेलाल पुछलक- "मन केहेन लगैए।"

- "कनी हल्लुक लगैए।"

सोनेलालो आ बहिनोक मनमे खुशी आएल। मने-मन बहीन भगवानकेँ कहए लगलनि जे हे भगवान कहुना भौजीकेँ नीक कऽ दिअनु।"

सुगियाकेँ सुधार हुअए लगल। तेसर दिनसँ सुगिया बुलए-टहलए लगलीह। दू बेर दिनमे डॉक्टरो साहेब आबि-आबि देखथि। सभ तरहक तरद्दुत सोनेलाल करैले हरदम तैयार।

दसम दिन सुगियाकेँ डॉक्टर साहेब छुट्टी दऽ देलखिन। सोनेलाल कम्पाउण्डरसँ सभ हिसाब केलनि। जते हिसाब सोनेलालकेँ भेलनि तेहिसँ पाँच सए रुपैआ अधिक लऽ सोनेलाल डॉक्टर साहेबक आगूमे रखि देलकनि। रुपैया गनि डॉक्टर साहेब फजिलाहा रुपैया घुमबैत कहलखिन- "जोड़ैमे पाँच सौ बेसी आबि गेल। ई पाँचो सए रखि लिअ।"

डॉक्टर साहेबक बात सुनि सोनेलाल कहलकनि- "गनैमे गलती नइ भेल। पाँच सए अहाँकेँ खुशनामा दै छी।"

खुशनामा सुनि डॉ. बनर्जी गुम्म भऽ गेलाह। मनमे एलनि जे बेचाराक बगए-बानि कहैत अछि जे पैंच-उधार कऽ कए आएल होएत, तखन देखू उद्‌गार। हमरा कोन चीजक कमी अछि जे एहि बेचाराक फाजिल पाइ छूबै। मन पड़लनि,

जमीनदारीक समयक पुनाह। जमीनदार सभ सालमे एक बेर पुनाह करैत छलाह। जमीनदारक कचहरीमे पुनाह होइत छलैक। पुनाह होइसँ पनरह दिन पहिने रैयत सभकेँ जानकारी दऽ देल जाइत छलैक। जमीनदार दिशिसँ मोतीचूरक लड़्डू बनाओल जाइत छलैक। एक रुपैआमे एक लड़्डू देल जाइत छलैक। रैयतोमे दू विचारक रैयत रहैत छल। एक तरहक ओ छल जकरा खाली अन्नेक आमदनी छलैक। ओहि तरहक रैयतक हालत कमजोर छलैक। मगर दोसर तरहक जे रैयत होइत छल ओकरा अन्नक संग-संग नगदो आमदनी छलैक। जेना कोना-कोनो जातिकेँ दूध-दहीक, तँ कोनो-कोनो जातिकेँ तीमन-तरकारीक। कोनो जातिकेँ पानक तँ कोनो-जातिकेँ छोट-छोट कोल्हु इत्यादि। पुनाह धर्मसँ जोड़ल शब्द अछि। धार्मिक भावना सबहक मनमे रहैत छलैक। तँ, एक-दोसरकेँ निच्चा देखबैक लेल मने-मन प्रतियोगिता करैत छल। एकटा लड़्डूक दाम मुश्किलसँ दू पाइ होइत छल होएतैक। किएक तँ आठ अने चिन्नी आ रुपैआमे चारि सेर खेरही वा आन कोनो अन्न, जेकर लड़्डू बनैत छलैक। प्रतियोगिता दू तरहक होइत छलैक। पहिल-व्यक्ति विशेषमे आ दोसर जाति-विशेषमे। लोक खुब खुशी रहैत छलै। गामे-गाम मलगुजारीसँ बेसी, पुनाहमे जमीनदार रुपैआ असुल कऽ लैत छलाह। जहि समाजमे मलगुजारीक चलैत लोकक खेत निलाम होइत छलैक, ओहि समाजमे पुनाहक नामपर लूट सेहो चलैत छलैक। वैह बात डॉ. बनर्जीकेँ मन पड़लनि। हँसैत डॉ. बनर्जी सोनेलालकेँ कहलखिन- "अहाँ, खुशी भऽ एहिठामसँ जा रहल छी, यैह हमर खुशनामा भेल। भगवान करथि परिवार फड़ै-फुलाए।"

तीनू गोटे गामक रस्ता धेलनि। बच्चाकेँ सुगिया कोरामे लेने आ बहीन बरतनक मोटरी माथपर लेने। खालिये देहे सोनेलाल दरभंगा स्टेशन आबि गाड़ी पकड़लनि।

अपना स्टेशनमे उतरि तीनू हँसी-खुशीसँ गाम दिसक रस्ता धेलक। रेलवे कम्पाउण्डसँ निकलि सुगिया सोनेलालकेँ कहलनि- "जाइ काल पचास मुरते सौधक भनडारा कबुला केने रही। कबुला-पाती उधार नइ राखक चाही। काल्हि खन ओहो कबुला पुराइये लेब।"

सोनेलालोक मन खुशी रहनि। चाउर-दालि घरेमे रहनि। रुपैयो किछु उगड़ले रहनि। मुस्कुराइत सुगियाकेँ कहलखिन- "काल्हि तँ भनडारा नहि सम्हरत। दही पौरैक अछि, हाटसँ तीमन-तरकारी, नोन-तेल आनै पड़त। चारि-पाँच दिनमे भनडारा कए लेब। अखन दाइयो आएले अछि।"

दाइक नाम सुनि बहीन बाजलि- "भैया, तेहने गड़ूमे पड़ि गेल छेलह तँ अपन सब कुछ छोड़िकेँ छिअह। तूँ नै बुझै छहक जे हमरो कियो दोसर करताइत नै अछि । काल्हि हम चलि जेबह।"

सोनेलालक मन गद्-गद्। जहिना चुल्हिपर चढ़ाओल पानि देल बरतनमे निच्चासँ आगिक ताव लगितहि निचला पानि गर्म भऽ उपर मुँहे उठैत, तहिना

सोनेलालक मन खुशीसँ नचैत रहनि। स्टेशनसँ थोड़ेके दूर एलापर सोनेलाल कहलक- "अहाँ दुनू गोरे अइठाम बैसू। लगले हम चीज-बौस किनने अबै छी।"

सुगियो आ बहिनो, रस्ते कातमे आमक गाछक निच्चामे बैसलीह। सोनेलाल स्टेशन दिशि बिदा भेल। स्टेशने कातमे आठ-दसटा दोकान छलैक। एकटा दोकान माछक, दोसर मुरगी आ अण्डाक, एकटा सुधा दूधक, एकटा चाहक, एकटा पानक आ पान-छहटा तरकारीक। सोनेलालक मनमे एलै जे पान-सात रंगक तरकारियो, दूधो आ राहड़िक दालियो कीनिये लेब। किएक तँ छह माससँ ने भरि पेट अन्न खेलहुँ आ ने कहियो मन असथिर रहल। तँ आइ राति अपनो सभ परिवार आ फुद्दियो दुनू भाँइकेँ न्योत दऽ खुआ देबनि। रेलवेक कम्पाउण्डमे जे तरकारी, दूध, माछ इत्यादिक दोकान छलैक ओ स्थायी नहि। साधारण छपड़ी टाँगि-टाँगि दोकान चलबैत अछि। क्यो दोकानदार रेलवेसँ दोकानक पट्टो नहि बनौने। स्टेशनेक स्टाफ, दोकानदारकेँ दोकान लगबै देने अछि, जहिसँ बट्टीक बदला सभकेँ परिवार जोकर तरकारी सभ दिन भऽ जाइत छलैक। जहिया कहियो रेलवेक अफसरक आगमन होइत छलैक, तहिसँ पहिनहि स्टाफ दोकानदार सभकेँ कहि दैत छलैक। अपन-अपन छपड़ी सभ हटा लैत छल।

दोकान आ रेलवेक बीच मोड़पर ठाढ़ भऽ सोनेलाल सोचए लगल जे दोकानमे जे राहड़िक दालि बिकाइत ओ अरबा रहैत अछि। तँ दालिकेँ उलबै पड़त। घरमे तँ लोक पहिनहि राहड़ि उला लैत अछि। बिनु उलौल राहड़िक दालि तँ खेसारिये जेकाँ होइत अछि। मुदा उलौलाक बाद आमील देल राहड़िक दालि तँ दालिये होइत। सभसँ नीक। लटखेना दोकान पहुँचि सोनेलाल एक किलो राहड़िक दालि, आधा किलो चिन्नी किनलक। दुनूक दाम दऽ तरकारीबला लग आबि सात-आठ रंगक तरकारी किनलक। तरै जोकर गोलका भाँटा-भाँटिन, गंगाकातक बड़का परोड़, हैदराबादी ओल टेबि कऽ कीनलक। दू किलो सुधा दूध सेहो लेलक। सभ समानकेँ गमछामे बान्हि, हाथमे लटकौने घुरि कऽ सुगिया लग आएल। गमछामे बान्हल समान देखि बहीन पुछलक- "भैया, की सभ कीनि लेलहक?"

बहीनक मनमे भेलनि जे धिया-पूता लेल भरिसक लाइ-मुरही कीनि लेलनि। मुदा मोटरी नमहर, तँ पुछलकनि। बहीनक बात सुनि सोनेलाल हँसैत बाजल- "दाइ, खाइ-पीबैक समान सभ किनलौं। आइ सभ परानी मिलि नीक-निकुत खाएब। बेचारा फुदियो, नोकर जेकाँ राति कऽ घरक ओगरबाही करैत हएत। तँ ओकरो दुनू भाँइकेँ नोत दऽ खुआ देबइ। तँ तीमन-तरकारी, दूध आ दालि कीनि लेलहुँ। भानस करै लेल तोहूँ तीनि गोटे (बहीन, स्त्री आ सारि) छेबे करह। एक्कोदिन तँ तोरो सभक मेजमानी होअए। दाइ, जते अनका भाइयोसँ सुख नहि होइत छै, तहिसँ बेसी तोरासँ भेल। तोहर उपकार जिनगीमे नहि बिसरब। भगवान तोरा सन बहीन सभकेँ देथुन।"

सोनेलालक बात सुनि गद्-गद् होइत बहीन उत्तर देलकनि- ''भैया, हम अपन काज केलहुँ। तोहर उपकार की केलियह। एहेन बेरपर जे तोरा नै देखितियह तँ हमरा सन बहीन ककरो रहिये कऽ की हेतै।''

बहीनक बात सुनि सुगिया पतिकेँ कहलनि- ''दाइ तँ औगुताइ छथि। कहै छथि जे काल्हि भोरे चलि जाएब। एकोटा धराउ घरमे साड़ियो ने अछि जे देबनि। बिना साड़ी देने कोना जाए देबनि। केहेन हएत?''

भौजाइक बात सुनि मुस्की दैत ननदि बाजलि- ''भौजी, चारु बेटा-बेटीक विआहमे तँ हमरा चारि जोड़ साड़ी रखले अछि। मुदा एहेन बेरिमे साड़ीक कोन काज छै। अपने तँ भैया पैंच-उधार लऽ कऽ काज चलौलक अछि। तइपर सँ हमरोले करजा करत। हमरा जँ दियौ चाहत तँ नै लेबै।''

घरपर अबितहि परिवारसँ गाम धरि खुशीक बर्खा बरिसए लगल। तीनू बेटी सुगियाक गरदनिमे लटपटा गेल। सुगिया बच्चाकेँ कोरामे लऽ लऽ मूह चुमए लगल। जहिना जाड़क मासमे गाछ-बिरीछ पालाक मारिसँ ठिठुर जाइत, मुदा गरमीक धबितहि नव रुप धारण करैत अछि, तहिना सभकेँ भेल। छह मासक तबाही, सोग, निराश-सोनेलालकेँ छोड़ि पड़ा गेल। पास-परोसक जनिजाति सभ आबि-आबि सुगियाकेँ देखबो करैत आ बीमारीक समयक खिस्सो सुनैत छलीह। एक्के-दुइये सौसेँ अंगना धियो-पूतोक आ जनिजातियोक भीड़ हटल। तीनू गोटे भानसक जोगारमे लागि गेलीह। कते दिनसँ सोनेलाल भरि इच्छा नहाएल नहि छल। साबुन लऽ कऽ नहाएले गेल।

भानस भेलैक। सभ कियो भरि मन खेलनि। खाइते सभकेँ ओँघी अबै लगलनि। सभ जा-जा कऽ सुति रहलाह।

पत्रीक संग सोनेलालकेँ लहेरियासराय जैतहि गाममे चर्च चलए लगल छल। एक दिशि जनिजाति सभ सोनेलालक बाहवाही करैत छलीह तँ दोसर दिशि मर्दा-मर्दीक बीच इलाजक खर्चक चर्च चलए लगल। सौसेँ गाम दुनू परानी सोनेलालेक चर्च चलैत रहए। सबेरे स्कूलमे छुट्टी दऽ खसल मने हीरानन्द चलि ऐलाह। सबेरे हीरानन्दकेँ आएल देखि रमाकान्त पुछलखिन- ''सबेरे स्कूल बन्न कए देलिऐक?''

ओना रमाकान्तोकेँ सोनेलालक संबंधमे बुझल छलनि मुदा जहि गंभीरतासँ हीरानन्द सोचैत रहथि, ओहि गंभीरतासँ ओ नहि सोचैत छलाह। तँ मनमे कोनो तेहेन विचार नहि छलनि। हीरानन्द उत्तर देलखिन- ''बच्चा सभकेँ पढ़बैमे मोन नहि लगैत छल, तँ छुट्टी दऽ देलिऐक।''

''किअए नहि पढ़बैमे मन लगैत छल।''

चिन्तित भऽ हीरानन्द कहलखिन- ''एक तँ बाढ़िक मारल बेचारा सोनेलाल ताहिपर सँ बीमारीक। तेहेन चपेटमे पड़ि गेला जे कोनो कर्म बाकी नहि छन्हि। यैह बात मनमे घुरिआए लगल। पढ़बैमे एक्को रत्ती नीके नहि लगैत छलए।''

सोनेलालक बात सुनितहि रमाकान्तक मन मौलाए लगलनि। मौलाइत-मौलाइत जहिना हीरानन्दक मन रहनि तहिना भऽ गेलनि। पएरमे ठेस लगलापर

जहिना केयो मूह भरे खसैत आ छातीमे चोट लगैत अछि, तहिना रमाकान्तक हृदयमे मनक चोट लगलासँ भेलनि। मुदा जोरसँ नहि कुहरि चुप्पेचाप कुहरै लगलथि। मनमे एलनि, जहि गाममे चारि-चारिटा डॉक्टर छथि ओहि गामक लोक रोगसँ कुहरै, कते दुखक बात छी। ऐहने डॉक्टरकेँ लोक भगवान बुझि पुजनि कहाँ धरि उचित छी। जाहि पढ़ल-लिखल लोककेँ अपना गामसँ स्नेह नहि, अपन कुटुम्ब परिवार सर-समाजसँ स्नेह नहि छन्हि, अपने सुख भोगक पाछू बेहाल छथि। हुनका अनेरे दाइ-माए किअए छठियार दिन छातीमे लगा जीबैक असीरवाद देलकनि। फेर मोनमे एलनि, जहिना माल-जालकेँ डकहा बीमारी होइ छै, तहिना तँ मनुक्खोकेँ चटपटिया बीमारी होइ छैक। जे छनमे छनाँक कऽ दैत छैक। चारिटा बेटा-पुतोहू डॉक्टर हमरे छथि जँ कहीं अपने आकि महेन्द्रक माइयेकेँ ओएह चटपटिया बीमारी भऽ जाइन तँ की करताह ओ सभ हमरा।

मन घोर-घोर, बाके बन्न भऽ गेलनि।

तीन दिनक बाद सोनेलाल भनडाराक कार्यक्रम बनौलनि। खाइ-पीबैक सभ ओरियान दिल खोलि कऽ केलनि। तुलसीफुलक अरबा चाउर, राहड़िक दालि, एगारहटा तरकारी, दही-चिन्नीक नीक व्यवस्था केलनि।

गाममे दू पंथक साधू। पहिल पंथक महंथ रमापति दास आ दोसर पंथक गंगा दास। राम-जानकीक मंदिर रमापति दास बनौने छथि। दुनू साँझ पूजा करैत छथि। मुदा गंगादासकेँ किछु नहि। सेवकान दुनू गोटेकेँ छन्हि। आन-आन गाममे सेहो दुनू गोटेकेँ सेवक छन्हि।

सोनेलालक मनमे, छल-प्रपंचक मिसिओ भरि लसि नहि, तँ पच्चीस मुरते साधुक दल रमापति दासकेँ देलकनि आ पच्चीस मुरतेक दल गंगादासकेँ। दल देलाक बाद सोनेलाल दुआर-दरबज्जा चिक्कन-चुनमुन करए लगलाह। भानस करैक बरतन सभ माँजि-मूजि तैयार केलनि। खाइक लेल केराक पात काटि-धो कऽ सेहो रखलनि।

एक गाममे रहितहुँ दुनू पंथक बीच अकास-पतालक अंतर छलनि। पहिल पंथमे ऊँच जातिक बोलबाला जखनिकि दोसर पंथमे ऊँच जाति कम मुदा निम्न जाति बेसी। छूत-अछूतक कोनो भेद नहि। दिनुके भनडारा।

दोसर पंथक साधु सभ सबेरे आबि, चरण पखारि भजन शुरु केलनि। भजन शुरु होइतहि टोल-परोसक जनिजातियो आ धियो-पूता आबि कऽ सौँसे खरिहान भरि देलकनि। खरिहानेमे बैसारो केने रहथि। तीनटा भजन समाप्त भेलाक बाद रमापति दास चेलाक संग पहुँचलथि। संगमे सभ साधु रहथि। फरिक्केसँ दोसर पंथक साधु देखि रमापतिदास मने-मन जरए लगलथि। मुदा क्रोधकेँ दाबि दरबज्जापर पहुँचलथि। दरबज्जापर अबितहि रमापतिदास सोनेलालकेँ कहलखिन- ''हमरा सबहक बैसार फुटमे करु।''

रमापतिदासकेँ प्रणाम कऽ सोनेलाल दलान दिशि इशारा दैत कहलकनि- ''अपने सभ दरबज्जेपर बैसियौक।''

सोनेलालक विचार सुनि रमापति दास मने-मन सोचए लगलथि जे जँ अखन दोसर ठाम बैसार बनबैले कहबैक तँ धड़फरमे संभव नहि होएत। जँ झगड़ा करै छी तँ ककरासँ करु। बेचारा घरबारी की करत? घरवारीक लेल तँ जहिना हम दल देलाक बाद एलहुँ तहिना तँ ओहो सभ छथि। तँ जेहने हम सभ तेहने ओहो सभ। अगर ओहि साधु सभसँ कहा-कही करैत छी तँ दू धार्मिक पंथक बीच विवाद होएत। मुदा एहिठाम तँ भनडारा छी, पंथक नीक-अधलाक विवेचनक मंच नहि! इहो करब उचित नहि। जँ अपनाकेँ उन्नैस मानि लैत छी तँ कायरता होएत। विचित्र स्थितिमे रमापतिदास पड़ि गेलाह। गुम्म-सुम्म भेल रमाापतिदास दरबज्जा आ खरिहॉनक बीच खुट्टा जेँका ठाढ़। ने डेग आगू बढ़ैन आ ने पाछु होइन। जत्ते गोटे हमरा संग आएल छथि जँ हुनका सभसँ विचार पुछबनि आ ओ लोकनि हमरा मनक विपरीत विचार दैथि तखन की करब? आइ धरि तँ सेहो नहि केलहुँ। करब उचितो नहि। गुरु-चेलाक अन्तर समाप्त भऽ जाएत। रमापतिदासक मन औनाए लगलनि। चाइनपर पसीनाक रुप चमकलनि। ताबे कानपर रखनिहार हारमुनियमबलाक कान्ह अंगिया गेलैक, ओ आगू बढ़ि ओसारक चौकीपर हारमुनियम रखि देलक। हारमुनियम रखैत देखि ढोलकियो ढोलक रखि देलक। एहिना एका-एकी सभ अपन-अपन लोटा-गिलास धरि रखि देलक। मुदा बैसल कियो नहि। तकर कारण बिना चरण पखरबौने बैसब कोना? आ जाबे गुरु महाराज नहि बैसताह ताबे हम सभ कोना बैसब। सभकेँ अपन-अपन सामान -बाजा, लोटा, गिलास- रखैत देखि आ अपन गिलास-कमंडलकेँ सेहो राखल देखलथि। रमापतिदासकेँ गर भेटिलनि। रमापतिदास विक्षिप्त मने कहलखिन- "जखन सबहक मन अछि तखन किएक ने दरबज्जेपर बैसल जाए। घरवारियो तँ आदर करिते छथि।"

एक दिशि रमापतिदासकेँ मन जड़ैत, दोसर ईहो खुशी जे स्वागत चरण पखरबा संग घरबारी हमरे बेसी महत्व देलनि। सभ कियो चरण पखारि बैसए लगलाह।

बिढ़नी जेकाँ सुगिया नचैत छलीह। कखनो घर जा दही देखि अबैत, जे कहीं बिलाइ ने आबि कऽ खा लिअए। तँ लगले ओसारपर राखल सामान आङन -चाउर-दालि, तरकारी- कँ देखैत जे कौआ ने आबि कऽ छुता दिअए। फेर लगले अंगनामे राखल टकुना, कराह, बालटीनकेँ देखैत जे धिया-पूता ने गंदा कऽ दिअए। तँ लगले आबि दलानक पाछूमे ठाढ़ भऽ टाटक भुरकी देने देखैत, जे लोकसँ भरल दरबज्जा-खरिहान अछि, कहीं मारिये ने शुरुह भऽ जाए। सुगियाक मनमे अहलदिल्ली पैसि गेलनि। तहिना मगज परक पसीना केशक तर देने गरदनिपर होइत सोनेलालक धोती भिजबैत रहैक।

भजन सुननिहारमे धिया-पूतासँ लऽ कऽ गामक स्त्रीगण-पुरुष धरि। मोतियाक माए पचास बर्खक बूढ़ि। भजन बन्न भेल देखि बुचाइदासकेँ कहलखिन- "हे यौ बुचाइ दास, बिना भजन गौने जे पंगहति करबै तँ पाप नै लिखत?"

मोतिया माइयक कडूआएल बात सुनि बुचाइ दास उत्तर देलखिन- "बड़ी काल गाजा पीना भऽ गेल अछि, तेँ कने पीबि लै छी। तखन नाचो देखा देब आ कबीर सहाएब की कहलखिन सेहो सुना देब। कनिये काल छुट्टी दिअ। होअए हौ रघूदास, जलदी गुल दहक।"

बिना साज बजनहि घुन-घुना कऽ कहै लगलखिन- "हटल रहियौ सन्तो बिलइया मारे मटकी।"

बुचाइ दासक पाँती आ मूहक चमकी देखि धियो-पूतो आ जनिजातियो, खापरिमे देल जनेरक लाबा जहिना भर-भराकेँ फुटैत अछि, तहिना सभ हँसए लगलाह।

दलानोमे आ खरियानोमे भजन शुरु भेल। दोसर पंथक बैसारमे ढोलक, झालि, खजुरीक संग थोपड़ियो बजए लगल। मुदा पहिल पंथ दिशि पखाउज, झालर, हारमुनियाक संग सितार सेहो बजए लगल। एक सूर एक लय आ एक तालमे भजन शुरु भेल- "केशव! कही न जाए का कहिये!" मुदा दोसर पंथ दिशि भजन तते जोरसँ होइत जे पहिल पंथक भजन सुनाइये ने पड़ैत छल। महंथ रमापतिदास बाहर निकलि घुमबो करैत आ भजनो सुनैत रहथि। रमाओत भजनक अवाज दलानक घरसँ बाहर निकलबे नहि करैत छल। रमापति दास तामसँ माहुर होइत रहथि। मने-मन भनभनेबो करैत रहथि। सोनेलालकेँ सोर पाड़ि कहलखिन- "ई कोन बखेरा ठाढ़ करबा देलिऐक?"

थरथराइत दुनू हाथ जोड़ि सोनेलाल उत्तर देलखिन- "सरकार, हम अनाड़ी छी। नहि बुझलिऐक जे एना होइ छै। जे भऽ गेलैक से तँ भइये गेलैक। अपने तमसाइयौ नहि। जँ कनी गलतिये भऽ गेलै तँ माफ कऽ दियौक। अपने समुद्र छिऐक। नीक-अधला पचबैक सामर्थ्य अछि। अखन धरि भोजन बनबैक अहरियो नहि खुनल गेल अछि, आदेश दियौक।"

तरंगि कऽ रमापतिदास कहलखिन- "हमर जते साधु छथि ओ फुटेमे अहरियो खुनता आ भोजनो बनौताह। तेँ बरतनसँ लऽ कऽ चाउर-दालि, तरकारी धरि सभ किछु हमरा फुटा दिअ।"

'बड़बढ़िया' कहि सोनेलाल सभ किछु दू भाग कऽ देलकनि। चारि-चारि गोटे भानसक जोगारमे लगि गेलाह। दूटा अहरी, हटि-हटि कऽ खुनल गेल। सोनेलाल सभ बरतनो आ चाउरो-दालि आनि-आनि दुनू अहरी लग रखि देलकनि।

दलानक भजन बन्न भऽ गेल। मुदा खरिहानक भजन चलिते रहल। बुचाइ दास अगुआ मुरते। भजनियाँ सभ गोल-मोल भेल बैसल, तेँ बीचमे जगह खाली रहए। ओहि खाली जगहमे बुचाइ दास ठाढ़ भऽ आगू-आगू भजनक पाँतिओ गबैत आ नचबो करैत। बीच-बीचमे पाँतीक अरथो कहैत रहथि।

रमापतिदास सोनेलालकेँ हाथक इशारासँ सोर पाड़ि कहलखिन- "बड़ड अनघोल होइत अछि। भजन बन्न करबा दियौ।"

बुचाइ दास लग आबि सोनेलाल बाजल- "गोसाइ सहाएब, भजन बन्न कऽ दियौ। महंथजीकेँ तकलीफ होइ छनि।"

सोनेलालक आग्रह सुनितहि, के छोट के पैघ सभ एक्के बात कहै लगलनि जे हम सभ बिना भजन गौने पंगहति नहि करब।

सोनेलाल अबाक भऽ गेलाह। साँसे देह सोनेलालक कपैत। मुदा की करैत? क्यो तँ बिनु दले नहि आएल छलाह। तँ सभ साधुक महत्व बराबरि बुझथि।

अंगनाक टाट लग ठाढ़ सुगिया मने-मन सोचैत जे जँ कहीं सौध सभ अपनामे झगड़ा कऽ बिना भोजन केनहि चलि जेताह, तखन तँ हमर कबुला पूरा नइ हएत। कबुला नइ भेने दुखो घुरि कऽ आबि सकैत अछि। आब जँ दुखित पड़ब तँ जीब की मरब, तेकर कोन ठेकान। हे भगवान सौध सभकेँ मति बदलि दियौन जे असथिर भऽ जेताह। मने-मन सौध-सौध जपै लगलीह।

दू बजैत-बजैत निर्गुण पंथ दिशि भोजन बनि कऽ तैयार भऽ गेल। भोजन तैयार होइतहि गंगादास सोनेलालकेँ कहलखिन- "भोजन बनि गेल तँ आब भोजनक जगह तैयार करु।"

गंगादासक आढ़ति सुनि सोनेलालक करेज आरो थरथर कपए लगल। ई केहेन हएत। एक दिशि साधु सभ भोजन करताह आ दोसर दिशि बनितहि अछि। एक तँ जखनेसँ सौध सभ दरबज्जापर ऐला तखनेसँ झंझट होइए। कहुना-कहुना अखैन धरि पार लगल, मगर आब आखरी बेरमे ने कहीं झगड़ा फँसि जाइन। बाढ़नि आनै लाथे सोनेलाल आंगन गेल। आंगनमे जा बाढ़नि ताकै लाथे बैसि रहल। बइसैक कारण रहैक समए लगाएब। कनिये कालक बाद सुनलक जे हिनको सबहक भोजन तैयार भऽ गेलनि। बाढ़नि नेनहि सोनेलाल अंगनासँ निकलि खरिहान आबि बाहरए लगल। खरिहान बहारि सोनेलाल पानिक छिच्चा देलक। छिच्चा दऽ खरही बिछौलक। खरही बिछबितहि साधु सभ हरे-हरे कऽ उठि खरहीपर बैसलाह। खरहीपर बैसितहि पात उठल। पत्ताक बँटवारा शुरु होइतहि रमापति दास अपन सत्तरिमे घुमि-घुमि जए-जएकार करए लगलाह। दोसर दिशि भजन मंगल शुरु भेल।

सभ साधु भोजन केलनि। भोजन कऽ सभ उठलाह। दोसर पंथ दिसक सत्तरिमे एक्कोटा अन्न वा कोनो वस्तु पातपर छुतल नहि। जखनिकि दोसर सत्तरिमे बरिआतीक भोजन जेकाँ छुतल। सभक उठितहि चारुभरसँ कौआ-कुकुड़ आबि-आबि खाए लगल।

भोजन कऽ दोसर पंथवला सभ ढोलक-झालि लऽ बिदा हुअए लगल। मुदा रमौत दिशिसँ दछिनाक तगेदा भेल। अनाड़ी सोनेलाल सिक्कीक चंगेरीमे पान-सुपारी लऽ बीचमे ठाढ़ रहथि। हाथक इशारासँ रमापति दास सोनेलालकेँ सोर पाड़ि कहलखिन- "आब हम सभ चलब तँ झब दे दछिना लाउ।"

सोनेलाल- "कोना की दछिना.....।"

रमापतिदास- "एक सए एकाओन, स्थानक चढ़ौआ एक सए एक हमर, साधु सभकेँ एकाओन-एकाओन आ भोजन बनौनिहारकेँ एकासी-एकासी दऽ दियौन।"

भोजन बनौनिहारक आ महंथजीक दछिना तँ सोनेलालकेँ जँचल, मुदा.....।

गंगादास आ बुचाइ दास सेहो सभ देखैत आ सुनैत। आँखिक इशारासँ गंगादासकेँ बुचाइ दास कहलखिन- "अधिकार अधिकार छी। जत्ते दछिना रमापति दासकेँ हेतनि तहिसँ एक्को पाइ कम हमहूँ सभ नहि लेब।"

हिसाब जोड़ि सोनेलाल अंगनासँ रुपैआ आनि रमापति दासक हाथमे दऽ देलकनि। रुपैआ ठीकसँ गनि रमापति दास सोनेलालकेँ असिरबाद दैत उठि कऽ बिदा भेलाह। रमापति दासक पाछू-पाछू सोनेलालो अरिआतने किछु दूर धरि गेल। फेर घुरि कऽ आबि गंगादास लग ठाढ़ भऽ पुछलकनि- "गोसाइ सहाएब, अहाँकेँ दछिना कत्ते हएत?"

सोनेलालक कलपैत मोनकेँ गंगादास आँकि लेलखिन। दयासँ हृदय बरफसँ पानि बनए लगलनि। मूहसँ बोली नहि फुटनि। सोनेलालकेँ की कहथिन से फुरबे नहि करनि। बुचाइ दास दिशि देखि पुछलखिन- "की यौ बुचाइ दास, अहूँ तँ अगुआ मुरते छी, बिना अहाँ सबहक विचार लेने हम कोना जबाब देबनि। किएक तँ ऐठाम तीनटा प्रश्न अछि। पहिल दू पंथक अधिकारक सवाल अछि से दोसर पंथकेँ निच्चा मुँहे जाएब हएत। आ तेसर, सोनेलाल कबुला पुरबैक लेल भनडारा केलनि। एक तँ बीमारीक फेरीमे पड़ि पस्त भेल छथि, तइपर सँ हमहूँ सभ भार दिअनि, ई हमरा नीक नहि बुझि पड़ैत अछि।"

गंगादासक प्रश्न सुनि दोसर पंथक सभ साधु गुम्म भऽ मने-मन सोचए लगलाह जे की कएल जाए? मुदा सोचबोक रस्ता अलग-अलग होइत अछि। एक्के प्रश्नक उत्तर पेबाक लेल वैरागीक रस्ता अलग होइत अछि। जहन कि रागीक विचार अलग। भलेहीं दुनू गोटे एक्के रंग विद्वान किएक ने होथि। ततबे नहि ई आध्यात्मिक चिन्तक आ भौतिकवादी चिन्तकक बीच सेहो होइत अछि। जहन कि निष्पक्ष चिन्तकक अलग होइत अछि। पंथक बीच बँटल समाजमे निष्पक्ष चिन्तक होएब कठिन अछि। किएक तँ पंथ खाली वैचारिकते टा नहि होइत, व्यवहारिक सेहो होइत अछि। जे परिवार आ समाजसँ सेहो जोड़ल रहैत अछि। जहिसँ जिनगीक गाड़ी चलैत अछि।

कोनो विषयपर गंभीर चिन्तन करैक लेल एकटा आरो भारी उलझन अछि। ओ अछि भुखल आ पेट भरल शरीरक मन। मनकेँ बहुत अधिक प्रभावित करैत अछि शरीरक इन्द्रिय। इन्द्रियकेँ संचालित करैत अछि शरीरक उर्जा। उर्जाक निर्माण करैत अछि उर्जा पैदा करैक वस्तु। ओ वस्तु अबैत भोजनसँ। मुदा सिर्फ भोजने टासँ उर्जा पैदा नहि होइत? उर्जा पैदा करैक दोसरो वस्तु अछि, जेकर भोजन शरीरक भोजनसँ अलगो होइत अछि।

बीच-बचाव करैत बुचाइ दास गंगादासकेँ विचार देलखिन- ‘‘गोसाइ सहाएब, हमहूँ सभ अपना पंथक सिपाही छी, तेँ मरैत दम तक पाछु हटब धोखाबाजी हएत मुदा पवित्र धरमक रक्षा करब सेहो हमरे सभपर अछि। तेँ सोनेलाल जते रुपैआ रमापति दासकेँ देलखिन, तते हमरो सभकेँ दऽ दौथु। छ मासक दुख-तकलीफ हम सभ सोनेलालक सुनबे केलहुँ तेँ हुनकर दुखमे हमहूँ सभ शामिल भऽ रुपैआ घुमा दिअनि।’’ सैह भेल। सभ कियो हँसी-खुशीसँ भनडारा सम्पन्न कऽ जय-जयकार करैत बिदा भेलाह।

४

मद्रास स्टेशन गाड़ी पहुँचतहि रमाकान्त नमहर साँस छोड़लनि। दू राति तीनि दिनसँ गाड़ीमे बैसल-बैसल रमाकान्त, पत्नी श्यामा आ नोकर जुगेसर तीनू गोटेक देह अकड़ि गेल छलनि। गाड़ीकेँ रुकितहि रमाकान्त हुलकी मारि प्लेटफार्म दिस तकलनि तँ दोसरि-तेसरि लाइनपर गाड़िये सभकेँ ठाढ़ भेल देखलखिन। अपना सबहक स्टेशन जेकाँ नहि जे कखनो काल कऽ गाड़िओ अबैत आ भीड़-भाड़ नहि रहने पुलोक जरुरत नहि पड़ैत। सगतरि रस्ते। जेमहर मन हुअए तेमहर बिदा भऽ जाउ। गाड़ीयो छोट आ लाइनो तहिना। गाड़ीमे रमाकान्तकेँ अनभुआर जेकाँ नहि बुझि पड़लनि किएक तँ बिहारेक गाड़ी आ बिहारेक पसिन्जरो रहए।

गाड़ीसँ यात्री सभ उतड़ै लगलाह। तीनू गोटे रमाकान्तो अपन झोरा-मोटरीक संग उतरि, थोड़े आगू पुलपर चढ़ै लगलाह। पुलपर लोकक करमान लागल मुदा अपना सभ स्टेशन जेकाँ ऐँड़ी-दौड़ी नहि लगैत। जकरा हियासिकेँ रमाकान्त अपनो चेत गेला आ श्यामो-जुगेसरकेँ कहि देलखिन। अखन धरि स्टेशनमे दुनू कात गाड़िये देखथिन मुदा पुलपर जना-जना उपर चढ़ैत जाइत छलाह, तेना-तेना आनो-आनो चीज सभ देखै लगलखिन। पुलक सीढ़ीपर चलैत-चलैत श्यामो आ रमाकान्तोक जांघ चढ़ि गेलनि। पुलक ऊपर पहुँचतहि रमाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन- "जुगे, मोटरी कतबाहिमे राखि दहक आ कने तमाकू लगबह। ताबे हमहूँ कनी बैसि लइ छी। चलैत-चलैत जांघ चढ़ि गेल।"

जुगेसर मोटरी भुइयेँमे रखि तमाकुल चुनबए लगल। गाड़ीक जते चिन्हार पसिन्जर रहनि, सभ हरा गेलनि। नव-नव लोक पुलोपर आ निच्चोमे देखए लगलखिन। खाली लोकेटा नव नहि, ओकर पहिरेबो आ बोलियो। तमाकुल खा झोरा-मोटरी उठा तीनू गोटे पुल परसँ उतरि हियाबै लगलथि जे ककरोसँ पूछि लियनि। मुदा ककरो बाजब बुझबे नहि करथि। रमाकान्तो लोक सभकेँ देखैत आ लोको सभ रमाकान्तकेँ देखनि। तमाशा दुनू बनल रहथि। रमाकान्त आ जुगेसरक धोती पहिरब देखि ओहिठामक लोक निङहारि-निङहारि देखैत रहथि आ रमाकान्तो तीनू गोटे ओहिठामक मरदो आ मौगियोक कपड़ा पहिरब देखि मने-मन हँसबो करथि। अनुभवी लोक सभ तँ बुझि जाइत छलाह जे बिहारी छथि। मुदा जकरा नहि बुझल छलैक ओ सभ ठाढ़ भऽ भऽ तजबीज करनि। एक जेर मौगी रस्ता धेने गप-सप करैत जाइत छलीह, ओ सभ अपने सभक मर्द जेकाँ ढेका खोंसने। मौगी सभक ढेका देखि श्यामा मुस्की दैत रमाकान्तकेँ कहलखिन- "देखियौ एहिठामक मौगी सभकेँ ढेका खोसने।"

श्यामाक बात सुनि रमाकान्त हँसलनि मुदा किछु बजलथि नहि। रमाकान्त आँखि उठा-उठा चारु दिशि ताकि मने-मन सोचैत जे वाह रे एहिठामक सरकार। कते सुन्दर आ चिक्कन-चुनमुन बनौने अछि। कतौ बैसि जाउ। कतौ सुति रहू। सरकार बनौने अछि अपना सभ दिस, कोनो स्टेशन एहेन नहि अछि जाहि ठाम

भरि ठेहुन गंदगी नहि रहैत होअए। प्लेटफारमेपर केराक खोंइचा, पानक पीक, चिनिया बदामक खोंइचा, कागजक टुकड़ी, रंग-बिरंगक गुटखा सभक पन्नी छिड़ियाएल रहैत अछि। ततबे नहि ! जेरक-जेर भिखमंगा, पौकेटमार, उचक्का रेलवे स्टेशनसँ लऽ कऽ बस स्टेण्ड धरि पसरल रहैत अछि। मुदा एहिठाम तँ एक्कोटा नजरिये नहि पड़ैत अछि।

गाड़ीक झमारसँ तीनू गोटेक देह भसिआइत छलनि। मुदा की करितथि। जुगेसर तमाकुल चुनबैत रहए। मने-मन रमाकान्त सोचथि जे बड़का फेरामे पड़ि गेल छी। की करब? मुदा किछु फुरबे नहि करैत छलनि। बड़ी काल धरि उगैत-डूबैत रहलाह। जहि गाड़ीसँ गेल रहथि ओहि गाड़ीक भीड़ छँटल। लोक पतराएल। तहि बीच एक गोटे मोटर साइकिलसँ आबि रमाकान्तेक आगूमे गाड़ी लगौलक। रमाकान्त ओहि आदमी दिशि तकै लगलथि आ ओहो आदमी रमाकान्त दिस तकै लगलनि। जेना नजरियेसँ दुनू गोटेक बीच चिन्हा-परिचय भऽ गेल होनि। रमाकान्त उठि कऽ ओहि आदमी लग जा, जेबीसँ पुरजी निकालि देखए देलखिन। पुरजीमे पता लिखल छलनि। पुरजी देखि ओ आदमी एकटा टेम्पूबलाकेँ हाथक इशारासँ सोर पाड़लनि। टेम्पूबलाक अबिते पता बता लऽ जाइले कहलखिन। तीनू गोटे टेम्पूमे बैसि बिदा भेलाह। मुदा ड्राइवर ने हिन्दी जनैत आ ने मैथिली। तँ ड्राइवर संग कोनो गप-सप रस्तामे नहि होइत छलनि। स्टेशनक हातासँ निकलितहि रमाकान्त आँखि उठा-उठा बजारो दिशि देखैत आ लोको सभकेँ देखैत छलाह। बाजारमे ओते अन्तर नहि बुझि पड़नि, जते लोक आ बोलीमे। मने-मन रमाकान्त अप्पन इलाकासँ इलाका मिलबए लगलाह। अपना ऐठाम पिण्डश्याम आ गौर वर्ण एकरंगाह अछि, मुदा एहिठाम पिण्डश्याम वर्णक लोक अधिक अछि। लोकक बाजबो दोसरे रंगक। जना मधुमाछी भनभनाइत अछि तहिना। मुदा अपना ऐठामक लोक जेकाँ ठक ओहिठाम नहि। बजारक रस्तासँ जाइत रहैथि तँ गरीबी-अमीरीमे अन्तर बुझिये नहि पड़नि। मुदा अपना इलाकाक बजारसँ ओहिठामक बजार बेसी चिक्कन चुनमुन आ सुन्दर। गंदगीक कतौ दरस नहि बुझि पड़नि।

मुख्य मार्गसँ निकलि पूब मुहे एकटा रस्ता गेल छलैक। ओहि रस्तामे डॉक्टर महेन्द्रक घरो आ क्लीनिको। मुदा जहि अस्पतालमे महेन्द्र नोकरी करैत रहथि ओ मुख्य मार्गमे छलैक। ओहि गलीक मोड़पर टेप्पूक ड्राइवर तीनू गोटेकेँ उतारि भाड़ा लऽ आगू बढ़ि गेल। सड़कक दुनू भाग बड़का-बड़का मकान सभ अछि। ओहि मोड़पर तीनू गोटे मोटरी रखि बैसि रहलथि। गाड़ीक झमारसँ तीनूक देह-हाथ बथैत छलनि। ठाढ़ रहले नहि होइत छलनि। जहिना अमावस्याक रातिमे बादल पसरि आरो अन्हार कऽ दैत अछि तहिना रमाकान्तोकेँ होइत छलनि। एक तँ अनभुआर जगह दोसर बोलिक भिन्नता। बोली मनुष्य मनुष्यक बीच कत्ते दूरी बनबैत अछि ई बात रमाकान्त आइये बुझलनि। श्यामा मने-मन सोचैत जे हे भगवान केहेन जगह अछि जे अछैते मनुक्खे हम सभ हराएल छी। तीनू गोटे निराशाक समुद्रमे डूबल। मने-मन रमाकान्त सोचैत जे

आब की करब? आइ धरि जिनगीमे एहेन फेरा नहि पड़ल छल। अपन सभ बुद्धि-अकील हरा गेल अछि। रमाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन- "जुगेसर, मन घोर-घोर भऽ गेल अछि। कनी तमाकू लगाबह।"

जुगेसर तमाकुल चुनबए लगल। सभ सबहक मूह देखि पुनः नजरि निच्चा कऽ लैत छलाह। तहि बीच रमाकान्तक जेठ बेटा डॉक्टर महेन्द्र फियेट कारसँ अस्पतालसँ घर अबैत रहथि आकि सड़कक कातमे तीनू गोटेकेँ बैसल देखलनि। पहिने तँ थोड़े धखएलाह, मुदा चिन्हल चेहरा तँ मेन रोडसँ गाड़ी बढ़ा अपन रस्तापर लगौलथि। गाड़ी ठाढ़ कऽ महेन्द्र उतरि रमाकान्तकेँ गोर लगलनि। रमाकान्तकेँ गोर लागि महेन्द्र माएकेँ गोर लगलनि। गोर लागि महेन्द्र पिताक झोरा लऽ गाड़ीमे रखलनि। तीनू गोटे उठि गाड़ी दिस बढ़लाह। जुगेसर मोटरी गाड़ीमे रखलक। चारु गोटे गाड़ीमे बैसि आगू बढ़लाह। महेन्द्र अपने ड्राइवरी करैत रहथि। महेन्द्रकेँ गाड़ी चलबैत देखि माए पुछलकनि- "बच्चा, मोटर अपने हँकै छह?"

"हँ।"

"डरेबर नइ छह?"

माएक प्रश्न सुनि महेन्द्र मुस्कुराइत कहलकनि- "जखन गाड़ीमे रहैत छी तखन दोसर काजे कोन रहैत अछि जे डरेबर राखब। अनेरे खरचा बढ़त।"

घरक आगू गाड़ी पहुँचतहि महेन्द्र हार्न देलनि। गाड़ीक आवाज सुनि भीतरसँ नोकर आबि गेटक ताला खोलि देलकनि। महेन्द्र गाड़ी भीतर लऽ गेलाह। गाड़ी ठाढ़ कऽ महेन्द्र उतरि गाड़ीक तीनू फाटक खोलि तीनू गोटेकेँ उतारलनि। गाड़ीसँ उतरितहि रमाकान्त मकान दिशि तकलनि। तीनि तल्ला बड़का मकान। आगूक फुलवाड़ी देखि रमाकान्त मने-मन सोचए लगलथि जे सम्पति तँ गामोमे बहुत अछि मुदा एहेन घर....। अप्पन कोन जे परोपट्टामे एहेन मकान ककरो नहि छैक। मनमे उठलनि जे अपन कमाइसँ महेन्द्र एहन घर बनौलक आकि बैंक-तैंकसँ करजा लऽ कऽ बनौलक आकि भाड़ामे नेने अछि। ओना कहने रहथि जे जमीन कीनिकेँ मकान बनेलहुँ। मुदा एहेन घर बनबैमे पचास लाखसँ उपरे खर्च भेल हेतैक। एतबे दिनमे कत्ते कमा लेलक।

आगू-आगू महेन्द्र आ तहि पाछू तीनू गोटे मकानमे प्रवेश केलनि। मकानक सिमेंट एहन जमाओल जे पएर पिछड़ैत। सभसँ उपरका तल्लामे लऽ जाए एकटा कोठरी रमाकान्त आ जुगेसरकेँ दोसर माएकेँ सुमझा देलनि। ताबे नोकर जलखइ आ पानि नेने पहुँचि गेलनि। हाथो-पएर नहि धोए रमाकान्त पलंगपर पड़ि रहलाह। पंखा चलैत रहए। दूटा पलंग कोठरीमे लगाओल रहए। दूटा टेबूल, एकटा नमहर अएना, रंग-बिरंगक देवी-देवताक फोटो देवालमे सेहो छलैक। नील रंगसँ कोठरी रंगल। दूटा अलङा सेहो देवाल दिस राखल। खूब मोटगर गद्दीदार ओछाइन पलंगपर बिछौल। मसलन सेहो दुनू पलंगपर। पानिक टंकी सेहो कोठरीक मुहेपर केबारक बगलमे छलैक।

पलंगसँ उठि रमाकान्त कुरड़ा कऽ जलखै करए लगलाह। दू कौर खा पानि पीबि रमाकान्त चाह पीबए लगलथि। जुगेसरो जलखै खा चाह पीबै लगल। महेन्द्र ठाढ़े-ठाढ़ चाह पीबै लगलाह। चाहक चुस्की लैत रमाकान्त महेन्द्रकेँ पुछलखिन- "बौआ, मकान अपने छी?"

हँ।"

"बनवै मे कते खर्च भेल?"

खर्चक नाम सुनि मुस्की दैत महेन्द्र कहलखिन- "बाबू, खर्च तँ डाएरीमे लिखल अछि तेँ बिना देखने नीक-नाहाँति नहि कहि सकै छी मुदा तीन लाखमे जमीन कीनलहुँ से मन अछि। जखन जमीन भऽ गेल तखन चारु गोटे कमेबो करी आ घरो बनबी। तेँ ठीकसँ बिना डायरी देखने नहि कहि सकैत छी।"

चाह पीबि टेबुलपर कप रखि रमाकान्त कहलखिन- "चारि दिन नहेला भऽ गेल। देहमे एक्को रत्ती लज्जति नहि बुझि पड़ैए। तेँ पहिने नहाएब, खाएब आ भरि मन सुतब।"

"बड़बढ़िया" कहि महेन्द्र कोठरीसँ निकलि नोकरकेँ कहलखिन- "तीनू गोटेकेँ (भाए, स्त्री आ भावो) फोनसँ कहि दहक जे बुरहा-बुरही अएलाह अछि।"

नोकरकेँ कहि रमाकान्त लग आबि महेन्द्र कहलखिन- "चलू। नहाइक घर देखा दै छी।"

आगू-आगू महेन्द्र आ पाछू-पाछू रमाकान्त, जुगेसर चललाह। स्नान घरक केवाड़ खोलि महेन्द्र कहलकनि- "दूटा जोड़ले कोठरी अछि, दुनू गोटे नहाउ।" - कहि दुनू कोठरीक बौल जरा देलखिन।

कोठरीकेँ निङहारि-निङहारि दुनू गोटे देखै लगलथि। पानिक झरना, टंकी, साबुन रखैक ताक, कपड़ा रखैक अलगनी इत्यादि सभ किछु रहए। रमाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन- "जुगे, चाह पीलौं आ तमाकू खेबे ने केलहुँ। मन लुलुआइल अछि। जाह पहिने तमाकुल नेने आबह।"

जुगेसर स्नान घरसँ निकलि कोठरी आबि, तमाकुल-चून लऽ आबि चुनबए लगल। तमाकुल चुना जुगेसर रमाकान्तोकेँ देलकनि आ अपनो ठोरमे लेलक। थूक फेकैत रमाकान्त बजलाह- "जुगे गाममे हमहूँ सम्पतिबला लोक छी मुदा आइ धरि एहेन पैखाना कोठरी आ नहाइक घर नै देखने छेलिऐक। सभ दिन खुल्ला मैदानमे पैखाना जाइ छी आ पोखरिमे नहाइ छी।"

"कक्का, अपना सभ गाममे रहै छी ने। ई सभ शहर-बजारक छिऐक। जँ शहर-बजारक लोक गाम जेकाँ चाहबो करत से थोड़े हेतै। ऐठाम लोक बेसी अछि आ जगह कम छै, तेँ लोककेँ एना बनबै पड़ै छै। मुदा पोखरिमे लोक पाइनमे पैसिकेँ नहाइत अछि आ ऐठाम पानि ढारिकेँ नहाइत अछि। जहिना अपना सभ कहियो काल लोटासँ पानि ढारि कऽ नहाइत छी। मुदा पानिमे पैसिकेँ नहेलासँ संतोख होइ छै, जे अइमे नइ हेतै।"

"एहेन जिनगी जीनिहारकेँ गाममे रहब पार लगतै?"

"से कोना लगतै।'

"बाबू हमरा बेसी काल कहै छलाह जे मनुखक शरीर देखैमे एक रंग लगनहुँ, जीबैक जे ढंग छैक ओ दू रंग बना दै छैक।"

"अहाँक गप हम नइ बुझलौं काका।"

"देखहक, जे आदमी भरिगर काज सभ दिन करैए ओकरा जहि दिन भरिगर काज नहि हेतै तँ देहो-हाथ दुखैतै आ अन्नो रुचिगर नहि लगतैक। तहिना जे आदमी हल्लुक काज करैए आ जँ ओकरा कोनो दिन भरिगर काज करै पड़तै तँ ओकरो देह-हाथ ओते दुखेतै जे अन्नो ने खा हेतै।"

"हँ, से तँ होइ छै। हमरो काए दिन भेल अछि।'

"तहिना गामक लोक जे शहर-बजारमे आबि जिनगी बदलि लैत अछि ओ फेर गाम अही दुआरे नहि जाए चाहैत अछि।"

"गामक लोक गरीब अछि काका! खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ ओढ़े-पीनहै, रहै, दवाइ-दारु, पढ़ै-लिखैक सभ चीजक अभाव छैक, तँ लोक नहि रहए चाहैत अछि।"

महेन्द्र पिताकेँ स्नानघर पहुँचा घुमि कऽ अपना कोठरी आबि भाए डॉक्टर रविन्द्र, पत्नी डॉ. जमुना, भाबो डॉक्टर सुजाताकेँ फोनसँ कहि देलखिन जे गामसँ माए-बाबू आ जुगेसर अएलाहहेँ। तीनू गोटेकेँ जानकारी दऽ अपने भंसा घर जाए मने-मन सोचै लगलथि, जे एहिठामक जे खान-पान अछि ओ हुनका सभकेँ पसिन्न हेतनि की नहि? तँ गामक जे खान-पान अछि, सैह बनाएब नीक हएत। मुदा भनसिया तँ ऐठामक छी, तँ बना सकत की नहि? तँ अपनेसँ बनाएब नीक रहत। ओना भात-दालि आ रसगर तरकारी तँ भनसियो बना सकैत अछि। खाली तेतेरि परहेज करैक अछि। तेतेरिक अलगसँ खटमिट्ठी बना लेब। जँ तरुआ तरकारी नहि बनाएब तँ पिता अपमान बुझताह। ओना दूधो-दही जरुरी अछि। मुदा एक्कोटा चीजसँ काज चलि सकैत अछि। दहियो तँ घरमे नहिये अछि। लगक दोकान सबहक दही दब रहै छै तँ रविन्द्रकेँ कहि दियनि जे दरभंगाबलाक होटलसँ दही किनने आबथि। ई बात मनमे अबितहि महेन्द्र मोबाइलसँ रविन्द्रकेँ कहलखिन। रविन्द्र अस्पतालसँ सोझे दरभंगाबला होटल बिदा भेलाह। महेन्द्र अपनेसँ तिलकोरक पात, परोड़, झिंगुनी, भाँटा आ आलू तड़ै लगलाह। गैस चुल्हि, तँ लगले सब कुछ बनि गेलनि।

पैखाना जाइसँ पहिनहि रमाकान्त हाथ मटिअबैले माटि तकए लगलाह। मुदा माटिक कतौ पता नहि। नहाइसँ लऽ कऽ हाथ धोए धरि साबुने। रमाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन- "जुगेसर, बिना माटिये हाथ कोना मटिआएब?"

रमाकान्तक बात सुनि मुस्कुराइत जुगेसर कहलकनि- "कक्का, जेहन देश ओहन भेस बनबए पड़ैत छैक। गाममे तँ भरि दिन माटिएपर रहै छी, मुदा ऐठाम तँ माटिसँ भेंटो मश्किल अछि। किएक तँ देखते छिऐ जे माटि तरमे पड़ि गेल अछि। ने माटिक घर अछि आ ने रस्ता पेरा। साबुनो तँ गमकौए छी। की हेतै साबुनेसँ हाथ धो लेब।"

कहलह तँ ठीके जुगेसर मुदा हाथ धोअब आ मनकेँ मानब दुनू दू बात अछि। हाथ धोइये लेब मुदा मन नहि मानत तँ ओ हाथ धोअब कना भेल?''

''हँ कक्का, ई बात तँ हमहूँ मानै छी, मुदा गंदगी साफ करैक सवाल छै की ने से तँ हएत। मनकेँ बुद्धि ने चलबै छै, तँ मनकेँ बुद्धि मना लेत।''

''तोहूँ तँ आब बच्चा नइ छह जे नहि बुझबहक। एकटा बात कहह जे लोक पेटमे खाइए। पेट भरै छैक, तखन लोक किअए कहै छै जे भरि मन खेलहुँ वा पेट भरलाक बादो कहै छै जे मन नहि भरल।''

''अपना सब कक्का मिथिलामे रहै छिऐ ने। मिथिलाक माटियो पवित्र छैक। मुदा ई तँ मद्रास छी ने तँ ऐठामक लोक जे करैत हुअए, सैह करब उचित।''

''बड़बढ़िया।'' कहि दुनू गोटे अपन क्रिया-कलापमे लगि गेलाह।

रमाकान्त आ जुगेसर स्नाने घरमे रहथि, तहि बीच रविन्द्र, जमुना आ सुजाता तीनू गोटे अपन-अपन गाड़ीसँ आबि गेलथि। सभक मनमे अपन-अपन ढंगक जिज्ञासा रहनि। तँ गाड़ीसँ उतरितहि सभ, पिता रमाकान्त, ससुर रमाकान्तकेँ देखैक लेल उताहुल। मुदा कोठरी अबितहि पता चललनि जे ओ नहाइ छथि। नहाएब सुनि सभ अपन-अपन कपड़ा बदलए अपन-अपन कोठरी गेलथि। पेन्ट-शर्ट खोलि रविन्द्र लुंगी पहिरतहि माएक कोठरी दिस बढ़लाह। कोठरीमे पहुँचतहि रविन्द्र माएकेँ गोर लागि आगूमे ठाढ़ भऽ गेला। रविन्द्रकेँ माए चिन्हलकनि नहि, मुदा गोरक जवाब बिना चिन्हनहि दऽ देलखिन। रविन्द्र मुस्कुराइत रहथि। मुदा अनचिन्हार जेकाँ माए बेटाक मूह दिशि बकर-बकर देखैत रहैत। तहि बीच जमुना आ सुजाता आबि माएकेँ गोर लगलनि। दुनू पुतोहूओकेँ सासु असिरवाद देलखिन। रविन्द्र बुझि गेलखिन जे माए नहि चिन्हलनि। मुस्कुराइत रविन्द्र माएकेँ कहलखिन- ''माए, हम रविन्द्र छी।''

रविन्द्र नाम सुनितहि माए हक्का-बक्का भऽ गेलीह। अनायास मूहसँ निकललनि- ''रविन्द्र।''

चारि सालसँ रविन्द्र गाम नहि आएल छलाह। पहिने रविन्द्रक देह एकहारा छलनि। खिरकिट्टी जेकाँ। जे अखन मस्त-मौला भऽ गेलाह। पुष्ट देह भेने रविन्द्रक रुपे बदलि गेलनि। कोरैला बेटा होइक नाते माएक ममता बाइढ़िक पानि जेकाँ उमड़ि गेलनि। मूहक बोली पड़ा गेलनि। खाली आखिये टा क्रियाशील रहलनि। जे अश्रुधारासँ सिमसि गेलनि। आँचरसँ नोर पोछितहि ओ दिन मनमे नचए लगलनि, जहि दिन रविन्द्र एहि आँचरमे नुकाएल रहैत छल। सौझुका तरेगण जेकाँ श्यामाक हृदयमे सुखद जिनगीक मनोरथ सभ चमकै लगलनि। हाथक इशारासँ माए दुनू पुतोहूकेँ बैसए लेल कहलखिन। दुनू पुतोहू माइक दुनू भाग बैसिलीह। दुनू कान्हपर दुनू हाथ दऽ सासु ओहि दुनियाँमे बौआइ लगली, जाहि दुनियाँमे दुखक कोनो जगह नहि होइत। मुदा सुखोक तँ दूटा दुनिया अछि। एक दुनिया श्यामाक आ दोसर रविन्द्रक। जे दुनियाँ श्यामा दुनू परानीक भेल जाइत छलनि, ओ तियाग, करुणा, दयाक सवारीसँ वैरागक मंजिल दिशि

बढ़ैत जाइत छलनि। जखनिकि दुनू भाँइ रविन्द्रक जिनगी अधिकसँ अधिक धन उर्पाजन कऽ दैहिक सुख दिशि बढ़ल जाइत छलनि।

रमाकान्त आ जुगेसर नहा कऽ कोठरी अएलाह। नहेलाक उपरान्त दुनू गोटेक देहक थाकनि मेटा गेलनि। नव-नव स्फूर्ति आ ताजगी आबि गेलनि। नव ताजगी अबितहि भूखो जगलनि। रविन्द्र कोठरीसँ निकलि पिताक कोठरी दिशि बढ़लाह। ताबे महेन्द्र सेहो पिता लग आबि भोजन करैक आग्रह केलकनि।

एम्हर सासु लग दुनू पुतोहू बैसि एक-दोसराक खानदान, परिवार आ मानवीय संबंध बनबैक लेल वस्तु-जात एकत्रित करै लगलीह। गामक देहाती जिनगी बितौनिहारि पचपन बर्खक माए आ बजारु जिनगी जीनिहारि दुनू दियादनी पुतोहू, तीनूक मन अपन-अपन जिनगीक रस्तासँ भ्रमण करैत रहनि। मुदा सासु-पुतोहूक रस्तामे कतौ संबंध नहि रहनहुँ मानवीय संवेदना आ जिनगीक व्यवहारिक प्रक्रिया तीनूकेँ लग आनि सटबैत रहनि। बीतल जिनगी तँ स्मृति आ इतिहास बनि जाइत अछि मुदा अबैबला जिनगीक रुप-रेखा तँ अखने निर्धारित होएत। एक सासु जिनगीक पचपन बर्खक अनुभव, तँ दोसरि-तेसरि आधुनिक शिक्षासँ लैस। सोचमे दूरी रहनहुँ, सभ एक्के परिवारक छी, ई विचार सभकेँ बलजोरी खींचि कऽ एकठाम सटबैत रहनि। सासुक मनमे प्रश्न उठैत छलनि जे हम हजारो कोस हटि कऽ बेटा-पुतोहूसँ दूर रहैत छी, हमरा पुतोहूक सुख कत्ते हाएत? समाजमे देखै छी जे अस्सी बर्खक बूढ़-पुरानसँ लऽ कऽ पेटक बच्चा धरि एक-ठाम रहि हँसी-खुशीसँ जिनगी बितबैत अछि। खाएब-पीब कोनो वस्तु नहि थिक। किएक तँ जकरा हम नीक वस्तु बुझै छिऐ ओहो भोज्य-पदार्थ छी आ जेकरा दब वस्तु बुझै छिऐ ओहो भोज्ये-पदार्थ छी। हँ, ई विषमता समाजमे जरुर छैक जे केयो नीक वस्तु थारीमे छुता कऽ उठैत अछि जे कुकूड खाएत आ कियो भुखल सुतैत अछि। मुदा हम देखै छी हजारो किस्मक भोज्य-वस्तु घरतीपर पसरल अछि जेकरा ने सभ चिन्हैत अछि आ ने उद्यम कऽ आनै चाहैत अछि। जखन कि जमुना आ सुजाता सोचैत जे परिवारकेँ आगू बढ़बैक लेल सन्तान जरुरी अछि। नोकर-दाइक सहारासँ छोट बच्चाक पालन हाएत सेवा नहि किएक तँ माए अपन बच्चाकेँ दूधो नहि पीआबै चाहैत। बच्चा जखन स्कूल जाइ जोकर हाएत तखन आवासीय विद्यालयमे भरती करा शिक्षा-दीक्षा दइत। शिक्षा प्राप्त केलाक बाद कमाइक जिनगीमे प्रवेश करत। जिनगीक एक चक्र इहो थिक।

जे जमुना आ सुजाताक मनमे चकभौर लैत छलनि। श्यामाक मन अपन पारिवारिक खानदानी फुलवाड़ीमे औनाइत छलनि। ने आगूक रस्ता देखैत छलीह आ ने पाछूक।

आगूक रस्ता कठिन अछि आकि सघन आकि संवेदन रहित वा सहित अछि। एक-दोसर मनुष्यक संबंध हेबाक चाहिऐ, ओ जरुरिये नहि अनिवार्य आ आवश्यक सेहो अछि। जे मनुष्य एहि धरतीपर जन्म लेलक, ओकरो ओतेक जीबैक अधिकार छैक जते दोसरकेँ छैक। जँ से नहि अछि तँ लड़ाइ-दंगाकेँ

कोन शक्ति रोकि सकैत अछि? मुदा प्रश्न जटिल अछि, आइ धरिक जे दुनियाक मनुक्खक जिनगी बनि गेल अछि ओ एतेक विषम बनि गेल अछि, जे सामूहिक मनुक्खक कोन बात जे दू सहोदर भाइक बीच समता रहब कठिन भऽ गेल अछि। तँ की?

भोजनालय। नमगर-चौड़गर कोठरी। देबालपर बहुरंगी फूलक चित्र बनाओल अछि। सुन्दर हल्का गुलाबी रंगसँ कोठरी ढओरल, एयरकंडीशन। गोलनुमा नमगर-चौड़गर खाइक टेबुल। जकरा चारु कात खेनिहारक लेल कुरसी लागल। पनरहोसँ बेसिये। देवालक खोलियामे साउण्ड बक्स। जहिसँ मधुर स्वरमे गीत होइत अछि।

भोजन करैक बाजारु व्यवस्थाकँ महेन्द्र अपनौने। मुदा माता-पिताक अएलासँ आइ महेन्द्र धर्मसंकटमे पड़ि गेलाह। मने-मन सोचै लगलाह जे हम दुनू भाँइ आ दुनू दियादनी चारु गोटे तँ एक्के टेबुलपर खाइ छी मुदा माए तँ बाबूक सोझमे नहि खेतीह। ततबे नहि हमरा दुनू भाँइक संगे तँ ओ खेताह मुदा दुनू पुतोहूक संग तँ नहि खेताह। अगर जँ जोर करबनि तँ कहीं बिगड़ि नहि जाथि। जँ बिगड़ि जेताह तँ आरो विचित्र भऽ जाएत। तखन की करब नीक होएत? गुनधुनमे महेन्द्र। अनायास मनमे एलनि जे माए सँ विचार पूछि लिअनि। माए लग जा पुछलखिन- ''माए, हमसब तँ एक्के टेबुलपर खाइ छी मुदा....?''

महेन्द्रक बात सुनि माए बुझबैत कहलखिन- ''बौआ, हमरो उमेर पचास-साठि बर्खक भेल हएत। आइ धरि जहि काजकँ अधलाह बुझलिऐक, आब कोना करब? कते दिन आब जीबे करब! तइले किअए अपन बाप-दादाक बताओल रस्ता तोड़ब। एहन व्यवहार सिर्फ अपनेटा परिवारमे तँ नहि अछि, समाजोमे छैक। जाधरि ऐठाम छी ताधरि, मुदा गाम गेलापर तँ फेर ओएह व्यवहार रहत। तइले एहेन काज करब उचित नहि। गामक जिनगीक अनुकूल चलनि अछि। कोनो चलनि समाज आ जिनगीक अनुकूल होइत अछि। जे जिनगीक लेल नीक होइत अछि। भलेहीं दोसर तरहक जिनगी जीनिहारकँ ओ अधलाह लगै।''

माइक विचार सुनि महेन्द्र दू तोर कऽ खाएब नीक बुझलक। पहिल तोरमे अपने, जुगेसर आ पिता तथा दोसर तोरमे बाकी सभ कियो।

भोजन करितहि रमाकान्त हफुआय लगलाह। जुगेसर सेहो हफुआय लगल। हाथ-मूह धोए दुनू गोटे सुति रहलाह।

तीन रातिक जगड़ना। ताहिपर अन्नक निसां सेहो लागल रहनि। एक्के बेर चारि बजे रमाकान्तकँ निन्न टुटलनि। नीन टुटितहि, सुतले-सुतल रमाकान्त देवालक घड़ीपर आँखि देलनि। चारि बजैत। भांग पीबैक बेर भऽ गेल रहनि। भांग क आदति रमाकान्तकँ पहिनहिसँ लागल रहनि। तँ मद्रास अबैये काल झोरामे भांग क पत्ती लऽ लेने रहथि। श्यामा सेहो बुझि गेलीह जे हुनका भांग पीबैक बेर भऽ गेलनि। भांग क सभ समान- मरीच, सोंफ अननहि छी। सिर्फ पीसक जरुरत अछि। पलंग परसँ उठि झोरा खोलि भांग क सभ समान निकालै लगलीह। तहि बीच सुजाता ब्राण्डीक किलोबला बोतल आ गिलास नेने सासु लग

आबि ठाढ़ भऽ गेलीह। खाइये बेरमे सासु पुतोहकेँ कहि देने रहथिन जे बुढ़ा सभ दिन चारि बजे पीसुआ भांग पीबैत छथि। भांगक संबंधमे सुजाता अनाड़ी रहथि। किछु नहि बुझल रहनि। मुदा ब्राण्डीक संबंधमे तँ बुझल रहनि। तँ सुजाता, श्यामा आ रमाकान्त सभ अपन-अपन ढंगसँ साकांछ रहथि।

पलंगपर सँ उठि रमाकान्त जुगेसरकेँ जगा टंकीपर मूह-हाथ धोएले गेलाह। खट-खुट अवाज सुनि श्यामा बुझि गेलीह। बोतल लऽ सुजाता तैयारे रहथि। मुदा सुजाताक मनकेँ मिथिलाक संस्कृति झकझोड़ैत रहनि। किएक तँ मिथिलाक संस्कृतिक व्यवहारिक पक्ष जनैत नहि छलीह, तँ जहिना अनभुआर जंगलमे कोनो जानवर औनाइत रहैत, तहिना सुजातो। मने-मन सोचैत जे एहिठाम जहिना पुतोहू ससुरक बीच व्यवहार होइत अछि, तहिना मिथिलोमे होइत आकि नहि। दोसर प्रश्न उठनि जे पढ़ल-लिखल समाजमे तँ पुरान व्यवहारो बदलि नव रुप लऽ लैत अछि। तँ सुजाता हाथमे ब्राण्डीक बोतल आ गिलास रखने विचारक दुनियामे बौआइत छलीह। रमाकान्तकेँ भांग पीबैक समए भऽ गेल छलनि, तँ विचारमे मधुरता आबि गेल छलनि। श्यामा आबि रमाकान्तकेँ कहलकनि- ‘‘अखन भांग नइ पिसलहुँहेँ। पुतोहू जनी एकटा बोतल रखने छथि, से की कहै छियनि?’’

भांग नहि पीसब सुनि रमाकान्तक मनमे कने क्रोध अबै लगलनि, मुदा बोतलक नाम सुनि दबि गेलनि। मुस्कुराइत रमाकान्त पत्नीकेँ कहलखिन- ‘‘बेटी आ पुतोहूमे की अन्तर छैक। जहिना बेटी तहिना पुतोहू। ताहूमे छोटकी पुतोहू, ओ तँ कोरैला बेटीक सदृश्य होइत। एक तँ दुनियामे कोनो संबंध अधलाह नहि छैक मुदा जखन ओ सीमामे रहैत अछि तखन। जखन सीमाक उल्लंघन लोक करए लगैत, तखन लाज आ परदाक जरुरी भऽ जाइत अछि। जे परम्परा बनि आगूमे ठाढ़ भऽ गेल अछि। मुदा ओहने पछिला व्यवहार निपुआंग मरि नहिये गेल अछि। तँ नीक व्यवहार जिनगीमे धारण करब अधलाह तँ नहि।’’

रमाकान्तक बात सुजातो सुनैत छलीह। मने-मन खुशियो होइत छलीह जे ज्ञानवान ससुर छथि। मुदा बिना सासुक कहनहुँ तँ आगू बढ़ब उचित नहि। तँ बोतल-गिलास नेने अढ़मे ठाढ़ छलीह। रमाकान्तक विचार सुनि श्यामा सुजाताकेँ कहए आगू बढ़लीह। पर्दाक अढ़मे ओ ठाढ़। कहलखिन- ‘‘जाउ! भगवान अहाँकेँ भोलेनाथ ससुर देने छथि। मुदा ससुर जेकाँ नहि पिता जेकाँ व्यवहार करबनि।’’

बामा हाथमे बोतल आ दहिना हाथमे गिलास नेने सुजाता ससुर लग आबि मुन्ना खोललनि आकि सौँसे कोठरी महक पसरि गेल। गमकसँ हवोमे मस्ती आबि गेल। एक गिलास पीबि रमाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन- ‘‘जुगेसर, तोहू एक गिलास पीबह।’’

जुगेसर- ‘‘कक्का, अहाँ लग बैसि कोना पीब?’’

‘‘अखन, ने तूँ छोट छह आ ने हम पैघ छी। सभ मनुक्ख छी। मनुक्ख तँ मनुक्खे लगमे रहि ने जिनगी बितौत।’’

तहि बीच सुजाता गिलास जुगेसरो दिशि बढ़ौलनि। जुगेसर एक्के सूढ़िमे सौंसे भरल गिलास पीबि गेल। पेटमे ब्राण्डी पहुँचतहि गुदगुदबए लगलै। दोसर गिलास पीबितहि रमाकान्त सुजाताकेँ कहलखिन- "बेटी, किछु निमकी खाइले लाउ?"

रमाकान्तक आढ़ति सुनि सुजाता गिलास-बोतलकेँ टेबुलपर रखि कीचेनसँ मद्रासी भुजिया दूटा प्लेटमे नेने अएलीह। एकटा पलेट रमाकान्तक आगूमे आ दोसर जुगेसरक आगूमे देलनि। दू-चारि फक्का भुज्जा फाँकि रमाकान्त फेर दू गिलास ब्राण्डी चढ़ा लेलनि। ओना भांगक निशाँ रमाकान्तकेँ बुझल, जे पीलाक उपरान्त घंटा-दू घंटाक बाद निशाँ अबैत अछि, मुदा ब्राण्डीक निशाँ तँ पीबितहि आबि गेलनि। ओना जुगेसर दुइये गिलास पीलक मुदा तेहीमे मन उनटि गेलै। सौंसे बोतल पीबि रमाकान्त ढकार केलनि। सुजाताकेँ कहलखिन- "बेटी, इलाइची देल पान खुआउ?"

सुजाताकेँ बुझल। सासु पतिक खान-पानक संबंधमे सभ बात कहि देने छलखिन। दू खिल्ली पान, सुअदगर तेज जरदा डिब्बा, इलाइची, सेकल सुपारीक कतरा पलेटमे नेने सुजाता आबि रमाकान्तक आगूमे रखि देलनि। शराबक रंगमे जहिना रमाकान्त तहिना जुगेसर रंगि गेलाह। बजैक लेल दुनूक मन लुसफुसाइत। पान मूहमे लैत रमाकान्त सुजाताकेँ पुछलखिन- "बेटी, अहाँ डाक्टरी कोना पढ़लहुँ?"

ससुरक सबाल सुनि सुजाता बगलक कुरसीपर बैसि, संकुचित भऽ कहै लगलनि- "बाबू जी, हमर पिता आ माए अपन महल्लाक कपड़ा साफ करैत छलथि। सभ दिना काज छलनि। एहिसँ जेना-तेना गुजर चलैत छलनि। एक्केटा घर रहए। अनके कलपर नहेबो करै छलौं आ पानियो पीबै छलौं। पिता ताड़ी पीबथि। एक दिन साँझू पहरकेँ ताड़ी पीबि अबैत रहथि। बहुत बेसी निशाँ लागि गेल रहनि। रस्तापर एकटा खाधि-गढ़ा रहए। ओहि खाधिमे ओ खसि पड़लाह। ओहि समए एकटा ट्रक, बिना इजोतेक, पास करैत रहए। ट्रक हुनका उपरे देने टपि गेलै कुड़कुट-कुड़कुट सौंसे शरीरक हड़डी भऽ गेलनि। हम सभ बुझबो ने केलिऐक। दोसर दिन भिनसरमे हल्ला भेलै। हमहूँ माए, भाए तीनू गोटे देखए गेलहुँ। देहक दशा देखि चिन्हबो ने केलिऐनि। मुदा कपड़ा आ चप्पल देखि मन खुट-खुट करए लगल। तीनू गोटे दुनू वस्तुकेँ चिन्हि गेलिऐक। तखन हुनका उठा कऽ आनि जरौलिऐनि।

बिचहिमे जुगेसर बाजि उठल- "अरे बाप रे।"

जुगेसरक 'अरे बाप' सुनि सुजातक आँखिमे नोर आबि गेलन्हि।

सुजाताक बात रमाकान्त आँखि मूनि कऽ सुनैत रहथि। जुगेसरक बात सुनितहि आँखि खोललनि। हृदय पसीज गेल रहनि। ताड़ी पीआकक बात सुनि रमाकान्त मने-मन विचारैत रहथि जे नशापान तँ हमहूँ करै छी मुदा ऐठामक जिनगी आ गामक जिनगीमे बहुत अन्तर छैक। ततबे नहि पेटबोनिया आदमीक सवाल सेहो अछि। हमरा सबहक ग्रामीण जिनगी शान्तिपूर्ण अछि। धनक अभाव

तँ जहिना एतौ छैक तहिना गामोमे छैक। एहिठाम किछु गनल-गूथल उद्योग आ व्यापार कारोबारी अछि जे समृद्धशाली अछि। मुदा पेटबोनियो ओकरे देखौस करए चाहैत अछि, जहिसँ ओकर जिनगी अशान्त भऽ जाइत छैक। ओहि अशन्तिकेँ शान्ति करै दुआरे लोक सड़ल-गलल नशाँ पान करैत अछि। जहिसँ जिनगी बाटेमे टूटि जाइत छैक। एत्ते बात मनमे अबितहि रमाकान्त पलंगसँ उठि पीक फेकैले निकललाह। बाहरक नालीमे पान थूकड़ि कऽ फेकि, टंकीमे कुरड़ा कऽ कोठरी आबि सुजाताकेँ कहलखिन- "बेटा, चाह पिआउ?"

आँचरसँ आँखि पोछैत सुजाता चाह बनबैले किचेन गेलीह। रमाकान्तक हृदयमे सुजाताक प्रति विशेष आकर्षण बढ़ि गेलनि। जना हनुमानक हृदयमे राम-लक्ष्मण बैसल, तहिना सुजातो रमाकान्तक हृदयमे एकटा छोट-छीन घर बना लेलनि। रमाकान्तक प्रति सुजातोक हृदयमे तस्वीर बनए लगलनि। आइ धरि जे बात सुजातासँ क्यो ने पूछने छलनि से बात सुनि ससुरक हृदय पघलि गेलनि। जरुर रमाकान्तक हृदयमे सुजाता अपन जगह बना लेलनि। चाह आनि सुजाता रमाकान्तो आ जुगेसरोकेँ देलनि। हाथमे चाह लइतहि रमाकान्त अपन अस्तित्व बिसरि गेलाह। सुजाताक आँखिमे अपन आँखि दऽ एक-टकसँ देखए लगलाह। आद्र भऽ रमाकान्त सुजाताकेँ कहलखिन- "ओहि समयक जिनगी ओहिना मन अछि आकि बिसरबो केलहुँहेँ ?"

"बिसरब कोना! ओ घटना तँ हमर जिनगीक इतिहासक एक महत्वपूर्ण कालखंड छी।"

"तकर बाद की भेल?"

"हम, दू भाए-बहीन छी। एगारह बरखक हम रही आ आठ बर्खक भाए। दुनू गोरे इस्कूल जाइत रही। महल्लेमे स्कूल। भाए तँ छोट रहए तेँ कोनो काज नै करै मुदा हम माइक संग कपड़ो खीची, परतीपर सुखेबो करी, लोहो दिऐ आ माइयेक संग महल्लासँ कपड़ा आनबो करी आ दाइयो अबिऐ। ओहिसँ जे कमाइ हुअए तहिसँ गुजर करी। पढ़ल-लिखल परिवारसँ लऽ कऽ बनिया-बेकाल धरिक परिवारमे आबा-जाही रहए। पढ़ल-लिखल परिवारमे जखन जाइ तँ फाटल-पुरान किताब मांगि ली। ओहिसँ पढ़ैले किताब भऽ जाए। खाइक जोगार कमाइयेसँ भऽ जाए। एहि तरहेँ मैट्रिक फस्ट डिबीजनसँ पास केलहुँ। जखन मैट्रिकक रिजल्ट निकलल रहए, तखन महल्ला भरिक लोक बाहबाही केलक। हमरो उत्साह बढ़ल। मनमे अरोपि लेलौं जे बी.एस.सी. करब। ओहि समए हमरा मनमे डॉक्टरक विचार रहबे ने करए। कोना रहैत? जतबे बुद्धि रहए ततबे ने सोचितहुँ।

कओलेजमे एडमीशन शुरु भेल। महेन्द्र भैयाक कपड़ा दैइले माए-भाय आ हम तीनू गोरे भिनसुरके पहरकेँ एलहुँ। भैया ताबे अस्पतालेक क्वाटरमे रहैत रहथि। तखन ओसारपर बैसि दाढ़ी बनबैत रहथि। माए कपड़ाक मोटरी रखि जमुना दीदीकेँ सोर पाड़ि कहलखिन- "मलिकाइन, कपड़ा लिअ।"

हम-दुनू भाए-बहीन ठाढ़े रही। कोठरीसँ निकलितहि दीदीक नजरि हमरापर पड़लनि। जमुना माएकेँ कहलखिन- ''बेटी पास केलक, मिठाइ खुआउ।''

जमुना दीदीक बात सुनि महेन्द्र भैया दाढ़ी बनाएब छोड़ि हमरा दिशि मूड़ी उठा कऽ तकलनि। बिना किछु बजनहि थोड़े काल देखि, फेर हाँइ-हाँइ दाढ़ी काटए लगलाह। दाढ़ी काटि, दाढ़ी कटैक सभ समान सैंतिकेँ राखि, हमरा सोर पाड़लनि। हमरा मनमे कोनो तरहक विचार उठबे ने कएल। किएक तँ तेसरा-चारिम दिनपर बरोबरि अबैत छलहुँ। दीदीकेँ भैया कहलखिन- ''कने चाह बनाउ।'' भैयाक बोली हम नइ बुझलिऐनि मुदा दीदी बुझि गेलखिन। ओ पाँच कप चाह बनौलनि। दू कप अपने दुनू परानी आ तीन कप हमरा तीनू गोरेकेँ देलनि। पहिल दिन हम भैयाक डेरामे चाह पीने रही। भैया, नाम पुछलनि, हम कहलिऐन। मैट्रिक रिजल्ट संबंधमे पुछलनि। सेहो कहलिऐन। भैया नाम लिखबैसँ लऽ कऽ किताब-कापी धरिक भार उठबैत माएकेँ कहलखिन- ''स्कूल-काओलेज तँ लगे माने महल्लेमे अछि तँ बाहर जा पढ़ैक समस्ये नहि अछि। घरेपर रहि पढ़ि सकैत अछि। तखन स्कूल-कओलेजक खर्चसँ लऽ कऽ पढ़ैक सब सामग्री धरिक खर्च आइसँ दुनू भाए-बहीनक हम देब।''

भैयाक बात सुनि खुशीसँ हमर मन नाचि उठल। हम बड़ी काल धरि बकर-बकर भैयाक मूह देखिते रहि गेलहुँ। जाधरि डॉक्टर बनलहुँ ताधरि भैया सभ खर्च दैते रहलाह।''

सुजाताक बात सुनि रमाकान्तक मनमे एलनि जे जँ कनियो मदति गरीबकेँ कएल जाए तँ जिनगीक उद्धार भऽ सकैत अछि। पितो बहुत केलन्हि। बेटो केलक। बीचमे हम तँ किछु नहि केलहुँ। ओना दोसराक लेल रमाकान्तो बहुत किछु केनहुँ रहथि आ करबो करथि। मुदा सभ केलहा बिसरि गेलाह।

रातिक आठ बजि गेल। एका-एकी तीनिटा गाड़ी आएल। महेन्द्र अपन गाड़ी कोठरीमे रखि, कपड़ा बदलि, सोझे पिता लग अएलाह। महेन्द्रकेँ देखितहि रमाकान्त कहलखिन- ''बौआ, हम बेसी दिन नहि अँटकब। हम तँ दस गोटेमे समए बितबैबला छी। एहिठाम असकरमे नीक नहि लागत।''

महेन्द्र- ''गाड़ीक झमारल छी तँ पहिने चारि दिन अराम करु। तकर बाद देखि-सुनिकेँ जाइक विचार करब।''

५

मद्रास अएला रमाकान्तकेँ आइ दस दिन भऽ गेलनि। दस दिन कोना बीतिलनि से बुझबे नहि केलनि। एहि दस दिनक बीच महेन्द्र अपने गाड़ीसँ तीनू गोटेकेँ उदकमंडलम्, कोडाइकनाल आ एकडि हिलस्टेशन सहित शुचीन्द्रम, रामेश्वरम्, तिरुचेंदूर, मदुराइ, पलनी, तिरुचिरापल्ली, श्रीरंगम, तंजोर, कुम्बकोणम, नागोर, वेलांकण्णि, वैत्तीश्वरन कोइल, चिदम्बरम्, तिरुवण्णामलै, कांचीपुरम, तिरुत्तणि आओर कन्याकुमारी घुमा देलकनि। मुदा अपना सभसँ भिन्न रीति रेवाज, बेवहार आ जीबैक ढंग ओहिठामक लोकक बुझि पड़लनि। एकटा बात जरुर देखल जे अपना सभसँ ओ सभ अधिक मेहनतियो आ इमानदारो अछि।

भारतक आजादीक उपरान्त राज्य पुनर्गठन अधिनियमक अन्तर्गत चौदह जनवरी उन्नैस सौ उनहत्तरिमे मद्रास राज्यक नाम तमिलनाडु राखल गेलैक। पुरना केरलक किछु हिस्सा आ आंध्रप्रदेशक किछु हिस्सा जोड़ि कऽ एहि राज्यक निर्माण भेलैक।

तमिलनाडु द्रविड़ सभ्यताक केन्द्र अदौसँ रहल अछि। ई. पू. चारिम शताब्दीमे चोल, पाण्ड्य आ चेर राजवंशक समएमे द्रविड़ सभ्यता अपन चरम सीमापर फुलाएल-फड़ल।

तेरहमी शताब्दीक आरंभमे एहिठाम काकतीयेक शासन रहल। तेरह सौ तेइस ईस्वीमे दिल्लीक तुगलक सुल्तान काकतीय शासककेँ भगौलक। गोलकुंडाक कुतुबशाही सुल्तान अखनुका हैदराबादक न्यो लेलक। सम्राट औरंगजेब सुल्तानकेँ हरा आसफ जा केँ गवर्नर बना देलक। मुगल शासनक आखिरी समएमे आसफ जा अपनाकेँ, निजामक उपाधि धारण कए, स्वतंत्र शासक घोषित कऽ लेलक।

सोलह सौ उनचालीस ईस्वीमे, ईस्ट इंडिया कम्पनीक पएर मद्रासमे जमि गेल ताधरि देशक अधिकांश भागमे अंग्रेजक अधिकार भऽ गेल छलैक। तमिलनाडुक पूबमे बंगालक खाड़ी, दछिनमे हिन्द महासागर, पछिममे केरल आ उत्तरमे कर्नाटक आ आन्ध्रप्रदेश अछि।

पैछला राति गप-सप करैत सभकेँ डेढ़ बजि गेलनि। गप्पक विषयो नमहर, सात दिनक देखल मद्रास छलनि।

अढाइ बजे भोरमे एकठाम गाड़ी दुर्धटना भऽ गेलैक। चारु गोट डॉक्टरकेँ फोन एलनि जे जलदी दुर्घटनाक जगहपर अबियौक। फोन सुनि महेन्द्र तीनू गोटे रविन्द्र, जमुना आ सुजाताकेँ जानकारी दैत कहलखिन- "जल्दी तैयार भऽ चलै चलू।"

एकहि गाड़ीसँ चारु गोटे बिदा भेलाह। दुर्घटनाक जगह पहुँचि महेन्द्र देखलखिन जे गाड़ी एकटा सड़कपर राखल रौलरसँ टकरा गेल अछि। जाहिसँ

थौआ-थाकर भेल अछि। गाड़ीमे एक्के परिवारक आठ गोटे सवार रहथि। उद्योगपति परिवार। एकटा जवान आ एकटा बच्चाक मृत्यु भऽ गेल छलैक। एकटा बूढ़क माथ फटि गेल रहनि, जहिसँ अड़-दर्र बजैत रहथि। दोसर महिलाक छाती टुटि गेल रहनि। मुदा वायुपर ओहो बजैत छलीह। एकटा जुआन महिलाक दुनू जांघ टूटि गेल रहनि। दूटा ढेरबा बचियाक एक-एक आँखि फुटि गेल रहनि आ एक-एकटा डेन टूटि गेल रहनि। अबोध बच्चाकेँ किछु नहि भेल छलैक। महेन्द्रक पहुँचतहि धाँइ-धाँइ अस्पतालक आनो-आनो डॉक्टर, नर्स आ स्टाफो सभ आवए लगलाह। थाना पुलिससँ लऽ कऽ जिला पुलिस धरि पहुँच गेलैक। डॉक्टर सभ रोगी सभकेँ देखि विचार केलनि जे अस्पताले लऽ जाएब नीक होएत। डॉक्टर सभक संगमे सिर्फ अल्लेटा। ने कोनो दवाइ आ ने कोनो औजार रहनि।

आठो गोटेकेँ, थानोक पुलिस आ अस्पतालोक कर्मचारी, उठा-पुठा कऽ अस्पताल अनलकनि। अस्पतालमे जाँच-पड़ताल होइतहि समए दू गोटेक मृत्यु भऽ गेलैक। बाकीक उपचार चलए लगलैक।

साँढ़े पाँच बजे चारु गोटे महेन्द्र डेरा पहुँचलाह। गाड़ीक हड़हरेनाइ सुनि रमाकान्तोक निन्न टुटि गेलनि।

सुतैक समए नहि देखि चारु गोटे गाड़ीसँ उतरि अपन-अपन नित्य-कर्ममे लगि गेलाह। ओछाइने पर पड़ल-पड़ल रमाकान्त सोचए लगलथि जे आइ एगारहम दिन छी मुदा एक्को-टा पोता-पोतीक मुँह नहि देखि सकलहुँ। जाहि परिवारमे पाँच-पाँचटा पोता-पोती रहत ओहि परिवारक बच्चासँ भेटि नहि होअए, कते दुखक बात छी? माए-बाप, दादा-दादीक स्नेह बच्चाक प्रति की होइत छैक, तेकर कोनो नामो-निशान नहि देखैत। जहि बच्चाकेँ माए-बापक सिनेह नहि भेटितैक, ओहि बच्चाकेँ माता-पिताक प्रति केहेन धारणा बनतैक?

हँ, ई बात जरुर जे दुनियाँक सभ मनुष्य-मनुष्य छी, तँ सबहक प्रति सभकेँ स्नेह हेबाक चाहिऐक। मुदा जाहि परिवेशमे हम सभ जीबि रहल छी, जाहिठाम व्यक्तिगत सम्पत्ति आ जबाबदेहिक बीच मनुष्य चलि रहल अछि, ताहिठाम स्नेहो तँ खंडित होइत अछि। मनुष्यक जिनगी स्थायी नहि, अस्थाइ होइत अछि। उम्रक हिसाबसँ शरीर क्रियाशील रहैत अछि। जहिना बच्चाक उत्तरदायित्व माए-बापपर रहैत छैक तहिना रोगसँ ग्रसित वा अधिक बएस भेलापर जखन शरीरक अंग शथिल होअए लगैत छैक, तखन तँ दोसरेक सहाराक जरुरत होइत छैक। जँ से नहि होए तँ जिनगी कष्टमय हेबे करत। लोक एक राज्यसँ दोसर राज्य, एक देशसँ दोसर देश कमाइले जाइत अछि। किएक? एहि लेल ने जे अपनो आ परिवारोक जिनगी चैनसँ चलत।

महेन्द्रकेँ तीन आ रविन्द्रकेँ दू सन्तान। दुनू मिला कऽ पाँच भाए-बहीन। महेन्द्रक जेठ बेटा हाइ स्कूलमे पढ़ैत, बाकी चारु नर्सरीमे। महेन्द्रक जेठ बेटा रमेश हाइ स्कूलक होस्टलमे रहैत अछि आ बाकी चारू आवासीय स्कूलमे। महिना दू महिनापर महेन्द्र अपनेसँ जा कऽ खरचा पहुँचबैत छथि।

बाबा-दादीक जोर कएलापर बच्चा सभकेँ भेंट करैक कार्यक्रम महेन्द्र बनौलनि। रवि दिन स्कूलो बन्न रहतैक, तेँ भेंट-घाँट करैमे सुविधा सेहो होएतनि। सात बजे डेरासँ चलबाक कार्यक्रम बनल। रमाकान्त, श्यामा आ जुगेसर समएसँ पहिनहि तैयार भऽ गेल छलाह, मुदा भरि रातिक जगरना दुआरे महेन्द्र पछुआएल रहथि। ओँघीसँ देह भसिआइत रहनि। मुदा निन्न तोड़ैक दवाइ खा रमाकान्त लग आबि कहलखिन- "बाबू, हम तँ भरि राति जगले रहि गेलहुँ। जखन ओछाइनपर गेलहुँ, निन्न पड़लो नहि रही आकि फोन आबि गेल जे एकटा गाड़ीक दुर्घटना भऽ गेलैक, जहिमे सबार एक्के परिवारक आठ गोटे छलाह, ओ पैघ उद्योगपतिक परिवारक छलाह। हुनके सभकेँ देखैत-सुनैत भोरमे एलहुँ।"

बिचहिमे जुगेसर बाजल- "मरबो केलइ?"

"हँ। जे दुनू मुख्य कारोबारी छलाह ओ मरि गेलाह। एक गोटेकेँ ब्रेन हेम्रेज भऽ गेलनि। आब ओ सभ दिन पगलाएले रहती। एक गोटेकेँ छातीक हड्डी थकुचा-थकुचा भऽ गेल छनि, ओ दू-चारि मासक मेहमान छथि। तीनटा अधमरु भऽ कऽ जीताह। एकटा चारि सालक बच्चा टा सुरक्षित अछि।"

रमाकान्त महेन्द्रक बातो सुनैत आ मने-मन सोचबो करैत जे ईएह थिक जिनगी। अहीक लेल लोक एते नीचसँ नीच काजपर उतरि मनुखकेँ मनुख नहि बुझैत अछि। अनका बुझबैले धरमक नाटक रचि पूजा-पाठ, कीरतन-भजन करैत अछि। हजारो-लाखो रुपैआ खर्च कऽ पाथरक मूर्ति स्थापित करैत अछि। नीक-नीक प्रसाद चढ़बैत अछि। मुदा जाहि मनुष्यकेँ पेटमे अन्न नहि, देहपर वस्त्र नहि, रहैक घर नहि आ जीबैक कोनो ठेकान नहि, ओकरा तँ देखिनिहारो क्यो नहि। यैह थिक कर्मकाण्डक आडम्बर आ चक्रव्यूह।

रमाकान्तकेँ गंभीर देखि मुस्की दैत महेन्द्र कहलकनि- "बाबू, नोकरीक जिनगिये एहन होइत छैक। एक रातिक कोन बात जे एकलखाइत पाँचो राति जागल रहब तैयो किछु नहि बुझबैक। एहन-एहन दवाइ सब अछि जे खाइत देरी निन्न निपत्ता भऽ जाएत अछि। जाबत अहाँ सभ चाह-पान करब ताबत हमहूँ तैयार भऽ जाइत छी।"

कहि महेन्द्र उठि कऽ तैयार होइले अपना कोठली चल गेलाह।

चारु गोटे कारमे बैसि बिदा भेलाह। महेन्द्र अपने ड्राइवरी करैत रहथि। दुनू स्कूल एक्केठाम। एक दोसरसँ थोड़बे हटल रहै। चारु गोटे पहिने रमेशक होस्टल पहुँचलाह। छहरदेबालीक बीचमे होस्टल अछि। अबै-जाइक एक्केटा दरबज्जा, जहि दरबज्जामे लोहाक फाटक लागल। एकटा चौकीदार बैसल। दरमान महेन्द्रकेँ चिन्हैत रहनि। किएक तँ मासे-मास ओ अबैत छथि। चारु गोटे भीतर गेलाह। भीतरमे गारजन सभक लेल एकटा खुला घर बनल अछि, जाहिमे चारु कात कुरसी सजल। चारु गोटे ओहि घरमे बैसलाह। महेन्द्र रमेशकेँ समाद देलखिन। रमेश आबि पिताकेँ गोर लगलकनि। पिताकेँ गोर लागि रमेश ठकुआ कऽ आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। ने रमेश बाबा दादीकेँ चिन्हैत आ ने बाबा-दादी

रमेशकेँ चिन्हैत रहनि। ठकुआ कऽ ठाढ़ देखि रमेशकेँ महेन्द्र कहलखिन- ''बौआ, बाबा-दादीकेँ गोर लगिअनु।''

महेन्द्रक कहलापर रमेश तीनू गोटेकेँ गोर लगलकनि। शिष्टाचार निमाहैत तीनू गोटे असिरवाद दऽ देलखिन। मुदा रमाकान्तक मनमे तूफान उठि गेलनि। सोचए लगलाह जे, जे पोता चिन्हबो ने करैए ओ सेवा की करत? पढ़नाइ-लिखनाइ, सभ मनुष्यक लेल जरुरी अछि। एहिसँ ज्ञान होइत छैक, जे जिनगी जीबैक ढंग सिखबैत छैक। मुदा जँ बच्चाकेँ परिवारसँ अलग जिनगी बना पढ़ाओल-लिखाओल जाए तँ ओ परिवारकेँ कोना चिन्हत आ परिवारक दायित्वकेँ कोना बुझत? परिवारोक तँ सीमा छैक। एक परिवार पैछला पीढ़ीकेँ जोड़ि बनैत, जे संयुक्त परिवार कहबैत। जे मिथिलाक धरोहर छी। आ दोसर अपने लगसँ आगू बढ़ि बनैत अछि, जे एकल परिवार कहबैत अछि। जहिमे लोक बापो-माएकेँ बीरान बुझि कुभेला करैत अछि। जँ एहि तरहक परिवारक संरचना होअए लगत तँ बापो-माएकेँ धिया-पूतासँ कोन मतलब रहतैक। तखन समाजक की दुर्दशा होएतैक? जँ से होएतैक तँ मनुष्य आ जानवरमे अन्तरे की रहतैक? अखने देखि रहल छी जे अपन खून रहितहुँ बुझि पड़ैत अछि जे, जहिना हाट-बजार वा मेला-ठेलामे हजारो मनुक्खकेँ देखलोपर अनचिन्हारे-अनचिन्हार बुझि पड़ैत, तहिना तँ अखनो भऽ रहल अछि। एहिसँ नीक जे जहिना मनुष्यक समूहसँ परिवार बनैत आ परिवारक समूहसँ समाज बनैत तँ समाजेक सदस्यकेँ किएक ने अंगीकार कएल जाए, जहिसँ जिनगी हँसैत-खेलैत बीतैत रहत। पिताकेँ गुम्म देखि महेन्द्र कहलकनि- ''बाबू, एहिठामसँ चलू। एहिठाम सभ बच्चाक रुटिंग बनल छैक। अगर अपना सभ बेसी समए अँटकबै तँ बच्चाक रुटिंग गड़बड़ा जएतैक।''

ममता भरल मनकेँ मारि रमाकान्त उठिकेँ ठाढ़ होइत कहलखिन- ''हँ, हँ, चलू। ओहू बच्चा सभकेँ देखैक अछि।''

रमेश चलि गेल आ इहो चारु गोटे गाड़ीमे बैसि बढ़लाह नर्सरी विद्यालय लगेमे रहए। महेन्द्रकेँ दरमान चिन्हिते रहनि तेँ, कोनो रोक-राक नहिये भेलनि। चारु बच्चाकेँ दरमान बजा अनलक। चारु बच्चा आबि महेन्द्रकेँ गोर लगलकनि। गोर लागि चारु बच्चा ठमकि गेल। हाथक इशारासँ रमाकान्त आ श्यामाकेँ देखबैत बच्चा सभकेँ महेन्द्र कहलखिन- ''बौआ, बाबा-दादी छथुन। गोर लगहुन।''

महेन्द्रक कहलापर चारु बच्चा तीनू गोटेकेँ गोर लगलकनि। रमाकान्तो आ श्यामोक मन तरे-तर टूटए लगलनि। मुदा की करितथि? सोचए लगलथि जे की सोचि एहिठाम एलहुँ आ की देखि रहल छी। आब एक्को दिन एहिठाम रहब उचित नहि, मुदा जखन आबि गेलहुँ तखन तँ बेटे-पुतोहूक विचारसँ ने गाम जाएब। किछु देखैक लेल सेहो बाकी अछि। टूटल मने रमाकान्त महेन्द्रकेँ कहलखिन- ''बच्चा सभकेँ देखिये लेलहुँ, आब ऐठामसँ चलू। गामक सुरता खीचि रहल अछि। जल्दीये चलि जाएब।''

पिताक बात महेन्द्र नहि बुझि सकलाह। जाधरि महेन्द्र गाममे रहलाह विद्यार्थिये छलाह। डॉक्टर बनला बाद मद्रासे चलि अएलाह। जाहिसँ मद्रासेक परिवेशमे ढलि गेलाह।

बेर टगितहि चारु गोटे ब्रह्मचारी आश्रम बिदा भेलाह। बह्मचारी आश्रममे मंदिर नहि। मात्र दूटा घर। एकटा घर धर्मशाला जेकाँ सार्वजनिक आ दोसर घरमे ब्रह्मचारी जी अपने रहैत छलाह। ओहिमे एक भाग सुतबो आ भानसो करैत छथि। बरतन-बासन सभ एक भागमे सेहो ओहि घरमे रखने छथि। ब्रह्मचारी जी मिथिलेक। अद्वैत दर्शनक प्रकाण्ड पंडित छथि। नस-नसमे अद्वैत दर्शन समाएल छनि। ब्रह्मचारी आश्रम लगमे रहितहुँ महेन्द्र नहि जनैत छलाह। मुदा जखन रामेश्वरम् गेल रहथि तँ ओतै एकटा पुजेगरी कहलकनि।

मुख्य मार्गसँ ब्रह्मचारी आश्रम दस लग्गी पछिम। एकपेड़िया रस्ता तँ महेन्द्र मुख्य मार्गक कतबाहिमे गाड़ी लगा, चारु गोटे आश्रम दिशि बढ़लाह। आश्रमक सीमापर पहुँचतहि रमाकान्तो आ महेन्द्रो आँखि उठा-उठा तजबीज करए लगलथि। ने कोनो तरहक तड़क-भरक आ ने लोकक भीड़ आश्रममे देखथि। घर तँ ईंटाक बनल छैक मुदा धर्मस्थान जेकाँ नहि बुझि पड़ैत छैक। साधारण गृहस्तक घर जेकाँ आश्रम। मुदा नव चीज दुनू गोटेकेँ बुझि पड़लनि। जे हम सभ मद्रासक जमीन छोड़ि मिथिला चल एलहुँ। ब्रह्मचारी जी करजानमे कच्चिया हाँसूसँ केरा गाछक सुखल डपौर सभ कटैत रहथि। केरा गाछक अढ़मे रहथि। तँ ने ब्रह्मचारी जी रमाकान्त सभकेँ देखलखिन, आ ने रमाकान्त सभ ब्रह्मचारी जीकेँ। मुदा गाड़ीक आवाज ब्रह्मचारी जी सुनने रहथि। ओना गाड़ी तँ सदिखन चलिते रहैत अछि, तँ गाड़ीक आवाजपर ब्रह्मचारी जी धियाने नहि देलनि। अपन काजमे मस्त रहथि।

एक बीघा जमीन आश्रममे। ओहिमे सभ किछु बनल रहैक। दू कट्ठामे दुनू घर, आंगन आ गाइक थैर रहनि। चारि कट्ठाक एकटा छोटबेटा पोखरि। पाँच कट्ठामे गाछी-कलम। दू कट्ठामे गाइयक लेल घासक खेती आ सात कट्ठामे अन्न उपजैत अछि।

सभसँ पहिने चारु गोटे पोखरिक घाटपर पहुँचलथि। पोखरिक घाट पजेबा-सिमटीक बनल। घाटपर ठाढ़ भऽ चारु गोटे पोखरिकेँ हियासि-हियासि देखै लगलथि। पोखरिक किनछरिमे पान-सातटा मिथिलेक बगुला चरौर करैत रहए। एक टकसँ रमाकान्त बगुलाकेँ देखि सोचए लगलथि जे जहियासँ ऐठाम एलहुँ, आइये अपन इलाकाक बगुला देखलहुँ। ओना बगुला तँ एतहुँ अछि मुदा मिथिलाक बगुला तँ दोसरे चालि-ढालिक होइत अछि। बगुला परसँ नजरि हटा पोखरि दिशि देलनि। पोखरिमेँ दस-बारहटा कुमहीक छोट-छोट समूह फूल जेकाँ छिड़ियाइल रहए। जे हवाक सिहकीमे नचैत रहए। तहि बीच दूटा पनिडूबी भुक दे जागल, जकरा अपना सभ पिहुओ कहै छिऐक। पिहुआकेँ तजबीज करितहि रहथि आकि एक जेर सिल्ली उड़ैत आबि पोखरिमे बैसल। तहि बीच जुगेसर

रमाकान्तकेँ कहलकनि- ''कक्का, ई तँ अपने इलाकाक पुरैनिक गाछ छी। फूलो ओहने बुझि पड़ैए।''

जुगेसरक बात सुनि रमाकान्त मूड़ी उठा पुरनि कऽ देखि कहलखिन- ''हँ, हौ जुगेसर। छी तँ कमले।''

हाथ-पएर धोए चारु गोटे घाटक उपरका सीढ़ीपर आबि ब्रह्मचारी जीकेँ हियाबै लगलथि। ब्रह्मचारी जीकेँ नहि देखि रमाकान्त सोचए लगलथि जे भरिसक ब्रह्मचारी जी कतौ गेल छथि। तहि बीच जुगेसरक नजरि करजान दिशि गेल। करजानमे ब्रह्मचारी जीकेँ देखि जुगेसर रमाकान्तकेँ कहलकनि- ''काका, एक गोटे करजानमे काज कऽ रहल अछि। हम जा कऽ पूछि लइ छिअनि।''

जुगेसरक बात सुनि रमाकान्तो आ महेन्द्रो ऑंखि उठा कऽ देखलनि। मुदा ब्रह्मचारी जीक छुछुन चेहरा देखि रमाकान्तकेँ भेलनि जे कियो जन-मजदूर काज करैत अछि। तहि बीच ब्रह्मचारिये जीक कानमे रमाकान्तक आवाज पहुँचलनि, कानमे आवाज पहुँचतहि ब्रह्मचारी जी हाथक हँसुआ नेनहि पहुँचलथि।

ब्रह्मचारी जी अनेको भाषा आ बोलीक जानकार छथि। चारु गोटेकेँ देखि ब्रह्मचारी जी बुझि गेलथि। ई लोकनि मिथिलेक छथि किएक तँ जुगेसर आ रमाकान्तकेँ मिथिलेक ढंगसँ धोती पहिरने देखलनि। मुदा महेन्द्रकेँ देखि तत-मतमे पड़ल रहथि। श्यामाक साड़ी पहिरब देखि ब्रह्मचारी जीक मन मानि गेलनि जे ई सभ मिथिलेक छथि। मुदा रमाकान्त ब्रह्मचारी जीकेँ नहि चीन्हि पुछलखिन- ''ब्रह्मचारी जी कतय छथि?''

ब्रह्मचारी जी साधारण धोती पहिरने रहथि। सेहो फाँड़ बन्हने। देहपर गमछा रहनि। ने बाबरी छटौने आ ने दाढ़ी रखने रहथि। ने गरदनिमे कंठी-माला आ ने देहमे जनेउ। मुस्कुराइत ब्रह्मचारीजी उत्तर देलखिन- ''अहाँ सभ मिथिलासँ एलहुँ अछि। एना-ठाढ़ किएक छी। चलू बैसि कऽ गप-सप करब। ब्रह्मचारी जी अपने आबि जएताह।''

कहि ब्रह्मचारी जी पोखरिक घाटपर हाँसू रखि हाथ-पएर धोए अंगनेमे मोथीक बिछान बिछौलनि। चारु गोटेकेँ बैसाए ब्रह्मचारी जी घरसँ एक घौड़ केरा निकालि अनलनि। केराक रंग-रुप देखि रमाकान्त बुझि गेलखिन जे ई तँ मिथिलेक गौरिया-मालभोग छी, अंठियाहा नहि छी। घौउरो नमहर। गछपक्कू, आँठी-आँठी जुआइल छलैक। सुआदो नीक हेतै, अपनेसँ पूर्ण जुआ कऽ पाकल अछि। धुकलाहा नहि छी। केराक घौड़ बीचमे राखल आ सभ किओ हाथ बगने। जुगेसर सोचैत जे खेने छी, पेटमे जगहे नहि अछि, नइ तँ साँसे घौड़ खा जइतियनि। रमाकान्त ब्रह्मचारी जीकेँ कहलकनि- ''अखने, एक घंटा पहिने, भोजन केलहुँ, तेँ खाइक क्षुधा नहि अछि। मुदा ब्रह्मचारी आश्रमक परसाद छी, तेँ दू छीमी जरुर खाएब।''

कहि दूटा छीमी उपरका हत्थासँ तोड़ि खेलनि।

रमाकान्तकेँ देखि महेन्द्रो आ जुगेसरो दू-दू छीमी तोड़ि खेलनि। श्यामा हाथ बगने चुपचाप बैसल छलीह। श्यामाकेँ हाथ बागब देखि ब्रह्मचारी जी कहलखिन-

"बहीन, अहाँ जाहि दुआरे हाथ बगने छी ओ हमहूँ बुझै छी। मुदा अपन मिथिलामे दुनू चलैन अछि। पतिक आगूमे पत्नीक नहि खाएब आ विवाहक प्रकरणमे समाजक माए-बहीन मिलि मौहक करैत छथि। जाहिमे पति-पत्नीकेँ संगे खुआओल जाइत अछि। तेँ अहूँकेँ लजेबाक नहि चाही। ई तँ सहजहि आश्रम छी। दोसर धर्मस्थानो छी।"

ब्रह्मचारी जीक विचार सुनि श्यामाक मन डोललनि मगर व्यवहार मनकेँ रोकैत छलनि। असमंजसमे श्यामाकेँ देखि जुगेसर फनकिकेँ बाजल- "काकी, जब हमर घरनीक हाथ ढेकीमे कटि गेल रहनि, तखन हम अपने हाथे खुआबिअनि। अहाँ तँ सहजहि बृद्ध भेलहुँ।"

जुगेसरक बात सुनि रमाकान्त मूड़ी झुका लेलनि। दू छीमी केरा श्यामो खेलनि। चारु गोटे केरा खा, पानि हाथ-मूह धोलनि।

ब्रह्मचारी जी रमाकान्तकेँ पुछलखिन- "एहिठाम अपने कोना-कोना ऐलिऐक?"

महेन्द्रकेँ देखबैत रमाकान्त कहलखिन- "ई जेठ बेटा छथि। डॉक्टरी पढ़ि, नोकरी करए एहिठाम चलि अएलाह। सालमे एक बेर अपनो गाम जाइत छथि। बाल-बच्चा आ स्त्री आइ धरि गाम नहि गेलखिन अछि। तेँ दुनू परानीक मनमे आएल जे देशो-कोस आ बच्चो सभकेँ देखि आबी। तेँ एलहुँ?"

महेन्द्र दिशि देखि ब्रह्मचारी जी पुछलखिन- "कते दिनसँ एहिठाम छी?"

कनेक गुम्म भऽ समए मन पाड़ि महेन्द्र कहलकनि- "ई बाइसम बर्ख छी।"

"एते दिनसँ एहिठाम रहै छी, मुदा कहियो भेंट-घाँट नहि भेल।"

अपन बिबसता देखबैत महेन्द्र उत्तर देलखिन- "एक तँ नोकरी करै छी तहिपर डॉक्टरी एहन पेशा छी जे भरि मन कहियो अरामो नहि कऽ पबैत छी। घुमनाइ-फीरिनाइक कोन बात। मुदा तैयो कहुना ने कहुना समए निकालि ऐबो करितहुँ से बुझले नहि छल।"

"आइ कोना ऐलहुँ? "

"चारिम दिन रामेश्वरम् गेल रही, ओहिठाम एकटा पुजेगरी अपनेक संबंधमे कहलनि।"

महेन्द्रक बात सुनि ब्रह्मचारी जी मुस्कुराइत कहए लगलखिन- "मासमे एक बेर हमहूँ रामेश्वरम् जाइ छी। समाजरुपी समुद्रक कातमे स्थापित रामेश्वर लग जाए समुद्रमे उठैत लहरिकेँ धियानसँ देखबो करैत छी आ बिचारबो करैत छी। दुनू तरहक लहरि समुद्रमे उठैत अछि- नीको आ अधलो। नीक लहरि देखि मन प्रसन्न होइत अछि आ अधला देखि मन जरए लगैत अछि। मुदा तैयो सोचैत रहै छी जे अधला लहरि बेसी उग्र नहि हुअए। आ नीक लहरि सदिखन उठैत रहए।"

ब्रह्मचारी जीक विचार जना महेन्द्रक सुतल बुद्धिकेँ जगा देलकनि। अनायास महेन्द्रकेँ हुअए लगलनि जे अन्हारसँ इजोतमे आबि गेलहुँ, आकि इजोतेसँ अन्हारमे चलि गेलहुँ। विचित्र स्थितिमे महेन्द्र पड़ि गेलाह। जाहि रुपमे माए-बाप आ जुगेसरकेँ अखन धरि देखैत छलाह ओ अनायास बदलए लगलनि।

बीचसँ उठि महेन्द्र गाछी दिशि टहलैले बिदा भऽ गेलाह। ब्रह्मचारी जी बुझि गेलखिन।

रमाकान्त ब्रह्मचारी जीकेँ पुछलखिन- "अपने मिथिला छोड़ि एहिठाम किएक आबि गेलहुँ? जखनिकि ई इलाका दोसर धर्म, संस्कृति आ जातिक छी?"

मुस्कुराइत ब्रह्मचारी जी कहए लगलखिन- "कोनो जाति पंथ आ संस्कृतिक आधार होइत छै जिनगी। जिनगीक आधार होइत छै मुनुक्खक बुद्धि, विचार आ कर्म। जखने मनुक्ख अपन सुपत कर्मसँ जिनगी ठाढ़ करैत अछि तखने धर्म, संस्कृति, विचार आ आचार सभ किछु बदलि, सही मनुक्खक निर्माण करैत अछि। जकरा हम महामानव, धर्मात्मा आ उच्च कोटिक मनुष्य बुझैत छी, जे मिथिलांचलमे क्षीण भऽ रहल अछि। सोलहन्नी मरल नहि अछि मुदा दबाइत-दबाइत दुब्बर भऽ गेल अछि। मिथिलाक जे मूल बासी छथि हुनका अभिजात वर्ग वा कही तँ परजीवी वर्ण वा बाहरी लोक आबि सभ किछुकेँ बदलि, एहेन सामाजिक ढाँचामे ढालि देलकनि, जहिसँ अदौसँ अबैत संस्कृति दाबि अभिजात संस्कृतिकेँ बढ़ा देने अछि। जिनगीक सच्चाइकेँ दाबि बनौआ जिनगीमे बदलि देने अछि, जाहिसँ लोकक जिनगी वास्तविकतासँ हटि बौआ गेल अछि। ओना निर्मूल नष्ट नहि भेल अछि मुदा एतेक क्षीण जरुर भऽ गेल अछि जे नीक-अधलाहकेँ बेराएब कठिन भऽ गेल अछि। हम तँ सभ मनुष्यकेँ मनुष्य बुझैत छी। ने कियो कारी अछि आ ने कियो गोर। मुदा जिनगीक ढाँचा एहन बनि गेल अछि जे स्पष्ट रुपमे एक-दोसरसँ पैघ आ छोट बनि गेल अछि। ओना देखबै तँ बुझि पड़त जे सभ, एक दोसरसँ पैघ आ एक-दोसरसँ छोट अछि। मगर मकड़ा जेकाँ अपने पेटसँ सूत निकालि, जाल बुनि, ओहिमे सभ ओझरा गेल अछि।"

ब्रह्मचारी जी आँखि बन्न कऽ कए बजितहि रहथि आकि बिचहिमे रमाकान्त पूछि देलखिन- "अपने तँ प्रकाण्ड पंडित छी तखन मिथिलाकेँ किएक छोड़ि एहिठाम चलि एलहुँ?"

रमाकान्तक प्रश्न सुनि ब्रह्माचारीजी गंभीर होइत कहए लगलखिन- "अहाँक बात हम मानैत छी मुदा पढ़ल-लिखलसँ मुरुख धरिक विचार एहेन बनि गेल अछि जहिमे नीक विचारकेँ सन्हिआइये नहि देल जाइत अछि। कहलो गेल छैक जे 'असकर वृहस्पतिओ फूसि।' ततबे नहि जेकरा कल्याणक जरुरत अछि ओहो नीक रस्ता धरैक लेल तैयारे नहि अछि! 'जकरा लेल चोरि करी सएह कहै चोरा।' की करबैक? जँ सिर्फ वैचारिके स्तरपर संघर्ष होइ तँ संघर्ष कएल जा सकैत अछि, मुदा ततबे नहि अछि? जिनगीक क्रियामे उपद्रव जे करैत अछि से तँ करबे करैत अछि जे जानोसँ खेलबार करैमे नहि चुकैत अछि! अभिजात वर्ग एते सशक्त बनि गेल अछि जे जहिना कोनो साँढ़-पारा पाँकमे चलैत काल फँसि जाइत अछि आ परोपट्टाक नढ़िया, कुकुड़क संग गीध, कौआ आबि-आबि जीबितेमे आँखि फोड़ि-फोड़ि खाए लगैत अछि, तहिना इमानदार मनुखोक संग होइत अछि। मुदा हारि मानैले ने हम तैयार छी आ ने मानब? जहिना नव सुरजक

संग नव दिन शुरु होइत, तहिना नव मनुक्ख नव जिनगी बनबैक दिशमे बढ़ैत अछि, तेँ संतोष अछि।''

रमाकान्त- ''अपनेक परिवारमे के सभ छथि?''

ब्रह्मचारी- ''पिता गिरहस्त छलाह। पनरह बीघा खेत छलनि। ओहि खेतकेँ माता-पिता दुनू परानी उपजबै छलाह, जाहिसँ परिवार नीक जेकाँ चलैत छलनि। ओना रौदी-दाही होइते छलैक मुदा तैयो सहि-मरि कऽ ओहिसँ गुजर करैत छलाह। हम दू भाँइ छी। घरे लग नवानी विद्यालयमे हम पढ़लौं किछु दिन लोहना पाठशालामे सेहो पढ़लहुँ। हमर छोट भाए बच्चेसँ पिताजीक संग खेती करैत छलाह। नहि पढ़लनि। माइयो आ बाबूओ मरि गेलाह। हम विआह नहि केलहुँ। भाएकेँ विआह करा सभ किछु छोड़ि अपने घरसँ निकलि गेलहुँ। मनमे छल जे मिथिलामे जे कुरीति, कुव्यवस्था आ कुचालिमे समाज फँसल अछि ओकरा सुधारि सुरीति, सुव्यवस्था आ सुचालि दिशि लऽ चली। ताहि पाछू लगि गेलहुँ। मुदा वेबस भऽ छोड़ि चलि एलहुँ। कारण ओहिठामक नियामक आ नियामकक पाछु पढ़ल-लिखल- जे अपनाकेँ बुद्धियार बुझै छथि- लोकसँ लऽ कऽ अभिजात लोकनि, सभ मनुक्खक साँचकेँ ओहन बना देने छथि, जहिसँ कुपात्र छोड़ि सुपात्रक निर्माणे नइ होइत। जकरा चलैत छीना-झपटी, बलात्कार, चोरि, छिनरपन, जातीय उन्माद, धार्मिक उन्माद वा ई कहियौ जे मनुक्ख बनैक जते रस्ता अछि सभ नष्ट भऽ गेल अछि। सबहक जड़िमे सम्पति घुसि कऽ काज कऽ रहल अछि। जहि पाछू पड़ि सभ बताह भऽ गेल अछि। सभसँ दुखद बात तेँ ई अछि, जे नीकसँ नीक, पैघसँ पैघ आ विद्वानसँ विद्वान धरि, बजताह किछु आ करताह किछु। जहिसँ समाजक बीच सत्य बजनाइ मेटा गेल अछि। एहेन समाजमे नीक लोकक रहब कोना संभव हएत। तेँ छोड़ि कऽ पड़ा गेलहुँ। देहक सुखक पाछू सभ आन्हर भऽ गेल अछि।''

ब्रह्मचारी जीक बात सुनि रमाकान्तकेँ धनक प्रति मोह भंग हुअए लगलनि। सोचए लगलाह जे हमरो दू सए बीघा जमीन अछि, ओते जमीनक कोन प्रयोजन अछि। जँ ओहि जमीनकेँ निर्भूमिक गरीबक बीच बाँटि दिऐक तँ कते परिवार आ कत्ते लोक सुख-चैनसँ जिनगी जीबै लगत। जकरा लेल जमीन रखने छी ओ तँ अपने तते कमाइ छथि जे ढेरिऔने छथि। अदौसँ मिथिला तियागी महापुरुषक राज रहल, किएक ने हमहूँ ओहि परम्पराकेँ अपना, परम्पराकेँ पुनर्जीवित कऽ दिऐक। एते बात रमाकान्तकेँ मनमे अबितहि, ब्रह्मचारी जीकेँ पुछलखिन- ''अपने एहि जिनगीसँ संतुष्ठ छी?''

रमाकान्तक प्रश्न सुनि हँसैत ब्रह्मचारी जी उत्तर देलखिन- ''हँ, बिल्कुल संतुष्ट छी। एहिसँ नीक जिनगी की भऽ सकैत छैक। दुनियाक जते भाषा अछि, ओहि भाषाक उद्भव, विकास आ साहित्यक सभ पोथी पुस्तकालयमे रखने छी। ततबे नहि, दुनियामे जते धार्मिक सम्प्रदाए अछि ओकरो पुस्तक रुपमे रखने छी आ अध्ययन करैत छी। वेद, उपनिषद, ब्राह्मण, संहिता, स्मऋति, ज्योतिष, पुराण, रमाएणक संग बाइबिल, कुरान, गुरु ग्रन्थ सेहो रखने छी। सभ दर्शनक

पोथी सेहो अछि। शरीर निरोग रखैक दुआरे किछु समए शारीरिक श्रम करैत छी, बाकी समए अध्ययन, चिन्तन-मननमे रमल रहै छी। मासमे एक दिन सभ धार्मिक सम्प्रदायिक पंडित सभकेँ बजा, अपन-अपन सम्प्रदाएपर व्याख्यान करबैत छी। एक दिन राजनीतिक व्याख्यान, एक दिन साहित्यिक व्याख्यान मासमे करबैत छी। एहि सबहक अतिरिक्त एक-एक किसान गोष्ठी, चिकित्सा गोष्ठी, विज्ञान गोष्ठीक संग आइक वैश्वीकरणक, दुनियामे विज्ञानसँ नीक-अधलापर विचार-विमर्श करबैत छी। समए कोना बीति जाइत अछि से बुझबे ने करै छी।''

ब्रह्मचारी जी बजितहि रहथि आकि महेन्द्र सेहो आबि गेला। उन्मत्त पागले जेकाँ महेन्द्रक चेहरा बुझि पड़ैत छलनि। रमाकान्तो बाहरी दुनियासँ निकलि भीतरी दुनियाँक बाट पकड़ि लेलनि।

रु गोटे ब्रह्मचारी जीक पएर छुबि गोर लागि चलैक विचार केलनि। चारु गोटेकेँ अरिआति ब्रह्मचारी जी गाड़ीमे बैसाए अपने घुरि गेलाह। गाड़ीमे कियो ककरोसँ गप-सप नहि करए चाहैत। सभ अपने-आपमे डूबि गेलाह। डेरा अबितहि रमाकान्त महेन्द्रकेँ कहलखिन- ''बौआ, आब हम एक्को दिन नहि अँटकब। गामक सुरता खीचि लेलकहेँ, तेँ जते जल्दी भऽ सकै बिदा कऽ दिअ?''

''बड़बढ़िया।'' आइये टिकट बनबा लइ छी। एहिठामसँ दरभंगाक गाड़ी साप्ताहिक अछि तेँ अपना धड़फड़ेने तँ नहि ने होएत। अगर टिकटो बनि जाइत तैयो पाँच दिन रहै पड़त।''

आठ बजे रातिमे सभ कियो एकठाम बैसि अपन गामक संबंधमे गप-सप करए लगलाह। गाममे अप्पन बीतल दिनक चर्चा करैत महेन्द्र बजलाह- ''की जिनगी छल आ अखन की अछि, एहि विषयपर अखन धरि विचारैक अवसरे नहि भेटल। जहिना आकासमे चिड़ै-चुनमुनी उन्मुक्त भऽ उड़ैत अछि तहिना बच्चामे छल। ने कोनो चिन्ता आ ने फीकिर। जहिना मध्यम गतिसँ गाड़ी-सवारी चलैत अछि, तहिना छल। ने कोनो प्रतियोगिता परीक्षाक लेल चिन्ता आ नोकरीक जिज्ञासा छल। साधारण गतिसँ आई.एस.सी. पास केलहुँ आ मेडिकल कओलेजमे नाम लिखा डॉक्टर बनलहुँ। डॉक्टर बनलाक बाद नोकरी आ पाइक भूख जागए लगल। जाहिसँ अपन गाम, अपन इलाका छोड़ि हजारो कोस दूर आबि गेल छी। एहिठाम आबि बजारु समाज आ संस्कृतिमे फँसि अपन परिवार, समाज सभ छुटि गेल। जते पाइ कमा सुख-भोगक कल्पना करै छी, ओते काजक बोझ बढ़ल जाइत अछि। फेर सुख-भोगक लेल समए कहाँ बचैत अछि। समयक एत्ते अभाव रहैत अछि जे कताक दिन अखबारो नहि पढ़ि पबैत छी। अखन धरिक जे विचार जिनगीक संबंधमे छल, आइ बुझै छी जे भ्रमक छल। एते दिन अपने सुख टाकेँ सुख बुझैत छलहुँ मुदा आब बुझि पड़ैत अछि जे अपने सुखटा सुख नहि छी। हर मनुष्यकेँ जिनगी चलैक जे आवश्यक वस्तु अछि ओ पूर्ति हेबाक चाहिऐक तखने ओ चैनसँ जिनगी बिता सकैत अछि। मनुष्यसँ परिवार बनैत छैक आ परिवारसँ समाज। मनुष्योक कर्तव्य बनैत छैक जे सभसँ पहिने ओ अपना

पएरपर ठाढ़ भऽ परिवारकेँ ठाढ़ करए। परिवार ठाढ़ भऽ जाएत तँ समाज स्वतः ठाढ़ भऽ आगू बढ़ए लगत। ओना सुख की थिक? सभसँ पहिने एहि बातक विचार कऽ लेबाक चाही। पंचभौतिक शरीर आ आत्माक संयोगसँ मनुष्य बनैत अछि। सुख-दुख, नीक-अधला आत्माक अनुभूति थिक, नहि कि शरीरक। ओना दुनियाँक जते मनुक्ख अछि सभकेँ एक स्तरसँ चलैक चाहिऐक, मुदा से तँ नहि अछि! दुनियाँ देशमे बँटल अछि आ देशक शासन व्यवस्था आ समाज खण्ड-पखण्ड भऽ भिन्न-भिन्न भाषा, भिन्न-भिन्न संस्कृति आ भिन्न-भिन्न जातिमे बँटल अछि, जाहिसँ खान-पान, रीति-रेबाज, चालि-ढालिमे भिन्नता छैक। कहैले तँ हमहूँ मनुक्खेक सेवा करैत छी, मुदा पाइक दुआरे हम पाइबलाक सेवा करैत छी। बिनु पाइबलाक सेवा कहाँ भऽ पबैत अछि, जकरा सभसँ बेसी जरुरत छैक। अभावमे ओ खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ घर-दुआर, कपड़ा-लत्ता, दवाइ-दारु, सभसँ बंचित रहि जाइत अछि। जेकर चलैत गरीब लोकक जिनगी जानवरोसँ बत्तर बनि गेल छैक। ओ सभ मनुक्खक शकल मे जानवर बनि जीबैत अछि। जहि मनुष्यक जरुरत ओकरा सभकेँ छैक ओ अपने पाछू तबाह अछि।''

डॉक्टर महेन्द्रक बात, सभ केयो धियानसँ सुनलनि। रमाकान्त कहलखिन- ''बौआ, जइ गाममे तोहर जन्म भेलह आ जहि माटि-पानिमे रहि डॉक्टर बनलह, ओहि गामक लोक उचित इलाजक दुआरे मरि जाए, ई कते दुखक बात थिक?''

रमाकान्तक प्रश्न सुनि सभ क्यो गुम्म भऽ गेलाह। क्यो किछु नहि बाजि पबैत रहथि। सभ सबहक मूह देखैत छलाह। हजारो कोसपर गाम अछि। कोना एहिठामसँ ओहिठाम इलाज भऽ सकैत छैक? सभक मनमे सवाल नचैत छलनि। बड़ी कालक बाद महेन्द्र मूह खोललनि- ''बाबू, सवाल तँ एहन भारी अछि जे जबावे नहि फुरैत अछि। मुदा एकटा उपाए मनमे अबैत अछि।''

''की?''

''अहाँ गाम जाएब तँ दू गोटे एकटा लड़का, एकटा लड़की जे कम्मो पढ़ल लिखल हुअए, केँ एहिठाम पठा दिअ। ओहि दुनू गोटेकेँ ऐठाम राखि छह मास पढ़ा पठा देब। जे तत्काल इलाज करब शुरु कऽ देत। संगहि हम सभ चारि गोटे सालमे एक-एक मासक लेल जाइत रहब आ जहाँ धरि भऽ सकत तहाँ धरि इलाज करैत रहब। तहि बीच जँ कोनो जरुरी रोग उपकि जाए तँ फोनसँ कहि सेहो बजा लेब। नहि तँ लहेरियासराय अछिये।''

महेन्द्रक विचार रमाकान्तकेँ जँचलनि। मुस्कुराइत कहलखिन- ''बौआ, गामक लोक तँ गरीब अछि, ओ कोना इलाज करा सकत?''

गरीबक नाम सुनि धाँए दऽ रबिन्द्र उत्तर देलकनि- ''बाबू, हम सभ बहुत कमाइ छी। जते इलाजमे खर्च हेतैक से देबै। ततबे नहि! अखन अहाँ जाउ, पहिने दू गोरेकेँ पठा दिअ। अगिला मासमे आएब, एकटा स्वास्थ्य केन्द्र बनाएब। जहिमे सबहक इलाज हेतैक।''

रविन्द्रक विचारसँ सभक ठोरपर हँसी अएलनि। रमाकान्तक मनमे उठलनि- ''हमरे दू सए बीघा जमीन अछि, मुदा छी कैक गोटे? जँ इमनदारीसँ देखल जाए

तँ की हमहीं चोर नहि। महाभारतोमे कहल गेल छैक जे, जे जरुरतसँ बेसी सम्पत्ति रखने अछि, ओ चोर अछि। जे पिताजी बरोवरि कहैत रहैत छलाह। ओना अनका जेकाँ हम बेइमानी कएकैं खेत नहि अरजने छी मुदा ढेरिया कऽ तँ रखनहि छी।

गप-सप करैत साढ़े दस बजि गेल। भानसो भऽ गेलैक। सभ केयो गप-सप छोड़ि खाइले गेलाह।

दोसर दिनसँ चारु गोटे बिदाइक जोगारमे लगि गेलथि। कतेक गोटेसँ दोस्ती चारु गोटेकैं, जकरा सभक काज उद्यममे इहो सभ नोत पुरने। तँ सभकैं जानकारी देब उचित बुझि चारु गोटे अपन-अपन अपेक्षितकैं जानकारी देमए लगलखिन। अपनो सभ फुट-फुट माता-पिताक बिदाइमे जुटि गेल।

एहि चारि दिनक बीच रमाकान्त टहलब-बुलब छोड़ि, दिन-राति आत्मनिष्ट भऽ, सोचमे डूबल रहए लगलाह। चाह पीबै बेरि चाह पीबि पान खा, भोजन बेरि भोजन कऽ, भरि दिन पलंगपर पड़ल-पड़ल जिनगीक संबंधमे सोचए लगलथि। अखन धरि एक्केटा दुनियाँ बुझै छेलिऐ जे आब दोसरो दुनियाँ देखै छिऐक। एक दुनियाँ बाहरी, जकरा उपरका आखिसँ देखैत छी, दोसर दुनियाँ शरीरक भीतर अछि, जहि दुनियाँकैं अखन धरि नहि देखैत छलहुँ। बाहरी दुनियाँसँ भीतरी दुनियाँ फुलवाड़ी जेकाँ सुन्दर अछि। जहिमे आशाक जंगल पसरल अछि।

पाँच बजे साँझमे मद्रास स्टेशनसँ दरभंगाक गाड़ी खुजैत अछि। आरक्षित टिकट, मनमे बेसी हलचलो नहिये छलनि। गाड़ी पकड़ैक हलचल तँ ओहि यात्रीकैं होएत जे साधारण बोगीमे टटका टिकट कटा सफर करैत अछि। मुदा आरक्षित बोगीमे तँ गनल सीट आ गनल टिकट होइत अछि। बाइली यात्रीकैं तँ चढ़ए नहि देल जाइत अछि। दुइये बजेसँ सभ समान अटैची कार्टूनमे सैंति तैयार केलनि। रस्ताक लेल फुटसँ एकटा झोरामे खाइक सभ सामान सेहो दऽ देलकनि। दस लिटरा गैलनमे पानि। थर्मसमे चाह। पनबट्टीमे पान। एक कार्टून विदेशी शराब जे डॉक्टर सुजाता रमाकान्तकैं आँखिक इशारासँ कहि देने रहनि।

चारि बजे, परोठा-भुजिया खा रमाकान्त, श्यामा आ जुगेसर तीनू गोटे नव वस्त्र पहीरि तैयार भऽ गेलाह। स्टेशनो लगे, तैं बिदा हेबाक हड़बड़ियो नहिये। मुदा सामान बेसी तँ गाड़ी खुजैसँ पहिनहि स्टेशन पहुँचब जरुरी छनि। ओना गाड़ी मद्रासेसँ बनि कऽ चलैत तँ सामानो रखैमे परेशनियो नहिये रहनि। सबा चारि बजे सभ डेरासँ बिदा भऽ गाड़ी पकड़ए लेल चललाह।

६

छुट्टी दिन रहितहुँ हीरानन्द गाम नहि गेलाह। ओना लगमे गाम रहने शनिकेँ गाम आ सोमकेँ स्कूल खुजबासँ पहिने चलि अबैत छलाह। मुदा रमाकान्त नहि रहने, परिवारक सभ भार देने गेल रहथिन। गोसाइक धाही दैते ओ नहा, चाह पीबि बौएलाल ऐठाम चललाह। मने-मन यैह होनि जे रमाकान्त कहने रहथि जे मद्रास जाइ छी, धिया-पूताकेँ देखि-सुनि लगले घुमि जाएब। मुदा आइ पनरहम दिन भऽ रहल छनि अखन धरि किएक ने अएलाह। ओना दुरसो छैक आ परिवारोक सभ तँ ओतै छनि तँ जँ बिलंबो भेलनि तँ स्वभाविके छैक। रस्तामे जे धिया-पूता देखनि हाथ जोड़ि-जोड़ि प्रणाम करनि। हीरोनन्द सभकेँ असिरवाद दैत आगू बढ़ैत जाइत रहथि। बौएलालक घरसँ थोड़े पाछुए रहथि आकि बौएलाल देखलकनि। देखितहि आगू बढ़ि, प्रणाम कऽ, संगे-संग अपना ऐठाम लऽ गेलनि। हीरानन्दकेँ पाबि बौएलाल बहुत किछु सिखबो केलक आ सुधरबो कएल। अपन एकचारी बैसारमे बैसबैत पानि आनए आंगन गेल। आंगनसँ लोटामे पानि नेने आबि पएर धोए लेल कहलकनि। लोटामे पानि देखि हीरानन्दक मनमे मिथिलाक वेबहार नाचि उठलनि। सोचए लगलथि जे पूर्वज कते विचारवान छलाह जे एते चलौलनि। पएर धोए हीरानन्द चौकीपर बैसलाह। बौएलाल चाह बनबए आंगन गेल। माएकेँ चाह बनाओल नहि होइत छलैक। तहि बीच अनुपो बाड़ियेमे खुरपी छोड़ि, मटिआएले हाथे आबि मास्टर साहबकेँ प्रणाम कऽ चौकीक निच्चामे एकचारीक खुँटा लगा बैसल। मटिआएल हाथ देखि मास्टर साहेब पुछलखिन- "कोन काज करै छलौं?"

मटिआएल हाथ रहितहुँ अनुपकेँ संकोच नहि होइत छलैक। निःसंकोच भऽ उत्तर देलकनि- "बाड़ीमे गेनहारी साग बाउग केने छी, ओइमे तते मोथा जनमि गेल अछि जे सागकेँ झाँपि देने अछि, ओकरे कमठौन करै छलौं।"

सागक कमठौन सुनि हीरानन्द कहलखिन- "चलू, जाबे बौएलाल अबैए, ताबे कनी हमहूँ देखि ली।"

कहि उठि बिदा भेला। मास्टर सहैबकेँ ठाढ़ होइत देखि अनुपो ठाढ़ भऽ आगू-आगू बिदा भेल। धुर दुइऐकमे साग बाओग छलैक। साग देखि हीरानन्द कहलखिन- "जिनगीमे आइये हम एहन गेनहारी देखलौं। ई तँ अद्भुत अछि। किएक तँ एक रंग पत्ताबला गेनहारी तँ अपनो उपजबै छी, मुदा ई तँ फूल जेकाँ लगैए। अधा पात लाल आ अधा पात हरियर छैक। कतएसँ ई बीआ अनलौं?"

मास्टर साहेबक जिज्ञासा देखि अनुप कहए लगलनि- "हम सढ़ूआड़ए नोत पुरै गेल रही। ओतए देखलिऐ। देखि कऽ मन हलसि गेल। ओतैसँ अनलौं। करीब दस बर्खसँ सब साल करै छी। खाइत-खाइत जहन डाँट जुआ जाइ छै,

तहन छोड़ि दैत छिऐ। ओहिमे तत्ते बीआ भऽ जाइए जे अपनो बाउग करै छी आ जे मंगलक तेकरो दै छिऐ।''

''अइ बेर हमरो थोड़े देब।''

''बड़बढ़िया।''

दुनू गोटे घुरि कऽ आबि पुनः एकचारीमे बैसलाह। तहि बीच बौएलालो चाह बनौने आएल। दुनू गोटेकेँ चाह दऽ आंगन जा, अपनो लेलक आ माइयोकेँ देलक। चाह पीबि, माए रधिया- घोघ तनने दुआरपर आबि मास्टर सहेबकेँ गोर लगलकनि। सूखल शरीर, केश पाकल, आँखि धसल रधियाक। रधियाक देह देखि मास्टर सहेबक मन तरे तर बाजि उठलनि- ''हाए, हाए रे गरीबी, आगियोसँ तेज धधड़ा गरीबीक होइत छैक। पैंतीस-चालिस बर्खक शरीरक ई दशा बना दैत छैक।

मुस्की दैत एकटा आँखि उघारि रधिया बाजलि- ''आइ हमर भाग जगि गेल जे मास्टर-सहाएब ऐला। बिनु खेने-पीने नइ जाए देबनि। जे कन-सागक उपाए अछि से बिनु खुऔने नइ जाए देबनि।''

रधियाक स्नेह भरल शब्द सुनि हीरानन्दक आँखि सिमसि गेलनि। दुनू तरहथीसँ दुनू आँखि पोछैत बजलाह- ''ओना तँ घुमैक विचारसँ आएल छलहुँ, मुदा अहाँ सभक स्नेह बिना खेने जाइ नहि दिअए चाहैत अछि। जरुर खाएब।''

घरमे सुपारी नहि रहने बौएलाल सुपारी आनए दोकान गेल। तहि बीच मास्टर साहेब अनुपकेँ पुछलखिन- ''अहाँक पुरखा कते दिनसँ एहि गाममे रहैत आएल छथि?''

हीरानन्दक प्रश्न सुनि अनुप छगुन्तामे पड़ि गेल। मने-मन सोचए लगल जे एहन बात तँ आइ घरि क्यो ने पूछने छलाह। मास्टर साहेब किएक पुछलनि। मुदा मास्टर-साहेबक उपकार अनुपक हृदयमे एहि रुपे बैसल छलनि जे हिनका, आत्माक दोसर रुप बुझैत छला। हुनके पाबि बेटा दू आखर पढ़बो केलक आ मनुक्खोक रस्ता सिखैए। हँसैत अनुप कहए लगलनि- ''मास्टर सहाएब, हमरा बाउकेँ अपना घरारियो ने रहै। अनके जमीनमे घरो बन्हने रहै आ अनके हरो-फाड़ जोतै। अनके खेतमे रोपनि-कमठौन सेहो करै। हम धानोक सीस आ रब्बी मासमे खेसारियो-मौसरी लोढ़ी। अनके गाइयो पोसिया नेने रहै। सालमे जते पाबनि-तिहार होए आ अनदिनो जे करजा बरजा लिअए ओ ओही गाइएक दूधो बेचि कऽ आ लेरु जे होए, ओहो बेचि कऽ करजा सठाबै। एक दिन बाउक मन खराप रहै। गिरहत आबि कऽ बेटी ऐठाम भार दऽ अबैले कहलकै। बाउक मन बेसी खराब रहै तँ जाइसँ नासकार गेल। तइपर ओ बेटाकेँ सोर पड़लकै। बेटा एलै। दुनू बापुत हमरा बाउकेँ गरिऐबो केलकै आ अंगनाक टाट-फड़क उजाड़ि कऽ कहलकै जे हमर घरारी छोड़ि दे। हमर बाउ कतेक गोरेकेँ कहबो केलकै मुदा सभ ओकरे दिस भऽ गेलै। तखन हमर बाउ की करैत, तँ माटिक तौला-कराही छोड़ि, थारी-लोटा, नुआ-बिस्तर, हाँसु-खुरपीक मोटरी बान्हि बाउ, माए आ हम तीनू गोरे ओइ गामसँ भागि गेलौं। गामसँ निकलि, बाधमे एकटा आमक गाछ

रस्तेपर रहै, ओइठिन आबि कऽ बैसलौं। बाउकेँ बुकौर लगै। दुनू आखिसँ दहो-बहो लोर खसै। माइयो कानए। थोड़े खान ओइठिन बैसलौं। तखन फेर बिदा भेलौं।''

बजैत-बजैत अनुपक दुनू आँखिमे नोर आबि गेलै। अनुपक नोर देखि हीरोनन्दक आँखिमे नोर आबि गेलनि। रुमालसँ नोर पोछि पुनः पुछलखिन- ''तब की भेल?''

अनुपक हाथ मटिआएल रहै तेँ हाथसँ नोर नहि पोछि गट्टासँ नोर पोछि पुनः बाजए लगल- ''ई मात्रिक छी। नाना जीबिते रहए। हुनका एक्केटा बेटी रहनि। हमरे माए टा। जखन तीनू गोरे ऐठाम एलौं तँ ननो आ नानियो अंगनेमे रहए। नानी आ माए दुनू, बाँहिसँ दुनू गरदनिमे जोड़ि कानए लगल। बाउओ कानए लगल। नाना हमरा कोरामे उठा नोर पोछैत अंगनासँ निकलि, डेढ़ियापर बुलबै लगल। थोड़े खान नानी कानि, मोटरीकेँ घरमे राखि हाँइ-हाँइ चुल्हि पजारए लागलि। मुदा माए कनिते रहल।''

बिचहिमे हीरानन्द पुछलखिन- ''नाना गुजर कोना करैत छलाह?''

''अहाँसँ लाथ कोन मासटर सैब। महिनामे आठ-दस साँझ भानसो ने होए। हम बच्चा रही तँ नानी बाटीमे बसिया भात-रोटी राखि दिअए। सैह खाइ छलौं।''

अनुपक बात सुनि हीरानन्दक हृदय पघिलए लगलनि। अनुपकेँ कहलखिन- ''जाऊ, काजो देखिऔ। बौएलाल तँ आबिये गेल।''

मास्टर साहेबक आदेशसँ अनुप फेरो साग कमाइले चलि गेल। बौएलाल आ हीरानन्द रमाकान्तक चर्चा करए लगलाह। बौएलाल बाजल- ''करीब पनरह दिनक धक लगि गेल हएत, अखन धरि बाबा किएक नहि अएलाह। बाजि कऽ गेल रहथि जे आठ दिनक भीतरे चलि आएब। किछु भऽ नै तँ गेलनि।''

हीरानन्द- ''अखन धरि कोनो खबरियो नहि पठौलनि, जे बुझितिऐ।''

दुनू गोटे उठि कऽ बाड़ी दिशि टहलैले बिदा भेला। अनरनेबाक गाछ देखि हीरानन्द हिया-हिया कऽ देखए लगलाह। पहिल खेपक फड़, तँ नमहर-नमहर रहैक। गोर-दसेक फड़ नमहर आ जेना-जेना फड़ उपर होइत जाइत तेना-तेना छोटो आ खिच्चो। पान-सातटा फड़ छिटकल। जहिमे एकटा कऽ लाली पकड़ि नेने रहए। हीरानन्द बौएलालकेँ ओंगरीसँ देखबैत बजलाह- ''बौएलाल, ओ फड़ तोड़ि लाए। खूब तँ पाकल नहि अछि मुदा खाइ जोकर भऽ गेल आछि। हम सभ तँ दँतगर छी की ने।''

गाछ बेसी नमहर नहि। हाथेसँ बौएलाल ओहि फड़केँ तोड़ि, डंटीसँ बहैत दूधकेँ माटिपर रगड़ि देलक। दुनू गोटे घुरि कऽ आबि गेलाह। हीरानन्द चौकीपर बैसलथि आ बौएलाल अनरनेबा रखि आंगन गेल। आंगनसँ कत्ता आ एकटा छिपली नेने आएल। कत्तासँ अनरनेबाकेँ सोहि टुकड़ी-टुकड़ी कटलक। छिपली भरि गेल। भरलो छिपली बौएलाल हीरानन्दक आगूमे देलकनि। भरल छिपली

देखि हीरानन्द बजलाह- "एत्ते हमरे बुते खाएल हएत। पान-सातटा खंडी खाएब। बाकी आंगन लऽ जाह।"

बौएलाल सैह केलक। अनरनेबा खा पानि पीबि हीराननद बौएलालकेँ कहलखिन- "चलू, थोड़े टहलि आबी?"

दुनू गोटे रस्ते-रस्ते टहलए लगलथि।

जाधरि दुनू गोटे टहलि-बूलिकेँ अएलाह ताधरि रधिया अरबा चाउरक भात, माछक तीमन आ माछक तरुआ बनौलनि। भानस कऽ कए रधिया चिक्कनि माटिसँ ओसार नीपि, हाथ धो कम्मल चौपेत कऽ बिछौलक। थारी, बाटी, लोटा आ गिलासकेँ छाउरसँ माँजि धोलक। लोटा-गिलासमे पानि भरि कम्मलक आगूमे रखि बौएलालकेँ बजौने आबैले कहलक। आंगन आबि हीरानन्द कम्मलपर बैसि मने-मन सोचए लगलाह। भोजनसँ तँ पेट भरैत अछि मुदा मन तँ सिनेहेसँ भरैत अछि, जे भेटि रहल अछि। तहि बीच बौएलाल घरसँ थारी निकालि आगूमे देलकनि। गम-गम करैत भात तहिपर माछक नमहर-नमहर तरल कुटिया। जम्बीरी नेबोक खंड। बाटीमे तीमन। भोजन देखि, मुस्की दैत हीरानन्द रधियाकेँ कहलखिन- "अलबत्त ढंगसँ भोजनक व्यवस्था केने छी। देखिए कऽ पेट भरि गेल।"

मास्टर साहेबक बात सुनि खुशीसँ रधियाकेँ नहि रहल गेलै, बाजलि- "माहटर बाबू, अहाँ पैघ छी। देबता छी। हमर भाग जे हमरा सन गरीब लोकक ऐठाम भात खाइ छी।"

रधियाक बात सुनि ओ बुझि गेलखिन जे ओ भातकेँ कऽ अशुद्ध बुझि कहलनि। मुदा ओहि विचारकेँ झपैत कहलखिन- "बौएलाककेँ छोट भाए बुझै छिऐ आ परिवारकेँ अपन परिवार बुझैत छी। तखन भात-रोटी खाइमे कोन संकोच।"

हीरानन्दक विचार सुनि रधियाक हृदय साओनक मेघ जेकाँ उमड़ि पड़लनि। मनमे हुअए लगलनि जे अपन जिनगीक सभ बात कहि सुनबिअनि। उत्साहित भऽ बाजए लगलीह- "माहटर बाबू, एहनो दुख कटने छी जे एक दिन पिसिओत भाए आएल रहए। घरमे एक्को तम्मा चाउर नइ रहए। चिन्ता भऽ गेल जे भाइकेँ खाइले की देबैक। तीन-चारि अंगना चाउर पैंचले गेबो केलौं मुदा सबहक हालति खराबे रहै। अपने ने रहै तँ हमरा की दैत। हारि कऽ मड़ुआ रोटी आ सीम-भाँटाक तीमन रान्हि कऽ भाइयोकेँ खाइले देलिऐ आ अपनो सब खेलौं। मुदा अखन तँ रमाकान्त कक्का परसादे सब कुछ अछि।"

थारीमे बाटीसँ झोर ढारैत हीरानन्द पुछलक- "पहिलुका आ अखुनकामे कते फर्क बुझि पड़ैए?"

"माहटर बाबू, अहाँसँ लाथ कोन! ओइ हिसाबे अखन राजा भऽ गेलौं। पहिने कल्लर छलौं। हरदम पेटेक चिन्ता धेने रहै छलए।"

मूहक भात आ माछ चिबबैत रहथि आकि दाँतक गहमे एकटा काँट गड़ि गेलनि। भात घोंटि आंगुरसँ काँट निकालि थारीक बगलमे रखि हीरानन्द पुछलखिन- "पहिने जत्ते खटै छलौं तइसँ अखन बेसी खटै छी आकि कम?"

“पहिने बेसी खटै छलौं। बोइन कऽ कए आबी तखन अंगनाक काजमे लगि जाए। अंगनाक काज सम्हारि भानस करी। भानस करैत-करैत बेर झुकि जाए। तखन खाइ।”

ओसारपर बैसल अनुप रधियाकेँ चोहटैत बाजल- “मास्टर सहाएबकेँ भोजन करए देबहुन आकि नहि?”

अनुपक बात सुनि हीरानन्द बजलाह- “अहाँ तमसाइ किएक छिअनि। भोजनो करै छी आ गप्पो सुनै छी। जे बात काकी कहै छथि ओ बड्ड नीक लगैए।”

मास्टर साहेबक समर्थन पाबि रधियाक मनमे आरो उत्साह जगि गेलैक। होइ जे जते बात पेटमे अछि, सभ बात मास्टर साहेबकेँ सुना दिअनि। बाजलि- “माहटर बाबू बरखमे अधासँ बेसी दिन सागेक तीमन खाइ छलौं। माघ-फागुनमे, जखन खेसारी-मसुरी उखड़ै आ बोइन जे हुअए, दस-पाँच दिन दालि खाइ। नइ तँ बाड़ी-झाड़ीमे जे तीमन-तरकारी हुअए, से खाइ। बेसी काल सागे खाइ। खेसारी मासमे महीना दिन दुनू साँझ चाहे खेसारी साग खाइ नइ तँ बथुआ।”

खेसारी सागक नाम सुनि हीरानन्द पुछलक- “खेसारी साग कोना बनबैत छी?”

मास्टर साहेबक प्रश्न सुनि अनुपोकेँ पछिला बात मन पड़ितहि खुशी एलैक। मुस्की दैत बाजल- “राड़िन बुते कतौ खेसारी साग रान्हल हुअए।”

अनुपक बातकेँ धोपैत हीरानन्द बजलाह- “खेसारी सागमे कँचका मिरचाइ आ लसुनक फोरन दऽ हमरो कनियाँ बनबैत छथि। हमरा बड़ सुन्दर खाएमे लगैए।”

व्यंग्यक टोनमे अनुप बाजल- “अहाँ सबहक कनियाँक पड़तर राड़िनकेँ हेतै। हमही छी जे एहेन लोकक गुजर चलै छै। नइ तँ......?”

व्यंग्यक भाव बुझि हीरानन्द चुप्पे रहलाह। मुदा फनकि कऽ रधिया एक लाड़नि चलबैत बाजलि- “नै तँ सासुरमे बास नइ होइतै?”

अनुप- “मन पाड़ू जे जइ दिन अइठिम आएल रही तइ दिन कोन-कोन लुरि रहए। जँ सासु नहि सिखबैत तँ कोनो लुरियो होइत?”

पासा बदलैत रधिया बाजलि- “माए आ सासुमे की अन्तर होइ छै। जहिना अपन माए तहिना घरबलाक माए। सिखलौं तँ।”

रधिया अनुप दिशि तकैत, अनुप रधिया दिस। मुदा दुनूक मनमे क्रोध नहि स्नेह रहैक। तँ वातावरण मधुर रहैक। हीरानन्द सागक संबंधमे कहए लगलखिन- “अपना सबहक पूर्वज बहुत गरीब छलाह। अखुनका जेकाँ समयो नहि छल। बेसी काल ओ सभ सागे खाइत छलाह।”

जेहने भोजन बनल, तेहने पवित्र बरतन छलनि। आ ताहूसँ नीक बैइसैक जगहक संग ऐतिहासिक गप-सप। जते वस्तु हीरानन्दक आगूमे आएल छलनि रसे-रसे सभ खा लेलनि। पानि नहि पीलनि, किएक तँ ने गारा लगलनि आ ने

बेसी कड़ू रहैक। भोजन कऽ बाटियेमे हाथ धोए उठलाह। उठि कऽ बौएलालकेँ कहलखिन- ''एते कसि कऽ आइ धरि भोजन नहि केने छलहुँ।''

आंगनसँ निकलि एकचारीमे आबि सोझे पड़ि रहलाह। पड़ले-पड़ल अनुपो आ बौएलालोकेँ कहलखिन- ''आब अहूँ सभ भोजन करै जाउ। हमरा सुतैक मन होइए।''

हीरानन्द अस-बिस करैत रहथि। लगले-लगले करौट बदलैत रहथि। मने-मन सोचए लगलाह जे एतबे दिनमे अनुप कते उन्नति कऽ गेल। उन्नतिक कारण भेलै सही ढंगसँ परिवारकेँ बढ़ाएब। जे परिवार जते सही दिशामे चलत ओ परिवार ओते तेजीसँ आगू बढ़त। मुदा जिनगीक रस्ता तँ बाँस जेकाँ सोझ नहि अछि। टेढ़-टूढ़ अछि, जहिसँ बौआ जाइत अछि। जिनगीक रस्तामे डेग-डेगपर तिनबट्टी-चौबट्टी अछि। जहिसँ लोक भटकि जाइत अछि। तहूमे जकरा रस्ताक आदि-अंतक ठेकान नहि छैक ओ तँ आरो ओझरा जाइत अछि। एहन-एहन ओझरी सभ जिनगीक रस्तामे अछि जहिमे ओझरेलापर कियो बताह भऽ जाइत अछि तँ कियो घर-दुआरि छोड़ि चलि जाइत अछि। क्षणिक सुखक खातिर स्थायी सुखक रस्ता छुटि जाइत छैक। क्षुद्र सुख पैघ सुखक रस्तासँ धकेलि एहन पहाड़ जेकाँ ठाढ़ भऽ जाइत छैक जे पार करब मुश्किल भऽ जाइत छैक। जिनगीक रस्ता एक नहि अनेक अछि मुदा पहुँचैक स्थान एक अछि। जते मनुख तते रस्ता अछि। एक मनुक्खक जिनगी दोसरसँ भिन्न होइत अछि। अनभुआरो आ बुझिनिहारो, अज्ञानियो आ ज्ञानियो लगले जिनगीक शुरुहेमे, नहि बुझि पबैत छथि जे कोन रस्ता पकड़लासँ सही जगहपर पहुँचब आ नहि पकड़ने छुटि जाएब। मनुक्खक उद्धारक बात तँ सभ सम्प्रदाए, किस्सा-पिहानी सभ कहैत अछि, मुदा रस्तामे घुच्ची कते छैक जहिठाम जा लोक खसैत अछि, से बुझिये ने अबैत छैक! मुदा इहो तँ सत्य छैक जे निस्सकलंक जिनगी बना ढेरो लोक ओहि स्थानपर पहुँचि चुकल छथि आ ढेरो जा रहल छथि, जे जरुर पहुँचताह। भलेहीं हुनका भरि पेट अन्न आ भरि देह वस्त्र नहि भेटैत होनि। सुखल गाछ रुपी समाजकेँ जाधरि गंगाजल सन पवित्र पानिसँ नहि पटाओल जाएत ताधरि ओहिमे कोना कलश आ फूल फुलाएत? अगर जँ समए पाबि कलशवो करत तँ किछुए दिनमे मौलाए जाएत। दुखो थोड़ दिनक नहि, जड़िआइल रहैत अछि। अनेको महान् व्यक्ति एहि दिशाकेँ देखबैक रस्ता अदम्य साहस आ शक्ति लगा केलनि, मुदा जड़िसँ दुख कहाँ मेटाइल? हमहूँ-अहाँ एहि मातृभूमिक सन्तान छी, तँ हमरो अहाँक दायित्व बनैत अछि जे माएक सेबा करी। छठिआरे राति समाजक माए-बहीन कोरामे लऽ छाती लगौलनि, मुदा ओकरा बिसरि कोना जाइ छी? की सभ बिराने छथि? अपन क्यो नहि?''

बेर खसैत हीरानन्द चलैक विचार करए लगलाह। बौएलाल चाह पीबैक आग्रह केलकनि। मुदा भरिआएल पेट बुझि हीरानन्द चाहक इनकार करैत कहलखिन- ''खाइ बेरिमे पानि नहि पीने छलहुँ, एक लोटा पानि पिआबह।''

आंगनसँ लोटामे पानि आनि बौएलाल देलकनि। लोटो भरि पानि पीबि हीरानन्द बाजलाह- "बुझि पड़ैए जे अखने खा कऽ उठलौंहें। चाह नहि पीबह, सिर्फ एक जूम तमाकू खुआ दाए।"

अनुप तमाकुल चुनबए लगल। तहि बीच हीरानन्द बौएलालकेँ कहलखिन- "तू तँ आब धुरझार किताब पढ़ए लगलह। आब तोहूँ पड़ोसिक बच्चा सभकेँ, जखन समए खाली भेटह, पढ़ाबह। एहिसँ ई हेतह जे कखनो बेकारी सेहो नहि बुझि पड़तह आ थोड़-थाड़ बच्चो सभ पढ़ै दिस झुकत।"

पढ़बैक नाम सुनि अनुप बाजल- "मासटर सहाएब, ककरा बच्चाकेँ बौएलाल पढ़ाओत!" ओंगरीसँ देखबैत बाजल- "देखै छिऐ, ओ तीन घर कुरमी छी। ओकरासँ खनदानी दुश्मनी अछि। ने खेनाइ-पीनाइ अछि आ ने हकार-तिहार।" फेर ओंगरीसँ देखबैत बाजल- "तहिना ओ घर मल्लाहक छी, भरि दिन जाल लऽ कऽ चर-चाँचरसँ लऽ कऽ पोखरि-झाखड़िमे मछबारि करैए। जकरा बेचि कऽ गुजरो करैए आ ताड़ी-दारु पीबिकेँ औत आ झगड़ा-झाटी शुरु कए देत।" फेरि ओंगरीसँ देखबैत- "तहिना ओ कुजरटोली छी। अछि तँ सभटा गरीबे, मुदा व्यवसायी अछि। स्त्रीगण सभ तरकारी बेचै छै आ पुरुख सभ पुरना लोहा-लक्करक कारोबार करैए। जातिक नामपर सदिखन अराड़िये करैत रहैए। तहिना हम दस घर धानुक छी। हमहींटा गरीब रहि, बोनि करै छलौं। आब तँ अपनो रमाकान्त देल दू बीघा खेत भऽ गेल, तँ खेती करए लगलहुँ, नहि तँ सभ खबासी करैए। जुआन-जहान बेटी सभकेँ माथपर चंगेरा दऽ आन-आन गाम पठबैए। तँ ओकरा सबहक एकटा पाटी छै आ हम असकरे छी। ने खेनाइ-पीनाइ अछि आ ने कोनो लेन-देन। आब अहीं कहू जे ककरा बच्चाकेँ बौएलाल पढ़ाओत?"

अनुपक बात सुनि हीरानन्द गुम्म भऽ गेलाह। मने-मन सोचए लगलथि जे समाजक विचित्र स्थिति छैक। एहेन समाजमे घुसब महा-मोसकिल अछि। कने काल गुम्म रहि हीरानन्द कहलखिन- "कहलहुँ तँ ठीके, मुदा ई सभ बीमारी पहिलुका समाजमे बेसी छलैक। ओना अखनो थोड़-थाड़ छैइहे, मुदा बदलि रहल छैक। आब लोक गाम छोड़ि शहर-बजार जा-जा कल-कारखानामे काज करै लगल अछि। संगे गाममे चाह-पानक दोकान खोलि-खोलि जिनगी बदलि रहल अछि। खेती-बाड़ी तँ मरले अछि तँ एहिमे ने काज छैक आ ने लोक करै चाहैत अछि। करबो कोना करत? गोटे साल रौदी तँ गोटे साल बाढ़ि आबि सभटा नष्ट कए दैत अछि। जहिना गरीब लोक मर-मर करैत अछि, तहिना खेतोबला सभ। खेतोबला सभकेँ देखते छिऐक बेटीक विआह, बीमारी आ पढ़ौनाइ-लिखौनाइ बिना खेत बेचने नहि कए पबैत अछि। ओना सबहक जड़िमे मुरुखपना छैक, जे बिना पढ़ने-लिखने नहि मेटाएत। धिया-पूताकेँ पढ़बैक इच्छा सभकेँ छैक मुदा ओ मने भरि छैक। बेवहारमे एको पाइ नहि छैक। इहो बात छैक जे जकरा पेटमे अन्न नहि, देहपर वस्त्र नहि रहतै, ओ कोना पढ़त?"

हीरानन्द आ अनुपक सभ गप, बाड़ीमे टाटक पुरना करची उजाड़ैत सुमित्रा सुनैत छलि। बारह-तेरह बरखक सुमित्रा। अनुपक घरक बगलेमे ओकरो घर। तमाकुल खा हीरानन्द बिदा भेलाह। हीरानन्दकेँ अरिआतने पाछू-पाछू बौएलालो बढ़ैत छल। थोड़े दूर आगू बढ़लापर हीरानन्दकेँ छोड़ि बौएलाल घुमि गेल।

जाबे बौएलाल घुमि कऽ घरपर आएल ताबे सुमित्रो जरनाक कड़ची आंगनमे रखि बौएलाल लग आइलि। ओना परिवारक झगड़ासँ धिया-पूताकेँ कोन मतलब। धिया-पूताक दुनियाँ अलग होइत अछि। सुमित्रा बौएलालकेँ कहलक- ‘‘हमरा पढ़ा दे।’’

बौएलाल किछु कहैसँ पहिने मने-मन सोचए लगल जे हमर बाबू आ सुमित्राक बाबू राम परसादक बीच कते दिनसँ झगड़ा अछि, दुनूक बीच कताक दिन गरि-गरौबलि होइत देखै छी, तखन कोना पढ़ा देबइ। मुदा हीरानन्दक विचार मन रहै, तेँ गुनधुन करए लगल। कनी काल गुनधुन करैत सुमित्राकेँ कहलक- ‘‘पहिने ई माएसँ पूछि आ।’’

सुमित्रा दौड़ि कऽ आंगन जा माएकेँ पुछलक- ‘‘माए, हम पढ़ब।’’

माए- ‘‘कतए पढ़मे?’’

‘‘बौएलाल लग।’’

बौएलालक नाम सुनि माए मने-मन बिचारै लगली जे हमरासँ तँ कम्मो-सम्म, मुदा ओकरा (पति) सँ तँ बौएलालक बापकेँ झगड़ा छै। कने काल गुनधुन कऽ माए कहलकै- ‘‘जँ बौएलाल पढ़ा देतौ तँ पढ़।’’

खानदानी घरक बेटी सुमित्राक माए। आन-आन घरक बेटियो आ पुतोहुओ चंगेरा उघैत अछि, मुदा सुमित्राक माए कतौ नहि जाइत। अपने राम परसाद भार उघैत अछि। मुदा स्त्री नहि। जहिना कहियो अनुप आ रामपरसादक बीच भार उघैक सवालपर झगड़ा होइत, तँ सुमित्रा माएक विचार अनुप दिसि रहैत छल। मुदा मरदक झगड़ामे कोना विरोध करैत। तेँ चुपचाप आंगनमे बैसि मने-मन अपने पतिकेँ गरिअबैत छलि, जे कोन कुल-खनदानमे चलि एलौं।

घुमि कऽ सुमित्रा आबि बौएलालकेँ कहलकै- ‘‘माइयो कहलक।’’

‘‘ठीक छै। मुदा पढ़मे कखन कऽ। भरि दिन हमहूँ काजे उद्यममे लगल रहै छी आ साझू पहरकेँ अपने पढ़ैले जाइ छी।’’

दुनू गोटे गर लगबैत तँइ केलक जे काजक बेरसँ पहिने भोरमे पढ़ब।

७

तीन बजे भोरमे हीरानन्दक निन्न टुटलनि। निन्न टुटितहि बाहर निकललथि तँ झल-अन्हार देखि पुनः ओछाइनपर आबि गेलाह। अनुपक बात हीरानन्दक मनकेँ झकझोड़ैत छलनि। जे समाजमे एहि रुपे कटुता, विषमता पसरि गेल अछि जे घर-घर, जाति-जाति, टोल-टोलमे भैंसा-भैंसीक कनारि पकड़ि नेने अछि। एहना स्थितिमे कोना समाज आगू बढ़त? समाजकेँ आगू बढ़ैक लेल एक-दोसरक बीच आत्मीय प्रेम हेबाक चाहिऐक। से कोना होएत? एहि प्रश्नकेँ जते सोझरबै चाहै छलाह तते ओझराइत छल। विचित्र स्थितिमे पड़ल हीरानन्द। अपने मनमे प्रश्न उठा, तर्क-वितर्क करैत आ अंत होइत-होइत प्रश्न पुनः ओझरा कऽ रहि जाइत। विबेक काजे नहि करैत छलनि। तहि बीच पूबारि भाग चिड़ैक चहचहेनाइ सुनलनि। चिड़ैक चहचहेनाइ सुनि फेर कोठरीसँ निकलि पूब दिस तकलनि। मेघ ललिआएल बुझि पड़लनि। घड़ीपर नजरि देलनि तँ पाँच बजैत छलैक। पुनः कोठरी आबि लोटा लऽ मैदान दिशि बिदा भेलाह। मुदा मनकेँ एहेन गछाड़ि कऽ सवाल पकड़ने रहनि जे चलैक सुधिये नहि रहलनि। जाइत-जाइत बहुत दूर चलि गेलाह। खुला मैदान देखि, लोटा राखि टहलबो करथि आ प्रश्नो सोझरबैक कोशिश करैत रहथि। मुदा तैयो निष्कर्षपर नहि पहुँचि सकलाह। पुनः घुरि कऽ घरपर आबि, दतमनि कऽ मूह हाथ धोए चाह बनबै लगलाह। ओना चाहक सभ समान चुल्हिएक उपर चक्कापर राखल रहैत अछि। मात्र केतली पखारब, गिलास धोअब आ ठहुरी जारन डेढ़ियापर सँ आनए पड़लनि। सभ कुछ सरिया हीरानन्द चाह बनबै बैसलाह, मुदा मन बौआइत छलनि। असथिरे नहि होइत छलनि। असकरे चाह पीनिहार, मुदा भरि केतली पानि दऽ चुल्हिपर चढ़ा देलनि। जखन चाह खौलए लगलनि तखन मनमे एलनि जे अनेरे एते चाह किअए बनबै छी। फेर केतली चुल्हि परसँ उतारि दू गिलास दूध मिलाओल पानि कातमे राखल गिलासमे रखि, बाकी दूध मिलाओल पानि केतलीमे दऽ देलनि।

मन बौआइते छलनि। आँच लगबैत गेला मुदा चाह पत्ती केतलीमे देबे नहि केलनि। आगिक तावपर दुनू गिलास पानि जरि गेलापर मन पड़लनि जे चाह पत्ती केतलीमे देबे ने केलिऐक। हाँइ-हाँइ कऽ डिब्बामे सँ हाथपर चाह पत्ती लऽ केतलीक झप्पा उठौलनि आकि नजरि केतलीक भीतर गेलनि तँ पानिये नहि छलैक। सभटा पानि जरि गेल छलैक। तरहत्थी परक चाह पत्ती डिब्बामे रखि पुनः केतलीमे पानि देलनि। चाह बनल। भिनसुरका समए दू गिलास पीलनि। एक तँ ओहिना मन समाजक समस्यामे ओझड़ाएल छलनि, तहि परसँ चाह आरो ओझरी लगा देलकनि।

चाह पीबि दरबज्जापर बैसि बिचारए लगलाह। मुदा चाहक गर्मी पाबि मन आरो बेसी बौआइ लगलनि। जहिना ककरो कोनो वस्तु हरा जाइत छैक आ ओ

खोजए लगैत अछि, तहिना हीरानन्द समाजक ओहि समस्याक समाधान खोजए लगलाह, जे समस्या समाजकेँ टुकड्ा-टुकड़ा कऽ देने अछि। दोसर कियो नहि छलनि, जनिकासँ तर्क-वितर्क करितथि। असकरे ओझराएल रहथि। अपने मनमे सवालो उठनि जवाबो खोजथि। अध्ययनो बहुत अधिक नहिये छलनि। सिर्फ मैट्रिके पास छलाह। मुदा तैयो समस्याक समाधान तकितहि रहलाह, छोड़लनि नहि। जहिना पथिककेँ बिनु देखलो पथ हराइत-भोथिआइत भेटिये जाइत छैक तहिना हीरानन्दोकेँ भेटलनि। अनायास नजरि मिथिलाक चिन्तनधारा आ मिथिला समाजक बुनाबटिक ढाँचापर गेलनि। चिन्तनोधारा आ सामाजिक ढ़ाँचो दुनूपर नजरि पड़ितहि मनमे एकटा नव ज्योतिक उदय भेलनि। बिजलोका इजोत जेकाँ मनमे चमकलनि। बिछानसँ उठि ओसारेपर टहलए लगलथि। अनायास मूहसँ निकललनि- ''वाह रे मिथिलाक चिन्तक! दुनियाँक गुरु। जे ज्ञान हजारो बर्ख पहिनहि मिथिलाक धरतीपर आबि गेल छल, ओएह ज्ञान उन्नैसम शताब्दीमे मार्क्स कठिन संधर्ष कए कऽ अनलनि, जहिसँ दुनियाँक चिन्तनधारा बदलल। मुदा मिथिलाक दुर्भाग्य भेलै जे समाजक नियामक धूर्तइ केलक। जे चिन्तक मनुष्यकेँ सभ मनुक्ख मनुक्ख छी, एक रुपमे देखलनि, ओहि रुपकेँ नियामक, शासनकर्ता टुकड़ी-टुकड़ी कऽ काटि देलनि। आइ जरुरत अछि ओहि सभ टुकड़ीकेँ जोड़ि कऽ एक रुप बनबैक। जे नान्हिटा समस्या नहि अछि। ततबे नहि! अखनो टुकड़ी बनौनिहारक कमी नहि अछि। जहनकि भेल टुकड़ीकेँ स्वयं ओ चेतना नहि छैक। जे टुकड़ी भेल कातमे पड़ल छी आ कौआ-कुकुड़ खाइत अछि।

ई एहन विचार हीरानन्दकेँ उपकितहि मन असथिर भेलनि। मनमे नव स्फूर्ति, नव चेतना आ नव उत्साह जगलनि। नव ढंगसँ सभ वस्तुकेँ देखए लगलथि। तहि बीच शशिशेखर सेहो टहलि-बूलि कऽ अएलाह।

हीरानन्दपर नजरि पड़ितहि शशिशेखरकेँ बुझि पड़लनि जे जना क्यो नहा कऽ पोखरिसँ उपर भेल होअए, तहिना। मुदा हीरानन्दक मन विचारमे डूबले रहलनि। मने-मन सोचैत जे जहिना पटुआ सोन, सनईक सोन वा रुइक रेश महीन होइत, मुदा कारीगर ओहि रेश कैँ टेरुआ वा टौकरीक सहारासँ समेटि कऽ सूत वा सुतरी बना कपड़ा वा बोरा वा मोटगर रस्सा बनबैत अछि। तहिना समाजोक टुटल मनुक्खकेँ जोड़ि समाज बनबए पड़त। तखने नव समाजक निर्माण होएत। जे अद्दी-गुद्दी काज नहि कठिन काज छी। कठिन काजक लेल कठिन मेहनतक जरुरत पड़ैत अछि। सिर्फ कठिन मेहनते कएलासँ सभ कठिन काज नहि भऽ सकैत अछि। कठिन मेहनतक संग, सही समझ आ सही रस्ताक बोध सेहो जरुरी अछि। तेँ कठिन मेहनत, गंभीर चिन्तन आ आगू बढ़ैक, काज करैक अदम्य साहस सेहो सभमे हेबाक चाहिऐक। एहि कऽ संग मजबूत संकल्प सेहो होएब जरुरी अछि। विचारक संग-संग हीरानन्दक मनमे कठिन कार्यक संकल्प सेहो अपन जगह बनबए लगलनि। भिनसुरका समए, तेँ लाल सूर्यमे ठंढ़ापन सेहो देखए लगलथि। एक टकसँ सूर्य दिशि देखैत अपन विचारकेँ

संकल्प लग लऽ जाए दुनूकेँ हाथ पकड़ि दोस्ती करौलनि। दुनूक बीच दोस्ती होइतहि मनक नव उत्साह शरीरमे तेजी आनए लगलनि।

दरबज्जाक आगुऐ देने उत्तरे-दछिने रस्ता। हीरानन्द शशिशेखरकेँ कहलखिन- ‘‘चलू, कने बुलियो-टहलि लेब आ एकटा गप्पो कऽ लेब।’’

दुनू गोटे दरबज्जापर सँ उठि आगू बढ़लाह आकि उत्तरसँ दछिन मुहे तीनटा ढेरबा बच्चाकेँ जाइत देखलनि। तीनूक देह कारी खटखट। केश उड़िआइत। डोरीबला फाटल-कारी झामर पेन्ट तीनू पहिरने रहै। देहमे ककरो कोनो दोसर वस्त्र नहि। तीनूक हाथमे पुरना साड़ीक टुकड़ा कऽ चारु कोण बान्हल झोरा। तीनू गप-सप करैत उत्तरसँ दछिन मुहे जाइत रहै। तीनूकेँ एक टकसँ हीरानन्द देखि, तीनूक गप-सप सुनैक लेल कान पाथि देलनि। मुस्की दैत बेङबा बाजल- ‘‘रौतुका बसिया रोटी आ डोका तीमन तते ने खेलियौ जे चललो ने होइए। पेट ढब-ढ़ब करैए।’’ दहिना हाथ बढ़बैत फेर बाजल- ‘‘हे सुंगही हमर हाथ केहेन गमकै छै। जना बुझि पड़तौ जे कटुक-मसल्ला लागल छै।’’ हाथ समेटि बाजल- ‘‘तूँ की खेलै गै रोगही?’’

सिरसिराइत रोगही बाजलि- ‘‘हमरा माए कहलक जे जो डोका बीछि कऽ ला गे। ताबे हमहूँ मड़ूआ उला- पीसि कऽ रोटी पका कऽ रखबौ। डोका चटनी आ रोटी खइहें।’’

रोगहीक बात सुनि बेङबा कबूतरीकेँ पुछलक- ‘‘तूँ गै कबूतरी?’’

‘‘काल्हि जे माए डोका बेचैले गेल रहै, ओम्हरेसँ मुरही किनने आएल। सैह खेलौं।’’

कबूतरीक बात सुनि बेङबा पनचैती केलक जे तोहर जतरा सभसँ नीक छौ। आइ तोरा सभसँ बेसी डोका हेतौ। सभसँ बेसी तोरा, तइसँ कम हमरा आ सभसँ कम रोगहीकेँ हेतै।’’

बेङबाक पनचैतीक विरोध करैत रोगही बाजलि- ‘‘बड़ तूँ पंडित बनै छें। तोरे कहने हमरा कम हैत आ तोरा सभकेँ बेसी। हमरा जेकाँ तोरा दुनू गोरेकेँ डोका बिछैक लूरि छौ? घौदिआएल डोका कतऽ रहै छै से बुझै छीही?’’

मूह सकुचबैत बेङबा पुछलक- ‘‘कतऽ रहै छै से तूही कह?’’

‘‘किअए कहबौ। तू खेलएँ से हमरा बाँटि देलैं।’’

बेङबा- ‘‘बाँटि दितियौ से हम अगरजानी जननिहार भगवान छी। तू कहलेहैं अखनी आ बाँटि दैतियौ अंगनेमे।’’

बेङबाक बात सुनि रोगही निरुत्तर भऽ गेलि। हीरानन्द आ शशिशेखर तीनूक बात चुपचाप ठाढ़ भऽ सुनलनि। ताधरि तीनू गोटे हीरानन्दक लग पहुँचि गेल। हाथक इशारासँ तीनू गोटेकेँ हीरानन्द सोर पाड़ि पुछलखिन- ‘‘बौआ, तू सभ कतए जाइ छह?’’

हीरानन्दक प्रश्न सुनि बेङबा धाँए दए उत्तर देलकनि- ‘‘डोका बिछैले।’’

‘‘डोका बीछि कऽ की करै छहक?’’

"अपनो सभ तुर खाइ छी आ माए बेचबो करैए। बाउ कहने अछि जे डोका बेचि कऽ पाइ हेतौ, तइसँ अंगा-पेन्ट कीनि देबौ। घुरना विआहमे पीहीन कऽ बरिआती जइहें।"

बेङबाक बात सुनि हीरानन्द रोगहीकेँ पुछलखिन- "बच्चा तूँ?"

रोगही उत्तर दैत कहलकनि- "हमहूँ डोके बीछैले जाइ छी। माए कहलक जे डोकासँ जे पाइ हेतौ, तइसँ शिवरातिक मेलामे महकौआ तेल, महकौआ साबुन, केश बन्हैले फीता आ किलीप कीनि देबौ।"

मुस्कुराइत हीरानन्द बातक समर्थनमे मूड़िओ डोलबैत आ मने-मन विचारबो करैत जे कत्ते आशासँ गरीबोक बच्चा जीबैत अछि। शशिशेखर दिशि देखि आँखिक इशारासँ कहलखिन, जे एकरा सबहक बगए देखियौ आ आशा देखियौक। तेसर बचिया कबूतरीकेँ पुछलखिन- "बौआ, तूँ?"

हीरानन्दक आँखिमे आँखि गड़ा कबूतरी कहए लगलनि- "हमरा माए कहने अछि जे डोका पाइसँ सल्बार-फराक कीनि देबौ।"

काजक समए नष्ट होइत देखि हीरानन्द तीनूकेँ कहलखिन- "जाइ जाह।"

हीरानन्द आ शशिशेखर घुरि कऽ दरबज्जापर अएलाह। ओ तीनू बच्चा गप-सप करैत आगू बढ़ल। थोड़े आगू बढ़लापर कबूतरी बेङबाकेँ पुछलक- "बेङबा, तू विआह कहिया करमे?"

विआह सुनि बेङबाक मनमे खुशी भेलैक। ओ हँसैत उत्तर देलक- "अखनी विआह नइ करबै। मामा गाम गेल रहियै ते भैया कहलक- "जे कनी आउर बढ़मे तँ तोरा भेबन्डी नेने जेबउ। ओतै नोकरी करबै। जखैन बहुत रुपैआ हेतै तब ईंटाक घरो बनेबै आ बिआहो करबै।"

बिचहिमे रोगही कहलकै- "तोरा सनक ढहलेल बुते बौह सम्हारल हेतउ?"

बौहुक नाम सुनि बेङबाक हृदय खुशीसँ गदगद भऽ गेलैक। हँसैत कहलक- "आँए गे रोगही, तूँ हमरा पुरुख नइ बुझैछैँ। हम तँ ओहन पुरुख छी जे एगो कऽ के कहए जे तीन गो बौहकेँ सम्हारि लेब।"

कबुतरी- "खाइले बौहकेँ की देबही?"

बेङबा- "भेबन्डीमे जब नोकरी करबै तब बुझै छीही जे कते कमेबै। दू हजार रुपैआ एक्के महीनामे हेतै।"

हँसैत रोगही बिचहिमे टिपकल- "दू हजार रुपैआ गनलो हेतउ?"

बेङबा बाजल- "बीस-बीस कऽ गनबै। रुपैआ हेतै तँ फुलपेन्ट सियेबै, खूब चिक्कन अंगा किनबै, घड़ी किनबै, रेडी किनबै, मोबाइल किनबै, डोरी बला जुत्ता किनबै। तब देखिअहै जे बेङबा केहेन लगै छै।"

कबूतरी- "तोरा नोकरी के रखतौ?"

बेङबा- "गामबला भैया नोकरी रखा देतै। उ कहलक जे जेही मालिक अइठीन हम रहै छिऐ तेही मालिक अइठीन तोरो रखा देबउ। बड़ धनीक मालिक छै। मारिते नोकर छै। हम जे मामा गाम गेल रही तँ भइयो गाम आइल रहै। ओ कहै जे हम मालिकक कोठीमे रहै छिऐ। दरमाहा छोड़ि कऽ बाइलियो खूब

कमाइ छै। मालिककेँ एकटा बेटी छै। उ बड़का इस्कूल-कओलेजमे पढ़ै छै। अपनेसँ हवागाड़ी चलबै छै। सभ दिन हमर भैया ओकरा इस्कूल संगे जाइ छै। उ पढ़ै छै आ हमर भैया गाड़ी ओगरै छै। जखनी छुट्टी भऽ जाइ छै तखनी दुनू गोरे संगे अबै छै। उ मलिकाइन हमरा भैयाकेँ मानबो खूम करै छै। संगे-संग सिलेमा देखैले जाइ छै। बजार घुमैले जाइ छै। बड़का दोकान-होटलमे दुनू गोरे खूम लड्डू खाइए। अन्ना तँ बड़का मालिक सभ नोकरकेँ दीयाबत्तीमे चिक्कनका नुआ देइ छै, हमरो भैयाकेँ दै छै। छोटकी मलिकाइन अपने दिसनसँ निकहा-निकहा फुलपेन्ट, निकहा-निकहा अंगा कीनि-कीनि दै छै। रुपैयो खूम देइ छै।''

तीनू गोटे बाध पहुँचि गेल। बाध पहुँचितहि तीनू गोटे तीन दिशि भऽ गेल। तीन दिस भऽ तीनू गोटे डोका बीछए लगल। उपरे सबमे डोका चराओर करैले निकलल रहए। डोका बीछि तीनू गोटे घुरि गेल।

दरबज्जापर आबि हीरानन्द शशिशेखरकेँ पूछल- ''शशि, की सभ ओहि बच्चा सभमे देखलिऐक?''

मूह बिजकबैत शशि उत्तर देलनि- ''भाय, ओहि बच्चा सभकेँ देखि छुब्द छलहुँ। ओकरा सबहक बगए देखै छलिऐक आ मनक खुशी देखै छलिऐक। जना दुनियादारीसँ कोनो मतलब नहि। निर्विकार। अपने-आपमे मग्न छल।''

हीरानन्द- ''कहलहुँ तँ ठीके, मुदा एकटा बात तर्कक छल। अपना सबहक समाज तते नमहर अछि जाहिमे भिखमंगासँ राजा धरि बसैत अछि। एक दिस बड़का-बड़का कोठा अछि तँ दोसर दिस खोपड़ी। एक दिस आजुक विकसित मनुक्ख अछि तँ दोसर दिस आदिम युगक मनुक्ख सेहो अछि। एते पैघ इतिहास समाज अपना पेटमे रखने अछि, ने ओहि इतिहासकेँ कियो पढ़निहार अछि आ ने बुझनिहार।''

''ठीके कहलहुँ भाय।''

''आइ धरि, हम सभ समाजक जाहि रुपकेँ देखैत छी ओ उपरे-झापरे देखै छी। मुदा देखैक जरुरत अछि ओकर भीतरी ढाँचाकेँ। जहिना समुद्रक उपरका पानि आ लहरि तँ सभ देखैत अछि, मुदा ओहिक भीतर की सभ अछि से देखनिहार कैक गोटे अछि।''

भोरकेँ बौएलाल अपनो पढ़ैत आ सुमित्रोकेँ पढ़ा दैत। जाधरि टोल-पड़ोसक लोक सुति कऽ उठै ताधरि बौएलाल आ सुमित्रा एक-डेढ़ घंटा पढ़ि लिअए। एक तँ चफलगर दोसर पढ़ैक जिज्ञासा सुमित्रामे, तँ एक्के दिनमे अ, आसँ य, र, ल, व तक सीखि गेल। कब्बीरकाने सीखि सुमित्रा बाल-पोथी आ खाँत सिखब शुरु केलक।

सुमित्राकेँ पढ़ैत देखि माए-बापकेँ खुशी होइ। ओना माइयोकेँ आ बापोक मनमे शुरुहेसँ रहए जे बच्चा सभकेँ पढ़ाएब, मुदा समएक फेर आ परिवारक विपन्नताक चलैत, मनक सभ मनोरथ मनेमे गलि कऽ विलीन भऽ गेलैक। मुदा जहियासँ सुमित्रा पढ़ै लागलि तहियासँ पुनः ओ मनोरथ अंकुरित होअए लगलैक।

मनुक्खक जिनगीक गति मनुक्खक विचार आ व्यवहारकेँ सेहो बदलैत अछि। अनुपक प्रति जे कटुता आ दुर्विचार रामप्रसादक मनकेँ गहिया कऽ धेने छलैक ओ नहुँए-नहुँए पघिलए लगलैक। सुमित्राक माए अनुपक आंगन अबैत जाइत छलीह। तीमन-तरकारीक लेन-देन पतिसँ चोरा कऽ सेहो करैत छलीह। मुदा तैयो रामप्रसादक मनमे पछिला दुश्मनी नीक-नहाँति नहि मेटाएल छलैक। जहिना बरसातमे सुखाएल धारमे पानि अबितहि जीवित धारक रुप-रेखा पकड़ि लैत, तहिना विद्याक प्रवेशसँ रामप्रसादोक परिवारक रुप-रेखा बदलै लगलैक। भैंसा-भैसीक दुश्मनी भाय-भैयारीमे बदलए लगलैक।

मिरचाइ, तरकारी आ चून कीनैले अनुप हाट गेल रहए। कोसे भरिपर कछुआ हाट अछि। तहि बीच रामप्रसाद कताक बेरि अनुपक डेढ़ियापर आबि-आबि अनुपक खोज केलक। रामप्रसादक अधला विचारकेँ धिक्कारि कऽ भगा, नीक-विचार अपन जगह बना लेलक। दोसरि साँझमे अनुप हाटसँ घुरि कऽ रस्तेमे अबैत छल आकि रामप्रसाद फेर तकैले पहुँचल। अनुपपर नजरि पड़ितहि रामप्रसाद कठहँसी हँसि कहलक- ''बहुत दिन जीबह भैया। बेरुए पहरसँ कतए हरा गेल छेलह?''

रामप्रसादक बदलल चेहरा आ विचार सुनि अनुप मने-मन तारतम्य करै लगल। जे आइ सुर्ज किमहर उगलाह। जिनगी भरिक दुश्मनी एकाएक एना बदलि कोना गेलैक? पछिला गप अनुपकेँ मन पड़लै। अखन धरि रमपसदबा संग हमरा दुश्मनी ओकर अधले काजक दुआरे ने छल। मुदा ताराकान्तकेँ धन्यवाद दिऐ जे बेचारा मारिओ खा, जहलो जा गाममे खबासी प्रथा मेटौलक। जाबे रमपरसदबा अधलाह काज करै छल ताबे जँ दुश्मनी छल तँ ओहो नीके छल। किएक तँ हमहूँ अपना डारिपर छलौं। आब जँ ओ ओहि काजकेँ छोड़ि देलक तँ हमरो मिलान करैमे हरज की? कालोक गति तँ प्रबल होइत छैक। समयो बदलि रहल अछि। एक तँ पहिलुका जेकाँ भारो-दौर लोक नहि दैत अछि, दोसर पहिने लोक कान्हपर भार उघैत छल आब गाड़ी-सवारीमे लऽ जाइत अछि। ततबे नहि, आब सबहक समांग परदेश सेहो खटए लगल अछि। गामक मालिको-मलिकानाक पहिलुका रुतबा कमले जाइत छैक।

रामप्रसादक बात सुनि अनुप कहलक- ''हाट जाएब जरुरी छल। घरमे ने मिरचाइ छल आ ने चून। जे चूनवाली चून बेचए अबै छलि ओकर सासु मरि गेलै। अइ साल एक्को दिन कटहरक आँठी देल खेरही दालि सेहो नै खेने छलौं, तँ मन लगल छलए।''

कहि अनुप सोझे आंगन जाए ओसारपर आँठी आ मेरिचाइक मोटरी रखि, कोहीमे चून रखलक। एकचारीमे बैसि रामप्रसाद तमाकुल चुनबैत। चूनक कोही खोलियापर रखि अनुप बाहर आबि रामप्रसादकेँ कहलक- ''ताबे तमाकुल लगबह, कने हाथ-पएर धोइ लै छी। एक तँ कच्ची रस्ता तहूमे तते टेक्टर सभ चलै छै जे भरि ठेहुन कऽ गरदा रस्तामे भऽ गेल अछि। जहिना लोकक पएर थाल-पानिमे धँसै छै तहिना गरदोमे धँसै।''

कहि अनुप इनारपर जा हाथ-पएर धोए कऽ आबि, रामप्रसाद लग बैसल। अनुपकेँ तमाकुल दैत रामप्रसाद कहलकै- "भैया, दुपहरेसँ मनमे आएल जे तोरो बड़दक भजैती आन टोलमे छह आ हमरो अछि। दुनू गोरे ओकरा छोड़ा कऽ अपनेमे लगा लाए। जइसँ दुनू गोरेकेँ सुविधा हेतऽ।"

थूक फेकि अनुप उत्तर देलकै- "ई बात तँ कत्ते दिनसँ बौएलाल कहै छलए जे जते काल बड़द अनैमे लगै छह ओते कालमे एकटा काज भऽ जेतह।"

मूडी डोलबैत रामप्रसाद बाजल- "काल्हि जा कऽ तोहूँ अपन भजैतकेँ कहि दहक आ हमहूँ कहि देबै। परसूसँ दुनू गोरे एक्के ठीन जोतब।"

आंगन बहरनाइ छोड़ि रधिया सेहो आबि कऽ टाटक कातमे ठाढ़ भऽ गेलि। किएक तँ बहुतो दिनक उपरान्त दुनू गोटेकेँ मुँहा-मुँही गप करैत देखलनि। बड़दक भजैतीक गप कऽ अनुप रामप्रसादकेँ कहलक- "अबेर भऽ गेल। अखन तोहूँ जाह, हमहूँ पर-पाखाना दिस जाएब।"

जहिना सड़लसँ सड़ल पानिमे कमल फुलेलासँ भगवान माथपर चढ़ैक अधिकारी भऽ जाइत अछि तहिना बौएलालक सेवा सबहक लेल होअए लगल। जहिसँ गाममे बौएलाल चर्चक विषय बनि गेल। हीरानन्दक आसरा पाबि बौएलाल रामाएण, महाभारत, कहानी कविता पढ़ब सीखि लेलक। जहि गाममे लोक भरि-भरि दिन ताश खेलैत, जुआ खेलैत तहि गाममे बौएलालक दिनचर्या सभसँ अलग बीतए लगलैक। जहिसँ बौएलालक जिनगीक रस्ता बदलि गेल। अधिककाल हीरानन्द बौएलालकेँ कहथिन- "बौएलाल, गरीबक सभसँ पैघ दोस्त मेहनत छी। जे कियो मेहनतकेँ दोस्त बना चलत ओएह गरीबी रुपी दुष्टकेँ पछाड़ि सकैत अछि। तँ सदिखन समएकेँ पकड़ि सही रस्तासँ मेहनत केनिहार जे अछि, ओएह एहि धरती आ दुनियाँक सुख भोगि सकैत छथि।"

८

रौतुके गाड़ीसँ रमाकान्त तीनू गोटे अपना टीशनमे उतरलाह। अन्हार राति। भकोभन स्टेशन। खाली दुइये गोटे, स्टेशन मास्टर आ पैटमेन, स्टेशनक घरमे केबाड़ बन्न कऽ जगल रहए। लेम्प जरैत। ने एक्कोटा इजोत प्लेटफार्मपर आ ने मुसाफिरखनामे। अन्हारेमे तीनू गोटे अपन सभ समान मुसाफिरखानामे रखि, जाजीम बिछा बैसि रहलाह। गाड़ी झमारक संग दू रातिक जगरनासँ तीनू गोटेक देह ओंघीसँ भसिआइत रहनि। प्लेटफार्मक बगलमे ने एक्कोटा चाहक दोकान खुजल आ ने एक्कोटा दोकनदार जगल रहए। ने कोनो दोकानमे इजोत होइत छलैक आ ने गाड़ीसँ एक्कोटा दोसर पसिंजर उतड़ल। निन्न तोड़ै दुआरे रमाकान्त चाह पीबए चाहथि मुदा कोनो जोगार नहि देखि कखनो समान लग बैसथि तँ कखनो उठि कऽ टहलए लगथि। जुगेसर आ श्यामा सुति रहल। मुदा रमाकान्तक मनमे होनि जे जँ कहीं सुति रहब आ सभ समान चोरि भऽ जाए तखन तँ भारी जुलुम हएत। निन्न तोड़ैक एकटा नीक उपाए छलनि जे ढाकीक-ढ़ाकी मच्छर रहए। जुगेसरो आ श्यामो चद्दरि ओढ़ि, मूह झाँपि सुतल रहथि।

प्लेटफार्मपर पनरह-बीसटा अनेरुआ कुकुड़ एम्हरसँ ओमहर करैत रहए। प्लेटफार्मक पछबारि भाग माल-जालक हड्डीक ढेरीसँ गंध अबैत। सकरीक एकटा व्यापारी हड्डीक कारोबार करैत अछि। गाम-घरमे जे माल-जाल मरैत ओकर हड्डी गामे-घरक छोटका व्यापारी, भारपर उघि-उघि अनैत अछि, ओहि व्यापारी ऐठाम बेचि-बेचि गुजर करैत अछि। जखन बेसी हड्डी जमा भऽ जाइत छैक, तखन ओ मालगाड़ीक डिब्बामे लादि बाहर पठबैत अछि। जाधरि हड्डी प्लेटफार्मक बगलमे रहैत अछि ताधरि अनेरुआ कुत्ता सभ ओहि हड्डीकेँ चिबबैक पाछू तबाह रहैत अछि। दिन रहौ आकि राति, जते टीशनक कातक कुकुड़ अछि, सभ ओहिक इर्द-गिर्द मड़राइत रहैत अछि। ओना आनो-आनो गामक कुकुड़ गाम छोड़ि ओतए रहैत अछि। एकटा पिल्ला एकटा पिल्लीक संग, प्लेटफार्मक पुबारि भागसँ अबिते छल आकि एकटा दोसर कुत्ताक नजरि पड़लैक। बिना बोली देनहि ओ कुकुड़ दौड़ि कऽ ओहि पिल्ला-पिल्लीक लग पहुँचि गेल। आगू-आगू पिल्ली आ पाछू-पाछू पिल्ला नाङरि डोलबैत। ओ दोसर कुकुड़ पिल्लीक मूह सूँघलक। मूह सुँघितहि पिल्ली मूह चियारि कऽ ओहि कुत्तापर टूटलि। पिल्लीक टूटितहि पछिला पिल्ला जोरसँ भुकल। कुत्ताक अवाज सुनितहि, जते अनेरुआ कुकुड़ प्लेटफार्मपर रहए, सभ भुकैत दौड़ि कऽ ओहि पिल्लीकेँ घेरि लेलक। सभ सभपर भूकए लगल। मुदा पिल्ली डराएल नहि। रानी बनि हस्तिनीक चालिमे पछिम मुँहे चललि। अबैत-अबैत टिकट घरक सोझँ बैसि रहलि। पिल्लीक बैसितहि सभ पिल्ला पटका-पटकी करए लगल।

प्लेटफार्मक पछवारि भाग, कदमक गाछक निच्चामे मघैया डोम सभ डेरा खसौने रहए। ओहि काल एकटा छौँड़ा एकटा छौँड़ीक संग, डेरासँ थोड़े पछिम जाए लट्टा-पट्टी करैत रहए। कुत्ताक अवाज सुनि एक गोटेकेँ निन्न टुटलै। निन्न टुटितहि ऑंखि तकलक आकि पछवारि भाग दुनू गोटेकेँ लट्टा-पट्टी करैत देखलक। ओ ककरो उठौलक नहि! असकरे उठि कऽ ओहि दुनू लग पहुँचल। ओहो दुनू देखलकै। छौँड़ा ससरिकेँ झाड़ा फीड़ैले कातमे बैसि गेल। मुदा छौड़ी चलाक। फरिक्केसँ ओहि आदमीकेँ छौडी कहलकै- "कक्का।"

कक्का सुनि ओ किछु बाजल नहि मुदा घुरबो नहि कएल। आगुए मुँहे ससरैत बढ़ल। छौँड़ियो ओकरे दिस ससरलि। लगमे पहुँचतहि छौड़ी कन्हापर दहिना हाथ दैत फुसफुसा कऽ कहलकै- "कक्का....।"

कान्हपर हाथ पड़ितहि कक्काक मन बदलए लगलनि। जहिना शिकारीकेँ दोसराक शिकार हाथ लगलापर खुशी होइत, तहिना कक्कोकेँ भेलनि। ओहो अपन दहिना हाथकेँ छौँड़ीक देहपर देलखिन। देहपर हाथ पड़ितहि छौड़ी हल्ला केलक। छौँड़ो देखैत। उठि कऽ ओहो हल्ला करए लगल। हल्ला सुनि सभ मघैया उठि-उठि दौड़ल।

स्टेशनक टिकटघरमे टिकट मास्टर पैटमेनकेँ कहलक- "रघू, प्लेटफार्मपर बड़ हल्ला होइ छैक। जा कऽ देखहक तँ।"

पैटमेन जवाब देलकनि- "टीशन छिऐ। सभ रंगक लोक ऐठाम अबै-जाइए। जँ हम ओमहर देखैले जाइ आ एम्हर स्टेशन घरमे चोर चलि आबए तँ असकरे अहाँ बुते सम्हारल हएत। भने केबाड़ बन्न छै। दुनू गोटे जागल टा रहू। नहि तँ सरकारी समान चोरि भेने दुनू गोरेक नोकरी जाएत। कोनो कि सुरक्षा गार्ड अछि जे चोरिक दोख ओकरा लगतै।"

पैटमेनक बात स्टेशन मास्टरकेँ नीक बुझि पड़लनि, कहलखिन- "ठीके कहलह।"

दुनू गोटे गप-सप करए लगला। लेम्प जरिते रहै। केवाड़क दोग देने पैटमेन प्लेटफार्म दिस तकलक तँ देखलक जे कुत्ता सभ पटका-पटकी करैए। अन्हार दुआरे मघैया सभकेँ देखबे नहि केलक।

एक दिस कुत्ता सबहक झौहड़ि आ पटका-पटकी, दोसर दिस मघैया सबहक गारि-गरौबलिसँ प्लेटफार्म गदमिशन हुअए। मने-मन रमाकान्त सोचैत जे भने भऽ रहल अछि। लोकक हल्लासँ हमर समान तँ सुरक्षित अछि। जुगेसरकेँ उठबैत कहलखिन- "कने आगू बढ़ि कऽ जा कऽ देखहक तँ कथीक हल्ला होइ छै?"

जुगेसर उठि कऽ कहलकनि- "कक्का, कोन फेरामे पड़ै छी बस-स्टेण्ड आ रेलवे स्टेशनमे एहिना सदिखन झूठ-फूसि लऽ हल्ला होइते रहै छै। अपन जान बचाउ। अनेरे कतऽ जाएब।"

भोर होइतहि टमटमबला सभ आबए लगल। थोड़े हटि कऽ उत्तरवारि भाग ठकुरबाड़ीमे घड़ीघंट बजए लगल। घड़ीघंटक आबाज सुनि रमाकान्त नमहर साँस

छोड़लनि। जुगेसरकेँ कहलखिन- ‘‘ओँघीसँ मन भकुआइल अछि। चाहो दोकानपर लोक सभकेँ गल-गुल करैत सुनै छिऐ। कने चाह पीने अबै छी। ताबे तूँ समान सभ देखैत रहह।’’

कहि रमाकान्त उठि कऽ कलपर जाए कुड्डुड़ केलनि। पानि पीलनि। पानि पीबि चाहक दोकानपर जाए चाह पीलनि। चाह पीबि पान खाए घुरि कऽ आबि जुगेसरकेँ कहलखिन- ‘‘आब तोहू जाह। चाह पीबि दूटा टमटम सेहो केने अबिहह।’’

जुगेसर उठि कऽ कलपर जाए कुरड़ा केलक। कुरड़ा केलाक बाद सोचलक जे अखैन भिनसुरका पहर छै। तोहूमे तीनिये-चारिटा टमटमबला आएल अछि। जँ कहीं चाह पीबैले चलि जाइ आ इम्हर टमटमबला दोसर गोरेकेँ गछि लै, तखन तँ पहपटि भऽ जाएत। तइसँ नीक जे पहिने टमटमेबलाकेँ कहि दियै। सैह केलक। टमटमबला लग पहुँचि कऽ पुछलकै- ‘‘भाय, टमटम खाली छह।’’

‘‘हँ।’’

‘‘चलबह।’’

‘‘हँ, चलब।’’

पहिल टमटमबला जे छल, ओकर घरबाली दुखित छलैक। दस बजेमे डॉक्टर ऐठाम जेबाक छलैक। एक्कोटा पाइ नहि रहने भोरे स्टेशन पहुँच गेल, जे एक्को-दूटा भाड़ा कमा लेब तँ औझुका जोगार भऽ जाएत। किएक तँ कमसँ कम पचास रुपैआ दवाइ-दारु, तकर बाद घरक बुतात, घोड़ाक खरचा आ दस रुपैआ बैंकबलाकेँ सेहो देबाक अछि।

जुगेसरक पुछितहि टमटमबला मने-मन सोचए लगल जे भिनसुरका बोहनि छी तँ एकरा छोड़ैक नहि अछि। साला टमटमबला सभ जे अछि ओ उपरौज करैत रहैत अछि। कहैले अपनामे युनियन बनौने अछि मुदा बान्ह कोनो छैहे नहि। लगले बैसार कऽ कँ विचारि लेत आ जहाँ दस रुपैआ जेबीमे एलै आ ताड़ी पीलक अकि मनमाना करए लगैत अछि। अपनामे सभ विचारने अछि जे बर-बीमारीमे सभ चंदा देबै मुदा हमरे कएटा पैसा चंदा देलक। पनरह दिनसँ घरवाली दुखित अछि, जहि पाछु रेजानिस-रेजानिस भऽ गेल छी। ने एक्को मुट्ठी घोड़ाकेँ बदाम दै छिऐ आ ने अपने भरि पेट खाइ छी। धिया-पूता सभ अन्न बेतरे टउआइत रहैए। तखन तँ धन्यवाद ओही बच्चा सभकेँ दिअए, जे भुखलो माएक सेवा-टहल करैए। अपनो घोड़ाक संग-संग टमटम घिचै छी। जँ से नइ करब आ सोलहो अन्ना घोड़े भरोसे रहब तँ ओहो मरि जाएत। ओएह तँ हमर लछमी छी। ओकरे परसादे दू पाइ देखै छी। ओकरा कन्ना छोड़ि देबै। जिनगी भरि तँ ओकरे संग सुखो केलौं, छोट-छोट बच्चोकेँ तँ ओएह थतमारिकेँ रखलक। हम तँ भरि दिन बोनाइले रहै छी। घर तँ ओहि बेचारीक परसादे चलैए।

तहि बीच जुगेसर पुछलकै- ‘‘कते भाड़ा लेबहक?’’

भाड़ाक नाम सुनि टमटमबला सोचए लगल- एक तँ भिनसुरका बोहनि छी, दोसर डाकडरो अइठीन जाइ कऽ अछि। जँ भाड़ा कहबै आ ओते नइ दिअए तखन तँ बक-झक हएत। जँ कहीं दोसर टमटम पकड़ि लिअए, तखन तँ ओहिना मूह तकैत रहि जाएब। तइसँ नीक हएत जे पहिने समानो आ पसिनजरो चढ़ा ली। एते बात मनमे अबितहि टमटमबला कहलकै- "जे उचित भाड़ा हएत सैह ने लेब। हम तोरा एक हजार कहि देबह तँ कि तूँ दैये देबह।"

टमटमबलाक बात सुनि जुगेसर कहलकै- "अच्छा ठीक छै। पहिने चाह पीबि लाए।"

दुनू टमटमोबला आ जुगेसरो चाहक दोकानपर जाए चाह पीलक। चाह पीबि तीनू गोटे तमाकुल खेलक। चाहबलाकेँ जुगेसरे पाइ देलकै। तीनू गोटे रमाकान्त लग आबि समान सभ उठा-उठा टमटमपर लदलक। एकटा टमटमपर श्यामा, जुगेसर चढ़ल आ दोसरपर असकरे रमाकान्त समानक संग चढ़ल। किछु दूर आगू बढ़लापर रमाकान्त टमटमबलाकेँ कहलखिन- "घोड़ा एते लटल छह, खाइले नइ दै छहक?"

रमाकान्तक बात सुनि टमटमबला बेवशक आँखि उठा रमाकान्त दिशि देखि उत्तर देमए चाहैत, मुदा कनैत हृदय मूहसँ बकारे नहि निकलै दैत। टमटमबलाक आँखिपर आँखि दऽ रमाकान्त पढ़ए लगलथि। तहि बीच टमटमबलाक आँखिमे नोर ढ़बढबा गेलै। कान्ह परक तौनीसँ आँखि पोछि टमटमबला कहए लगलनि- "सरकार यैह टमटम आ घोड़ा हमर जिनगी छी। अहीपर परिवार चलैए। जइ दिनसँ भनसिया दुखित पड़ल तइ दिनसँ जे कमाइ छी से दबाइये-दारुमे खरचा भऽ जाइए। अपनो बाल-बच्चाकेँ आ घोड़ोकेँ खाइक तकलीफ भऽ गेलैए। की करबै! कहुना परान बचेने छिऐ। परान रहतै तँ माउस हेबे करतै।"

टमटमबलाक धैर्य आ बेवश देखि रमाकान्तक हृदय पघिल कऽ इनहोर पानि जेकाँ पातर भऽ गेलनि। बिना किछु बजनहि मने-मन सोचए लगलथि जे एक तरहक मजबूर ओ अछि जे किछु करबे (कमेबे) नहि करैत अछि आ दोसर तरहक ओ अछि जे दिन-राति खटैत अछि मुदा ओकरा प्राकृतिसँ लऽ कऽ मनुक्ख धरि एहि रुपे संकट पैदा करैत अछि, जहिसँ ओ मजबूर होइत अछि। ई टमटमबला दोसर श्रेणीक मजबूर अछि, तँ एहेन लोकक मदति करब धरमक श्रेणीमे अबैत अछि। जरुर एहेन लोकक मदति करैक चाहिऐक। मुदा मेहनतकश आदमीक मोन एत्ते सक्कत होइत अछि जे दोसरसँ हथउठाइ नहि लेमए चाहैत अछि। जँ हम किछु मदति करए चाहिऐक आ ओ लइसँ नासकार जाए, तखन तँ मनमे कचोट हएत। एहि असमंजसमे रमाकान्त पड़ि गेला। फेर सोचए लगलथि जे कोन रुपेँ एकरा मदति कएल जाए? सोचैत-सोचैत सोचलनि जे हम नहि किछु कहि एकरेसँ पूछिऐक, जे अखन तूँ जहि संकटमे पड़ल छह ओहिमे कते सहयोग भऽ गेलासँ तोरा पार लगि जेतह। ई विचार मनमे अबितहि पुछलखिन- "अखन तोरा कते मदति भऽ गेलासँ पार लगि जेतह।"

रमाकान्तक बात सुनि टमटमबलाक मनमे संतोषक छोट-छीन लकीर खिंचा गेल। मने-मन सभ हिसाब बैसबैत बाजल- ''सरकार, अगर अखन पाँच दिनक परिवारोक आ घोड़ोक बुतात आ एक सए रुपैआ भऽ जाए तँ हम अपन जिनगीकेँ पटरीपर आनि लेब। जखने जिनगी पटरीपर आबि जाएत तखने जिनगीक सरपट चालि पकड़ि लेब। स्त्रीक इलाज, परिवार आ कारोबार तीनू काज एहेन अछि जे एक्कोटा छोड़ैबला नहि अछि।''

टमटमबलाक बोलीमे रमाकान्तकेँ मदतिक आशा बुझि पड़लनि। आशा देखि खुशी भेलनि। खुशी अबितहि बिचारलथि जे अगर पाँच दिनक बदला दस दिनक बुतात आ सए रुपैआक बदला दू सए रुपैया जँ मदति कऽ देबै तँ विरोध नहि करत। संगे जखने समस्यासँ निकलैक आशा जगि जेतै तँ काजो करैक साहस बढ़ि जेतै। मुदा असकरे तँ नहि अछि, दूटा टमटमबला अछि। की दुनू गोटेकेँ मदति करबैक आकि एकरे टा?''

पुनः एहि सवालपर सोचए लगलथि। मनमे एलनि जे मुसीबत तँ एहि बेचारे टाकेँ छैक। दोसर टमटमबालासँ तँ गप नहि भेल जे बुझितिऐक। मुदा एकर तँ बुझलिऐक। तँ एकरे टा मदति करबैक। दोसर टमटमबलासँ पुछि लेबै जे तोहर भाड़ा कते भेलह? जेते कहत तते दऽ देबै। मुदा सोझामे एक ठाम कम-बेसी देबो उचित नहि। तँ पहिने ओकरा भाड़ा दऽ बिदा कऽ देबै आ एकरा रोकि पाछू कऽ सभ किछु दऽ बिदा कऽ देबै। गरीबक हृदयकेँ जुराएब बड़ पैघ काज होएत। एते सोचैत-सोचैत रमाकान्त घरपर पहुँचि गेलाह।

घरमे ताला लगा हीरानन्द पैखाना गेल रहथि। दुनू टमटम पहुँचि दलानक आगूमे ठाढ़ भेल। टमटम ठाढ़ होइतहि सभ कियो उतड़लाह। टमटमोबला आ जुगेसरो सभ समानकेँ उतारि दरबज्जाक ओसारपर रखलक। ताबे हीरानन्दो बाध दिशिसँ आबि पोखरिक पुबरिया महार लग पहुँचलाह। महार लग अबितहि दरबज्जापर टमटम लगल देखलनि। टमटम देखि हीरानन्द बुझि गेल जे रमाकान्त आबि गेलाह। हाँइ-हाँइ कऽ दतमनि, कुरुड़ कऽ लफरल दरबज्जापर आबि घरक ताला खोलि देलखिन। हाथे-पाथे तीनू गोटे सभ सामानकेँ कोठरीमे रखि देलकनि। दोसर टमटमबलाकेँ भाड़ा पूछि रमाकान्त दऽ देलखिन। पहिल टमटमबलाकेँ आँखिक इशारासँ रुकैले कहलखिन। दोसर टमटमबला चलि गेल। पहिल टमटमबलाकेँ दू सए रुपैया आ दस दिनक बुतात -दू पसेरी बदाम आ तीन पसेरी चाउर- दए कऽ बिदा केलनि। टमटमपर चढ़ि मने-मन गद-गद होइत टमटमबला गीत 'सभक सुधि अहाँ लइ छी यौ बाबा हमरा किअए बिसरल छी यौ..' गुनगुनाइत बिदा भेल।

पसीनासँ गंध करैत कुरता-गंजी निकालि रमाकान्त चौकीपर रखलनि। भकुआइल मन रहनि। मुदा निकेना घर पहुँचलासँ मन खुशी होइत रहनि। हीरानन्दक पूछैसँ पहिनहि रमाकान्त पुछलखिन- ''गाम-घरक हाल-चाल बढ़िया अछि की ने?''

''हँ''- कहि हीरानन्द पुछलखिन- ''यात्रा बढ़ियाँ रहल की ने?''

"येह, यात्राक संबंधमे की कहू! अखन तँ मनो भकुआएल अछि आ तीन दिनसँ नहेबो ने केलहुँहें। तँ पहिने नहा लिअए दिअ। तखन निचेनसँ यात्राक संबंधमे कहब।"

जुगेसरकेँ जे बिदाइ मद्रासमे भेटल रहै ओ चारिटा कार्टूनमे रहै। चारु कार्टून जुगेसर फुटा कऽ ओसारेपर रखने रहए। जुगेसरक घरवाली आ धिया-पूता सेहो आबि गेलैक। चारु कार्टून जुगेसर अपना घरवालीकेँ देखबैत कहलक- "ई अप्पन छी। अंगना नेने चलू।"

अप्पन सुनि घरोवाली आ धियो-पूतो चपचपा गेल। चारु कार्टून लऽ आंगन बिदा भेल।

रमाकान्तक अबैक समाचार गाममे बिहाड़ि जेकाँ पसरि गेल। धिया-पूतासँ लऽ कऽ चेतन धरि देखैले अबए लगलनि। दरबज्जापर लोकक भीड़ बढ़ए लागल। रमाकान्त नहाएब छोड़ि जुगेसरकेँ कहलखिन- "जुगे, सनेसबला कार्टून एतै नेने आबह।"

सनेसमे डॉ. महेन्द्र टुकड़ी बनाओल दू कार्टून नारियल देने रहनि। जुगेसर कोठरी जा एकटा कार्टून उठौने आएल। जहियासँ रमाकान्त ब्रह्मचारी जीक आश्रम गेलथि, तहियासँ विचारे बदलि गेलनि। अपन सुख-दुखकेँ ओते महत्व नहि दिअए लगलथि, जते दोसराक। दरबज्जापर लोक थहा-थही करए लगल। जना लोकक हृदय रमाकान्तक हृदयमे मिझराए लगलनि आ रमाकान्तक हृदय लोकमे। अपन नहाएब, दतमनि करब आ आँखिपर लटकल ओंघी सभ बिसरि जुगेसरकेँ कहलखिन- "चेतनकेँ दूटा टुकड़ी आ बाल-बोधकेँ एक-एकटा टुकड़ी बाँटि दहक। दरबज्जापर आएल एक्को गोटे ई नहि कहए जे हमरा नहि भेल।"

कार्टून खोलि जुगेसर नारियलक टुकड़ी बिलहै लगल। हाथमे पड़ितहि, की चेतन की धिया-पूता, नारियल खाए लगल। एक कार्टून सठि गेल मुदा देखिनिहार, जिज्ञासा केनिहार नहि सठल। दोसरो कार्टून जुगेसर अनलक। दोसर कार्टून सठैत-सठैत लोको पतरा गेल। लोकक भीड़ हटल देखि रमाकान्त नमहर साँस छोड़ैत जुगेसरकेँ कहलखिन- "आब तोहूँ जा कऽ खा-पीअह गे। हमहूँ जाइ छी।"

आंगन आबि जुगेसर अपन चारु कार्टून खोललक। मद्रासमे कार्टूनक भितरका समान नहि देखने छल तेँ देखैक उत्सुकता रहै। एक-एकटा कार्टून चारु गोटे- महेन्द्र, रविन्द्र, जमुना आ सुजाता- देने रहै। पहिल कार्टून, महेन्द्रबलामे एक जोड़ धोती, एक जोड़ साड़ी, एकटा कुरता कपड़ाक पीस, एकटा आङीक पीस, एकटा चद्दरि, एकटा गमछा, जुगेसर ले एक जोड़ जुत्ता आ घरवलीले एक जोड़ चप्पल, दुनू बच्चाले पेन्ट-शर्टक संग तीन सए रुपैआ रहैक। एहिना तीनू कार्टूनमे सेहो रहैक। चारु कार्टूनक समान देखि जुगेसरक परिवारक मनमे खुसीक बिहाड़ि उठि गेलैक। दुनू बच्चा अपन कपड़ा देखि खुशीसँ एक-एकटा पहीरि आंगनमे नचै लगल। किएक तँ कपड़ाक एहन सुख जिनगीमे पहिल दिन भेटल छलैक। दुनू परानी जुगेसरकेँ सेहो खुशीसँ मन गद-

गद भऽ गेलैक। जुगेसर हिसाब जोड़ै लगल जे जँ ओरिया कऽ पहिरब तँ दुनू गोरेक जिनगी पार लगि जाएत। एहन चिक्कन कपड़ा आइ धरि नसीब नहि भेल छल। एक आँखि जुगेसर समानपर देने आ दोसर आँखि घरवालीक आँखिपर देलक।

दुनू गोटेक आँखिमे जिनगीक बसन्त अबए लगलैक। अपन बिआह मन पड़लै। जुगेसरकेँ होए जे घरवालीकेँ दुनू बाँहिसँ पजिया कऽ छातीमे लगा ली आ घरवालीकेँ होए जे घरबलाक कोरामे बैसि एकाकार भऽ जाए। मुदा तीन दिनक गाड़ीक झमारसँ जुगेसरक देहो भसिआइ आ ओंघियो आँखिक पिपनीकेँ झलफलबैत रहए। जुगेसर घरवालीकेँ कहलक- "पहिरैले एक-एक जोड़ कपड़ो आ जुत्तो बहार रखू आ बाकीकेँ खूब सरिया कऽ रखि लिअ, जे दुरि नहि हुअए।"

बेर टगि गेल। जुगेसर नवका धोती, गंजी पहीरि कान्हपर गमछा नेने रमाकान्त ऐठाम पहुँचल। रमाकान्त सुतले रहथि। आंगन जाए श्यामाकेँ देखलक तँ ओहो सुति उठि कऽ मूह-हाथ धोइत छलीह। जुगेसरकेँ देखि, श्यामा एक टकसँ निङहारि, मुस्की दैत कहलखिन- "आइ तँ अहाँ दुरगमनिया वर जेकाँ लगै छी जुगेसर।"

हँसैत जुगेसर उत्तर देलकनि- "काकी, महिन्दर भाय देलहा छी।"

महिन्दरक नाम सुनि श्यामा कहलखिन- "भगवान भोग देथि। की सभ बच्चा देलनि?"

जुगेसर- "अहाँसँ लाथ कोन काकी, तते कपड़ा-लत्ता आ जुत्ता-चप्पल चारु गोरे देलनि जे जिनगी भरि कतबो धाँगि कऽ पहिरब तैयो ने सठत।"

बेटा-पुतोहूक बड़ाइ सुनि श्यामाक हृदय उमड़ि पड़लनि। आह्लादित भऽ पुछलखिन- "पाइयो-कौड़ी देलनि आकि कपड़े-लत्ताटा?"

"रुपैआ तँ गनलिऐ नहि, मुदा बुझि पड़ल जे दस-पनरहटा नमरी अछि।"

"बाह। मालिक देखलनि की नहि? "

"ओ तँ सुतले छथि। हुनके देखबैले पहीर कऽ एलौं।"

"हम ताबे चाह बनबै छी। दरबज्जापर जा कऽ हुनको उठा दियौन।"

'बड़बढ़िया' कहि जुगेसर दरबज्जापर आबि रमाकान्तकेँ उठबए लगलनि। आँखि खोलि रमाकान्त देबालक घड़ीपर नजरि देलनि। चारि बजैत। पड़ले-पड़ल सुतैक हिसाब जोड़लनि। हिसाब जोड़ि घुनघुना कऽ बजलाह- "एहेन निन्न तँ जुआनियोमे नहि अबैत छल।" ओछाइनपर सँ उठि जुगेसरकेँ कहलखिन- "कने चाह बनौने आबह। अखनो बुझि पड़ैए जे निन्न आँखियेपर लटकल अछि। ताबे हमहूँ कुरुड़ कऽ लैत छी।"

कहि रमाकान्त पहिने लघी करए गेलाह। लघी करै काल बुझि पड़नि जे चाहोसँ धीपल लघी होइए। ततबे नहि जते लघी चारि बेरिमे करैत छी, तोहूसँ बेसी भऽ रहल अछि। लघी कऽ कलपर आबि आँखि-कान पोछि, कुरुड़ कए दमसा कऽ भरि पेट पानि पीलनि। पानि पीबितहि बुझि पड़लनि जे अधा निन्न

पड़ा गेल। जुगेसर चाह अनलक। रमाकान्त चाह पीबितहि रहथि आकि हीरानन्दो स्कूलसँ आबि गेला। शशिशेखर सोहो आबि गेल। हीरानन्द जुगेसरकेँ पुछलखिन- ''जात्रा बढ़िया रहल की ने?''

हँसैत जुगेसर बाजल- ''जाइ काल टेनमे बड़ भीड़ भेल। जाबे गाड़ीमे रही ताबे ने एक्को बेर झाड़ा भेल आ ने सुतलौं। किएक तँ रिजफ सीट रहबे ने करै। जइ डिब्बामे बैसल रही ओहिमे लोकक करमान लागल रहै। तइपर सँ जइ टीशनपर गाड़ी रुकै सभ टीशनमे एगो-दूगो लोक उतड़ै आ दस-बीस गोरे चढ़ि जाए। मुदा भगवानक दयासँ कहुना-कहुना पहुँच गेलौं। जखन मद्रास टीशनपर उतड़लौं तँ दोसरे रंगक लोक देखिये। अपना सभ दिस अछि किने जे सभ रंगक लोक मिलल-जुलल अछि। से नइ देखिऐ। बेसी लोक कारिये रहै। गोटे-गोटे लोक उज्जर बुझि पड़ै। जखन डेरापर पहुँचलौं तँ मकान देखि बिसबासे ने हुअए जे अपन छिअनि। बड़का भारी मकान। तइमे कोठलीक कमी नहि।''

''भरि मोन देखलौं की ने?''

''येह, की कहू मासटर सैब, महिन्दर भाय अपने मोटरसँ भरि-भरि दिन बुलबैत रहथि। मोटरो तेहेन जे जहाँ बैसी आ खुगै आकि औंघी लगि जाए। कतए की देखलौं से मनो ने अछि।''

रमाकान्तक मद्राससँ अएबाक समाचार सुनि महेन्द्रक स्कूलक संगी सुबुध सेहो अएलाह। ओ हाइ स्कूलमे शिक्षक छथि। महेन्द्र आ सुबुध, हाइ स्कूल धरि, संगे-संग पढ़ने रहथि। महेन्द्र साइंसक विद्यार्थी आ सुबुध आर्टक। बी.ए. पास केलापर सुबुध शिक्षक भेलाह आ महेन्द्र डॉक्टरी पढ़ि डॉक्टर बनलाह। महेन्द्रक कुशल-क्षेम पूछि सुबुध रमाकान्तकेँ पुछलखिन- ''अपना एहिठामक लोक आ मद्रासक लोकमे की अंतर देखलिऐक?''

दुनू ठामक लोकक तुलना करैत रमाकान्त कहए लगलखिन- ''ओत्तुका आ अपना ऐठामक लोकमे अकास-पतालक अन्तर अछि। ओहिठामक लोक अपना एहिठामक लोकसँ अधिक मेहनती आ इमानदार अछि।''

बिचहिमे शाशिशेखर प्रश्न केलकनि- ''की मेहनती?''

''मनुक्खक तुलना करैसँ पहिने अपन इलाका आ मद्रासक माटि-पानिक तुलना सुनि लिअ। जेहेन सुन्नर माटि अपना सभक अछि, देखते छिऐ जे कते मुलाएम आ उपजाऊ अछि। पानियो कते बढ़ियाँ अछि, एहन मद्रासमे नहि अछि। अपना सभसँ बेसी गरमियो पड़ैत छैक। जहाँ धरि लोकक सवाल अछि, अपना ऐठामक लोक अधिक आलसी अछि। समएकेँ कोनो महत्व नहि दैत अछि। वा ई कहियौक जे एहिठामक लोक समएक महत्व बुझबे नहि करैत अछि। कियो बुझबो करैत अछि तँ ओ परजीवी बनि जिनगी बितबए चाहैत अछि। हँ, किछु गोटे एहेन जरुर छथि जे मर्यादित मनुष्य बनि जिनगी जीबि रहल छथि। जे पूजनीय छथि, मुदा सामाजिक व्यवस्था सदिखन हुनको झकझोड़ितहि रहैत छन्हि। ओहिठामक लोक समएक संग चलैत छथि, जहिसँ कमजोर इलाका

रहितहुँ नीक-नहाँति जिनगी बितबैत अछि। ओहिठामक लोक भीखकँ अधला बुझि नहि मंगैत अछि, मुदा अपना ऐठाम लोक उपार्जनक स्रोत बुझैत अछि।''

बिचहिमे सुबुध पुछलकनि- ''पढ़ाई-लिखाई केहेन छैक?''

''स्कूल, कओलेज, युनिवर्सिटी सभ देखलहुँ। लड़का-लड़कीक स्कूल शुरुहेसे अलग-अलग अछि। मुदा तैयो दुनूकँ संगे-संग पढ़ैत सेहो देखलहुँ। अपना ऐठामसँ बेसी लड़की ओहिठाम पढ़ैत अछि। अपना ऐठाम लड़के पछुआएल अछि तँ लड़कीक कोन हिसाब। गाड़ी, ट्रेन, बसमे सेहो अलग-अलग व्यवस्था छैक। जहनकि अपना ऐठाम सभ संगे-संग चलैत अछि।''

सुबुध- ''खाइ-पीबैक केहेन व्यवस्था छैक?''

''गरीब लोकक खान-पान दब होइतहि छैक। मुदा एक हिसाबसँ देखल जाए तँ अपना सभक नीक अछि। कपड़ो-लत्ता पहिरब अपना ऐठाम नीक अछि।''

रमाकान्तक छोटकी पुतोहू सुजाता एक कार्टून फलक बनल शराबक पेटी सेहो देने रहनि। आँखिक इशारासँ रमाकान्त जुगेसरकँ एक बोतल ब्राण्डी अनैले कहलखिन। जुगेसर उठि कऽ भीतर गेल आ एकटा बोतल ब्राण्डी नेने आएल। दरबज्जापर आबि चाहेक गिलासकँ धोए, सभमे शराब दऽ सबहक आगूमे देलकनि। आगूमे पड़ितहि रमाकान्त गट दऽ पीबि गेलाह। मुदा हीरानन्दो, शशिशेखरो आ सुबुधोकँ डर होइत छलनि। कहियो पीने नहि रहथि। दोहरी गिलास पीबैत रमाकान्त सभकँ कहलखिन- ''पीबै जाइ जाउ, फलक रस छिऐक। कोनो अपकार नहि करत।''

मुदा तैयो सभ-सबहक मूह तकैत रहथि। दोहराकँ फेर रमाकान्त सभकँ कहलखिन। मने-मन सुबुध सोचलनि जे कोनो जहर-माहूर थोड़े छिऐक जे मरि जाएब। अगर मरबो करब तँ पहिने कक्के ने मरताह। बुझल जएतैक। आगूमे राखल गिलास उठा आस्तेसँ दू घोट पीबि, गिलास रखि, हीरानन्दकँ कहलखिन- ''पीबू, पीबू मास्टर सहाएब। सुआद तँ कोनो अधला नहिये बुझि पड़ैत अछि।

सुबुधक बात सुनि हीरानन्दो आ शशिशेखरो गिलास उठा कऽ पीलनि। ताबे तेसरो गिलास रमाकान्त चढ़ा देलखिन। तेसर गिलास पीबितहि आँखिमे लाली आबए लगलनि। मन हल्लुक सेहो हुअए लगलनि। बजैक ताब सेहो चढ़ए लगलनि। जहिना आगिपर चढ़ल पानिक बरतनमे ताव लगलापर निच्चाँक पानि गर्म भऽ उपर उठैत रहैत अछि, तहिना रमाकान्तोकँ हुअए लगलनि। धीरे-धीरे रंग चढ़ैत नीक जेकाँ चढ़ि गेलनि। अहू तीनू गोटे- हीरानन्द, सुबुध आ शशिशेखरक आँखि तेज हुअए लगलनि। तेज होइत नजरिसँ सुबुध पुछलखिन- ''कक्का, महेन्द्र भाय मस्तीमे रहै छथि की ने?''

बजैक वेग रमाकान्तकँ रहबे करनि, तहि परसँ महेन्द्रक मस्ती सुनि कहए लगलखिन- ''मेहनति आ कमाइ देखि क्षुब्द भऽ गेलहुँ। अप्पन बड़का मकान, चारिटा गाड़ी, बजारमे अइल-फइलिक बास तहि परसँ बैंकोमे ढेरी रुपैआ जमा

केने अछि। अइठामक सम्पत्तिक ओकरा कोनो जरुरी नहि छैक। किएक रहतैक? जेकरा अपने कमाइ अम्बोह छै।"

बिचहिमे सुबुध टोकि देलकनि- "तखन ऐठामक खेत-पथार गरीब-गुरबाकेँ दए दियौक?"

बिना किछु आगू-पाछू सोचनहि रमाकान्त कहलखिन- "बड़ सुन्नर बात अहाँ कहलहुँ। अनेरे हम एत्ते खेत-पथार रखने छी। यैह खेत जे गरीबक हाथमे जेतै तँ उपजबो बेसी करतै आ ओकर जिनगीयो सुधरि जेतै।"

जहिना धधकल आगिमे हवा सहायक होइत, तहिना रमाकान्तोकेँ भेलनि। एक तँ ब्राण्डीक नशा, दोसर परिवारमे चारि-चारिटा डॉक्टरक कमाइ, तहि परसँ अपार सम्पत्ति देखि मन उधिआइत छलनि। समाजक स्नेह सेहो बढ़ि गेल छलनि। ततबे नहि, अद्वैत दर्शन हृदयकेँ पैघ बना देलकनि।

हँसैत रमाकान्त सबहक बीच, कहलखिन- "अखन धरि हम गुलरिक कीड़ा बनल छलहुँ, मुदा आब दुनियाँकेँ देखलिऐक। दू सए बीधा जमीन अछि। किएक हम एत्ते रखने छी। एकटा जमीनदारक खेतसँ सैकड़ो गरीब परिवार हँसी-खुशीसँ गुजर कऽ सकैत अछि। जखनिकि ओतेक सम्पत्तिक सुख एकटा परिवार करैत अछि। ई कते भारी अनुचित थिक। सभ मनुक्ख मनुख छी। सभकेँ सुख-दुखक अनुभव होइत छैक। केयो अन्न बेतरे काहि कटैत अछि तँ ककरो अन्न सड़ैत छैक। घोर अन्याय मनुक्ख-मनुक्खक संग करैत अछि।"

कहि जुगेसरकेँ कहलखिन- "जुगे, इलाइची देल पान लगाबह?"

जुगेसर पान लगबए गेल। तहि बीच बौएलाल सेहो आएल। रमाकान्तकेँ गोर लागि कातमे बैसल। बौएलालकेँ बैसितहि रमाकान्त हीरानन्दकेँ कहलखिन- "मास्टर सहाएब, महेन्द्र कहने छल जे एकटा लड़का आ एकटा लड़की दू गोरेकेँ एहिठाम मद्रास पठा दिअ। ओहि दुनू गोटेकेँ अपना संग रखि छोट-छोट बीमारीक इलाज केनाइ सिखा देबैक। गाममे इलाजक बड़ असुविधा अछि। ततबे नहि, गरीबीक चलैत लोक रोग-व्याधिसँ मरि जाइत अछि, मुदा इलाज नहि करा पबैत अछि। तँ एकटा छोट-छीन अस्पताल सेहो बना देब, जहिमे लोकक मुफ्त इलाज हेतैक। तहि लेल जते दवाइ-दारुमे खर्च हएत से हम देब। हम सभ चारि गोटे छी। बेरा-बेरी चारु गोटे, सालमे एक-एक मास गाममे रहब आ लोकक इलाज करब। तहि बीच छोट-छोट बीमारीक लेल सेहो दू आदमीकेँ तैयार कऽ देबाक अछि। जँ कहीं बीचमे नमहर बीमारी ककरो हेतैक तँ ओकर इलाजक खर्च सेहो देबै। तँ दू आदमीकेँ मद्रास पठा दियौ, ओकर जेबाक खर्च देबै।"

रमाकान्तक बात सुनि, सभ कियो बौएलाल आ सुमित्राकेँ मद्रास पठबैक विचार केलनि। बौएलालकेँ हीरानन्द कहलखिन- "बौएलाल सबहक विचार तँ तू सुनिये लेलह। काल्हि दुनू गोरे मद्रास चलि जाह।"

९

कछ-मछ करैत हीरानन्द भरि राति जगले रहि गेलाह। मनमे कखनो होनि जे रमाकान्तक देल जमीन समाजक बीच कोना बाँटल जाए, तँ कखनो हुनक उदार विचार नचैत रहनि। कखनो होनि जे निसाँक झोकमे बजलाह मुदा निसाँ टुटलापर जँ कहीं नठि जाथि। विचित्र स्थितिमे हीरानन्द रहथि। बात बदलब धनीक लोकक जन्मजात आदत छी। मुदा हम तँ शिक्षक छी, शिक्षकक प्रति आदर आ निष्ठा, सभ दिनसँ, समाजमे रहलैक आ रहतैक। एहि विचारक बीच जते गोटे छलहुँ ओहिमे हम आ सुबुध शिक्षक छी। आन क्यो तँ कम्मो मुदा हम दुनू गोटेतँ बेसी घिनाएब। कोन मूह लऽ समाजक बीच रहब। फेर अपनेपर शंका भेलनि जे हमहूँ शराबेक निशाँमे ने तँ बौआइ छी। ई बात मनमे उठितहि, उठि कऽ बाहर निकलि चारु भर तकलनि। अन्हार गुप-गुप रहए। सन-सन करैत राति छलैक। हाथ-हाथ नहि सुझैत छलैक। मुदा मेघ साफ। सिंगहारक फूल जेकाँ तरेगण चकचक करैत रहए। हवा तँ कोनो नहिये बहैत रहै मुदा राति ठंढ़ाइल रहए। पुनः बाहरसँ कोठरी आबि बिछानपर पड़ि रहला। मुदा निन्नक कतौ पता नहि! मनसँ जमीन हटबे नहि करैत रहनि। पुनः उठि कऽ कोठरीसँ निकलि लघुशंका करैले कातमे बैसलाह। भरिपोख पेशाब भेलनि। पेशाब होइतहि मन हल्लुक भेलनि। मन हल्लुक होइतहि ओछाइनपर आबि पड़ि रहलाह। ओछाइनपर पड़ितहि निन्न आबि गेलनि।

सुबुध सेहो भरि राति जगले बितौलनि। मुदा हीरानन्द जेकाँ ओ ओझरीमे नहि ओझराइल रहथि। समाज शास्त्रक शिक्षक होइक नाते स्पष्ट सोच आ समाज चलैक स्पष्ट दिशा छलनि, तेँ मन दृढ़ संकल्प आ सक्कत विचारसँ भरल छलनि। सभसँ पहिने मनमे उठलनि जे जहिना आर्थिक दृष्टिसँ टूटल समाजकेँ रमाकान्त कक्काक सहयोगसँ मजबूत बल भेटतैक, तहिना तँ ओहि बलकेँ चलबैक सेहो मजगूत रस्ता भेटैक चाही! जे रमाकान्त कक्का बुते नहि हेतनि। इमानदारी आ उदार स्वभावक चलैत तँ ओ सम्पत्तिक त्याग केलनि। मुदा ओ सम्पत्ति आगू मुँहे कोना बढ़तैक? जहिना मनुक्खक परिवार दोबर, तेबर, चारिबरक रफ्तारसँ आगू मुँहे बढ़ैत अछि, तहिना तँ सम्पतियोक गति हेबाक चाहिऐक। मुदा सम्पत्तिमे ओ गति तखने आओत जखन कि ओहिमे श्रमक इंजिन लगाओल जाएत। ओना श्रमक इंजन लगौनिहार श्रमिक सेहो पर्याप्त अछि मुदा ओकरा श्रमकेँ कोन रुपमे बढ़ाओल जाए। एक रुपक ई होइत जे सोझे-सोझी ओकरा नव कार्यक ढाँचामे ढालल जाए, नव काज देल जाए, जे संभव नहि अछि! किएक तँ नव औजार, नव तरीका बिना नव ज्ञाने संभव नहि अछि, जे नहि अछि। दोसर जे लूरि आ औजार अछि, ओकरे धारदार बना आगू बढ़ाओल जाए। जे संभवो अछि आ उपयुक्तो होएत। मुदा ओहू लेल पथ-प्रदर्शकक जरुरत होएत। जेकर अभाव

अछि। हमहूँ तँ नोकरीये करै छी। सात दिनमे एक दिन रविकेँ गाममे रहै छी, बाकी छह दिन अनतै रहै छी। तहिसँ काज कोना चलि सकैए? किएक तँ समाजो नमहर अछि आ समस्यो ढेर अछि। हर समस्याक समाधानक रस्तो फराक-फराक होएत। जना बुद्धदेव कहने छथि जे दुश्मनकेँ सूइयाक नोक भरि जँ सुराक भेटि जाएत तँ ओहि होइत हाथी सन विकराल जानवर प्रवेश कऽ जाएत। समाजक समस्यो तँ ओहने अछि। अनायास मनमे उपकलनि जे जहिना रमाकान्त कक्का अपन सभ सम्पत्ति समाजकेँ दैले तैयार छथि तहिना हमहूँ नोकरी छोड़ि अपन ज्ञान समाजकेँ दऽ देबैक। सभ किछु बुझितहुँ सड़ल-गलल रस्ता, अपन अरामक दुआरे, धेने चलि रहल छी। सात बीघा जमीन, एकटा पोखरि, दस कट्ठा गाछी-कलम आ खढ़होरि अछि। जाहिसँ पिताजी नीक-नहाँति गुजरो करैत छलाह आ हमरो पढ़ौलनि। मुदा हम नोकरीयो करैत छी, खेतो-पथार ओहिना अछि मुदा कते आगू मुँहे बढ़लहुँ। हँ, एते जरुर भेल अछि जे घरोवालीकेँ आ बेदरो-बुदरीकें, धनिकक मंदिरक मुरती जेकाँ, नीक-नीक परसाद, नीक-नीक सजावटसँ सजा काहिल बनौने छी। की हम ई नहि देखैत छी जे झक-झक करैत छातीक हाड़बला रिक्सा खिंचैत अछि, साठि बरखक महिला चिमनीमे पजेबा उघैत अछि, मरैबला पुरुख बड़दक संग हर खिंचैत अछि। अन्नक बोझ उघैत अछि। की ओकर देह लोहाक बनल छैक आ हमरा सबहक कोढ़िलाक बनल अछि। ई सभ धन आ बुद्धिक करामात छी। आइ धरिक समाज आ समाजक नियामक एकरे पोसक रहलाह जे सुधारबाक अछि। नहि तँ मनुक्ख आ जानवरमे की अन्तर रहतैक? जहि समाजमे मनुक्ख जानवरक जिनगी जीबए ओहि समाजक प्रबुद्ध लोककेँ चुरुक भरि पानिमे डूबिकेँ नहि मरि जेबाक चाहियनि। एते बात मनमे अबितहि सुबुध तँइ केलनि जे सभसँ पहिने काल्हि स्कूलमे त्यागपत्र दऽ देब। आइ धरि जे जिनगी जीलहुँ, मुदा काल्हिसँ नव जिनगीक सूत्रपात करब। एहि संकल्प-विकल्पक बीच मन घुरिआइत रहनि।

भोर होइतहि सुबुध ओछाइन परसँ उठि मैदान दिशि बिदा भेला। हाथमे लोटा, मुदा मन ओहि विचारमे डूबल छलनि। थोड़े दूर गेलापर गाममे गल्ल-गुल होइत सुनलनि। रस्तेपर ठाढ़ भऽ अकानए लगलाह। जे कथीक गल्ल-गुल भऽ रहल अछि। सोझामे ककरो नहि देखैत, जे पुछियो लैतथि। मने-मन अनुमान करए लगलाह जे भरिसक रातिमे कतौ कोनो घटना घटि गेलैक। या तँ ककरो साँप-ताँप काटि लेलकै वा कतौ चोरि भऽ गेलैक। मुदा से सभ नहि छलैक। साँझमे जे विचार रमाकान्त व्यक्त केने रहथि ओ राता-राती बिहाड़ि जेकाँ सगरे गाम पसरि गेलैक। रस्तेसँ घूरि सुबुध कड़चीक दतमनि तोड़ि, दतमनि करैत घरपर अएला। घरपर अबितहि देखलनि जे सुकना बैसल अछि। मुदा सुकनाक नजरि सुबुधपर नहि पड़लैक, किएक तँ ओ अंगनाक दुआरि दिशि तकैत रहए। सुबुध सुकनाकेँ पुछलखिन- ‘‘भोरे-भोर किमहर सुकन।’’

सुबुधक बात सुनि अकचकाइत सुकन चौकीपर सँ उठि, दुनू हाथ जोड़ि बाजल- ''मालिक, अहाँ तँ जनिते छी जे कोनो काज-उद्यममे सभ तूर मिलि सम्हारि दै छी। गरीबोपर नजरि रखबै।

सुबुधकेँ सुकनक बातक कोनो अर्थे ने लगलनि। पुछलखिन- ''सुकन भाय, तोहर बात हम नहि बुझलिअह।''

''लोक सभ कहलकहेँ जे रमाकान्त कक्का अपन सभ खेत गरीब-गुरबाकेँ दऽ देथिन, जे अहीं बँटबै।''

सुकनक बात सुनि सुबुध मने-मन सोचए लगलथि जे जमीन-जएदादक सवाल अछि। धड़फड़ा कऽ कोना हेतैक। जँ आम लोकक बीच विचार कएल जाएत तँ हो-हल्ला हेतै। हो-हल्ला भेने काजो बिगड़ि जएतैक। तँ असथिरसँ विचार करैक जरुरत अछि। मुदा अखन जँ सुकनकेँ ई बात कहबै तँ दुख हेतैक। तँ आशाक बात कहब अछि। कहलखिन- ''सुकन भाय, जखन गरीबक बीच खेतक बँटवारा हएत तँ तोहूँ गरीबे छह। तखन तोरा किएक ने हेतह। अखन जाह।''

सुकन बिदा भेल। कलक आगूमे ठाढ़ भऽ सुबुध सोचए लगलाह। अजीब स्थिति भऽ गेल। एक दिशि गरीबक सबाल अछि। जँ कनियो चूक हएत तँ जिनगी भरि बदनामीक मोटरी माथपर चढ़ि जाएत। तँ इमानदारीक जरुरत अछि। मुदा इमानदारी दिशि तकै छी तँ अपनोमे बेइमानी घुसल अछि। परिवारोमे तहिना देखै छी आ समाजोमे तँ अछिये। गरीबोमे देखै छी जे, जे मेहनती अछि ओ बहुत किछु कमा कऽ बनाइयो नेने अछि। जना रहैक घर, पानि पीबैक कल, जीबैक लेल बटाइ खेतीक संग पोसिया मालो-जाल खूँटापर रखने अछि। जहनकि जे आलसी अछि ओकरा सभ कथूक अभावे छैक। ततबे नहि जँ हम इमनदारियोसँ विचार रखए चाहब तैयो उलझन होएत, हमहीं टा तँ नहि छी। आरो गोटे रहताह। सबहक नेत सभक प्रति एक्के रंग हेतनि, सेहो बात नहि अछि। जँ कियो मूह देखि मूंगबा बँटताह, सेहो भऽ सकैत अछि। ओहि ठाम जँ हुनका कहबनि तँ हमरे बात मानि लेता, सेहो संभव नहि अछि। जँ रमाकान्त कक्का ककरो बेसी दिअए चाहथिन तँ की कहबनि, सम्पत्ति तँ हुनके छिअनि। एहि सभ विचारक जंगलमे सुबुध बौआए लगलथि। दतमनिक घुस्सा कखनो चलैत आ कखनो बन्न भऽ जाइत छलनि। एक तँ भरि रातिक जगरना तहि परसँ अमरलत्ती जेकाँ ओझरी केँ सोझराएब असान नहि बुझि पड़नि, कनियो किम्हरो जोर पड़त तँ टन दऽ टुटि जाएत। तँ समाजक मूल रोगकेँ जड़िसँ नहि पकड़ल जाएत तँ सभ गूड़ गोबर भऽ जाएत। तहि बीच मुनमा डाबामे दूध नेने सुबुधक आंगन जाए डाबा रखि, सुबुध लग आबि दुनू हाथ जोड़ि कहलकनि- ''भाय, अबलोपर दया करबै?''

एक तँ सुबुधक मन अपने घोर-घोर भेल, तहि परसँ लोकक पैरबी। मन मसोसिकेँ सुबुध कहलखिन- ''अखन जाह। जखन जमीनक बँटवारा हुअए लगतै तँ तोरो बजा लेबह।''

दतमनि कए सुबुध आंगन जाए पत्नीकेँ पुछलखिन- ''डाबामे मुनमा की नेने आएल छल?''

''दूध।''

''दाम देलिऐ।''

''नहि।''

''किएक? ''

''हमरा भेल जे अहीं पठेलौं, तैँ।''

पत्नीक जबाव सुनि सुबुधक मनमे आगि लगि गेलनि। खिसिया कऽ पत्नीकेँ कहलखिन- ''झब दे चाह बनाउ। स्कूल जाएब।''

पत्नी- ''अखने किअए जाएब? आन दिन खा कऽ जाइ छलौं आ आइ भोरे किअए जाएब? ''

''रौतुका खेलहा ओहिना कंठ लग अछि। तैँ नहि खाएब।''

कहि सुबुध लुंगी बदलि धोति पहिरए लगला आकि पत्नी चाह नेने एलखिन। कुरता पहीरि चाह पीबि सुबुध बिदा भेलाह।

जिनगी भरिमे रमाकान्तकेँ एहन निन्न कहियो नहि भेल छलनि जेहन राति भेलनि। समएक अन्दाजसँ जुगेसर आबि खिड़की देने हुलकी देलक तँ देखलक जे रमाकान्त ठर्र पाड़ैत छथि। रमाकान्तकेँ सुतल देखि जुगेसर जोरसँ केबार ढ़कढकौलक। केवारक अबाज सुनि रमाकान्त ऑंखि मलैत उठलाह। जुगेसर रमाकान्तकेँ उठा चाह अनै आंगन गेल। रमाकान्तो उठि कऽ कलपर जा कुरुड़ केलनि। ताबे जुगेसरो चाह नेने आबि गेलनि। रमाकान्त चाह पीबितहि रहथि आकि मनमे एलनि जे बाबा चाणक्य ठीके कहने छथि जे धन ककराले रक्खी। हमरो तँ पितेजीक अरजल छी। जाधरि ओ जीबैत छलाह, हमरा कोनो मतलब नहि छल। मुदा हुनका मुइने तँ सभटा हमरे भेल। दुनू बेटा तते कमाइत अछि जे अइ धनक ओकरा जरुरते नहि छैक। हम कते दिन जीबे करब। तहन तँ सभ धन ओहिना नष्ट भऽ जाएत। कौआ-कुकुड़ लूझि-लूझि खाएत। तहिसँ नीक जे समाजक गरीब-गुरबाकेँ दऽ दिअए। जहिना तिब्बतक ८म-९अम शताब्दीक राजकुमार चेन पो अपन सभ सम्पति लोकक बीच बाँटि देलखिन, तहिना हमहूँ बाँटि देबइ। तहिसँ समाजमे भाए-भैयारीक संबंध सेहो मजगूत बनतैक। आइ जँ व्यास बाबा जीबैत रहितथि तँ ओ जरुर बिना कहनहुँ आबि कऽ असिरवाद दैतथि। अगर स्वर्ग जेबाक रस्ता तियागो होए तँ हमहूँ किएक ने जाएब। धन्यवाद सुबुध आ मास्टर सहाएबकेँ दिअनि जे हमर अज्ञानताक केबार खोललनि। बेटा-पुतोहू सभ जखन सुनत तँ मने-मन खूब खुशी हएत। की हमर कएल धरम ओकरा नहि हेतैक?

चाह पीबि, पान खा लोटा लऽ रमाकान्त गाछी दिशि चललाह। किसुनभोग आमक गाछ तर लोटा रखि, टहलि-टहलि गाछ सभकेँ निङहारि-निङहारि देखए लगलाह। गाछक जे रुप आइ रमाकान्त देखथि ओ आइ धरि कहियो नहि देखने रहथि। गाछ देखि बुझि पड़नि जे सभ हँसि रहल अछि। धरतीक शक्ति पाबि

ऐश्‍वर्यवान बनल अछि। दोसराक सेवा लेल उत्साहित अछि। एक टकसँ गाछक रुप देखि रमाकान्तक हृदय सेहो गद-गद भऽ गेलनि। गाछ सभकेँ देखि लोटा उठा पाखाना दिशि बढ़लाह। तहि बीच जय-जयकारक आवाज सुनलखिन। आवाज दूरमे रहै तेँ स्पष्ट नहि बुझैत, मुदा सुनथिहिन। रसे-रसे आवाज लग अबैत गेलनि। पैखानासँ उठि ओ आवाजकेँ अकानए लगलथि। जय-जयकारक संग अपनो नाम सुनथिहिन। अपन नाम सुनि आरो चौकन्ना भऽ कानक पाछूमे हाथक तरहत्थी रखि अवाज अकानए लगलथि। लोकक समूह जते लग अबैत जाइत, तते अवाज स्पष्ट होइत जाइत छलैक। हाँइ-हाँइ कऽ लोटा नेने पोखरिक घाटपर आबि, कुरुड़ कऽ घर दिशि बिदा भेलाह। अपन नामक संग जय-जयकार सुनि सोचए लगलाह जे की बात छिऐक? किएक लोक जय-जयकार कऽ रहल अछि। छातीक धुकधुकी सेहो तेज हुअए लगलनि। मनमे गुदगुदी सेहो लगनि। उत्साहसँ छाती सेहो फुलैत जाइनि। जाबे लोकक जुलूस घर लग पहुँचल, तहिसँ पहिनहि दरबज्जापर आबि, देखए लगलथि। हीरानन्द आ शशिशेखर सेहो दलानक आगूमे ठाढ़ भऽ देखैत छलाह। की बूढ़, की जुआन, की बच्चा सभ एक्के सुरमे। सभ मस्त। सभ उत्साहित। सभ नचैत। सबहक मूहमे हँसी छिटकैत छलैक।

दरबज्जाक आगूमे जुलूस आबि कऽ रुकल। आगू-आगू घोड़ाक नाच। पाँच गोरे, बाँसक बत्तीकेँ ललका कपड़ासँ सजा, घोड़ा बनौने। पाँचो घोड़े जेकाँ दौगैत। कखनो हीं-हीं करैत तँ कखनो पाछूसँ चौतार फेकैत। तहि पाछू डफरा-बाँसुरीक धुन। वसन्तक बहार छिड़िअबैत रहए। तहि पाछू लोक नचबो करैत आ जय-जयकारो करैत रहए। रमाकान्त अपन उत्साहकेँ रोकि नहि सकलाह। दलानक ओसारसँ उतड़ि सोझे जुलूसमे सन्हिया नाचए लगलाह। के छोट, के पैघ, के बूढ़, के जवान, सभ बाढ़िक पानि जेकाँ उधिआइत रहए। घर-घरसँ स्त्रीगण सेहो आबि चारु कात पसरि गेलीह।

आंगनसँ श्यामा आबि दरबज्जाक आगूमे ठाढ़ भऽ नाचो देखैत आ रमाकान्तोपर आँखि गरौने छलीह। रमाकान्तोकेँ नचैत देखि ओ मने-मन सोचए लगलीह जे एना किएक भऽ रहल अछि। लोक सभकेँ कोनो चीजक खुशी हेतै तेँ नचैत अछि। मुदा हिनका की भेटलनि जे एना बुढ़ारीमे कुदैत छथि। छोट बुद्धि श्यामाक, तेँ बुझबे नहि करैत जे धार जखन समुद्रमे मिलए लगैत अछि, तखन दुनूक पानि एहिना नचैत अछि। एक दिशि नदीक पानि गतिशील होइत, तँ दोसर दिशि समुद्रक असथिर होइत अछि। ओहिमे सिर्फ लहरि उठैत अछि।

अखन धरिक जुलूस आ नाच गामक उत्तरबारि टोलसँ आएल छलैक। दछिनबारि टोलसँ दोसर जुलूस, मोर-मोरनीक नाचक संग सेहो पहुँचल। दुनू नाचक बीच सौंसे गामक लोक हृदय खोलिकेँ नचैत। कातमे ठाढ़ भेल हीरानन्द, शशिशेखरकेँ कहलखिन- ''अखन जे आनन्द अछि ओ समाजमे सभ दिन कोना बनल रहत?''

हीरानन्दक प्रश्नक उत्तर शशिशेखरकँ नहि फुरलनि। मुदा प्रश्नक पाछू मन जरुर दौड़लनि। गंभीर प्रश्न। तँ धाँइ दऽ उत्तरो देब शशिशेखर उचित नहि बुझि चुप्पे रहलाह। मुदा एते बात जरुर मनमे अबैत रहनि जे जँ सुकर्मक रस्तासँ मनुष्य उत्साहित भऽ चलैत रहत, तँ जरुर एहने आनन्द जिनगी भरि चलैत रहतैक।

जुलूसक बीच रमाकान्त नचैत-नचैत घामे-पसीने तर-बत्तर भऽ गेल रहथि। मुदा तैयो मन नचैले उधकैत रहनि। एकटा छौंड़ा, जे अखरहो देखने, नचैत-नचैत रमाकान्त लग आबि दुनू हाथे पजिया कऽ रमाकान्तकँ उठा कन्हापर लऽ नाचए लगल। सभ कियो दुनू हाथे थोपड़ी बजबैत जय-जयकार करए लगल। कातमे ठाढ़ भेल हीरानन्दकँ भेलनि, जे कहीं ओ खसि-तसि नहि पड़थि, तँ लफड़िकँ बीचमे जाए रमाकान्तकँ डाँड़ पकड़ि निच्चा केलकनि। निच्चा उतड़ितहि रमाकान्त दुनू हाथे थोपड़ी बजबैत फेर नाचए लगलथि। दुनू हाथ उठा कऽ हीरानन्द सभकँ शान्त होइ लेल कहलखिन। हाथक इशारा देखि सभ शान्त भऽ गेल। धोतीक खूँटसँ रमाकान्त पसीना पोछि कहए लगलखिन- "अहाँ सभक बीच कहै छी जे, जे खेत-पथार आइ धरि हम्मर छल, अखनसँ ओ अहाँ सबहक भऽ गेल।"

रमाकान्तक बात सुनि सबहक मूहसँ धानक लावा जेकाँ हँसी भरभरा गेल। जे समाज आर्थिक विपण्णताक चलैत अखन धरि मौलाइल छल ओहिमे खुशीक नव फूल फुलाए लगल। सभ केयो हँसी-चौल करैत अपन-अपन घर दिस बिदा भेल।

घरसँ निकलि सुबुध सोझे अपन डेरा गेलाह, डेरामे पहुँचि त्याग-पत्र लिखलनि। मेसबलाकँ सभ हिसाब फड़िछा स्कूल जाए प्रध्यानाध्यापककँ त्याग पत्र दैत कहलखिन- "मास्टर साहेब, आइसँ सेवामे सहयोग नहि कऽ सकब।" कहि ऑफिससँ निकलए लगलाह। ऑफिससँ निकलैत देखि कुरसीसँ उठि प्रध्यानाध्यापक कहलखिन- "सुबुध बाबू, कने सुनि लिअ।"

हेडमास्टरक आग्रह सुनि सुबुध रुकि गेलाह। मुस्की दैत कहलखिन- "की कहलौं मास्साहेब?"

हेडमास्टरक छातीक धड़कन तेज होइत जाइत छलनि। तँ बोलीक गति तेज हुअए लगलनि। कहलखिन- "सुबुध बाबू, अहाँ जल्दीबाजीमे निर्णय कऽ लेलहुँ। अखनो कहब जे अपन कागज वापस लऽ लिअ।"

निशंक आ गंभीर स्वरमे सुबुध कहलकनि- "मास्सैब, आइ धरि अहाँ सबहक संग रहलहुँ, मुदा आब हम बैरागीक संग जाए रहल छी। तँ एक्को क्षण एतए अटकैक इच्छा नहि अछि। एक्को पाइ हमरा दुख नहि भऽ रहल अछि। व्यक्तिगत जिनगी बना अखन धरि जीलहुँ, मुदा आब सामाजिक जिनगी जीबैक लेल जा रहल छी। तँ अपनहुँसँ आग्रह करब, जे असिरबाद दिअ।"

एक दिशि सुबुधक मुखमंडल नवज्योतिसँ प्रखर होइत जाइत, तँ दोसर दिस हेडमास्टरक मुखमंडल मलिन होइत जाइत छलनि। सुबुधक त्यागपत्रक

समाचार शिक्षकक बीच सेहो पहुँचल। सभ शिक्षक अपना कोठरीसँ उठि हेडमास्टरक चेम्बरमे पहुँचि गेलाह। दुनू हाथ जोड़ि सुबुध सभकेँ कहलखिन- ''भाय लोकनि, आइ धरिक जिनगी, संगे-संग बितेलहुँ, तहि बीच जँ किछु अधला भेल हुअए, ओ बिसरि जाएब। आइ धरि किताबी ज्ञानक बीच ओझराएल छलहुँ, मुदा आब ओहि ज्ञानकेँ व्यवहारिक धरतीपर उताड़ैले जाए रहल छी।'' जहिना सूर्योदयसँ पूर्व थलकमल उज्जर रहैत, मुदा सूर्यक रोशनी पाबि धीरे-धीरे लाल हुअए लगैत अछि तहिना सुबुधक हृदय समाजक प्रखर रोशनीक प्रवेशसँ हृदय बदलि गेलनि।

कहि सुबुध तेज गतिसँ स्कूलक ओसारसँ निच्चा उतरि गेलाह। सुबुधक तेज चालि देखि विवेक बाबू सेहो नमहर-नमहर डेग बढ़बैत सुबुध लग आबि कहलखिन- ''सुबुध भाय, अहाँ जे किछु केलहुँ, अपन विचारक अनुकूल केलहुँ। तेँ ओहि संबंधमे हमरा किछु कहैक नहि अछि। किएक तँ जहिया स्कूलमे नोकरी शुरुह केलहुँ आ जते बुझै छेलिऐक, ओहिसँ बेसी आइ जरुर बुझै छिऐक, तेँ ओहि दिनक विचारक अनुरुप केलहुँ आ आइ औझुका विचारक अनुकूल कऽ रहल छी। मुदा हमर अहाँक संबंध सिर्फ शिक्षकेक नहि अछि, बल्कि विद्यार्थियोक अछि।''

सुबुध आ विवेक हाइये स्कूलसँ संगी। हाइ स्कूलसँ कओलेज धरि दुनू गोटे संगे-संग पढ़ने रहथि। मुदा विवेकसँ सुबुध तीन दिन जेठ रहथि। जे बात सुबुधोकेँ आ विवेकोकेँ बुझल छलनि। स्कूलोमे आ कओलेजोमे सुबुध विवेकसँ नीक विद्यार्थी रहथि। तेँ विवेकसँ अधिक नम्बर परीक्षामे सुबुधकेँ अबैत रहनि। ओना दुनू एक्के डिवीजनसँ पास करैत छलाह, मुदा अंकमे किछु तरपट रहैत छलनि। विवेक सुबुधकेँ सीनियर बुझैत छथि। जेकर उदाहरण अछि, जे जहि दिन दुनू गोटेक बहाली स्कूलमे भेल छलनि, ओहि दिन सभ कागजात विवेकक अगुआएल रहितहुँ स्वेच्छासँ विवेक सुबुधकेँ तीन नम्बर शिक्षक आ अपनाकेँ चारि नम्बर शिक्षकक लेल हेडमास्टरकेँ कहने रहथिन। जकरा चलैत सुबुधक बहालीक चिट्ठीक समए बदलि हेडमास्टर रजिस्टर मेनटेन केने रहथि। विवेकक प्रति सुबुधक हृदयमे ओएह स्नेह रहनि।

दुनू गोटे विवेकक डेरा अएलाह। डेरामे अबितहि विवेकक पत्नी चाह बना, दुनू गोटेक आगूमे दऽ बैठकखानासँ निकलि खिड़की लग ठाढ़ भऽ गेलीह। एक जिनगीक टूटैत संबंधसँ कपैत हृदय विवेक बाबूक। थरथराइत स्वरमे पुछलखिन- ''एक्को दिन पहिने तँ ई बात नहि बाजल छलहुँ! अनायास एहेन निर्णय कोना कऽ लेलिऐक?''

मुस्कुराइत सुबुध उत्तर देलखिन- ''पहिनेसँ नियार नहि छल। एहि बेरि जे गाम गेल छलहुँ तखन भेल। जहिना देव-असुर मिलि समुद्र मंथन केने रहथि, तहिना समाजक मंथनक परिस्थिति बनि गेल अछि। जहि लेल हमरो जरुरत समाजकेँ छैक। समाजक पढ़ल-लिखल लोक तँ हमहुँ छी, तेँ अपन दायित्व पूरा करैक लेल नोकरी छोड़लहुँ। महान् जिनगीक लेल सेवा जरुरी होइत अछि। जँ

नोकरीकेँ सेवा कहल जाए तँ खेतमे काज करैबला बोनिहारकेँ की कहबैक? किएक तँ बोनि-मजूरी लेल ओहो काज करैत अछि आ नोकरीयो केनिहार। मुदा पेटक, जिनगीक लेल तँ कमेबो जरुरी अछि। जँ से नहि करब तँ खाएब की आ दोसरकेँ खुएबै कोना? भूखलकेँ भोजन चाही। चाहे ओ अन्नक भूखल हुअए वा ज्ञानक। तँ चाहे नोकरी होए वा आन उपारजनक काज, ओहिकेँ इमानदारीसँ निमाहैत, आगू बढ़ि किछु करब, चाहे ज्ञानक क्षेत्र होइ वा जीवनक, भोजन, वस्त्र, आवास, चिकित्सा, शिक्षा, ओ सेवा होइत। ज्ञानक सेवा ताधरि अपन महत्वक स्थान नहि पबैत, जाधरि ओ जीवनसँ जुड़ि कर्मक रुप नहि लैत अछि। सिर्फ वैचारिके धरातलसँ होइत तँ मिथिलामे महान्-महान् पैघ-पैघ विचारक, मनुष्यक उद्धार लेल रस्ता बतौलनि। मुदा अखनो समाजमे ओहन मनुक्ख अछिये जे हजारो बर्ख पूर्वमे छलैक। हँ, किछु आगुओ बढ़ल, इहो बात सत्य अछि। मुदा जे कियो बौद्धिक, आर्थिक- क्षेत्रमे आगू बढलथि ओ पछुआएलकेँ डेन पकड़ि आगू मुँहे खिंचलनि वा पाछू मुँहे धकेललनि। जँ बाँहि पकड़ि आगू मुँहे खिंचए चाहितथि तँ एतेक जाति, सम्पद्राय, कर्मकांड पैदा करैक की प्रयोजन? राजसत्ता आ समाजसत्ता- दुनू पछुआएल लोककेँ आरो पाछुए मुँहे धकेललक।''

एते कहि सुबुध उठि कऽ ठाढ़ होइत कहलखिन- ''आब एक्को क्षण एहिठाम नहि रुकब। हमर बाट रमाकान्त कक्का तकैत होएताह। सुबुधकेँ दुनू बाँहि पकड़ि बैसबैत विवेक पत्नीकेँ कहलखिन- ''झब दऽ थारी साठू। सुबुध भाय जेवा लेल धड़फड़ाइ छथि।''

भोजन कऽ सुबुध विवेकक डेरासँ बिदा भऽ गेलाह। दुनू हाथ जोड़ि विवेक कहलकनि- ''हमरोपर ध्यान राखब।''

गामक सीमामे प्रवेश करितहि सुबुध घरक सुधि बिसरि गेलाह। सौंसे गाम परिवारे जेकाँ बुझि पड़ए लगलनि। एक टकसँ खेत, पोखरि, गाछी-कलम, खढ़होरि देखि मने-मन सोचए लगलथि, जँ एहि सम्पत्तिकेँ ढंगसँ आगू बढ़ाओल जाए, विकसित ढंगसँ कएल जाए तँ निसचित गामक लोकमे खुशहाली ऐबे करत। अखन धरि जहिना खेत मरनासन्न भऽ गेल अछि, तहिना पोखरि-झाखड़ि सेहो अछि। सभसँ पैघ बात तँ ई अछि जे लोको दबैत-दबैत एते दबि गेल अछि, जे सिर्फ मनुक्खक ढाँचा मात्र रहि गेल अछि। तँ सभमे नव चेतना, नव ढंग नव तकनीकक नव औजारक उपयोग आवश्यक अछि। तखने शिशिरक सिकुड़ल रुप बसन्तक विकसित रुपमे बदलि सकैत अछि। सोचैत सुबुध राजिनदरक घर लग पहुँचलाह। राजिनदरक घर देखि सुबुध रस्ता छोड़ि ओकरा ओहिठाम गेलाह। राजिनदरकेँ तीनटा घर। अंगनाक एकभागमे टाट लगौने रहए। दछिनबरिया घरमे मालो बन्हैत छल आ अपनो बैसार बनौने। बैसारमे दूटा चौकी देने रहए। एकटापर अपने सुतैत आ दोसरकेँ पाहुन-परकक लेल रखने रहए। सुबुधकेँ देखि राजिनदर चौकी परसँ उठि, दुनू हाथ जोड़ि बाँहि पकड़ि चौकीपर बैसौलकनि। सुबुधकेँ चौकीपर बैसाए घरवालीकेँ दरबज्जे परसँ कहलक- ''मास्टर सहाएब ऐला हेन, झब दे एक लोटा पानि नेने आउ?''

राजिनदरक बात सुनि गुलबिया लोटामे पानि नेने आबि ओलती लग ठाढ़ भऽ गेलि। मूह झँपने। स्त्रीकेँ ठाढ़ देखि राजिनदर कहलक- ''हिनका नइ चिन्है छिअनि, सुबुध भाय छथि। मूह किअए झँपने छी।''

राजिनदरक बात सुनि सुबुध मुस्की दैत बजलाह- ''हम तँ गाममे रहितहुँ अनगौआँ भऽ गेल छी। जहियासँ नोकरी शुरु केलहुँ, गाम छुटि गेल। सप्ताहमे एक दिन अबै छी जहिसँ गाममे घुरियो-फीरि नहि पबैत छी। तँ नहि चिन्है छथि। मुदा आब गाममे रहै दुआरे नोकरी छोड़ि देलहुँ। आब चिन्हतीह।''

सुबुधक बात सुनि राजिनदर स्त्रीकेँ कहलक- ''सुबुध भाय पैघ लोक छथि। जखन दुआरपर पएर रखलनि, तखन बिना किछु खुऔने-पीऔने कना जाए देबनि। जाउ बाड़ीसँ ओरहाबला चारिटा मकैक बालि तोड़ि, ओड़ाहि कऽ नेने आउ।''

राजिनदरक बात सुनि गुलबिया मुस्की दैत बिदा भेलि। राजिनदर सुबुधकेँ पूछल- ''भाय नोकरी किअए छोड़ि देलिऐ?''

राजिनदरक प्रश्नक सही उत्तर देब सुबुध उचित नहि बुझि कहलखिन- ''नइ मन लागल। अपनो खेत-पथार अछि, आब खेतिये करब।''

चारू ओड़ाहल बालि, नोन-मेरिचाइ थारीमे नेने गुलबिया आबि सुबुधक आगूमे रखि, अपने निच्चामे बैसि गेलीह। मकैक ओड़हा देखि सुबुध तिरपित भऽ एकटा बालि हाथमे लऽ गौरसँ दाना देखए लगलथि। सुभ्भर बालि, एक्कोटा दाना भौर नहि। बालिकेँ देखि कहलखिन- ''बड़ सुन्नर मकइ अछि। अपना ऐठामक गिरहत तँ उपजबितहि नहि अछि, जँ उपजौल जाएत, खूब हेतै। बेगूसराय, सहरसा आ मुजफ्फरपुर इलाकामे देखै छिऐ जे मकैयेक उपजासँ गिरहस्त धनिक भऽ गेल अछि। सालो भरि मकैक खेती होइत छैक। जहिना खेती तहिना उपजा। पाँच मन छह मन कट्ठा मकइ उपजैत अछि। खाइयोमे नीक। रोटी, सतुआ, भुज्जा, ओरहा सब कुछ मकैक बनैत अछि। बदाम आ मकैक सतुआ तँ बुझू जे बिनु दाँतबला बूढ़क अमृते छी।''

वामा हाथमे बालि दहिना हाथक ओँगरीसँ दाना छोड़ा मूहमे लैत पुछलखिन- ''राजिनदर भैया, बाल-बच्चा कैक टा अछि?''

सुबुधक प्रश्न सुनि राजिनदर चुप्पे रहल मुदा गुलबिया बाजलि- ''तीनि भाए-बहीन अछि। जेठकी सासुर बसैए। बड़बढ़िया जेकाँ गुजर चलै छै। दोसरोक बिआह केलहुँ। मुदा जमाए बौर गेल। दिल्लीमे नोकरी करैत रहै, ओतैसँ बौर गेल, ने एक्कोटा चिट्ठी-पुरजी पठबै आ ने रुपैआ-पैसा। छह मास बेटीकेँ सासुरमे रहए देलिऐ, तकर बाद अपने ऐठाम लऽ अनलिऐ। दिल्लीसँ जे कोइ आबै आ पुछिऐ तँ कोइ कहए दोसर बिआह कऽ लेलक, तँ कोइ कहै अरब चलि गेल। कोइ कहै मलेटरीमे भरती भऽ गेल तँ कोइ कहए उग्रवादी भऽ गेल। कोनो भाँजे ने लागल। आखिरमे चारि बरिस अपना अइठिन बेटीकेँ रखलौं। मुदा गामोमे तेहेन लुच्चा-लम्पट सभ अछि जे अनका इज्जतकेँ कोनो इज्जति ने बुझै छै।'' हाथक इशारा सँ देखबैत- ''उ घर देखै छिऐ, ओहि अंगनाक एकटा छौँड़ा

कहियो माछ कीनिकेँ नेने आबए तँ कहियो फोटो खिचबैले संगे लऽ लऽ जाइ। हम दुनू परानी बाध-बोनमे भरि-भरि दिन रहै छलौं। गामपरक खेल-बेल बुझबे ने करै छेलिऐ। जखन गामक लोक कुट्टी-चौल करए लगल तखन बुझलिऐ। जेठकी बेटी आएल रहए। ओकरा कहलिऐ। ओ अपने संगे नेने गेलै। दोसर विआह अइ दुआरे नै करिऐ जे जँ कहीं जमाए जीविते हुअए। फेर जेठके जमाएसँ बिआह कऽ लेलक। दुनू बहीन एक्के घरमे रहैए। दुनूकेँ सखा-पात सेहो छैक। छोट बेटा अछि। ओकरो विआह-दुरागमन कऽ देलिऐ।''

मुस्कुराइत सुबुध पुछलखिन- ''दान-दहेजमे की सभ देलक?''

दान-दहेजक नाम सुनि गुलबिया हँसैत कहए लगलनि- ''समैध अपने ऐला। संगमे सार -लड़कीक माम- रहनि। दुआरपर अबिते भोला बापक पुछाड़ि केलनि। हम चिपड़ी पथैत रही। नुआक फाँड़ बन्हने रही। माथ परक साड़ी ससरि कऽ गरदनिपर रहए। दुनू हाथमे गोबर लागल रहए। कना गोबराएल हाथे साड़ी सम्हारितौं। तँ ओहिना चिपड़ी पथैत रहि गेलहुँ। कोनो की चिन्हैत रहिऐ। ओहो तँ हमरा नहिये चिन्हैत रहथि। अनठिया ओहो आ अनठिया हमहूँ रही। ओहो मनुक्खे छथि आ हमहूँ मनुक्खे छी, तखन बीचमे कथीक लाज?''

गुलबियाक बात सुनि दाँत पिसैत राजिनदर कहलक- ''आबो एक उमेरक भेलि, तैयो समरथाइक ताव कम्म नै भेलै अए। जे मनमे अबै छै, बकने जाइए।''

राजिनदरक बातकेँ दबैत बाजल- ''कोनो की झूठ बात बजै छी, जे लाज हएत। मास्टर बौआ की कोनो अनगौआँ छथि। जे रस्ते-रस्ते ढोल पीटताह।''

बीच-बचाव करैत सुबुध कहलखिन- ''तकर बाद की भेल?''

''ताबे इहो ऐलाह। दुनू गोरेकेँ चौकीपर बैसाए गप-सप करए लगलथि। हमरो गोबर सठि गेल। चलि गेलहुँ। हाथ-पएर धोए पछबरिया टाट लग ठाढ़ भऽ, गप-सप सुनए लगलौं। लड़कीक माम उचक्का जेकाँ बुझि पड़ै। मुदा बाप असथिर बुझि पड़ल। बेचारा बड़ सुन्नर गप्प बाजलथि। ओ कहलकनि जे देखू अहाँक बेटा छी आ हम्मर बेटी। दुनियामे जते लोक अछि ओ अपने बेटा-बेटी लेल सबकुछ करैए। जहिना अहाँ छी तहिना तँ हमहूँ छी। जहिना अपन नून-रोटीमे अहूँ गुजर करै छी तहिना हमहूँ करै छी। कौआसँ खैर लुटाएब मुरुखपना छी। हमरे एकटा पितिऔत सार अपन बेटाक विआह केलक। एक लाख रुपैआ नगद नेने रहए। तते लाम-झामसँ काज केलक जे अपनो जे बैंकमे साठि हजार रुपैआ रहै, सेहो सठि गेलै। हम ओहन काज नइ करब। बेटी-जमाइकेँ एकटा चापाकल गड़ा देबै। दू कोठरीक मकान बना देबै। एक जोड़ा गाए ली वा महीस से देब। दुनू गोटेकेँ लत्ता-कपड़ा, बरतन-बासन, लकड़ीक सभ आवश्यक सामानक संग बिआहक खर्च करब। अहाँकेँ एहि दुआरे नहि खर्च कराएब जे, जे खर्च भऽ जेतै ओ तँ ओही दुनूक जेतै की ने। हमरा पसिन्न भऽ गेल। मन कछ-मछ करए लगल जे सूहकारि ली। मुदा पुरुखक बीच गप चलैत रहै। मनमे इहो हुअए जे जँ कहीं कोनो बाते दुनू गोरेमे रक्का-टोकी भऽ गेल तखन तँ

कुटुमैतियो नइ हएत। मन कछ-मछ करए लगल। एक बेर खोंखी केलौं जे ओ (पति) आबए, मुदा से नइ भेल। तखन दुनू हाथे थोपड़ी बजेलहुँ। तैयो सैह। आब की करितहुँ? काज पसिन्नगर अछि, मुदा जँ कहीं कोनो बाधा उपस्थित भऽ गेल तखन तँ सभ नाश भऽ जाएत, मूह उघारनहि हम दुआरपर गेलौं। आगूमे ठाढ़ भऽ हिनका कहलिऐनि- "भैया, बड़ सुन्नर बात समैध कहै छथुन, भोलाक बिआह कऽ लाए।" कहि चोट्टे घुमिकेँ आंगन आबि शरबत बनेलहुँ। अपनेसँ जा कऽ तीनू गोटेकेँ पिऐलहुँ। कुटमैती पक्का भऽ गेल। बिआह भऽ गेलै।"

तहि बीच चारु बाइलो सुबुध खा लेलनि। पानि पीबि घर दिसक रस्ता पकड़लनि।

थोड़े दूर आगू बढ़लापर मनमे अबै लगलनि, घरपर जाइ आकि रमाकान्त काका ऐठाम। दुबट्टी लग ठाढ़ भऽ गुनधुन करए लगलथि। एक मन होनि जे भरि दिनक थाकल छी, कने आराम करब जरुरी अछि। तँ घरपर जाएब जरुरी अछि। दोसर मन होनि जे एहि जुआनीमे जँ आराम करब तँ जिनगी छुटत। फेर मनमे भेलनि जे नोकरी छोड़ैक समाचार घर पहुँचाएब जरुरी अछि। तत्-मत् करैत रमाकान्त घर दिसक रस्ता छोड़ि मलहटोलीबला एकपेड़िया पकड़ि घर दिस बढ़लाह। घर लग अबितहि सभ किछु बदलल-बदलल बुझि पड़लनि। जना सभ किछु खुशीसँ मस्त हुअए। दरबज्जाक चुहचुही सेहो नीक बुझि पड़ै लगलनि। दुआरपर आबि कुरता खोलि चौकीपर रखि पत्नीकेँ सोर पाड़ि कहलखिन- "कने एक लोटा पानि नेने आउ। बड़ पियास लगल अछि।"

पतिक आवाज सुनि लोटामे पानि नेने आएलि किशोरीक हाथसँ लोटा लऽ लोटो भरि पानि पीबि, पत्नीकेँ कहलखिन- "आइसँ नोकरी छोड़ि देलहुँ विद्यालयमे त्यागपत्र दऽ देलहुँ।"

पतिक बात सुनि किशोरी चौंकि गेली। मुदा पति-पत्नीक बीच मजाको होइत छलनि। किशोरीकेँ सोलहन्नी बिसबास नहि भेलनि मुस्की दैत बजलीह- "नीक केलहुँ। आठ दिनपर जे भेंट होइ छलौं से दिन-राति भेंट होइते रहब। हमरो नीके।"

किशोरीक बात सुनि सुबुधक मनमे भेलनि जे भरिसक ओ समाचारकेँ मजाक बुझलनि। दोहरबैत कहलखिन- "अहाँ मजाक बुझै छी। सत्य बात कहलौं।" जेबीसँ त्यागपत्रक नकल निकालि- "हे देखियौ कागज।"

तहि बीच मंगल सेहो आएल। मंगलकेँ देखि किशोरी ससरि गेलीह। मुस्कुराइत सुबुध मंगलकेँ कहलखिन- "काका, नौकरी छोड़ि देलहुँ। आब गामे रहि खेतियो-पथारी करब आ जहाँ धरि भऽ सकत समाजक सेवा करब।"

सुबुधक बात सुनि मंगल कहलकनि- "बौआ, हम तँ उमेरेमे ने अहाँसँ जेठ छी, मुदा अहाँ पढ़लो-लिखल छी, मास्टरियो करै छी, तँ नीके जानि कऽ ने नोकरी छोड़ने हैब।"

मंगलक बात सुनि सुबुधक मनमे सवुर भेलनि। मुस्की दैत बजलाह- "कक्का जाधरि पढ़ल-लिखल लोक समाजमे रहि समाजक क्रिया-कलापकेँ आगू मुँहे नहि धकेलत ताधरि समाज आगू कोना बढ़त।"

सुबुध आ मंगल गप-सप करतहि रहथि आकि किशोरी आंगनमे अड़राहट मारि कानए लगलीह। सुबुध बुझि गेलाह तँ असथिरसँ बैसले रहलाह। मुदा अकलबेराक कानब सुनि टोलक जनिजाति दौड़ि-दौड़ि आबए लगलीह। सौँसे आंगन जनि-जातिसँ भरि गेलनि। नवानीवाली किशोरीकेँ पुछलखिन- "कनियाँ की भेल हेन जे एना अकलबेरामे कनै छी?"

मुदा किछु उत्तर नहि दऽ किशोरी आरो जोर-जोरसँ कानए छलीह। टोलक जते बहिना, फुल, पान, गुलाब, कदम, चान, पार्टनर किशोरीक छलनि सभ केयो एक्केटा प्रश्न पूछैत छलनि जे- 'की भेल?'

जते संगी-साथी सभ किशोरीसँ पूछै छलनि तते किशोरी जोर-जोरसँ कनैत छलीह। ककरो कोनो अर्थे नहि लगैक। मुदा अनुमानक बजार तेज होइत जाइत छल। कियो किछु बुझैत तँ कियो किछु।

दरबज्जापर बैसल-बैसल सुबुध मने-मन खुशी होइत रहथि। सोचैत रहथि जे जाधरि पुरना चालि-ढालिक लोकक -चाहे मरद हुअए वा स्त्रीगण- चालि नहि बदलत ताधरि नव समाज कोना बनि सकैत अछि? ई प्रश्न तँ सिर्फ समाजेक लेल नहि परिवारोक लेल छैक। आ परिवारे किअए मनुक्खोक लेल छैक। तेँ सुबुध किछु बजबे नहि करथि।

अकलबेराक समए रहबे करए। बाध दिशिसँ गाए, महीस, बकरी चरि-चरि अबैत रहए। घसबहिनी घासक पथिया नेने अबैत छलि। गोबर बीछनिहारि गोबरक छितनी माथपर नेने अबैत छलि। बुधनी आ सोमनी, घासक छिट्टा माथपर नेने अबैत छलीह आकि सुबुधक अंगनामे कानब सुनलनि। दुनू गोटे अकानिकेँ बुझलनि जे सुबुधक कनियाँ कनै छथिन। सोमनी बुधनीकेँ कहलखिन- "बहीन, छिट्टा रखिकेँ चल देखैले।"

बुधनी कहलक- "गै बहीन, अइ चमचिकनी सबहक भभटपन सुनि कऽ की करबीही। भरि दिन चाह-पान घोटैत रहैए, बुझैए जे एहने दुनिया छै। मरदकेँ किछु हुअए, मौगी सभ रानी छी। जाबे एतए बरदेमे ताबे गामेपर चलि जेमे। घास-भूसा झाड़ब, जरना-काठी ओरिआएब। थैर खरड़ब। बासन-कुसन धुअब आकि अइ भभटपनवालीक भभटपन सुनब।"

सोमनी मुड़ी डोलबैत बाजलि - "बेस कहले बहीन। जकरा जते सुख होइ छै ओ ओते कनैए। अपने सभ नीक छी, जे कमाइ छी खाइ छी। चैनसँ रहै छी। अइ ललमुहीं सबहक किरदानी सुनबीही तँ हेतउ जे मुँहेपर थुक दए दीऐे।"

१०

भरि दिन सुबुधक मनमे ईएह खुट-खुटी धेने रहलनि जे जाहि गामक लोकमे एते उत्साह बढ़ल अछि, ओहि गाममे जँ बिहाड़िक पूर्व हवा खसै तँ लोकक मनमे अनदेशे बढ़ि सकैत अछि। समाज छिऐ, के की बाजत की नहि बाजत, तकर कोन ठेकान। कियो कहि सकैत अछि जे, जते विचारक सभ अछि ओ पाइ-कौड़ीक भाँजमे कहीं टौहकी ने लगबैत हुअए। मुदा लोकक धाराकेँ रोकलासँ खतरो उपस्थित भऽ सकैत अछि। जहिना अधिक रफ्तारसँ चलैत गाड़ीमे एकाएक ब्रेक लगौलासँ दुर्घटनो भऽ सकैत अछि, तहिना काजमे ढील-ढाल भेलापर भऽ सकैत अछि। ओना भरि दिन तँ अपने चक्करमे फँसल रहलौं, से के बुझत? गामक लोक तँ गामक काजे भेलासँ बुझताह अचताइत-पचताइत सुबुध रमाकान्त ऐठाम बिदा भेला। मुन्हारि साँझ भऽ गेल छलैक। थोड़े दूर आगू बढ़लापर रस्ताक पछबारि भाग रतिया घरक आगूमे, पान-सात गोटे बैसि गप-सप करैत रहथि। एक गोटे अनुभवी जेकाँ बाजल जे- "खेतक बँटवाराक ढोल तँ रमाकान्त कक्का पीटि देलखिन, मुदा बँटै कहाँ छथिन। धनक लोभ ककरा नइ छै। ओ थोड़े खेत बँटथिन्ह। ई सभ सभटा धनिक लोकक चालबाजी छिऐ। लोक थोड़े नीक-अधलाक विचार करैए, जे सुनलक ओ कौआ जेकाँ काँए-काँए कऽ सगरे गाम बिलहि दैत अछि। मुदा तइसँ की, अगर जँ ओ खेत नहिये बँटथिन्ह तँ की लोक मरि जाएत?"

रस्तापर ठाढ़ भऽ सुबुध सुनलनि। दोसर बाजल- "जे अपने ठकि-फुसिया कऽ एते धन जमा केलक ओ सुहरदे मुँहे थोड़े लोककेँ जमीन दऽ देतै। तखन तँ गरीबक कपारेमे दुख लिखल छै, से तँ भोगै पड़तै। केहेन निरलज्ज जेकाँ रमाकान्त नाचि-नाचि लोककेँ कहलकै।" एते सुनैत सुबुधक मनमे आगि लागि गेलनि। सोचए लगलाह जे भरि दिन तँ हमहूँ अनतै छलहुँ, गाममे ने तँ किछु भऽ गेलैक। मुदा बिना किछु बजनहि सुबुध आगू बढ़ि गेलाह।

रमाकान्त एहिठाम पहुँचतहि हीरानन्द बाजि उठलाह- "जिनके चरचा करै छलौं से आबिये गेलाह।"

रमाकान्त सुबुधकेँ कहलखिन- "कताक बेर तोरासँ गप करैक मन भेल, मुदा तोँ तँ भरि दिन निपत्ते रहलह। कतौ गेल छेलह की?"

रमाकान्तक बात सुनि सुबुध कहलखिन- "भरि दिन एते व्यस्त रहलौं जे अखन फुरसति भेल। घरसँ बहार धरि परेशान-परेशान दिन भरि होइते रहलौं।"

रमाकान्त- "की परेशान?"

"काल्हि रातिमे जखन ओछाइनपर गेलहुँ तँ अहाँक कहलाहा बात मन पड़ल। मन पड़ितहि पेटमे घुरिआए लगल। बड़ी काल धरि सोचैत-विचारैत रहलौं। नीनो ने हुअए। अंतमे यैह मनमे आएल जे जहिना अहाँ अप्पन सभ

सम्पति समाजकेँ दए देलिऐ, तहिना हमहूँ नोकरी छोड़ि, देहसँ समाजक सेवा करब। जहिना गाड़ी इंजिनक बले चलैत अछि, तहिना तँ समाजोमे इंजिनक जरुरति छैक। तहि बीच एकटा इतिहासक घटना मन पड़ल।''

इतिहासक घटना सुनितहि उत्सुकतासँ हीरानन्द पूछि देल- ''की बात मन पड़ल?''

सुबुध बाजए लगलाह - ''तिब्बतमे एकटा राजकुमार चेन-पो नामक भेलाह। ओ अपना राजमे धनी-गरीबक बीच खाधि देखलनि। ओहि खाधिकेँ पाटैक लेल अपन सब सम्पति प्रजाक बीच बाँटि देलखिन। मुदा किछुए दिनक उपरान्त फेर ओहिनाक ओहिना भऽ गेलै। धनिक धनिक बनि गेल आ गरीब गरीब बनि गेल। राजकुमार क्षुब्ध भऽ गेलाह, जे एना किएक भऽ गेलैक?''

खिस्सा सुनि बिचहिमे शशिशेखर पूछि देलकनि- ''एना किएक भेलै?''

''हम समाजशस्त्रक विद्यार्थी छी तेँ एहि बातकेँ जनैत छी। जाधरि व्यवस्था नहि बदलत ताधरि मनुक्खक जिनगी नहि सुधरत। तेँ हम अपन दायित्व बुझि नोकरी छोड़लहुँ। गामक गरीबसँ लऽ कऽ अमीर धरि आ बच्चासँ लऽ कऽ बूढ़ धरि गाम सबहक छिऐक। तेँ हम तिब्बत जेकाँ हूसल काज नहि करब।''

रमाकान्तक मन पहिलुके प्रशंसा सुनि, कान नेने उड़ि गेलनि, राजकुमारक खिस्सा सुनबे नहि केलनि। मुदा हीरानन्दोक आ शशिशेखरोक धियान ओहि खिस्सामे घुमै लगलनि। तहि बीच जुगेसर चाह अनलक। सभ कियो चाह पीबै लगलाह। चाह पीबि रमाकान्त कहलखिन- ''देखू, हम अप्पन सभ खेत समाजकेँ दए देलिऐक। आब हमरा कोनो मतलब ओहि खेतसँ नहि अछि। मुदा एकटा बात जरुर कहब जे कोनो तरहक गड़बड़ी समाजमे नहि हुअए। सभकेँ खेत होए।''

रमाकान्तक बात सुनि शशिशेखर अप्पन विचार रखलक- ''गामक गरीब-लोकक परिवार जते अछि ओकरा जोड़ि लिअ आ खेतकेँ जोड़ि एक रंग कऽ बाँटि दियौ।''

शशिक विचार सुनि हीरानन्द नाक मारैत कहलखिन- ''ऊँ- हूँ।''

मूहपर हाथ नेने सुबुध मने मन सोचैत जे कियो एहनो अछि जकरा घरारियो ने छैक। आ कियो एहनो अछि जकरा घरारीक संग दू कट्ठा धनखेतियो छैक। ककरो पाँचो कट्ठा छैक। जँ जमा सम्पतिमे एक रंगकेँ देल जाए तँ सभकेँ एक रंग कोना हेतै। एहि ओझरीमे सुबुध पड़ल रहथि। हीरानन्द सोचैत जे गरीबो तँ सभ एक रंग नहि अछि। कियो मेहनती अछि तँ कियो नमरी कोइढ़। कियो नशाखोर अछि तँ कियो सात्विक। गरीबोक स्थिति तँ विचित्र अछि। लेकिन मूल प्रश्न अछि समाजकेँ उपर उठबैक। सभकेँ गुम्म देखि रमाकान्त मूहमे पान लऽ जरदा फँकैत कहलखिन- ''एना सभ गुम्म किअए छी? हम समाजक दाँव-पेंच तँ नहि बुझै छिऐ मुदा अहाँ सभ तँ पढ़ल-लिखल होशगर छी। तखन कियो किछु किअए ने बजै छी।''

अपन बुद्धिक कमजोरी व्यक्त करैत हीरानन्द सुबुधकेँ कहलखिन- "भाय, जे सोचै छी ओ ओझरा जाइत अछि। तेँ अहीं सोझरबैत कहियौ।"

गंभीर भऽ सुबुध कहए लगलखिन- "अप्पन समाज बहुत पछुआएल अछि। पछुआएल समाजमे घनेरो समस्या, समाढ़ जेकाँ, पकड़ने रहैत अछि। जे बिना समाधान केने आगू नहि ससरए दैत। मुदा समाधानो तेँ कागजपर नक्शा बनौने नहि होएत। समस्या लोकक जिनगीकेँ चुड़ीन जेकाँ पकड़ने अछि। जहिना चुड़ीन लोकेक देहमे घोसिया अपन करामात करैत अछि तहिना समस्यो अछि। तेँ अखन मात्र दूटा सवालकेँ पकड़ू। पहिल, सभकेँ एक रंग खेत होए। आ दोसर खेतक संग-संग आरो जे पूँजी अछि ओकरो उपयोग ढंगसँ कएल जाए।"

सुबुध बजितहि रहथि आकि बिचहिमे जुगेसर टभकि गेल- "मास्सैब, कनी बिकछाकेँ कहियौ। एना जे पौतीमे राखल वस्तु जेकाँ झाँपि कऽ कहबै, तेँ हम सभ कना बुझबै।"

जुगेसरक बातसँ सुबुधकेँ तकलीफ नहि भेलनि। मुस्कुराकेँ कहए लगलखिन- "ठीके अहाँ नहि बुझने होएब जुगे। नीक जेकाँ बिकछा कऽ कहै छी। देखियौ, सिर्फ खेते रहने उपजा नहि भऽ जाइ छैक। ओकरा उपजबए पड़ैत छैक। तामि-कोड़ि कऽ तैयार करए पड़ैत छैक। बरखा होए वा पटा कऽ बीआ पाड़ए पड़ैत छैक। बीआ जखन रोपाउ होइत छैक तखन उखाड़ि कऽ रोपल, कमठौन कएल जाइत छैक। तखन ने उपजा हएत। खेतक संग-संग मेहनत जे होएत से ने पूँजी भेलैक। मेहनत करैले ओजारोक जरुरत होइत अछि। ओजारोक नमहर इतिहास रहल अछि। शुरुमे लोक साधारण औजारसँ काज करैत छल। जेना-जेना औजारो उन्नति करैत गेल तेना-तेना लोकक हालत सुधरैत गेल। मुदा अप्पन गाम बहुत पछुआएल अछि। तेँ नव औजारसँ काज करब संभव नहि अछि। नव औजारक लेल अधिक पैसोक जरुरत होइत, जे नहि अछि। अखन साधारणे औजारसँ काज चलबए पड़त। जेना-जेना हालत सुधरैत जाएत, तेना-तेना औजारो सुधरैत जाएत।"

सुबुधक बात सुनि जुगेसर भक दऽ निसाँस छोड़ि बाजल- "हँ, आब बुझलौं। सुआइत लोक कहै छै जे पढ़ि-लिखकेँ जँ हरो जोतब तँ सिराउर सोझ हएत।"

हीरानन्द बजलाह- "बड़ सुन्दर बात कहलिऐक सुबुध भाय। आब खेतक बँटवाराक संबंधमे कहियौक।"

कनडेरिये आँखिये हीरानन्दकेँ देखि सुबुध कहए लगलखिन- "हीरा बाबू, गाममे जते एक बीघा खेतसँ निच्चाबला गरीब लोक छथि हुनका सभकेँ एक-एक बीघा खेत भऽ जेतनि। सिर्फ रमाकान्ते कक्काबला जमीन टा नहि, हुनकर अपनो जमीन ओहिमे जोड़ा जेतनि। जना देखियौ जे किनको घरारियो नहि छन्हि, हुनका बीघा भरि खेत दिअए पड़त। मुदा जिनका पाँच कट्ठा छन्हि हुनका तँ पनरहे कट्ठा दिअए पड़त। ततबे नहि जिनका ओहूसँ बेसी छन्हि, हुनका आरो कम दिअए पड़त।"

सुबुधक बात सुनि रमाकान्त ठहाका मारि बजलाह- "बड़ सुन्नर, बड़ सुन्नर। बड़ सुन्नर विचार सुबुधक छनि। आब रातियो बेसी भऽ गेल। खाइओ-पीबैक बेरि उनहि जाएत। रोटी गरमे-गरम खाइमे नीक होइ छै। तँ आब गप-सप छोड़ू। काल्हि भोरे ढोलहो दए सभकेँ बजा लेबनि आ सबहक बीचमे अपन निर्णय सुना देबन्हि। खेत बटैक भार हुनके सभपर छोड़ि देबनि। नहि तँ अनेरे हो-हल्ला करताह।"

भोरे ढोलहो पड़ल। एक तँ ओहिना सबहक कान ठाढ़ रहनि, तहि परसँ ढोलहो पड़ल घरा-घरी सभ पहुँचलाह। जहिना केस लड़निहार फैसला सुनैले उत्सुक रहैत अछि, तहिना बैसारमे सभ रहथि। अस्सी बरखक सोने बाबा सेहो आएल छथि। ओना सोनेलाल बाबाकेँ अपने अढ़ाइ बीघा खेत छन्हि मुदा गाममे नब उत्सवक उत्साहसँ आएल एलाहेँ। बैसले-बैसल ओ मूड़ी उठा कऽ देखि बजलाह- "कोनो टोलक कियो छुटलो छथि। सभ अपन-अपन टोलक लोककेँ गनि लिअ।"

सोनेबाबाक गप सुनि सभ अपन-अपन टोलक लोक मिलबै लगल। सिर्फ दू आदमी बैसारमे नहि आएल छलाह। दुनू टोलक दू आदमीकेँ पठा दुनूकेँ बजौल गेलनि। दुनू आदमीकेँ देखितहि सोनेबाबा पूछि देलखिन- "तोरा दुनू गोटेकेँ ढोलकक अबाज कानमे नहि पहुँचल छलौ?"

बौका बाजल- "ढोलहो तँ बुझलिऐ। मगर नोकरी करै छी ने, ने माए-बाप अछि आ ने बहु, तखन खेत लऽ कऽ की करब? बिआहो होइते ने अछि। लोक ढहलेल बुझैए। तखन अनेरे किअए अबितौं।"

बौकाक बात सुनि सोनेबाबा मूड़ी डोला स्वीकार केलनि। आब दोसर, गोसैमा बाजल- "हम दुनू परानी तँ बूढ़े भेलहुँ की ने। बेटा अछिये नहि। लऽ दऽ कऽ एकटा ढेरबा बेटी अछि। ओकरो बिआह अइ बेर कइये देबै। विआह हेतै, अपन घर जाएत। भोगिनिहार के रहत जे अनेरे हम खेत लेब।"

गोसैमोक विचार सुनि सोनेबाबा मूड़ी डोला स्वीकार केलनि। बौका आ गोसाइ दुनू गोटेक बात सुनि सोनेबाबा सोचए लगलथि जे समाजमे दूटा परिवार कमि जाएत। तँ दुनू परिवारकेँ तँ नहि बचाओल जाए सकैत अछि, मुदा दुनूकेँ जोड़ि कऽ एकटा परिवार तँ बनाओल जाए सकैत अछि। कहलखिन- "बौका तँ सिर्फ नामक अछि। केहेन बढ़ियाँ बजैए। गोसाइओक बेटी आन गाम चलि जेतै। जहिसँ बाप-माए दुनू गोटेकेँ बुढ़ारीमे दुख हेतै। तँ बौकाक विआह गोसाइक बेटीसँ करा देने एक परिवार भऽ जाएत।"

सोनेबाबाक विचार सुनि अधासँ बेसी गोटे समर्थन कऽ देलक। मुदा किछु गोटे विरोध करैत बजलाह- "एक गाममे लड़का-लड़कीक विआहक चलनि तँ नहि अछि। जँ हएत तँ अनुचित हएत।"

धड़फड़ा कऽ उठैत लखना जोरसँ बाजल- "कोन गाम आ कोन समाज एहेन अछि जहिमे छौड़ा-छौड़ी छह-पाँच नहि करैत अछि। चोरा कऽ छह-पाँच केलासँ बड़बढ़िया, मुदा देखाकेँ करत से बड़ अधला हेतैक।"

लखनाक विचारकेँ सभ सहमति दऽ देलनि। दुनूक विआहक बात पक्का भऽ गेल। सुबुधक मनमे फेर एकटा प्रश्न उठि गेलनि जे बौका आ गोसाइक दुनू परिवारकेँ एक मानि जमीन देल जाए वा दू मानि। तर्क-वितर्क करैत, मिला कऽ एक परिवार मानि हिस्सा दैक सहमति बनल।

फेर प्रश्न उठल जे जमीनक नाप-जोख के करत? रमाकान्त कहि देलखिन जे अपनेमे अहाँ सभ बाँटि लिअ।''

सुबुधोक मनमे भेलनि जे रमाकान्त कक्का ठीके कहलनि। काजकेँ बाँटि कऽ नहि करब तँ गल्ती हएत। सभ काज जँ अपनहि करए चाहब तँ एते गोटे जे समाजमे छथि ओ की करताह। जँ कहीं कोनो गलतियो हेतै तँ सुधरि जेतै। कहलखिन- ''खेत नपैक लूरि कते गोटेकेँ अछि? किएक तँ जँ अमीन लएकेँ बँटवारा करब तँ बहुत खर्च होएत। जे खर्च बँटैमे करब ओहि पैसासँ दोसरे काज किअए नहि कऽ लेब। पैसाक काज तँ बहुत अछि, तँ अन्ट सन्ट खर्च नहि कए सुपत-सुपत खर्च करब नीक होएत। देखते छिऐ जे जहिना देशक संविधान ओकीलकेँ सालो भरि हरियरी देने रहैत अछि, तहिना तँ सर्वेओ अमीनकेँ अछि। कौआसँ खैर लुटाएब नीक नहि। जहिना अहाँ सभकेँ मंगनीमे खेत भेटि रहल अछि तहिना सही-सलामत हाथमे खेत चलि जाए। जँ अमीन सबहक भाँजमे पड़ब तँ ओहिना हैत जहिना लोक कहै छै 'जतेमे बहु नहि ततेमे लहठी.....'।''

सुबुधक बात सुनि, जोशमे बिलटा उठि कऽ ठाढ़ भऽ बाजल- ''माघ माससँ लऽ कऽ जेठ धरि हम सभ खेत तमिया करै छी। कोनो एक्के साल नहि, सभ साल करै छी। सेहो कोनो आइयेसँ नहि जहियासँ ज्ञान परान भेल तहियेसँ। कोन अमीन आ कमिश्नर नपैले अबैए। अपन गामक कोन बात जे चरिकोसीमे तमनी करै छी। ततबे नहि, नेपालो जा-जा तमै छी। ततबे नहि साले-साल नपैत-नपैत तँ सौँसे गामक खेत जनै छी, जे कोन खेत कते अछि, तँ नपैक जरुरतो ने अछि। मूहजबानिये कहि देब जे कोन कोला कते अछि। एक गोरे कागजपर लिखि लिअ जे ककरा कते खेत देबै। हमरा कहैत जाएब, हम कोला फुटबैत जाएब। एकटा पंडीजी, बड़बढ़िया नाम कहने रहथिन, मुदा मन नइ अछि, जे ओ तीनिये डेगमे दुनियाँकेँ नापि लेने रहथि। तहिना हमहूँ तीन डेगक लग्गी बना, एक गामक कोन बात जे परोपट्टाक जमीन नापि देब।''

बिलटाक बात सुनि रमाकान्त कहलखिन- ''बड़बढ़ियाँ, बड़बढ़ियाँ।'' सभ केयो उठि-उठि बिदा भेलाह।

बेर झुकतहि सौँसे गामक स्त्रीगण, ढेरबा बचिया छोटका-छोटका ढेन-बकेन चिकनी माटिक खोभार दिशि बिदा भेल। सबहक हाथमे खुरपी-पथिया। सभकेँ हाथमे खुरपी पथिया नेने जाइत देखि श्रीचन मने-मन सोचए लगल जे एना किअए लोक कऽ रहल अछि। दसमिओ तँ अखन नहि एलै। कोनो पावनियो-तिहार नहिये छिऐक। तहन स्त्रीगणमे एना उजैहिया किअए उठि गेलै। कोन बुढ़िया जादू तरे-तर गाममे पसरि गेल जे मरद बुझबे ने केलक आ मौगी सभ

बुझि गेल। अनकर कोन अपनो घरवाली रमकल जाइत अछि। जते श्रीचन सोचए ओते ओझरिये लगल जाए। तत्-मत् करैत रुदल ऐठाम बिदा भेल। रुदलक घर लगेमे। श्रीचने जेकाँ रुदलो छगुन्तामे पड़ल रहए। श्रीचनकेँ देखितहि रुदल पूछि देलकै- "आँइ हौ श्रीचन भाय, मौगी सभकेँ कथीक रमकी चढ़लै जे एते रौदमे माटि आनैले जाइए।"

रुदलक बात सुनि श्रीचन आरो छगुन्तामे पड़ि गेल। मनमे एलै जे हम गामपर नइ छलौं तँ नइ बुझलिऐक। मगर ई तँ गामेपर रहै। किअए ने बुझलकै? फेर सोचलक जे जखन घरवाली माटि लऽ कऽ आओत तँ पूछि लेबै। मन असथिर भेलै। मुदा रुदलक मूहक रंगसँ बुझि पड़ै जे कत्ते भारी काज स्त्री बिना पुछिनहि कऽ लेलकै। भीतरसँ खुश मुदा उपरसँ गंभीर होइत श्रीचन रुदलकेँ पुछलक- "आँइ हौ रुदल भाय, तोरा भनसियासँ मिलान नइ रहै छह, जे बिन पुछनहि चलि गेलखुन।"

श्रीचनक मनक बात नहि बुझि खिसिया कऽ रुदल बाजल- "की कहिहऽ भाय, मौगीपर विसबास नै करी। जखैन अपन काज रहतै तँ हँसि-हँसि बजतह, मुदा जखैन तोरा कोनो काज हेतह तँ कहतह जे माथ दुखाइए।"

मूह दाबि श्रीचन मने-मन खूब हँसैत मुदा रुदल तामसे भेर होइत जाइत। बिदा होइत श्रीचन कहलकै- "जाइ छिअ भाय। मौगी सबहक किरदानी देखि हमरा किछु फुरबे ने करैए।"

सह पाबि रुदल गरजि उठल- "बड़बुधियार मौगी सभ भऽ गेल हौ, चलै चलह तँ हमरा संगे कोदारि पाड़ए।"

थोड़े दूर आगू बढ़ि श्रीचन रुकिकेँ कहलकै- "भाय की करबहक, आब मौगिये सबहक राज भेलै।"

"हमरा कोन राज-पाटसँ मतलब अछि, हर जोतै छी, कोदारि पाड़ै छी, तीन सेर कमा कऽ अनै छी, खाइ छी। एते दिन पुरुखे चोर होइ छलै, आब मौगियो चोरनी हएत। भने जहल जाएत आ पुलिसबासँ यारी लगौत।

श्रीचन बढ़ि गेल। रुदल, दुनू हाथ माथपर लऽ सोचए लगल।

सभ केयो माटि आनि-आनि अपन-अपन अंगनाक माटिक ढेरीपर रखलनि। घामे-पसीने सभ तर-बत्तर रहथि। कने काल सुसतेलाक उपरान्त दिआरी बनबए लेल मुंगरी, लोढ़ीसँ माटि फोड़ए लगलीह। मेहीसँ माटि फोड़ि, इनार-कलसँ अछिनजल पानि भरि-भरि अनलनि। माटिमे पानि दऽ सानै लगलीह, सुखल माटिमे पानि पड़ितहि सोन्हगर सुगंध साँसे गाममे पसरि गेल। गामक हबे बदलि गेल। जहिना साझू पहर कऽ सिंगहार फूल, रातिरानीसँ वातावरण महमहा जाइत, तहिना माटि-पानिसँ जनमल सुगंध गामकेँ महमहा देलक। माटि सानि, छोट-छोट दिआरी सभ बनबए लागलि। दिआरी बना, पुरान साफ सूती वस्त्रकेँ फाड़ि-फाड़ि दहिना हाथक तरहत्थीसँ जाँघपर रगड़ि-रगड़ि टेमी बनौलनि। टेमी बना दिआरीमे कड़ू तेल दऽ टेमी सजौलनि। दिआरी सजा केयो फुलडालीमे तँ कियो चंगेरीमे तँ कियो छिपलीमे तँ कियो केराक पातपर रखलनि। दिआरी रखि सभ नहेलीह,

अजीब दृश्य। नव उत्सव। नव जिज्ञासा। नव आशा सबहक मनमे छलनि। सुरुज डूबबो नेहि कएल, मुदा निच्चा जरुर उतरि गेल रहथि, गाछो सभपरक रौद बिला गेल छलैक, सभ अपन-अपन गोसाउनिक घर जा सिरा आगूमे दिआरी लेसिलनि, दिआरी लेसि एकटंगा दऽ आराधना करए लगलीह, जे आइल लछमी पुनः पड़ाए नहि। गोसाइकेँ गोर लागि सभ गामक देव स्थान दिशि चललीह। अपन-अपन आंगनमे तँ सभ असकरे-असकर छलीह, मुदा आंगनसँ निकलितहि देवस्थान दिशि बिदा होइतहि संगबे सभ भेटए लगलनि। संगबे मिलितहि सभ, जहि स्थान दिशि जाइत रहथि ओहि देवताक, गीत गाबए लगलीह। सौँसे गाम, सभ रस्तामे, एक नहि अनेक समूह गीत गबैत मगनसँ देवस्थान पहुँचए लगलीह। सबहक मनमे जमीनक खुशी तँइ सभ देवतोकेँ मुस्कुराइत देखैत। सबहक मनमे नचैत जे एकसँ एक्कैस हुअए।

दिआरीक इजोत जेकाँ गामक सभ गरीब-गुरबाकेँ आशाक दीप खेत पाबि जरए लगलनि। हजारो बर्खसँ पछुआबैत गरीबीमे एकाएक आड़ि पड़ि गेल। सभ कियो नव-नव योजना मनमे बनबए लगलाह। जहिसँ जिनगी दुखक बेड़ीकेँ टपि सुखक सीमामे पएर रखलक। नव जिनगी जीबैक उत्कंठा सबहक मनमे जगलनि।

११

खेत भेटलासँ भजुआक सभ समांगक विचारो बदललनि। नवो बापुत बैसि विचार करैत जे जहिना रमाकान्त काका हमरा सभकेँ रखि लेलनि, तहिना हमहूँ सभ समाजक एक अंग बनि कऽ रहब। सभसँ पहिने रमाकान्त, सुबुध, शशिशेखर आ मास्टर सहाएबकेँ अपना ऐठाम भोजन करैबनि। मुदा अखन धरिक जे हमरा सबहक चालि-ढालि रहल अछि, ओकरा तँ अपनहि बदलए पड़त। अंगना-घर आ दुआर-दरबज्जाक जे छिछा-बिछा अछि, ओ नीक लोकक बैइसै जोकर नहि अछि। सभ दिन अपना एहनेमे रहलहुँ, तँ रहै छी, मुदा नीक लोक एहेन जगहमे कोना औताह। देखिये कऽ मन भटकि जेतनि। तँ पहिने सभ समांग भोरेसँ दुआर-दरबज्जा, अंगना-घरकेँ चिक्कन-चुनमुन बनाबह। मरदो आ मौगियो जे भदौस जेकाँ नुआ-बसतर बनौने रहै छी, ओकरो बदलह। जखन अपन काज करै छी तखन जे फटलो-पुरान आ मैलो-कुचैल कपड़ा पहिरै छी तँ बड़बढ़िया। मुदा जखन किनको नोत दए कऽ खाएले बजेबनि, तखन एहेन बगए-बानिसँ काज नइ चलत। भजुआक जेठ बेटाक सासुर दरभंगा बेला मोड़पर अछि। जखन ओ सासुर जाइत आ ओहिठामक रहल-सहन, बात-विचार देखैत तँ मन जरुर आगू मुँहे बढ़ैक कोशिश करैत। मुदा गामक जे गरीबीक अवस्था छैक ओ सभ विचारकेँ दाबि दैत छैक। मुदा तैयो दरभंगाक देखल परिवार नजरिमे तँ रहबे करैक। भजुआक जेठ बेटा झोलिया सातो भाँइक भैयारीमे सभसँ जेठ। तँ सभ भाँइ झोलियाक बात मानैत अछि। झोलिया कहलक- ''सातो भाँइक बीच रमाकान्त बाबा सात बीघा जमीन देलखुन। पाइ तँ एक्कोटा नै लेलखुन। दुनियाँमे ककरा के एना दै छै। जँ हुनका मनमे हमरो सबहक प्रति दया एलनि तँ ने। तहिना हमहूँ सभ हुनका ओते पैघ बुझि आदर करबनि। गामेमे भाड़ापर कुरसी, समेना, शतरंजी, जाजीम, सिरमा सभ भेटैए। जहिना बरिआतीक लेल लोक भोजनसँ लऽ कऽ रहै तक सभ व्यवस्था करैए, तहिना हमहूँ सभ करब।''

झोलियाक विचार सुनि छवो भाँइयो आ बापो-पित्ती सभ कियो मूड़ी डोला समर्थन कऽ देलक। झोलिया फेर बाजल- ''बाउ, तूँ रमाकान्त बाबा ऐठाम चलि जैहह। हुनका चारु गोटेकेँ नोतो दऽ दिहनु आ संगे-संग बजेनहु अबिहनु। दू भाँइ रहैक, भाड़ापर सभ समान आनि जोगार करिहह। दू सवांग बजारसँ खाइक सभ समान कीनि आनह। सभ सब काजमे भोरेसँ लगि जैहह।''

दलानपर बैसि रमाकान्त आ हीरानन्द चाहो पीबैत रहथि आ गामेक गप-सप करैत रहथि। गामक गप-सप करैत रमाकान्तक नजरि बौएलाल आ सुमित्रापर गेलनि। गिलास रखि रमाकान्त हीरानन्दकेँ कहल- ''महेन्द्र बौआ कहने रहथि जे छअ मास सिखा-पढ़ा दुनू गोटेकेँ पठा देब मुदा अखन धरि किएक ने आएल?''

हीरानन्द बजलाह- "कोनो कारण भेल हेतै तँ ने अखन धरि नहि आएल अछि। ओना चिकित्सा कठिन विद्या थिक। सुढ़िआइमे तँ किछु समए लगबे करतैक।"

दुनू गोटे गप-सप करिते रहथि आकि भजुआ आबि रमाकान्तकेँ गोर लगलकनि, रमाकान्तकेँ गोर लागि हीरानन्दोकेँ लगलकनि। हीरानन्दकेँ गोर लगितहि ओ असिरवाद दैत पुछलखिन- "भजू भाय, नीके रहै छह कीने?"

"हँ मास्टर बौआ। हमरा तँ गामसँ भगैक नौवत आबि गेल छलए।" रमाकान्त दिशि देखि- "मुदा कक्का नै भागए देलनि।"

"से की, से की"- हलचल शब्दमे रमाकान्त पुछलखिन।

गाममे बसैक खिस्सा भजुआ कहए लगलनि- "एहि गाममे पहिने हम्मर जाति नै रहए। मुदा डोमक काज तँ सभ गाममे जनमसँ मरन धरि रहै छै। हमरा पुरखाक घर गोनबा रहै। पूभरसँ कोसी अबैत-अबैत हमरो गाम लग चलि आएल। अखार चढ़िते कोसी फुलेलै। पहिलुके उझूममे तेहेन बाढ़ि चलि आएल जे बाधक कोन गप जे घरो सभमे पानि ढूकि गेल। तीन दिन तक ने माल-जाल घरसँ बहराएल आ ने लोके। पीह-पाह करैत सभ समए बितौलक। मगर पहिलुका बाढ़ि रहै, तेसरे दिन सटकि गेल। हम्मर बाबा दुइये परानी। ताबे हम्मर बाउ नै जनमल रहै। बाढ़िक पानि सटैकिते दुनू गोरे दसोटा सुगर आ घरक समान लऽ गामसँ बिदा भऽ गेल। जखैन गामसँ बिदा भेल तँ दादी बाबाकेँ कहलकै- "अनतै कतऽ जाएब। हमरो माए-बाप जीविते अछि, तँइ ओतै चलू। बबो मानि गेल। दुनू परानी अही गाम देने जाइत रहए। गाममे अबिते सुगरकेँ चरैले छोड़ि देलकै आ अपने दुनू परानी सुसताए लगल। अइ गाममे डोम नहि तँ गामक बेदरा-बुदरी सभ सुगर देखैले जमा भऽ गेल। गामोमे हल्ला भऽ गेलै। गामक बाबू-भैया सभ आबि हमरा बाबाकेँ कहलकै जे अही गाममे रहि जा। हमर बाबा रहि गेल। गामक कातमे एकटा परती रहै। ओही परतीपर एकटा घर सभ बाबू-भैया बना देलकै। ओइ दिनमे परती नमहर रहै। मगर चारु भाग जोता खेत रहै। चारु भागक खेतबला सभ परतीकेँ छाँटि-छाँटि खेतमे पीअबैत गेल। परती छोट होइत गेलै। रहैत-रहैत घर-अंगना आ खोबहारे भरि रहलै। मगर तैयो दिक्कत नै होए। हमर बाउओ भैयारीमे असकरे। मुदा हम दू भाँइ भेलौं। जखैन दुनू भाँइ भिन्न भेलौं तँ घरारियो बँटा गेल आ गिरहतो। मुदा तैयो गुजरमे दिक्कत नै हुअए। अखैन दुनू भाँइक बीच सातटा बेटा अछि। चारिटा हमरा आ तीनटा भाएकेँ। गुजर तँ कमा कऽ सभ कऽ लैत अछि, मुदा घरक दुख तँ सभकेँ होइते छै।"

जुआक खिस्सा सुनि रमाकान्त कहलखिन- "आब तँ बहुत खेत भेलह?"

"हँ कक्का! कते पीढ़ी आनन्दसँ रहब। अखैन घर तँ नै बन्हलौं मुदा खेती केनाइ शुरु कऽ देलिऐ।"

बिचहिमे हीरानन्द पुछलखिन- "सबेरे-सबेरे केम्हर चललह, भज्जु भाय?"

भजुआ- "रातिमे सभ सवांग विचारलक जे जहिना रमाकान्त कक्का सभकेँ समाजक अंग बना खेत देलनि तहिना हमहूँ सभ हुनका नोत दए कऽ खुऐबो करबनि आ धोती पहिरा बिदाइयो करबनि। सहए नोत दैले एलौंहेँ।"

न्योतक नाम सुनितहि रमाकान्त कहलखिन- "कहियाक नोत दै छह?"

ईहो तीनू गोटे- सुबुध, शशि आ हीरानन्द- जेथुन। हिनको सभकेँ कहि दहुन।"

"हँ कक्का, अहीं टाकेँ थोड़े लऽ जाएब। हिनको सभकेँ लए जेबनि। ऐठाम तँ अहीं दू गोरे छी। शशिभाय आ सुबुध भाय नइ छथि। ताबे अहाँ दुनू गोरे नहाउ-सोनाउ, हम ओहू दुनू गोरेकेँ बजौने अबै छिअनि।"

हीरानन्द- "औझुके नोत दै छह?"

"हँ, मासटर सहाएब!"

रमाकान्त- "बड़बढ़िया! शशि तँ पोखरि दिस गेलखुन, अबिते हेथुन। ताबे सुबुधकेँ कहि अबहुन।"

भजुआ सुबुध ऐठाम बिदा भेल। चाह पीबि सुबुध दुनू बच्चाकेँ पढ़बैत रहथि। भजुआकेँ देखितहि सुबुध पूछि देलखिन- "भज्जु भाय, केम्हर-केम्हर?"

प्रणाम करैत भजुआ कहलकनि- "भाय, अहीं ऐठाम ऐलौंहेँ। रमाकान्तो कक्काकेँ कहि देलियनि आ अहूँकेँ कहैले एलौंहेँ।"

"की कहैले ऐलह? "

"नत दैले एलौं।"

"कोन काज छिअह?"

"काज-ताज नै कोनो छी। ओहिना अहाँ चारु गोरेकेँ खुअबैक विचार भेल।"

भजुआक बात सुनि सुबुधक मनमे द्वन्द्व उत्पन्न भऽ गेलनि। मनमे प्रश्न उठलनि जे भजुओ तँ अही समाजक अंग छी। जहिना शशीरमे नीकसँ नीक आ अधलाहसँ अधलाह अंग अछि, जहिसँ शरीरक क्रिया चलैत अछि तहिना तँ समाजोमे अछि। मुदा शरीर आ समाजकेँ तँ एक नहि मानल जाएत। समाजमे जाति आ सम्प्रदाइ एहि रुपे पकड़ि नेने अछि जे सभ सभसँ उपरो अछि आ निच्चो अछि। एक दिस धर्मक नामपर सभ हिन्दू छी, मुदा रंग-बिरंगक जाति भीतरमे अछि। एक जाति दोसर जातिक ने छुवल खाइत अछि आ ने कथा-कुटमैती करैत अछि। ततबे नहि, हिन्दूक जे देवी-देवता छथि ओहो बटाएल छथि। जे देवी-देवताकेँ एक जाति मानैत अछि, दोसर नहि मानैत अछि। जँ मानितो अछि तँ ने हुनकर पूजा करैत अछि आ ने परसाद खाइत अछि। भरिसक हृदयसँ प्रणामो नहि करै जाइ छथि। देवतोकेँ मने-मन अछोप, शूद्र इत्यादि बुझैत छथि। जँ ई प्रश्न हल्लुक-फल्लुक रहैत तँ कोनो बात नहि! मुदा प्रश्न तँ जड़िआइल छैक। एहेन ने हुअए जे नान्हिटा प्रश्नक चलैत समाजमे विस्फोट भऽ जाए। समाजक लोक एहि दुनू प्रश्नक बीच तेना ने बन्हाएल अछि, जे जिनगीक सभसँ पैघ वस्तु एकरे बुझैत छथि। जहन की छी नहि।

मुस्कुराइत सुबुध भजुआकेँ कहलखिन- ''ताबे तूँ रमाकान्त कक्का ऐठाम बढ़ह। हम नहेने अबै छी।''

भजुआ बिदा भेल। मुदा सुबुध मने-मन सोचिते रहलाह जे की कएल जाए। तर्क-वितर्क करैत सुबुधक मन धीरे-धीरे सक्कत हुअए लगलनि। अंतमे एहि निष्कर्षपर पहुँचि गेलाह जे जाधरि एहि सभ छोट-छीन बातकेँ कड़ाइसँ पालन नहि कएल जाएत, ताधरि समाज आगू मुँहे नहि ससरत। समाजकेँ पछुअबैक इहो मुख्य करण थिक। तेँ एकरा जते जल्दी हुअए तोड़ि देब उचित हएत। ई बात मनमे अबितहि सुबुध नहाइ लेल गेला। नहा कऽ कपड़ा पहीरि रमाकान्त ऐठाम बिदा भेला। जाबे सुबुध रमाकान्त एहिठाम पहुँचथि ताबे रमाकान्त शशिशेखर आ हीरानन्द नहाकऽ कपड़ा पहीरि तैयार रहथि। सुबुधक पहुँचतहि हीरानन्द कहलखिन- ''सुबुधो भाय आबिये गेलाह। आब अनेरे बिलम्ब करब उचित नहि।''

सुबुध बैसबो नहि कएला। सभ क्यो बिदा भऽ गेलाह। आगू-आगू रमाकान्त पाछू-पाछू सभ। थोड़े दूर आगू बढ़लापर हीरानन्द भज्जुकेँ पुछलखिन- ''कथी सबहक खेती केलहेँ भज्जु?''

मजबूरीक स्वरमे भज्जु कहए लगलनि- ''भाय, अपना बड़द नै अछि। कोदारियो ने छलए मुदा छौरा सभ जोर केलक आ दस गो कोदारि कीनि अनलक। सभ बापुत भोरे सुतिकेँ उठै छलौँ आ खेत तामै चलि जाइ छलौँ। पनरह दिनमे सभ खेत तामि लेलौँ। बड़बढ़िया जजात सभ अछि। अइ बेर हएत तँ बड़दो कीनि लेब।''

''जखन खेत भेलह तँ बड़द किआए ने कीनि लेलह?''

''एक्केटा दिक्कत नइ ने अछि। बड़द कीनितौँ तँ बान्हितौँ कतए। खाइले की दैतिऐ। जे सभ काज-बड़द कीनिनाइ, घर बनौनाइ, खाइक जोगार केनाइ- एक्के बेर शुरु करितौँ तँ ओते काज पार कना लगैत। तेँ एका-एकी सभ काज करब।''

''बड़ सुन्दर विचार केलह?''

गप-सप करैत सभ भजुआ एहिठाम पहुँचलाह। घरक आगूमे दू कट्ठा जमीन। ओहिमे समियाना टँगने। एक भाग कुरसी लगौने। दोसर भाग शतरंजी, जाजीम, तकिया लगौने। भजुआक सभ सवांग- मरदसँ मौगी धरि- नहाकऽ नवका वस्त्र पहिरने। जहिना कतौ बरिआतीक व्यवस्था होइत छैक, तहिना व्यवस्था केने अछि। व्यवस्था देखि चारु गोटे क्षुब्ध भऽ गेलाह। किनको बुझिये नहि पड़ैत, जे डोमक घर छिऐ। चारु गोटे चारु कुरसीपर बैसलाह। कुरसीपर बैसितहि भजुआक एकटा बेटा शरबत अनलक। सभसँ पहिने रमाकान्त दू गिलास सरबत पीबि, ढकार करैत कहलखिन- ''आब पान खुआबह।''

जते काल सरबत पीबथि, तहि बीच भजुआक पोती चाह नेने आबि गेली। हाँइ-हाँइ कऽ शशिशेखर सरबत पीलनि। स्टीलबला कपमे चाह। शुद्ध दूधक बनल। ने अधिक मीठ आ ने फिक्का। चाहक रंगो तेहने। तइपर कॉफी चक-

चक करैत। चाह पीबैत-पीबैत रमाकान्तक पेट अफरि गेल। भरिआइल पेट बुझि रमाकान्त कहलखिन- "ई तीनू गोटे- कुरसीपर बैसताह, हम ओछाइनेपर पड़ब।" कहि उठि कऽ ओछाइनपर जाए पड़ि रहलाह। पान आएल। सभ क्यो पान खेलनि। मूहमे पान सठबो नहि कएल छलनि आकि जलखै करैक आग्रह भजुआ केलकनि। भजुआक आग्रह सुनि रमाकान्त कहलखिन- "हम ओछाइनेपर खाएब। हुनका सभकेँ टेबुलपर दहुन।"

भजुआक सभ सवांग दासो-दास रहए। जखनसँ चारु गोटे अएलाह तखनसँ भजुआक परिवारमे नव उत्साहक लहरि उमरि पड़लैक। की मरद की स्त्रीगण। जे स्त्रीगण सदिखन झगड़ेमे ओझराएल रहैत छलि, सभक मूहमे हँसी छिटकैत। मनुक्खे एहि दुनियाक सभसँ पैघ कर्ता-धर्ता छी, ई विचार सभक मनमे नाचए लगलनि। भजुआक पोती, जेकर मात्रिक दरभंगा छिऐ आ ओतै बेसी काल रहबो करैत अछि, हाइ स्कूलमे पढ़बो करैत अछि, ओकर संस्कार आ काज करैक ढंग देखि सुबुध आ हीरानन्द आँखियेक इशारामे गप करए लगलथि। आँखिएक इशारामे सुबुध कहलखिन- "जँ मनुखकेँ नीक वातावरण भेटै तँ ओ किछु सँ किछु कऽ सकैत अछि, चाहे ओकर जनम केहनो गिरल परिवारमे किएक ने भेल होए।"

सुबुधक बात सुनि हीरानन्द कहलखिन- "ई सभ ढोंग छी जे लोक कहैत अछि जे पूर्व जनमक कर्मक फल लोक एहि जनममे पबैत अछि। हँ, जँ एकरा एहि रुपे मानल जाए जे एहि जनमक पूर्व पक्षपर पछातिक जिनगी निर्भर करैत अछि, तँ एक तरहक विचार होए। देखियौ जे यैह बचिया - भजुआक पोती कुशसरी- अछि, कते व्यवहारिक अछि। अही परिवारमे तँ एकरो जनम भेल छैक मुदा अगुआएल इलाका आ अगुआएल परिवारमे रहने कते अगुआइल अछि। की पैघ घरक बेटीसँ कम अछि।"

चूड़ा, दही, चिन्नी, केरा, अचार, डलना तरकारीक संग पाँचटा मिठाइ सेहो जलखैमे छल। चारु गोटे भरि मन खेलनि। खेलाक बाद अस-बीस करए लगलथि। हाथ धोए रमाकान्त बिछानेपर ओंघरा गेलाह। मुदा गप-सप करै दुआरे सुबुधो आ हीरानन्दो कुरसियेपर बैसल रहलाह। सभ सवांग भज्जु जलखै कए कऽ सरिआती जेकाँ बैसल रहए। सुबुध पुछलखिन- "जखन एते समांग छह तखन माल-जाल किअए ने पोसने छह?"

नवो समांगमे झोलिया सभसँ होशगर। अपनो सभ समांग झोलियाकेँ गारजन बुझैत। सुबुधक सवालक उत्तर झोलिया देमए लगलनि- "मास्सैब, अखन धरि हमरा सबहक परिवारमे सुगर पोसल जाइत रहल अछि। मुदा सुग्गर सिर्फ खाइक जानवर छी। आन काज तँ ओकरासँ होइ नहि छैक। ने हर जोतल जाइ छैक। आ ने दूध होइ छै। छोट जानवरक दुआरे गाड़ियो नहिये जोतल जेतैक। जकरा नूनो-रोटी नहि भेटै छै ओ माउस कत्तऽ सँ खाएत। तैयो हम सभ पोसै छी। अप्पन पोसल रहैए तँ पावनि-तिहारमे कहियो-काल खाइयो लै छी। खेनिहारक कमी दुआरे नेपाल जा-जा बेचै छलौं। नेपालमे अपना ऐठामसँ

बेसी लोक खाइत अछि। किएक तँ सुगरक माउस खस्सी बकरीसँ बेसी गरम होइ छै। अपना ऐठामक जलवायु सेहो गरम अछि। तँ सुग्गर मुख्यतः ठंढ़ इलाकाक खाद्य थिक। मुदा तैयो सुग्गरो पोसै छलौं, किएक तँ गाए-महीस जँ पोसबो करितहुँ तँ हमरा सबहक दूध के कीनैत?''

झोलियाक बात सुनि सुबुध पुछलखिन- ''सेहो तँ नै देखै छिअह?''

झोलिया- ''पहिने जेरक-जेर सुग्गर रहै छलै। पोसइयो मे असान होइत छलए। एक्के गोटेकँ बरदेलासँ सए-पचास सुग्गर पला जाइत छल। भोरे किछु खा कऽ सुग्गरकँ खोबहारिसँ निकालि चरबैले चलि जाइत छल। घरपर खुअबै-पिअबैक कोनो जरुरते नहि। साल भरि पोसै छलौं आ सालमे एक बेर नेपाल लऽ जाए बेचि लै छलौं। परुँका साल डेढ़ सए सुग्गर लए कऽ बाउओ आ कक्को नेपाल गेल। ओइठिन एकटा मंगलक हाट लगै छै। जहि हाटमे सभसँ बेसी सुग्गर बिकै छै। बड़का-बड़का पैकार सभ ओहि हाटमे रहैत अछि। हाटक एक भागमे हमरो सुग्गर छल। एक भाग बाउ वैसल आ दोसर भाग कक्का। एकटा पैकार पान-सात गोरेक संग आएल। दाम-दीगर हुअए लगलै। दाम पटि गेलै। सभ सुग्गरक गिनती कए कऽ, एकटा पैकार रहल आ बाकी गोरे सुग्गर हाँकि कऽ बिदा भेल। ओ पैकार हमरा बाउओ आ कक्कोकँ कहलक जे चलू पहिने किछु खा-पी लिअ। हमरो बड़ भुख लागल अछि। एकटा दोकानमे तीनू गोटे गेल। जलखै करए लगल। जलखैमे किछु मिला देने छेलै। खाइते-खाइते दुनू गोरेकँ निशाँ लगि गेलै। लटुआ कऽ दुनू गोरे दोकानेमे खसि पड़ल। तहि बीच की भेलै से बुझबे ने केलक। दोसर दिन निन्न टुटलै तँ ने ओ पैकार आ ने दोकान। किएक तँ दोकान हाटे-हाटे लगैत रहए। दुनू भाँइ कनैत-खिजैत बिदा भेल। ने संगमे एकोटा पाइ आ ने खाइक कोनो वस्तु। भूखे लहालोट होइत, कहुना-कहुना कऽ डगमारा आएल। डगमारा अबैत-अबैत दुनू भाँइ बेहोश भऽ गेल। डगमारामे हम्मर एकटा कुटुम अछि। दुनू भाँइक दशा देखि ओ कुटुम गुम्म भऽ गेलाह। किछु फुरबे नहि करनि। बड़ी कालक बाद दुनू भाँइकँ होश भेलै। होश अबितहि दुनू भाँइ पानि पीबि, जखन कने मन नीक भेलै तँ नहाएल। नहा कऽ खेलक। खा कऽ सुतल। सुति कऽ उठला बाद आरो मन नीक भेलै। दू दिन औतै रहल। तेसर दिन गाम आएल। ओहि दिनसँ सुगर उपटि गेल।''

सुबुध- ''अपना घरमे रुपैआ-पैसा नहि अछि?''

झोलिया- ''थोड़बे रुपैआ अछि जे बाबा वाउकँ देने रहै आ कहने रहै जे जब हम मरब तँ अइ रुपैआसँ भोज करिहँ। रुपैआ गनल नै अछि। बाँसक चोंगामे, सुगरक खोबहारीमे राखल अछि।''

हलचला कऽ रमाकान्त कहलखिन- ''नेने आबह तँ। देखियैक कते रुपैआ छह?''

सातो चोंगा रुपैआ भजुआ सुगरक खोबहारीसँ निकालि रमाकान्तक आगूमे रखि देलकनि। फोंकगरहा बाँसक पोरक चोंगा, एक भाग गिरहेसँ बन्न आ दोसर

भागमे कसिकऽ लत्ता कोंचने। सातो चोंगाक लत्ता निकालि रमाकान्त आगूमे रुपैआ निकालि-निकालि रखलक। एकटा रुपैआ उठा रमाकान्त निङहारि कऽ देखलनि तँ चानीक रुपैआ रहए। रुपैआक ढेरीपर सबहक आँखि रहनि। जे जेत्तै रहथि से तत्तैसँ रुपैआपर आँखि गड़ौने रहथि। रमाकान्त हीरानन्दकेँ कहलखिन- "मास्सैब, एहि रुपैआकेँ गनियौ तँ।"

कुरसी परसँ उठि हीरानन्द रुपैआ लग आबि गनए लगलाह। सातो चोंगामे सात सौ चानीक रुपैआ। सात सौ चानीक रुपैआ सुनि सुबुध मने-मन हिसाब जोड़ए लगलाह जे एक रुपैआक कीमत पचहत्तरि रुपैआ होइत अछि। एक सएसँ पचहत्तरि सए होएत। सात सौ सँ बाबन हजार पाँच सए हएत। अगर एक जोड़ बड़द कीनत तँ पाँच हजार लगतै। एकटा बोरिंग-दमकल लेत तँ पनरह हजारमे भऽ जेतै। जँ तीन नम्बर ईंटा लऽ ओकरा गिलेबापर जोड़ि, उपरमे एसबेसटस दऽ कऽ सात कोठरीक घर बनाओत तँ पच्चीस-तीस हजारमे भऽ जेतै। अपनो सभ सवांग कमाइते अछि आ सात बीघा खेतोक उपजा हेतै। साले भरिमे बढ़िया किसान परिवार बनि जाएत। जे अछैते पूँजीये लल्ल अछि। सभ कथूक दिक्कत छैक। विचित्र स्थिति सुबुधक मनमे उठि गेलनि। एक नजरिसँ देखथि तँ खुशहाल परिवार बुझि पड़नि आ दोसर दिस देखथि तँ ने रहैले घर, ने खाइ-पीबैक समुचित उपाए। मुदा एकटा गुण भजुआक परिवारमे सुबुध जरुर देखलनि, जे आन गामक डोम जेकाँ ताड़ी-दारुक चलनि परिवारमे नहि छैक। सिर्फ बुझैक आ बुझबैक जरुरति परिवारमे छैक। नमहर साँस छोड़ैत सुबुध भजुओ आ भजुआक सभ सवांगोकेँ कहए लगलखिन- "भजु भाय, हम सभ समाजकेँ हँसैत देखए चाहै छी, कनैत नहि। तँ ककरो अधला होए से नहि सोचै छी। सभक नीक होए, सबहक परिवार हँसी-खुशीसँ चलैत रहै। सबहक बेटा-बेटी पढ़ै-लिखै, रहैक नीक घर होए, दबाइ-दारु दुआरे कियो मरै नहि, तँ हम कहब जे एहि रुपैआकेँ रस्तासँ खर्च करु। ओना बाबू श्राद्धक भोजले कहने छथि, सेहो थोड़थार कऽ लेब, जँ एत्ते दिन नहि केलहुँ तँ किछु दिन आरो टारु। पहिने घर, बड़द आ बोरिंग खर्च करू, तखन जे उपजा बाड़ी हएत तँ भोजो कए लेब।"

सुबुधक विचारक समर्थन करैत रमाकान्त कहलखिन- "बड़ सुन्दर विचार सुबुध देलखुन भज्जु। जिनगीकेँ बुझह जे जिनगी ककरा कहै छै आ कोना बनतैक। से जाधरि नहि सिखबह ताधरि एहिना बौआइत रहि जेबह।"

भजुआ तँ चुप्पे रहल मुदा झोलिया टपाक दे बाजल- "बाबा जे कहलनि ओ गिरह बान्हि लेलौं। अहाँ सभ हमरो छोट भाए बुझू। जाबे हम्मर परिवार रहत आ हम सभ रहब, ताबे अहाँ सबहक संगे-संग चलैत रहब।"

झोलियाक विचार सुनि हीरानन्द खुशीसँ झूमि उठलाह। हँसैत कहलखिन- "भज्जुभाय, अहाँ तँ आब बुढ़ भेलहुँ तँ नवका काज दिस नजरि नहि जाएत, मुदा बेटा-भातीज सभ जुआन अछि, नव काज दिस बढ़ए दियौक। जाधरि लोक समएक हिसाबसँ नब काज दिशि नहि बढ़त ताधरि समएक संग नहि चलि

पाओत। नहि तँ बाढ़िक पानि जेकाँ समए आगू बढ़ैत जाएत आ खढ़-पात जेकाँ मनुक्ख अरड़ा लगल रहत। तँ समएकेँ पकड़ि कऽ चलैक कोशिश करह। आब अपनो सभ भाँइ मिला कऽ सात बीघा खेत भेलह। सात बीघा खेतबला बढ़ियाँ गिरहस्त तखने बनि सकैत अछि जखन कि खेती करैक सभ जोगार कऽ लिअए। पानिक बिना जजात नहि उपजि सकैए। तहिना बड़दोक जरुरी अछि। खेतक महत्व तँ तखने हएत जखन कि ओकरा उपजबैक सभ जोगार कऽ लेब। बहुत रास रुपैआ अछि, ओहि रुपैआक उपयोग जिनगीक लेल करु।''

गप-सप चलिते छल कि हहाइल-फुहाइल डॉक्टर महेन्द्र आ बौएलाल पहुँचि गेलाह।

महंथ जेकाँ रमाकान्त ओछाइनपर पँजरा तरमे सिरमा देने पड़ल छलाह। महेन्द्रकेँ देखितहि सभ अचंभित भऽ गेलाह। महेन्द्र आ बौएलाल सोझे रमाकान्त लग पहुँच गोर लगलकनि। महेन्द्रकेँ असिरबाद दैत रमाकान्त कहलखिन- ''एहिठाम किएक ऐलह। कनिये कालक बाद तँ हमहूँ सभ ऐबे करितहुँ। गाड़ीक झमारल छह, पहिने नहैतह, खैतह अराम करितह। हम कि कतौ पड़ाएल जाइ छलौं जे भेंट नहि होइतिहह।''

महेन्द्र डॉक्टरक नजरिसँ चुपचाप पिताकेँ देखैत छलाह। पिताकेँ देखि मने-मन अपसोच करैत रहथि जे गलती समाचार पहुँचल। मुदा किछु बजैत नहि छलाह। तहि बीच भजुआ झोलियाकेँ कहलक- ''बौआ, पहिने दुनू गोरेकेँ खुआबह।''

महेन्द्रो आ बौएलालोकेँ खुअबैक ओरियान झोलिया करए लगल। ओरिआन तँ रहबे करै। लगले परसि दुनू गोटेकेँ खुऔलनि। दुनू गोटे खा कऽ घर दिस बिदा भेला। पाछूसँ कुशेसरी महेन्द्रकेँ सोर पाड़ि कहलकनि- ''चाचाजी, पान-सुपारी लए लिअ।''

कुशेसरीक आग्रह सुनि दुनू गोटे रस्तेपर ठाढ़ भऽ गेला। झटकि कऽ कुशेसरी, तस्तरीमे पान-सुपारी नेने, लगमे पहुँचलि। लगमे पहुँचि अपने हाथे पान सुपारी नहि दऽ तस्तरिये महेन्द्रक आगूमे बढ़ौलकनि। पान सुपारी देखि महेन्द्र कहलखिन- ''बुच्ची, हम तँ पान नहि खाइ छी। अगर घरमे इलायची आ सिगरेट हुअ तँ नेने आबह।''

कुशेसरी चोट्टे घुरि कऽ आंगन आइलि। आंगन आबि सिगरेटक पौकेट, सलाइ आ इलायची नेने पहुँचली। उत्तरमुँहे घुरि महेन्द्र ओरिया कऽ सिगरेट लगौलनि जे कहीं पिताजी ने देखि लेथि। दुनू गोटे गप-सप करैत बिदा भेला। कुशेसरीकेँ देखि महेन्द्र अचंभित नहि भेलाह। किएक तँ मिथिलाक गामक लेल कुशसरी अचंभित लड़की भऽ सकैत छलीह। मुदा मद्रासक लेल नहि। पछुआइल जातिमे कुशसरी सन-सन ढेरो लड़की अछि।

महेन्द्रकेँ गामसँ एकटा गुमनाम पत्र गेल रहनि। ओहिमे लिखल छलैक जे पिताजी बताह भऽ गेल छथि। अन्ट-सन्ट काज गाममे कऽ रहल छथि। तँ समए रहैत हुनका इलाज नहि करेबनि तँ निच्छछ पागल भऽ जेताह। पत्र

देखितहि महेन्द्र घर अबैक विचार केलनि। भाए रबिन्द्रसँ बिचारि लेब जरुरी बुझि महेन्द्र एक दिन रुकि गेलाह। दोसर दिन महेन्द्रक भावो सुजाता, महेन्द्र, बौएलाल आ सुमित्रा, चारु गोटे गाड़ी पकड़ि गाम बिदा भेलाह।

गाम अबितहि महेन्द्र पिताकेँ नहि देखि मने-मन आरो सशंकित भऽ गेलाह। माएकेँ पिताक संबंधमे पुछलनि। माएकेँ मात्र एतबे पूछलनि जे 'बाबू कतए छथि?'। माए कहलखिन। एटैची रखि महेन्द्र बौएलालक संग सोझे भजुआ ऐठाम चललाह। डॉ. सुजाता घरेपर रहि गेलीह। सासु ऐहिठामक परम्पराकेँ बुझबैत मनाही कए देलखिन।

चारि बजि गेल। खेबाक इच्छा ने रमाकान्तकेँ आ ने आरो किनको रहनि। भानस भऽ गेलै। जते विलम्ब होएत, ओते वस्तु सुआदहीन बनत। तेँ भजुआ चाहैत छल जे गरम-गरम भोजन सभ कियो करथि। मुदा भूख नहि रहने चारु गोटे टाल-मटोल करैत रहथि। असमंजस करैत भजुआ रमाकान्तकेँ कहलकनि- "कक्का, भानस भऽ गेल अछि। जैह मन माने सएह......।"

ढकार करैत रमाकान्त उत्तर देलखिन- "जखन भोजन बना लेलह तँ नहि खाएब तँ मुँहो छुताइये लेब। मुदा सच पूछह तँ एक्को रत्ती खाइक मन नहि होइत अछि।"

"सैह करबै" -भजुआ कहलकनि।

चारु गोटे उठि कऽ आंगन गेलाह। साँसे आंगन चिक्कनि माटिसँ टटके नीपल, तँ माटिक सुगंधसँ अंगना महमह करैत। आंगन तँ छोटे, मुदा बेसी लोकक दुआरे पैघ बुझि पड़ैत। कम्मल चौपेत कऽ बिछाओल। जना आइये कीनिकेँ अनने हुअए तेहने थारी, लोटा, बाटी, गिलास चकचक करैत। भोजनक बिन्यास देखि रमाकान्त क्षुब्ध भऽ गेलाह। की पवित्रता, की सुआद। मने-मन रमाकान्त सोचथि जे अगर खूब भूख लागल रहैत तँ खूब खइतहुँ। मुदा भूखे ने अछि तँ की खाएब।"

भोजन कऽ चारु गोटे बिदा हुअए लगलाह। बिदा होइसँ पहिनहि झोलिया रंगल चंगेरामे चारि जोड़ धोती आनि चारु गोटेक आगूमे रखि देलकनि। धोती देखि रमाकान्त कहलखिन- "झोली, तूँ सभ गरीब छह। अपनेले घोती रखि लाए। तूँ पहिरौलह हम पहीरलहुँ। भऽ गेलैक।"

१२

मद्रासमे महेन्द्र चारि बजे उठि अपन जिनगी लीलामे लगि जाइत छथि। मुदा गाममे चारि बजे भोरमे महेन्द्रकेँ कड़गर निन्न पकड़ने रहनि। एना किअए भेल? उठलाक उपरान्त महेन्द्र सोचए लगलथि। की मिथिलाक माटि, पानि, हवाक गुण छैक वा काजक कम रहने एना भेल। रमाकान्त सुति-उठि कऽ महेन्द्रक कोठरीमे जा देखलनि तँ देखलखिन जे ओ ठर्र पाड़ैत घोर नीनमे सुतल अछि। नहि उठौलखिन। मनमे एलनि जे बापक राजमे बेटा एहिना निश्चिन्त भऽ रहैत अछि। अपने लोटा लऽ कलम दिशि बिदा भेलाह। टहलि-बूलि, दिशा-मैदानसँ होइत अपन घरक रस्ता छोड़ि टोलक रस्ता पकड़ि घुमलाह। टोलमे प्रवेश करितहि, रस्ता कातेक चापाकलपर मूह-हाथ धुअए लगलथि। कलक बगलेमे मंगलक घर। रमाकान्तकेँ मंगल देखि चुपचाप अंगनासँ बेंतबला कुरसी आ टेबुल आनि डेढ़ियापर लगौलक। मूह-हाथ धोए रमाकान्त अपना घर दिस चललाह। रस्ता कटैत देखि मंगल कहलकनि- "काका, कने एक रत्ती अहूठाम बैसियौ।"

मंगलक बातकेँ कटलनि नहि, मुस्कुराइत आबि कुरसीपर बैसि गेलाह। कुरसीपर बैसि रमाकान्त कहलखिन- "बड़ सुन्नर कुरसी छह। कहिया बनौलह?"

"आठम दिन छौड़ा दिल्लीसँ आएल। वैह अनलक।"

मंगलक बेटा रविया, अंगनामे चाह बनबैत रहए। चाह बना, तस्तरीमे बिस्कुट नमकीन भुजिया आ चाहक गिलास नेने अबि रमाकान्तक आगूमे टेबुलपर रखि, गोर लागि कहलकनि- "बाबा, कने चाह पीबि लियौ।"

रवियाक बात सुनि रमाकान्त सोचए लगलाह जे यैह मंगला छी जे बिहाड़िमे जखन घर उधिया गेल रहै तँ सात दिन अपनो सबतुरकेँ आ मालो-जालकेँ अपना मालक घरमे रहैले देने रहिऐ। आइ वैह मंगला छी जे केहेन सुन्दर घरो बना लेलक आ कुरसियो टेबुल कीनि लेलकहेँ। मुस्की दैत पुछलखिन- "बेटा, कत्तऽ नोकरी करै छह मंगल?"

"दिल्लीमे, कक्का। बड़बढ़िया अए।"

रमाकान्त भुजिया, बिस्कुट खाए पानि पीबि चाह पीबैत रहथि आकि तहि बीच रविया आंगन जाए एकटा पौकेट रेडियो जर्मनीक बनल नेने आबि रमाकान्तक आगूमे रखैत कहलकनि- "बाबा, ई अहींले अनलहुँहें।"

रेडियो देखि रमाकान्त कहलखिन- "अइ सबहक सख आब एहि बुढ़ारीमे की करब। रखि ले। तूँ सभ अखन जुआन-जहान छैँ, छजतौ। हम लऽ कऽ की करब। दहिना हाथसँ रेडियो आ बामा हाथे रमाकान्तक गट्टा पकड़ि हाथमे दैत रविया कहलकनि- "बाबा, अहींले किनने आएल छी।"

चाह पीबि, कुरसीपर सँ उठि रमाकान्त घर दिसक रस्ता पकड़लनि। आगू-आगू रमाकान्त पाछू-पाछू मंगल हाथमे रेडियो नेने घरपर तक चल आएल।

एक बाँस सुरुज उपर उठि गेल। महेन्द्र ओसारपर बैसि, दतमनि-ब्रस करैत रहथि। पान-सातटा बचिया माथपर पथिया आ हाथमे लोटा नेने पहुँचल।

महेन्द्र ब्रश करैत रहथि आ चुपचाप ओकरा सभकेँ देखबो करैत रहथि। लोटा पथिया ओसारपर रखि एकटा बचिया महेन्द्रकेँ पुछलकनि- "बाबा कहाँ छथिन?"

बचियाक प्रश्नक उत्तर महेन्द्र नहि देलखिन, किएक तँ नहि बुझल रहनि। सभक पथिया आ लोटाकेँ निङहारि-निङहारि महेन्द्र देखए लगलथि। कोनो पथियामे कोबी, कोनोमे टमाटर, कोनोमे करैला तँ कोनोमे भट्टा रहैक। लोटामे दूध रहए। दूध आ तरकारी देखि महेन्द्र सोचए लगलाह जे ई की देखि रहल छी। किअए ई सभ ऐठाम अनलकहेँ। गुन-धुन करए लगलाह। मुदा कोनो अर्थे ने लगैत छलनि। मन घुरिआइत छलनि। कनी कालक बाद पुछलखिन- "बौआ, ई सब किअए अनलह?"

एकटा ढेरबा बचिया जे बजैमे चड़फड़, कहलकनि- "बाबा अप्पन सभ खेत हमरे सभकेँ दए देलखिन। अपनाले किछु ने रखलखिन, तँ खेथिन की?"

बचियाक बात सुनि महेन्द्र गुम्म भऽ गेलाह। सोचए लगलथि जे हम बेटा छिअनि। हुनकर चिन्ता हमरा हेबाक चाही। सुआइत कहल गेल अछि जे 'जेहेन करब तेहेन पाएब।' मूहपर हाथ नेने महेन्द्र सोचैत जे अनेरे लोक अप्पन आ दोसर बुझैत अछि। जकराले करबै, ओ अहूँले करत। चाहे अपन हुअए वा आन। सोचितहि रहथि आकि पिताजीकेँ अबैत देखलनि। पिताकेँ देखितहि उठि कऽ कुरुड़ करए लेल गेलाह। रमाकान्तपर नजरि पड़ितहि सभ बचिया ओसारपरसँ उठि गोर लगै लगलनि। आगू बढ़ि रमाकान्त लोटामे दूध आ पथियामे तरकारी देखलखिन। तरकारी देखि कहलखिन- "बच्चा, एत्ते किअए अनलह? अच्छा आनिये लेलह, तँ आंगनमे रखि आबह।"

सभ बचिया अपन-अपन पथिया-लोटा लऽ जा कऽ आंगनमे रखि आएल।

महेन्द्रक अबैक जानकारी गाममे सभकेँ भऽ गेलनि। एका-एकी लोक आबि-आबि अपन-अपन रोगक इलाज करबै चाहलक। मुदा महेन्द्र तँ नियारि कऽ नहि आएल छलाह, तेँ ने जाँच करैक कोनो यंत्र अनने रहथि आ ने दवाइ। मुदा तैयो बौएलाल आ सुमित्राकेँ बजा अनैले जुगेसरकेँ कहलखिन। जुगेसर बौएलालकेँ बजबए गेल। जते जाँच-पड़ताल करैक यंत्र, चीड़-फाड़ करैक औजार बौएलाल आ सुमित्राकेँ कीनि देने रहथिन ओ सभ सामान नेने दुनू गोटे पहुँचल। बौएलाल महेन्द्र लग बैसल आ सुमित्रा सुजाताक संग दरबज्जाक पाछूक ओसारपर बैसलि। जनिजाति सुजाता लग जाँच करबैले जाए लगलीह आ पुरुख महेन्द्र लग। चारिये-पाँच गोटेकेँ महेन्द्र जाँच केलनि आकि चारि-पाँचटा रोगी खाटपर टांगल अबैत देखलखिन। ओ सभ दोसर गामक छलैक। खाट देखि महेन्द्रकेँ भेलनि जे भरिसक हैजा-तैजा भऽ गेलैक। ओसारपर सँ उठि महेन्द्रो आ

बौएलालो निच्चामे ठाढ़ भऽ गेलाह। खाटोबला आबि गेल। सभ कुहरैत रहए। ककरो कपार फुटल तँ ककरो डेन टूटल। ककरो मारिक चोटसँ देह फुलल। अपना लग कोनो दवाइ महेन्द्रकेँ नहि रहनि। हाँइ-हाँइ कऽ बौएलालकेँ बैनडेजक सभ समान आ दबाइक पुरजी बना, बजारसँ जल्दी अनैले कहलखिन। साइकिलसँ बौएलाल खूब रेसमे बिदा भेल।

रमाकान्त रोगी लग आबि, एकटा खाट उठौनिहारकेँ पुछलखिन- "कोना कपार फुटलै?"

डरसँ कपैत ओ कहलकनि- "मारिसँ कपार फुटलै।"

सुनितहि रमाकान्त महेन्द्रकेँ कहलखिन- "बौआ, सबहक इलाज नीक जेकाँ कऽ दहुन।" कहि ओसारपर बिछाओल बिछानपर बैसि, खाट उठौनिहार सभकेँ सोर पाड़लखिन। सभ केयो लगमे आबि बैसल। पुछलखिन- "मारि कखैन भेलह?"

"खाइ-पीब रातिमे।"

"तब तँ खेनहुँ-पीनहुँ नहि हेबह?"

"नै।"

जुगेसरकेँ कहलखिन- "पहिने सभकेँ खुआबह।"

पनरह-बीस गोटेक जलखै तँ घरमे छलनि नहि। जुगेसर सुमित्राकेँ सोर पाड़ि कहलक- "बुच्ची, काकी तँ बूढ़े छथि, डॉ. साहेब सुजाता- अनभुआरे छथि। झब दे बड़का बरतन चढ़ा कऽ खिचड़ी बना। बेचारा सभ रौतुके भुखल अछि। हम सब समान जोड़िया दै छियौ। तोरो सब कुछ बुझल नइ छौ।"

जहिना जुगेसर सुमित्राकेँ कहलक, तहिना सुमित्रो भानसमे जुटि गेलि। सुजाता सेहो लगि गेलीह।

जहिना बौएलाल निछोह साइकिल हाँकि बजार गेल तहिना लगले सभ समान कीनि आबियो गेल। बौएलालकेँ अबितहि महेन्द्रो आ बौएलालो सभ रोगीकेँ दरदक सुइया देलखिन। सूइ पड़ितहि, कनिये कालक उपरान्त, सभ कुहड़ब बन्न केलक। खिचैड़-तरकारी बना सुजातो आ सुमित्रो रोगी लग अएलीह। मन शान्त होइतहि, सबहक खून लगलाहा कपड़ा बदलि, खिचैड़ खुआ इलाज शुरु भेल। तीन गोटेक कपार फुटल रहै आ दू गोटेक डेन टूटल रहैक। सुजाता आ सुमित्रा दुनू गोटेक पलास्टर करए लगली। महेन्द्र कपारमे स्टीच करैत रहथि। बौएलाल दौड़-बड़हामे लागल रहए। कखनो किछु अनैत तँ कखनो किछु।

दू घंटाक बाद सभ चैन भेल।

रमाकान्त पुछलखिन- "मारि किअए भेलह?"

नोर पोछैत जोखन कहए लगलनि- "मकशूदनक बेटी सितिया भाँटा बेचै हाट गेल रहै। सत्तरह-अठारह बर्खक उमेर हेतै। नमगर कद। दोहरा देह। चाकर मूह। गोल ऑंखि ओकर छैक। परुँके साल दुरागमन भेल छलै। ओना हाट ओकर माए करै छै, मुदा पान-सात दिनसँ ओ दुखित अछि। डेढ़ कट्ठा खेतमे भाँटा केने अछि। खूब सहजोर फड़लो छै। भाँटाकेँ जुआइ दुआरे सितिया

छाँटि-छाँटि कऽ नमहरका भाँटा तोड़ि लेलक। एक छिट्टा भेलै। भट्टोकेँ बेचनाइ आ माएले दवाइयो कीनिनाइ जरुरी छलै। दवाइक पुरजी साड़ीक खूँटमे बान्हि लेलक जे घुमै कालमे दवाइ किनने आएब। हाटमे भट्टा बेचि, दोकानमे दवाइ कीनि असकरे बिदा भेलि। गोसाइ डूबि गेलै। खूब अन्हार तँ नै, मुदा झलफल भऽ गेल छलै। धीरे-धीरे रस्तो चलनिहार पतराए लगल छलै। हाट गेनिहार तँ साफे बन्न भऽ गेल छलै। मगर हाटसँ घुरनिहार गोटे-गोटे रहबे करए। पाँतरमे जखन सितिया आइलि तँ पाछूसँ ललबा आ गुलेतिया सेहो साइकिलसँ अबैत छल। गुलेतिया ललबाक नोकर। ललबा बापक असकर बेटा। बीस-पच्चीस बीघा खेत छै। बच्चेसँ ललबा बहसल। दुनू गोरे दारु पीने रहै। अन्ट-सन्ट बजैत घर दिस अबैत रहै। जखन दुनू गोटे सितियाक लगमे आएल तँ ललबा बाजल- ''गुलेती, शिकार फँसलौ।'' ललबाक बात सुनियोकेँ सितिया किछु नहि बाजलि। मुदा मनमे आगि सुनगै लगलैक। आरो डेग नमहर केलक। आगू बढ़ि ललबा साइकिलसँ उतरि, रस्ताकेँ घेरि साइकिल ठाढ़ कऽ देलकै। साइकिल ठाढ़ कए जेबीसँ सिगरेट आ सलाइ निकालि, लगा पीबए लगल। सितियाक मनमे शंका भेलै मुदा डराएल नहि। साइकिल लग आबि रस्ताक बगल देने आगू टपि गेलि। आगूमे ललबो आ गुलेतियो ठाढ़ भऽ सिगरेटो पीबैत आ चढ़ा-उतरीक गप्पो-सप करैत। मूहमे सिगरेट रखि ललबा सए रुपैआ नोट उपरका जेबीसँ निकालि सितिया दिशि बढ़ौलक। रुपैआ देखि सितियाक देह आगिसँ लह-लह करए लागल। मुदा ने किछु बाजल आ ने रुकल। लफड़ल आगू बढ़ैत रहलि। सितियाकेँ आगू बढ़ैत देखि ललबो पाछूसँ हाथमे रुपैआ नेने बढ़ल। दुनू गोटेकेँ पछुआबैत देखि सितिया ठाढ़ भऽ गेलि। माथ परक छिट्टाकेँ दहिना हाथे आरो कसिया कऽ पकड़ि सोचलक जे छिट्टेसँ दुनूकेँ चानिपर मारब। तामसे भीतरे-भीतरे जरितहि छलि। ललबा दहिना हाथे नोट सितिया दिस बढ़ौलक। लगमे ललबाकेँ देखि, मौका पाबि सितिया तना कऽ रुपैआपर थूक फेकलक जे रुपैआपर कम्मे मुदा ललबाक मूहपर बेसी पड़लै। मूहपर थूक पड़ितहि ललबा सितियाक बाँहि पकड़ि खिंचए चाहलक। पहिनहिसँ सितिया छिट्टाकेँ पकड़ि अजमौनहि रहै। धाँइ-धाँइ दू छिट्टा ललबाकेँ लगा देलक। दुनू गोटे दुनू बाँहि पकड़ि सितियाकेँ खिचलक। छिट्टा नेनहि सितिया रस्ताक निच्चा खेतमे खसि पड़लि। खेतमे खसितहि जोश कऽ कें उठि दहिना तरहत्थीक मुक्का बान्हि, मुक्को आ दहिना पएरो अनधुन चलबए लागलि। मारिक डरसँ गुलेतिया कात भऽ गेल। मुदा ललबा नहि मानलक। ओहो अनधुन मुक्का चलबए लगल। गुलेतियाकेँ कातमे देखि सितियोक जोश बढ़लै। ललबा दारु पीनहि रहै, तिलमिला कऽ खसल। जहाँ ललबा खसल आकि सितिया ऐँड़े-ऐँड़ मारए लागलि। तहि-बीच हाटसँ तरकारी बेचिनिहारिक जेर अबैत रहै। तरकारी बेचिनिहारिक चाल-चुल पाबि सितियाक जोश आरो बढ़ि गेलै। एक तँ समरथाइक शक्ति सितियाक देहमे, दोसर इज्जत बँचबैक प्रश्न, बाघ जेकाँ सितिया मारि कऽ ललबाकेँ बेहोश कऽ

देलक। तरकारियो बेचिनिहारि लगमे आबि गेलीह। सितियाक काली रुप देखि हसीना पुछलकै- ''बहीन, की भेलौ?''

सितिया बाजलि- ''अखैन किछु ने पूछ। अइ छुतहरकेँ खून पीबि लेबै।'' बजबो करैत आ अनधुन ऐँड़ो देहपर बरिसबैत छलि। चारि गोरे सितियाकेँ पकड़ि कात करए चाहलनि। मुदा चारुकेँ झमारि सितिया पुनः आबि कऽ दस लात ललबाकेँ फेर मारलक। फेर चारु गोरे हसीना, जलेखा, रेहना आ खातून घेरि सितियाकेँ पँजिया कऽ पकड़ि घिचने-तिरने बिदा भेलि। अबैत-अबैत जखन गामक कात आएल कि सितिया फेर चारु गोरेकेँ झमारि, अपन डेन छोड़ा फेर ललबाकेँ मारै दौड़लि। मुदा रेहना आ खातून दौड़ि सितियाकेँ आगूसँ घेरलक। हसीना आ जलेखा सेहो दौड़ि कऽ आबि पकड़लक। सितियाक मन क्रोधसँ उफनैत रहै। मनमे होए जे ललबाक खून पीने बिना नहि छोड़बै। चाहे फाँसीपर किअए ने चढ़ऽ पड़ए। चारु गोटे सितियाकेँ पकड़ने घरपर पहुँचल।

सौँसे गाम घटनाक समाचार बिहाड़ि जेकाँ पसरि गेल। गाम डोल-माल करए लगल। तनावक वातावरण बनए लगलैक। राति भारी हुअए लगलैक। गामक बुढ़बा चोट्टासँ लऽ कऽ नवका चोट्टा धरिक चलती बढ़ि गेल। तहि बीच चारि गोटे ललवाकेँ खाटपर टाँगि सेहो अनलक। ललबाक बेहोशी तँ टूटि गेलै मुदा कुहरनी धेनहि रहलैक। ललबाक पितिऔत भाए डॉक्टर बजा ललबाक इलाज करबए लगल। स्लाइन लगा डॉक्टर बगलमे बैसि पानिक गति देखैत रहए। ललबाक पितिऔत भाए गाममे लाठी संगोर करए लगल। जते गामक मुँहगर-कन्हगर लोक सभ छल, ललबाक पक्ष लेलक। ललबाक बाप बाजल- ''जखैन इज्जत चलिये गेल तँ समपैते रखि कऽ की करब।''

'दुर्गा-महरानी की जय' कहि पनरह-बीसटा गामक हुड़दंगहा लाठी लऽ सितिया ऐठाम बिदा भेल। रस्तोमे सभ जय-जयकार करैत रहए।

मकशूदनक टोल मात्र बारह परिवारक। गरीब घरक टोल तँ समांगो सभ मरदुआरे। मुदा तैयो जते पुरुख रहै, लाठी लए-लए गोलिया कऽ बैसि विचारलक जे इज्जतक खातिर मरि जाएब धरम छी। तँ जे हेतै से हेतै, मुदा पाछू नै हटब। दोसर दिस टोलक सभ जनिजाति सेहो तैयार होइत निर्णय केलनि, जे जाधरि पुरुख ठाढ़ रहत ताधरि अपना सभ कातमे रहब। मगर पुरुखकेँ खसिते अपना सभ लाठी उठाएब। एक तँ सितियाक देहमे आगि लगले रहै आरो धधकि गेलै। बाजलि- ''जत्ते जुआन बेटी छैँ आ जुआन पुतोहू छैँ, सभ अपन-अपन साड़ीकेँ कसि कऽ बान्हि ले। माथमे साड़िएक नमहर मुरेठा कसि कऽ बान्हि ले, जहिसँ कपार नै फुटौ। बुढ़िया सभकेँ छोड़ि देही। मड़ुआ बीआ पटबैबला जे पटै घरमे छौ से निकालि कऽ एक ठाम कए कऽ राख। आ देखैत रही जे की सब होइ छै। जहिना सभ बहीन मिलि मरब, तहिना संगे संगे सभ बहीन जनमो लेब।''

टोलक जते छोट बच्चा रहै, सभकेँ घरक बूढ़ि-पुरान लए-लए टोलसँ हटि गाछीमे चलि गेल। दोसर हँसेरी टोलक लग आबि जय-जयकार केलक। जय-

जयकार सुनि सितियाकेँ होए जे असकरे सभसँ आगू जा हँसेरीकेँ रोकी। मुदा लड़ाइमे अनुशासन आ निर्णयक महत्व बढ़ि जाइत अछि। तेँ सितिया आगू नहि बढ़ि ठाढ़े रहलि। टोलक लोक, ताकत भरि हँसेरीकेँ रोकलक। अनधुन लाठी दुनू दिससँ चललै। मुदा पछड़ि गेल। पाँच गोटे घाइल भेल। हँसेरी घुमल नहि धन आ इज्जत लुटैक खियालसँ आगू बढ़ल। अपन समांगकेँ खसल आ हँसेरीकेँ आगू बढ़ैत देखि मुरेठा बन्हने आगू-आगू सितिया, तहि पाछू-पाछू टोलक सभ स्त्रीगण, पटै लऽ हँसेरीकेँ रोकलनि। की बिजलोका चमकै छैक तहिना गामक बेटी अपन चमकी देखौलनि। वाह रे मिथिलाक धी। मिथिला सिर्फ कर्मभूमे आ धर्मभूमे नहि, वीरभूमि सेहो थिक। चारि आदमीक कपार असकरे सितिया ढाहलक। चारु खसलै। खूनक रेत चललै। हँसेरीमे हुड़ भेलै। सभ पाछू मुँहे पड़ाएल। इहो सभ भागल हँसेरीकेँ रबाड़लनि। मुदा किछु दूर रबाड़ि घुमि गेलीह।

अप्पन सभ समांगकेँ उठा-उठा सभ अनलक। मुदा दोसर दिसक लोककेँ अप्पन समांग अनैक साहसे नहि होइत छलैक। होए जे कहीं हमहूँ सभ अनैले जाइ आ हमरो सभकेँ ओहिना हुअए। तखन की हएत। बड़ी कालक बाद चोरा कऽ अपना समांग सभकेँ ओहो सभ लऽ गेल। गाममे दुइयेटा डॉक्टर। सेहो डिग्रीधारी नहि, गमैया प्रेक्टिश्नर। दुनू ललबे ऐठाम रहए। रातिमे कतए जाएब, कोन डॉक्टर भेटताह आकि नहि भेटताह, संगे संग दोहरा कऽ आक्रमणक डर सेहो रहै। सभ तत्-मत् मे पड़ल रहए। मुदा जेहो सभ घाइल छल ओकरो मूह मलिन नहि छलैक। मनमे खुशी होइत रहए। तेँ दर्दकेँ अंगेजने सभ रहए। इनहोर पानि कए कऽ सभकेँ स्त्रीगण सभ ससारै लगलीह, कपारक फाटल जगहमे सिन्नुर दए-दए खून बन्न केलक। भरि राति कियो सुतल नहि।

रमाकान्तक नाम इलाकामे पसरल छलनि। जहाँ-तहाँ हुनके चरचा बेसीकाल चलैत रहैत। डॉ. महेन्द्रकेँ गाम अबैक जानकारी सेहो सबहक जानकारीमे छलनिहेँ।

जोखनक बात सुनि रमाकान्त बमकि उठलाह। ठाढ़ भऽ जोर-जोरसँ कहए लगलखिन- ''यदि कियो अप्पन इज्जत-आबरु बँचाबैले हमरा कहत तँ हम अप्पन सभ सम्पति ओहि पाछू फुकि देब। मुदा छोड़बैक नहि। बौआ, जते तोरा हुन्नर छह तहिमे कोताही नहि करिहक। खेनाइ-पीनाइ, दवाइ-दारु सभ कथुक मदति कऽ दहक। फेर एहि धरतीपर जनम लेब। ई कर्मभूमि छिऐक। मनुष्य किछु करैक लेल एहिठाम अबैत अछि। सिर्फ अपनहि टा नहि आनो जे कर्मनिष्ट अछि, ओकरो जहाँ धरि भऽ सकत मदति करबैक। जे भऽ गेल से भऽ गेल जोखन, मुदा सुनि लाए जे जहिया-कहियो कोनो भीड़ पड़ए, हमरो एक बेरि खोज करिहह। जाधरि घटमे परान अछि ताधरि जरुर मदति करबह।''

बेर टगैत चारिटा बचिया खाइक लऽ कऽ पहुँचलीह। एक कठौत भात बड़का डोलमे दालि आ छोटका डोलमे तरकारी नेने आइलि छलि। खाइले

केराक पात आ दूटा लोटा सेहो अनने छलि। चारु बचियाकेँ देखि रमाकान्त कहलखिन- "बुच्ची, खाइक किअए अनलह?"

रमाकान्तक बात सुनि सितिया कहलकनि- "बाबा, हमरा सभकेँ नै बुझल छलै, तेँ अनलौं।"

"अच्छा, अनलह तँ सभकेँ पूछि लहुन जे खाएब आकि घुरौने जाएब।"

सितियाक संग रमाकान्त गप-सप करितहि रहथि आकि जोखन बाजल- "कक्का, यैह सभ बचिया मारि कऽ ओहि पाटीकेँ भगौलक।"

अकचकाइत रमाकान्त बजलाह- "आँ-आँइ, यैह सभ छी। वाह-वाह। तोरे सभ सन-सन बेटी एहि धरतीक मान रखि सकैत अछि।"

बिहाड़ि जेकाँ जोखनक बात, रमाकान्तक दरबज्जा आंगनसँ लऽ कऽ गाम धरि पसरि गेल। जे सभ मरदक हँसेरीकेँ अनधुन मारबो केलक, कपारो फोड़लक आ गामक सीमा धरि खेहारबो केलक। ई समाचार सुनि गामक स्त्रीगण मर्द सभ उनटि कऽ ओहि बचिया सभकेँ देखैले आबए लगल। अजीब दृश्य बनि गेल। श्यामा आंगनसँ सुमित्रा दिया समाद पठौलनि जे कने ओहि बचिया सभकेँ अंगना पठा दियौ जे हमहूँ सभ देखब। दरबज्जापर आबि सुमित्रा रमाकान्तकेँ कहलकनि। अंगनाक समाद सुनि रमाकान्त चारु बचियाकेँ कहलखिन- "बेटी, कने आंगन जाइ जाह।"

चारु बचियाकेँ संग केने सुमित्रा आंगन गेलि। ओसारपर ओछाइन ओछा श्यामो आ सुजातो बैसलि छलीह। आगू-आगू सुमित्रा आ पाछू-पाछू चारु बचियो छलि। आंगन जाए चारु बचिया श्यामा आ डॉ. सुजाता दुनू गोटेकेँ गोर लगलकनि। एकाएकी गामक स्त्रीगण, गामक बेटी अंगने जाए-जाए सितिया सभकेँ देखै लगलीह। अपने लगमे चारु बचियाकेँ श्यामा बैसौने रहथि। सुजाता निङहारि-निङहारि चारुकेँ उपर माथसँ लऽ कऽ निच्चा पएर धरि देखैत छलीह, अजीब शक्ति चारुक चेहरामे बुझि पड़लनि। चारु बचियो आँखि उठा-उठा कखनो श्यामापर तँ कखनो गामक स्त्रीगण सभपर दैत छलीह। सबहक मनमे खुशी रहितहुँ, हँसी मूहसँ नहि निकलैत छलनि। जना खुशीक पाछू अदम्य उत्साह अदम्य साहस आ जोश सबहक चेहरापर नचैत रहनि। चारुक विशेष आकर्षण सभकेँ अपना दिशि खिंचैत छल। जेहो स्त्रीगण कने हटि कऽ ठाढ़ भऽ देखैत छलि, ओहो सहटि-सहटि सितियाक लगमे आबए चाहैत छलि। श्यामा सुमित्राकेँ कहलखिन- "सुमित्रा, एहेन लोककेँ आंगनमे कहिआ देखबिही। तँ बिना किछु खेने-पीने कोना जाए देबैक।"

श्यामाक बात सुनि सुजाता उठि कऽ अपन आनल मद्रासी भुजियाक डिब्बे घरसँ उठैने अएलीह। भुजियाक डिब्बा देखि सितिया बाजलि- "बाबी, लगले खा कऽ बिदा भेल छलौं। एको-रत्ती खाइक छुधा नै अछि।"

तहि बीच रमाकान्त चारु गोटेकेँ बजबैले जुगेसरकेँ अंगना पठौलखिन। जुगेसर अंगना आबि सभकेँ कहलक। उठि कऽ चारु गोटे श्यामाकेँ गोर

लगलनि। असिरवाद दैत श्यामा कहलखिन- "भगवान हमरो औरदा तोरे सभकेँ देथुन, जे हँसैत-खेलैत जिनगी एहिना बिताबह।"

चारु गोटेकेँ अंगनासँ निकलितहि सभ बिदा भेलि।

चारिक समए। रौदक गरमियो कमए लगल। महेन्द्र जोखनकेँ कहलखिन- "ऐठाम रोगी सभकेँ रखैक जरुरत नहि अछि। घरेपर साँझ-भिनसर सभ दिन बौएलाल जाए-जाए कऽ सूइया दऽ-दऽ आओत। गोटी सेहो लगातार चलबैत रहब। पनरह-बीस दिनमे पूरा ठीक भऽ जाएत।"

पाएरे सभ बिदा भेल।

साँझू पहर, रमाकान्त आ जुगेसर दरबज्जापर बैसि मद्रासेक गप-सप शुरु केलनि। मुस्की दैत जुगेसर कहलकनि- "कक्का, एक बेर आरो मद्रास चलू।"

नाक मारैत रमाकान्त कहलखिन- "धुः बूड़िबक। गाड़ीमे लोक मरि जाइए। ऐठाम केहेन निचेनसे रहै छी। ने गाड़ी बसक हर-हूड़ अबाज आ ने रस्ता-पेराक ठेकान। सड़क धऽ कऽ चलू। तहूमे सदिखन लोकेक धक्का लगैत रहत। केहेन सुन्दर अपना सबहक गाम अछि जे रस्ताक कोन बात जे आड़िये धुरे खेते पथारे जतए मन हुअए ततए जाउ। ने गाड़ी बसक धक्काक डर आ ने पएरमे काँटी शीशा गरैक। जकरासँ मन हुअए तकरासँ गप करु। कुशल-समाचार पूछि लियौ। ओइठाँ तँ जना मूहमे बकारे नहि रहै तहिना बौक भेल रहैत छलौं।"

व्यंग्य करैत जुगेसर कहलकनि- "केहेन ठंढ़ा घरमे रहै छलौं। ने नहाएले कतौ जाइ पड़ै छलए आ ने पर-पैखानाले।"

रमाकान्त- "धुत् बूड़ि। ओइठाँ जँ दुइयो मास रहितहुँ तँ कोढ़ि भऽ जइतहुँ। उठइयो-बैठइयोमे आसकतिये लगैत। सच पूछैँ तँ एते दिन रहलौं, ने कहियो भरि मन पानि पीलहुँ आ ने पैखाना भेल। सभ दिन जना कब्जियते बुझि पड़ैत। जखने पानि मूह लग लए जाइ आकि मन भटकि जाए।"

फेर मुस्की दैत जुगेसर कहलकनि- "अंगूरक रस पीबैमे केहेन लगैत रहए?"

अंगूरक रस सुनि थोड़े असथिर होइत रमाकान्त कहलखिन- "लोक कहै छै जे अंगूरमे बड़ तागति छै, मुदा अपना सबहक जे केरा, आम, बेल लताम अछि, ओते तागति अंगूरमे कतऽ सँ आओत। अंगूरेक शराब बनैत अछि मुदा अपना ऐठामक भांगक पड़तर करतैक? अंगेरिजा शराब सनसना कऽ मगजपर चढ़ियो जाइत अछि आ लगले उतरियो जाइत अछि। मुदा अप्पन जे भांग अछि ओ रइसी नशाँ छी। ने अपराध करैले सनकी चढ़ौत आ ने एको मिसिया चिन्ता आबए दैत अछि।"

रमाकान्त आ जुगेसरक गप-सप सुजातो अढ़सँ सुनैत रहथि। दुनू गोटेक गप्पो सुनैत आ मने-मन विचारबो करैत छलि। तहि बीच हीरानन्द आ शशिशेखर सेहो टहलि-बूलिकेँ अएलाह। दुनू गोटेक बैसितहि रमाकान्त हीरानन्दकेँ

कहलखिन- ''मास्सैब, खेतक झंझट तँ सम्पन्न भेल। बड़बढ़ियाँ भेल। एकटा बात कहू जे जते लोक गाममे अछि, सभ अप्पन गाम कहैत अछि की ने?''

हीरानन्द- ''हँ। ई तँ कोनो नब नहि अछि। अदौसँ कहैत आएल अछि आ आगूओ कहैत रहत।''

''जखन गाम सभक छिऐक तँ गामक सभ किछु ने सभक भेलैक?''

''तहिमे थोड़े गड़बड़ अछि। गड़बड़ ई अछि जे अखन धरि जे बनैत-बनैत समाज आ गाम अछि ओ टूटैत टूटैत खण्ड-पखण्ड भऽ गेल अछि। तँ एक-एक कँ जोड़ि कऽ समाज बनबए पड़त जे लगले नहि भऽ सकैत अछि।''

हीरानन्द बजितहि रहथि आकि उत्तर दिशिसँ सुबुध आ दक्षिण दिशिसँ महेन्द्र आ बौएलाल सेहो आबि गेलाह। रमाकान्त बौएलालकँ कहलखिन- ''बौएलाल, आब तँ तूँ डाक्टर बनि गेलेँ, मुदा तैयो ऐठाम सभसँ बच्चा तोँही छेँ। जो, चाह बनौने आ।''

डॉक्टरक नाम सुनि महेन्द्रो आ हीरानन्दो मने-मन खुश भेलाह। किएक तँ दुनू गोटेक पढ़ौल बौएलाल अछि। मुस्कुराइत बौएलाल चाह बनबए बिदा भेल। रमाकान्त सुबुधकँ कहलखिन- ''सुबुध, जमीनक ठौर तँ लगि गेल पोखरि बाँचल अछि। शशि नौजवानो छथि। पढ़लो-लिखल छथि आ लूरियो छन्हि। पोखरिमे माँछ पोसैत।''

सुबुध- ''बड़ सुन्दर विचार अपनेक अछि काका। हमहूँ यैह सोचै छलौं जे गाममे तँ दुइयेटा चीज माटि आ पानि अछि। तँ दुनूकँ एहेन ढंगसँ उपयोग कएल जाए जे जहिना एक गोटेकँ पाँचटा बेटा भेने पाँच गुना परिवार बढ़ि जाइत छैक तहिना खेतो आ पाइनोक होए। ढ़ंगसँ मेहनति आ नव तरीका अपनाओल जाए। जहिसँ मनुक्खे जेकाँ ओहो पाँचो गुनाक रफ्तारसँ किएक ने आगू बढ़त। जँ एहन रफ्तार पकड़ि लै तँ गामकँ बढ़ैमे कते देरी लागत। बीस बीघासँ उपरे गाममे पानि अछि जे बैशाखो-जेठमे नहि सुखैत अछि। अगर जँ महा-अकालो पड़ि जाएत तैयो बोरिंगक सहारासँ उपजि सकैत अछि। अखन धरि सभ पोखरि ओहिना पड़ल अछि। सौँसे पोखरि केचली, घास छाड़ने अछि। ने नहाए जोकर अछि आ ने माछ-मखान करै जोकर। जे इलाका माछ-मखानक छी, ओहि इलाकाक लोककँ माछ-मखान नहि भेटै, कते लाजक बात छी। एहि लाजक कारण की हम सभ नहि छिऐक? जरुर छिऐक। भलेहीं हरसी-दीरघी कए अपनाकँ निर्दोष साबित कऽ ली, मुदा....। अखन देखै छी जे किछु सुभ्यस्त परिवारकँ तँ माछे-मखानक कोन बात जे अहूसँ नीक-नीक वस्तु भेटैत अछि। मुदा विशाल समूहक गति की छैक? जितिया पावनिमे माछसँ भेंट होइ छैक आ कोजगरामे दूटा मखान देखैत अछि। तँ मनुष्यकँ खुशहाल बनैक लेल वस्तुक परियाप्तता जरुरी अछि। जँ वस्तुक कमी रहत तँ खुशहाली आओत कोना?''

सुबुध बजितहि रहथि आकि बौएलाल चाह नेने आएल। चाह देखितहि केयो कुरुड़ करए उठलाह तँ कियो तमाकू थुकरैले। जुगेसर चाह बँटए लगल। एक

घोंट चाह पीबि हीरानन्द महेन्द्रकेँ पुछलखिन- "डॉक्टर साहेब, कते दिनक छुट्टीमे आएल छी?"

हीरानन्दक प्रश्न सुनि महेन्द्र असमंजसमे पड़ि गेलाह। मने-मन सोचए लगलाह जे कोना चिट्ठीक चरचा करब। चिट्ठीक बात तँ सोलहन्नी झूठ निकलल। जँ बेसी दिनक छुट्टीक चरचा करब तँ सेहो झूठ हएत। धड़फड़ीमे आएल छी। की कहिअनि की नहि कहिअनि। विचित्र स्थितिमे महेन्द्र पड़ि गेलाह। मुदा बिचहिमे जुगेसर टपकल- "येह मास्सैब, डाकडर सहाएब तँ आला भऽ गेलाह। कोनो चीजक कमी नहि छन्हि। जखन अपना गाड़ीमे चढ़ा कऽ बुलबैत छलाह तँ बुझि पड़ैत छल जे इन्द्रासनमे छी।"

हीरानन्दक बात तर पड़ि गेलनि। मने-मन सोचलनि जे भरिसक पिता दुआरे गुमकी लधने छथि। सभ कियो चाह पीबि-पीबि गिलास बौएलालकेँ देलखिन। सभ गिलास लऽ बौएलाल अखारैले कलपर गेल। तहि बीच सुबुध महेन्द्रकेँ कहलखिन- "महेन्द्र भाय, गामक लोककेँ जे देह देखै छिऐ तहिसँ की बुझि पड़ैत अछि, जे किछु नहि किछु रोग सभकेँ पछारनहि छैक। तेँ सभकेँ जाँचि कऽ इलाज कए दियौक।"

सुबुधक प्रश्न महेन्द्रकेँ जँचलनि। कहलखिन- "अपनो विचार अछि। चारि-पाँच दिन जँचैमे लगत। सभकेँ जाँचि, जहाँ धरि भऽ सकत तहाँ धरि इलाजो कइये दितिऐक। आइ तँ भरि दिन दोसरे ओझरीमे ओझरा गेलहुँ, मुदा काल्हिसँ एहिमे लगि जाएब।"

शशि पुछलकनि- "डॉक्टर साहेब, बुढ़ा पिताजी- जे अप्पन सभ खेत बाँटि देलनि तहि लेल अपनेक..?"

शशिशेखरक बात सुनि मुस्कुराइत महेन्द्र कहलखिन- "दू भाँइ छी दुनू भाँइकेँ डॉक्टर बना देलनि। एहिसँ बेसी एक पिताक पुत्रक प्रति की बाकी रहि जाइत अछि जे किछु कहबनि। खेतक बात अछि, हम थोड़े खेती करए आएब। तखन तँ जे खेती करैबला छथि जँ हुनका हाथमे गेलनि तँ एहिसँ बेसी उचित की होएत। बाबाक अरजल खेत छिअनि, जकर हकदार तँ वैह छथि। जँ अप्पन सम्पति लुटाइये देलनि तहिसँ हमरा की। वैरागी पुरुषकेँ रागी बनाएब पाप छी।"

पुनः शशिशेखर पुछलखिन- "मद्रासमे केहेन लगैत अछि?"

किछु मन पाड़ैत कने रुकि महेन्द्र कहए लगलखिन- "जहिया डॉक्टरीक शिक्षा पेलहुँ तहिया नीक बुझि मद्रास गेलहुँ। मुदा अखन एहिठामक सिनेह हृदयकेँ तेना पकड़ि लेलकहेँ जेना छातीमे लगल तीरसँ पक्षी छटपटाइत अछि। होइत अछि जे मद्रासक सभ किछु छोड़ि-छाड़ि एहिठाम रही। कतएसँ जिनगीक लीला शुरु कएल जाए, ई गंभीर प्रश्न अछि। एहि प्रश्नक बीच मन ओझरा गेल अछि। स्पष्ट उत्तर नहि भेटि रहल अछि। किएक तँ एहि प्रश्नक उत्तर दृष्टिकोणक मुताबिक भिन्न-भिन्न भऽ जाइत अछि।"

१३

गामक दुखताहक दुख जाँचि दवाइ देबाक समाचार गाममे पसरि गेल। काल्हि भिनसरसँ सभ टोलक दुखताहकेँ बेरा-बेरी जाँचो होएत आ दवाइयो देल जाएत।

भिनसर होइतहि ओहि टोलक लोक आबए लगलाह जहि टोलक पार छलनि। मर्दक जाँच महेन्द्र करथि आ स्त्रीगणक डॉ. सुजाता। डॉ. महेन्द्रक मदतिक लेल बौएलाल आ सुजाताक लेल सुमित्रा रहथि।

तीन दिनमे सौँसे गामक रोगीक जाँच भेलनि। दवाइयो भेटलनि। लोकक बीच एहन खुशी दौड़ि आएल जना गामसँ बीमारीये पड़ा गेल होए। सभक मनक खुशी एक्के रंगक रुप बना नचैत छलीह। मनमे एहन खुशी जे आब ने हमरा देहमे कोनो रोग अछि आ ने मरब। खुशीक नाच एहन छल जेना रोग देखियेकेँ भगि गेल होए। मुदा जिनगीमे तँ यैहटा रोग तँ नहि अछि, आरो बहुत तरहक अछि। मुदा ई तँ मनक बात छल। ई मनक बात छी मुदा वास्तविक बात की छल? से तँ लोकेमे देखए पड़त।

सभ दिन भलेसराकेँ देखै छेलिऐ जे दुखताहे अछि जहिसँ काज काज-उद्यम छोड़ि देने छल, मुदा आइ बड़का छिट्टामे छाउर गोबर नेने खेत फेकैले जाइत छल। रस्तामे सोनमा पुछलकै तँ कहलकै जे आब देहमे कोनो दुख नहि अछि। जाइ छी छाउरो फेकि लेब आ गरमा धानो काटि कऽ नेने आएब। तहिना तेतरो पटैमे गाँथि, दूटा धानक बोझ कन्हापर उठैने अबैत रहए।

सोनमाक मनमे नचै लगलै जे एना कोना भेलै? देखै छिऐ जे लहेरियासराय असपतालमे छअ-छअ मास रोगीकेँ लोहाबला खाटपर रखि, सूइयो पड़ै छै आ गोलियो खाइले देल जाइ छै, तैयो मरि जाइए। मुदा एहि गामक दुखताहक दुख कोना एते असानीसँ पड़ा गेलै। अजीब भेलै। ओह, भरिसक दुख ककरा कहै छै से बुझबे ने करै छी। जब अपने बुझबे नै करै छी तब बुझबै कना? जँ अपने सोचि बुझए चाहबै आ गलतिये सोचा जाए तखन तँ गलतिये बुझबै। गलती बुझब आ नहि बुझब, दुनू एक्के रंग। बिनु बुझलो काज लोक करए लगैत अछि आ गलतियो काज करैत अछि। भलेहीं दुनूक फल अधले होए मुदा करै तँ अछि। तब की करब? जकरा बुझै छिऐ जे फल्लाँ बुझनिहार अछि जँ ओकरो नइ वुझल होए आ झुठे अन्ट-सन्ट कहि दिअए। ततबे नहि जे बुझिनिहारो अछि आ ओकरा पूछिऐ जँ ओ गलतिये कहि दियए, तैयो तँ ओहिना रहि जाएब। मुदा तोहूमे एकटा बात अछि जे, जे ओ कहै आ हम करी आ तेकर फल गल्ती होए तँ दोखी के हएत? तब की करब? आब उमेरो ने अछि जे इस्कूलोमे जा कऽ पढ़ब। धिया-पूता सभ इस्कूलमे पढ़ैत अछि। मुदा जखैन इस्कूल जाइबला रही, तखन किअए ने पढ़लौं। पढ़लौं कोना नै, इस्कूलमे नाओ

लिखौनहि रही। पाँच किलास तक पढ़बो केलौं। तँ छोड़ि किअए देलिऐ? छोड़लिऐ की मास्टर मारिकँ छोड़ा देलक। मास्टर मारिकँ किअए छोड़ा देलक? जखैन छअ किलासमे गेलौं आ अंग्रेजी मास्टर आबिकँ पढ़बै जे बी.यू.टी.- बट। पी.यू.टी.- पुट। तेहिपर ने कहने रहिऐ जे अहाँ गलती पढ़बै छिऐ। कोनो गलती कहने रहिऐ। जब गलती नै कहने रहिऐ तब ओ मारलक किअए। नै पढ़बैक मन रहै तँ ओहिना कहितए जे तोरा नइ पढ़ेबौ। इस्कूलसँ चलि जो। मारलक किअए। जँ मारबो केलक तँ हमरा मनकँ तँ बुझा दइतै। हमर मन मानि लैत। मन मानि लैत, भऽ गेलैक। से तँ नै केलक। तँ ने हम मुरुख रहि गेलौं। नइ तँ हमर की हाथ-पएर कोनो पातर-छितर अछि जे दरोगा नइ बनलौं। हमर जे दरोगाक नोकरी गेल से उ मास्टर हमरा देत। जे मारि कऽ इस्कूल छोड़ा देलक। धिया-पूतामे सैह भेल, चेतनमे तहिना देखै छी। आब कना जीब? भरिसक हमरो ने तँ बतहा दुख पकड़ि लेलकहें। ककरासँ पुछबै, के कहत, सभकँ तँ सैह देखै छिऐ। की हम भरि जिनगी हरे जोतैत रहब, घोड़ापर चढ़ि कऽ शिकार खेलैले कहिया जाएब? दुनू हाथ माथपर लऽ सोनमा गाछक निच्चामे बैसि सोचैत, जहिना आमोक गाछ रोपल जाइ छै, तहिना तँ खाइरो-बगुरक रोपल जाइ छै। मुदा आममे मीठहा फल फड़ै छै, खैर-बगुरमे काँट होइत छैक। रोपैक इलम तँ एक्के होइ छै। ओना अनेरुओ होइ छै। आमोक गाछ अनेरुओ होइ छै आ खाइरो-बगुरक।

साते दिनक छुट्टीमे महेन्द्र गाम आएल छलाह। आठ दिन पहिनहि छुट्टी बीति गेलनि। अबै जाइक रस्ता सेहो मद्रासक पाँच दिनक अछि। छुट्टी बढ़बै पड़तनि। काल्हि भोरका गाड़ीसँ चलि जएताह, ई बात सुबुधोकँ बुझल छलनि। तँ सुबुधक मनमे अएलनि जे महेन्द्र बच्चेक संगी छी, मुदा भरि मन गप एक्को दिन नहि कएलहुँ। काल्हि भोरमे चलिये जाएत। तँ आइये भरि समए अछि। ई सोचि सुबुध अपन सभ काज छोड़ि महेन्द्रसँ गप्प करैक लेल अएलाह।

दरबज्जापर बैसि महेन्द्र पिताकँ कहैत रहथि- "बाबू, गामक जत्ते रोगीकँ जँचलहुँ ओहिमे एक्को गोटे पैघ रोग, जना टी. वी., कैंसर, एड्स इत्यादिसँ ग्रसित नहि अछि। तँ आश्चर्य लगैत अछि जे बीमारी शहर-बजारमे धड़ल्लेसँ होइत अछि। ओहि रोगक नामे-निशान गाममे नहि अछि। जे खुशीक बात छी।"

महेन्द्रक रिपोर्ट सुबुधो सुनलनि। खुशीक बात सुनि रमाकान्त पुछलखिन- "तखन जे एते लोक बीमार अछि, ओकरा कोन रोग छै?"

मुस्की दैत महेन्द्र कहलखिन- "साधारण रोग। जे बिना दवाइओ-दारुसँ ठीक भऽ सकैत छैक। अगर ओकर खान-पान सुधरि जाए तँ ई सभ रोग लोककँ नहि हेतैक। अदहासँ बेसी रोगी ओहन अछि जकरा कोनो रोग नहि सिर्फ शंका छैक। मुदा जँ ओकरा दुइयो-चारिटा गोली नहि दितिऐक तँ मन नहि मानितैक। तँ पुरजो बना देलिऐक, अल्लासँ देहो हाथ देखि लेलिऐक आ दू-चारिटा गोलियो दऽ देलिऐक।

महेन्द्रक बात सुनि रमाकान्तो आ सुबुधो मने-मन हँसए लगलाह। हँसी रोकि सुबुध महेन्द्रकेँ पूछल- “महेन्द्र भाय, काल्हि तँ तूँ चलि जेबह, फेर कहिया भेंट हेबह कहिया नहि। तेँ तोरेसँ गप-सप करैले अप्पन सभ काज छोड़ि एलहुँ। जिनगीक तँ ढेरो गप्प होइत, मुदा तोँ डॉक्टर छिअह आ हम शिक्षक छलौं, जे आब नहि छी। मुदा रोगक कारण बुझैक जिज्ञासा तँ जरुर अछि। तेँ अखन रोगेक संबंधमे किछु बुझए चाहै छी।”

“की? ”

“पहिल सवाल बताहेक लाए। जखन बताह दिस तकै छी तँ बुझि पड़ैए जे जते मनुख अछि सभ बताह अछि।”

धड़फड़ा कऽ रमाकान्त पूछि देलखिन- “से कोना?”

“कक्का, जे एक नम्बर प्रशासक छथि, जे एक इलाकासँ लए कऽ देश भरिक शासनमे दक्ष रहैत छथि ओ परिवारक शासनमे लटपटा जाइत छथि। तहिना देखै छी जे, जे बड़का-बड़का हिसाबी गणितज्ञ छथि ओ जिनगीक हिसाबमे फेल कऽ जाइत अछि। तहिना देखै छी जे, जे बड़का-बड़का इंजीनियर छथि ओ परिवारक नक्शा बनबैमे चूकि जाइ छथि। नेताक तँ कोना बाते नहि। किएक तँ जहिना गोटे साल मानसुन अगते उतरि खूब बरिसैत अछि जहिसँ बेंगक वृद्धि अधिक भऽ जाइत छैक, तहिना ओकरो छैक।

मुस्की दैत रमाकान्त कहलखिन- “हँ, ठीके कहै छहक।”

“ततबे नहि कक्का, कियो ताड़ी-दारु पीबै पाछू बताह अछि, तँ कियो धनक पाछू। कियो पढ़ैक पाछू बताह रहैत, तँ केयो ऐश-मौजक पाछू। कियो खाइ पाछू बताह तँ कियो ओढ़ै-पहिरै पाछू बताह। कियो काजेक पाछू बताह रहैत, तँ कियो अरामेक पाछू। कियो खेले-कुदक पाछू बताह रहैत, तँ कियो नाचे-तमाशाक पाछू। एते बताहक इलाज कतए हैत। ततबे नहि, एक रंगक बताह दोसरकेँ बताह कहैत आ दोसर तेसरकेँ। तहिना कियो शरीरक रोगसँ दुखित वा रोगी कहबैत तँ कियो अन्नक अभावसँ, तँ कियो वस्त्रक अभाव वा घरक अभावसँ दुखी होइत। तहिना कियो कोनो उकडू बात सुनलासँ होइत। एहि दृष्टिये जँ देखल जाए तँ कते लोक निरोग अछि। ततबे नहि जँ एक-एक गोटेमे देखल जाए तँ कए-कएटा रोग धेने अछि। मुदा ई सभ उपरी बात भेल। मूल प्रश्न अछि जे बसन्त ॠतुक गुलाब जेकाँ जिनगी सबदिन फुलाइत रहै।”

गुलाबक फूल जेकाँ फुलाइत जिनगी सुनि महेन्द्र नमहर साँस छोड़लनि। आँखि उठा सुबुधक आँखिपर देलनि। सुबुधक नजरिसँ नजरि मिलितहि जना महेन्द्रकेँ बुझि पड़लनि जे अथाह समुद्रमे सुबुध हेलि रहल छथि। आ हम छोट-छीन पोखरिमे उग-डूब कऽ रहल छी। ई बात मनमे अबितहि महेन्द्र अप्पन माए-बापसँ लए कऽ अपन भैयारी होइत, धिया-पूता दिशि नजरि दौड़ौलनि। जे कते आशासँ पिता जी हमरा दुनू भाँइकेँ पढ़ौलनि, मुदा हम हुनकासँ कत्ते दूर हटि कऽ रहै छी। एते दूर हटल रहलापर कोना हुनका सेवा कऽ सकबनि। आब हुनका सेवाक जरुरति दिनोदिन बेसिये होइत जेतनि। उमेरो अधिक भेलनि आ

दिनानुदिन बढ़िते सेहो जेतनि। जते उमेर बढ़तनि तते शरीरक अंग कमजोर हेतनि। जते अंग कमजोर हेतनि तते शरीरक क्रियामे रुकावट हेतनि। जहिसँ कते नव-नव रोग शरीरमे प्रवेश करतनि। जते रोग शरीरमे प्रवेश करतनि तते कष्ट हेतनि। की ओहि कष्टक जिम्मेवार हम नहि हेबै। ताहि लेल करैत की छिऐक? किछु नहि। अखन हम सभ दुनू भाँइ आ दुनू पत्नी जवान छी, मुदा किछु दिनक उपरान्त तँ हमहूँ सभ हुनके जेकाँ बूढ़ होएब। कोनो जरुरी नहि अछि जे हमरो सबहक बेटा हमरे सभ लग रहत। अखन तँ हम देशेमे छी। अंतर ऐतबे अछि जे देशक एक छोरपर ई सभ छथि आ दोसर छोरपर हम सभ छी। मुदा आइक जे हवा बहि रहल अछि जे आन-आन देशमे जाए लोक नोकरी करैत अछि आ जीवन-यापन करैत अछि। जँ कहीं हमरो संगे सैह हुअए तखन की होएत? एते बात मनमे अबैत-अबैत महेन्द्रक चेहरा उदास हुअए लगलनि। मन बौआए लगलनि। देहसँ पसीना निकलए लगलनि। बुझि पड़ए लगलनि जे देह शक्ति विहीन भऽ रहल अछि। एक्को पाइ लज्जति देहमे अछिये नहि। पसीनासँ तर-बत्तर होइत महेन्द्र सुबुधकेँ कहलखिन- "सुबुध भाय, जिनगीक अजीब रस्ता अछि। जते मनुक्ख एहि धरतीपर जन्म लेने अछि, ओकरा तँ जिनगी बीतबै पड़तैक। मुदा जिनगीक रस्ता एहेन पेंचगर अछि जे विरले क्यो-क्यो बुझि पबैत अछि, बाकी सभ औनाइते रहि जाइत अछि।"

मुस्कुराइत सुबुध महेन्द्रकेँ कहलखिन-"महेन्द्र भाय, अहाँ तँ डॉक्टर छी। पढ़ल-लिखल लोकक बीच सदिखन रहबो करैत छी। अहाँ किअए एहेन बात कहि रहल छी। हम तँ जाबे मास्टरी केलहुँ ताबे धिया-पूताकेँ पढ़ेलहुँ आ जखन नोकरी छोड़ि गाममे रहै छी, तखन जेहन समाजमे रहै छी से देखबे करैत छी।"

महेन्द्र- "भाय, अहाँ जे बात कहलहुँ ओ तँ आँखिक सोझामे जरुर अछि मुदा अहाँमे मनुक्ख चिन्हैक आ ओकरा चलैक रस्ताक लूरि जरुर अछि। अहाँ अपनाकेँ छिपा रहल छी।"

महेन्द्रक बात सुनि रमाकान्तकेँ भेलनि, जे आदमी घरसँ हजारो कोस दूर हटि, कमा कऽ एत्ते बनौलक ओ अपनाकेँ एते कमजोर किअए बुझि रहल अछि। मुदा दुनू संगीक बीच नहि आबि गुम्मे रहलाह। बैसले-बैसल एक बेर महेन्द्रकेँ देखथि आ एक बेर सुबुधकेँ।

अपनाकेँ छिपाएब सुनि सुबुध बजलाह- "महेन्द्र भाय, जाहि प्रश्नक बीच अहाँ ओझरा रहल छी ओ प्रश्न एतेक ओझड़ाओठ नहि अछि। मुदा असानो नहि अछि। सिर्फ आँखिमे ज्योति आनि देखिकेँ चलैक अछि।"

दलानक आंगना दिसक भितुरका कोठरीमे बैसि सुजाता खिड़की देने सभकेँ देखबो करैत आ गप्पो-सप सुनैत रहथि। कखनो मनमे खुशियो अबैत छलनि तँ कखनो मन कड़ुऐबो करनि। मुदा किछु बाजथि नहि। बाजब उचितो नहि बुझैत। ओना पढ़ल-लिखल रहने, कखनो कऽ बजैक मन जरुर होइ छलनि। मुदा किछुए दिनमे सासु मिथिलाक रीति-रेवाज आ व्यवहारक संबंधमे तेनाकेँ बुझा

देलकनि जे मद्रासक सुजाता मिथिलाक सुजाता बनि गेलीह। मूहपर नुआ राखब तँ उचित नहि बुझथि मुदा बाजब-भूकबपर नजरि जरुर रखए लगलीह। किनकासँ कोन ढंगे बाजी, कते आबाजमे बाजी, कोन शब्दक प्रयोग करी, एहि सभपर नजरि अवश्य रखए लगलीह। तँ बोली संयमित भऽ गेलनि। ओना एहिठामक चालि-ढालि पूर्ण रुपेण नहि अंगीकार कऽ सकल रहथि, मुदा अंगीकार करैक पूर्ण चेष्टा करए लगलीह।

सुबुधक ऊट-पटांगो बातसँ महेन्द्रकेँ दुख नहि होइत छलनि। हल्लुको बातमे ओ गंभीर रहस्यक अनुमान करए लगलथि। भलेहीं ओ गंभीर नहि हल्लुके किएक ने होए। महेन्द्रक गंभीर मुद्रा देखि सुबुध सोचलनि जे आब ओ गंभीर बात बुझैक चेष्टामे उताहुल भऽ रहल छथि। तँ जिनगीक गंभीर बातकेँ खोलि देब उचित होएत। कहलखिन- “महेन्द्र भाय, अपना गाममे सभसँ अगुआएल परिवार अहाँक अछि। चाहे धन-सम्पतिक हुअए वा पढ़बा-लिखबाक। मुदा कने गौर कए कँ देखियौ जे एत्ते धन-सम्पत्तिक उपरान्तो धनेक पाछू हजारो कोस घरसँ हटि कऽ रहै छी। अहीं कहू जे कत्ते धन भेलापर मनमे संतोष होएत। मुदा एहि प्रश्नक दोसरो पक्ष अछि, आ ओ ई अछि, ‘विश्व-बंधुत्व’क विचार। अपनो एहिठामक महान्-महान् चिन्तक एहि विचारकेँ सिर्फ मानबे नहि केलनि बल्कि बनबैक प्रयासो केलनि। ओना सैद्धान्तिक रुपमे विश्व-बंधुत्वक विचार महान् अछि मुदा जते महान् अछि ओहिसँ कनियो कम व्यवहारिक बनबैमे असान नहि अछि। लोक गामक वा आन गामक देवस्थानमे दीप जरबै, साँझ दैसँ पहिने अपना घरक गोसाइक आगूमे दीप जरबैत अछि, जे उचिते नहि गंभीर विचारक दिग्-दर्शन सेहो थिक। तहिना सभकेँ अपना लगसँ जिनगीक लीला शुरु करक चाहिऐक। अपनासँ आगू बढ़ि समाज, समाजसँ आगू बढ़ि इलाका, इलाकासँ आगू बढ़ि देश-दुनियाँ दिस बढ़ैक चाहिऐक। जँ से नहि कऽ कियो परिवार-समाज छोड़ि आगू बढ़ि करैत अछि, तँ कतहुँ नहि कतहुँ गड़बड़ जरुर हेतैक। जहिना दुनियामे समस्याग्रस्त मनुष्य असंख्य अछि, तहिना तँ ओहि समस्यासँ मुकबलो करैबला मनुष्य असंख्य अछि। एक्के आदमीक कएलासँ तँ दुनियाक समस्या नहि मेटा सकत। तँ जे जेतए जन्म नेने छी ओ ओतए इमानदारी आ मेहनतसँ कर्ममे लगि जाउ।”

सुबुधक प्रश्नकेँ स्वीकार करैत महेन्द्र कहलखिन- “हँ, ई दायित्व तँ मनुष्यमात्रक थिक।”

सुबुध- “जखन ई दायित्व सभ मनुष्यक छी तँ अपने गाममे देखियौ! एहि सालसँ, जखन सभकेँ खेत भेलै, थोड़-बहुत खुशहाली गाममे एलै। मुदा एहिसँ पहिने तँ देखै छेलिऐक जे ने सभकेँ भरि पेट खेनाइ भेटै छलै आ ने भरि देह वस्त्र। ने रहैक लेल सुरक्षित घर छलै, ओना अखनो नहि छैक, आ ने रोग-व्याधिसँ बचैक कोनो उपाए। बाजू, छलै की नइ छलै?”

“हँ, छलैक।”

“आब अहीं कहू जे हमर-अहाँक जन्म तँ अही समाजमे भेल अछि। की हम ओते कमजोर छी जे गाम छोड़ि पड़ा जाएब, पड़ाइक मतलब, जतए पेट भरत। जँ कियो पड़ाइत अछि तँ ओकरा कायर, कामचोर छोड़ि की कहबैक? मुदा तैयो लोक जाइत किएक अछि? एकरो कारण छैक। एकर कारण छैक अधिक पाइ कमाएब वा कम मेहनतसँ जिनगी जीब। मुदा कम मेहनतसँ जिनगी असानीसँ जीब ताधरि संभव नहि अछि, जाधरि मेहनतसँ देशकेँ समृद्धिशाली नहि बना लेब। अगर जँ किछु गोटेकेँ समृद्धशाली भेने देशकेँ समृद्धशाली बुझब तँ ओ नेने-नेने गुलामीक जंजीरमे बान्हि देत। कोनो देश गुलाम नहि होइत, गुलाम होइत अछि ओहि देशक मनुक्ख आ गुलामी होइत ओकर जिनगीक क्रिया। पाइबला सबहक जादू समाजमे ओहि रुपे चलि रहल अछि जहिना हम-अहाँ पोखरिमे कनेक बोर दऽ बनसी पाथि दै छिऐक आ नमहर-नमहर माछ भोजनक लोभे फँसि जाइत अछि, तहिना मनुक्खोक बीच चलि रहल अछि। ओहिकेँ नजरि गड़ाकेँ देखै पड़त।”

सुबुधक विचारकेँ महेन्द्र मूड़ी डोला मानि लेलनि। मुदा मुड़ी डोलौलाक उपरान्तो मनमे किछु शंका रहबे कएल छलनि। जे सुबुध मूहक हाव-भावसँ बुझि गेलखिन। पुनः अपन विचारकेँ आगू बढ़बैत कहए लगलखिन- “अपना एहिठामक दशा देखियौ। जकरा अपना सभ क्रीम ब्रेन कहै छिऐ, ओ थिक वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर इत्यादि। ओ सभ आन-आन देश जाए अपन बुद्धिकेँ पाइबलाक हाथे बेचि लैत छथि। भलेहीं किछु अधिक पाइ कमा लैत होथि, मुदा ओ ओहि धनिककेँ आरो धन बढ़बैत छथि। नव-नव मशीन, नव-नव हथियारक अनुसंधान कएकेँ पछुएलहा देशपर आक्रमण कऽ वा व्यापारिक माल बेचि आरो पछुअबैत अछि। एकटा सवाल आरो मनमे अबैत होएत। ओ ई जे अपना देशमे ओतेक साधन नहि अछि जे ओ अपन बुद्धिक सदुपयोग कऽ सकताह। तँ अपन बुद्धिक सदुपयोग करैक लेल आन देश जाइत छथि। मुदा हमरा बुझने एहि तर्कमे कोनो दम्म नहि छैक। आइ धरिक जे दुनियाँक इतिहास रहल ओ यैह रहल जे सम्पन्न देश सदिखन कमजोर माने पछुआएल देशकेँ लुटैत रहलैक। चाहे लड़ाइक माध्यमसँ होए वा व्यापारक माध्यमसँ। जहिसँ जेहो सम्पत्ति-साधन ओहि देशकेँ रहैत, ओहो लुटा जाइत अछि। जखन ओ लुटा जाएत तखन आगू मुँहे कोना ससरत?”

माथ कुड़िअबैत महेन्द्र पुछलखिन- “तखन की करक चाही?”

सुबुध- “आँखि उठा कऽ देखिऔ जे दुनियाँमे क्यो बिना अ,आ पढ़ने विद्वान् बनि सकल अछि वा बनि सकैत अछि? जँ से नहि बनि सकैत अछि तँ पछुआएल देश वा लोक, बिना कठिन मेहनत केने आगू बढ़ि सकैत अछि। तँ पछुआएल देश वा लोककेँ एहि बातकेँ बुझए पड़तनि। जँ से नहि बुझि अगुएलहाक अनुकरण करताह, तँ पुनः गुलामीक बाटपर चलि अओताह। कते लाजिमी बात छी जे हम अपने बनाओल हथियारसँ अपने घाइल होइ। आब दोसर दिशि चलू!”

''अपना ऐठाम जे परिवारक ढाँचा, अदौसँ रहल, ओ दुनियाँमे सभसँ नीक रहल अछि। आइक चिन्तनमे दुनियाँ परिवारवाद दिशि बढ़ल अछि। जे हमरा सबहक संयुक्त परिवारक रुपमे धरोहर अछि। मनुक्खक जिनगी कतेटा होइ छै, एहिपर नजरि दियौ। तीन अवस्था तँ सभक होइ छैक। बच्चाक, जवानीक आ बुढ़ारीक। एहिमे दू अवस्था बच्चा आ बुढ़ारीमे दोसराक मदतिक जरुरत पड़ैत छैक। जे एकांगी परिवारमे नहि भऽ पाबि रहल छैक। आइक जे एकांगी परिवार बनि गेल अछि, ओ कुम्हारक घरारी जेकाँ भऽ गेल अछि। जहिना कुम्हारक घरारी बेसी दिन धरि असथिर नहि रहैत, तहिना भऽ रहल अछि। बाप-माए कतौ, बेटा-पुतोहू कतौ आ धिया-पूता कतौ रहए लगल अछि। मानवीय स्नेह नष्ट भऽ रहल अछि। सभ जनै छी जे काँच बरतन जेकाँ मनुष्य होइत अछि। कखन की एहि शरीरमे भऽ जाएत, तकर कोनो गारंटी नहि छैक। स्वस्थ अवस्थामे तँ मनुष्य कतौ रहि जीबि सकैत अछि मुदा असवस्थक अवस्थामे तँ से नहि भऽ सकैत छैक। तखन केहेन कष्टकर जिनगी मनुष्यक सामने उपस्थित भऽ जाइत छैक तोहूपर तँ नजरि देमए पड़त।''

सुबुधक विचार महेन्द्रकेँ झकझोड़ि देलकनि। देहमे कम्पन आबि गेलनि। बोली थरथराए लगलनि। कने काल असथिर भऽ मनकेँ असथिर केलनि। मन असथिर होइतहि सुबुधकेँ कहलखिन- ''सुबुध भाय, भलेहीं हाइ स्कूल धरि संगे-संग पढ़लहुँ, मुदा जिनगीकेँ जहि गहराइसँ अहाँ चिन्हलहुँ, हम नहि चीन्हि सकलहुँ। सच पूछी तँ आइ धरि अहाँकेँ साधारण हाइ स्कूलक शिक्षक बुझैत छलहुँ मुदा ओ भ्रम छल। संगी रहितहुँ अहाँ गुरु छी। कखनो काल, जखन एकांत होइ छी, अपनो सोचै छी जे एते कमाइ छी, मुदा दिन-राति खटैत-खटैत चैन नहि भऽ पबैत छी। कोन सुखक पाछू बेहाल छी से बुझिये ने रहल छी। टी.भी. घरमे अछि, मुदा देखैक समए नहि भेटैत अछि। खाइले बइसै छी तँ चिड़ै जेकाँ दू-चारि कौर खाइत-खाइत मन उड़ि जाइत अछि, जे फल्लाँकेँ समए देने छिऐ, नहि जाएब तँ आमदनी कमि जाएत। तहिना सुतइयोमे होइत अछि। मुदा एते फ्रीसानीक लाभ की भेटैत अछि? सिर्फ पाइ। की पाइये जिनगी छिऐक?''

महेन्द्रक बदलल विचार सुनि, मुस्की दैत सुबुध कहलखिन- ''भाय, पाइ जिनगी चलैक साधन छी, नहि कि जिनगी। पाइक भीतर एते पैघ दुर्विचार छिपल अछि, जे मनुष्यकेँ कुकर्मी बना दैत अछि। कुकर्मी बनलापर मनुष्यत्व समाप्त भऽ जाइत छैक। जाहिसँ चीन्ह-पहचीन्हि समाप्त भऽ जाइत छैक। आपराधिक वृत्ति पनपै लगैत छैक। आपराधिक वृत्ति, मनुष्यमे अएलापर पैघसँ पैघ अपराधमे मनुष्यकेँ धकेलि दैत छैक। तँ अपन जिनगीकेँ देखैत परिवार, समाजक जिनगी देखब जिनगी छी। ओना मनुष्यमात्रक सेवाक लेल सेहो सदिखन तत्पर रहक चाही। जहाँ धरि भऽ सकए, करबो करी। मुदा कर्मक दुनियाँ बड़ कठिन अछि। एत्ते कठिन अछि जे कर्मठसँ कर्मठ लोक रस्तेमे थाकि जाइत छथि। मुदा ओ थाकब हारब नहि जीतब छी। जे समाज रुपी गाछ मौला गेल अछि,

ओहिमे तामि, कोड़ि, पटा नव जिनगी देबाक अछि। जाहिसँ ओहिमे फूल लागत आ अनबरत फुलाइत रहत। एहि काजमे अपनाकेँ समर्पित कऽ देबाक अछि।''

सुबुधक संकल्पित विचारसँ महेन्द्रक विचार सेहो सक्कत बनए लगलनि। आँखिमे प्रखर ज्योति अबए लगलनि। दृढ़ स्वरमे पितो आ सुबिधोकेँ कहलखिन- ''दुनू गोटेक बीच बजै छी जे सालमे एक्को दिन ओहन नहि बँचत जहि दिन हमरा चारु -दुनू भाँइ आ दुनू स्त्रीगण- गोटेमे सँ कियो नहि क्यो एहिठाम नहि रहब। ओना मद्रासोमे अज-गज बहुत भऽ गेल अछि, ओकरो छोड़ब नीक नहि होएत, मुदा परिवारो आ समाजोकेँ नहि छोड़ब। मद्रासक कमाइ परिवारो आ समाजोमे लगाएब। अखन तँ ओते अनुभव नहि अछि, मुदा चाहब जे समाजमे बीमारीक लेल जे खर्च हएत ओ पूरा करब। जहिना पिताजी समाजक खाइक ओरियान कऽ देलखिन तहिना स्वास्थक ओरियान जरुर कऽ देब। समाजकेँ कहि दिअनु जे जकरा ककरो कोनो रोग बीमारी होए ओ आँखि मूनिकेँ एहिठाम चलि आबथि। ओकर इलाज जरुर हेतै। अइबेर बिना नियारे गाम आएल छलहुँ तँ किछु लएकेँ नहि एलहुँ। मुदा कहै छी जे जहाँ धरि रोग जँचैक औजारक जोगार भऽ सकत ओ मद्रास जाइते पठा देब। तत्काल अखन भावो (सुजाता) रहतीह। बौएलाल आ सुमित्रा रहबे करत। आब जे आएब ओ बेसी दिनक लेल आएब। आ एहिठाम आबि अधिकसँ अधिक गोटेकेँ चिकित्साक ज्ञान करा गामसँ रोगकेँ भगा देब। समाज हम्मर छी, हम समाजक छिऐक।

(२००४ ई.)